जपु जी साहिब

भूमिका

“੧ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥”
(उह इक है, उह धुन्न सवरूप है, उसदा नाम उसदी रचना दी तरह इक अटल सचाई है, सिरफ उह ही सारी सृशटी दा रचनहार है अते उह सभ विच विआपक है, उह सारी सृशटी वाँगू भउण तों आज़ाद है, उह वैर-रहित है किउकि उसदा कोई सानी ही नहीं, उह वकत दी पकड़ तों बाहर है, उह जूनाँ विच नहीं आउंदा, उह खुद ही प्रकाशमान होइिआ है भाव उह आपणे आप तों होइिआ है अते उसदा मेल उसे दी किरपा नाल ही हो सकदा है।)

जपु बाणी सिख जगत विच होर बाणीआँ दे मुकाबले ते सभ तों ज़िआदा विचारी गई है। इिस दे सटीक कई भाशाँवाँ विच बणे होओ हन, जिवेंकि गुरमुखी, हिंदी, अंगरेज़ी आदि। स्री गुरू ग्रंथ साहिब दे विच इिह बाणी सभ तों पहिलाँ दरज कीती गई है। इिस दीआँ बहुतीआँ विआखिआवाँ उदासी-मत संपरदा अते गुरमुखी विआकरन दे आधार ते कीतीआँ गईआँ हन। अज दे सिख जगत दे विच इिक बड़ी चरचा है कि अचारीआ रजनीश ने जिस ढंग नाल जपु बाणी नूं विचारिआ है सिख जगत विच ओसी विचारधारा किउं नहीं नज़र आँउदी। अचारीआ रजनीश दी जपु बाणी दी टराँसलेशन विचों बहुत जगह अधिआतमिकवाद दी झलक मिलदी है। हालाँकि जिन्हाँ नूं गुरू ने इिह सोझी बख़शी है, उह इिह जाणदे हन कि अचारीआ रजनीश गुरमत दे मारग नूं सही ढंग नाल बिआन नहीं कर सकिआ। इिस विच उसदा कोई दोश नहीं लगदा किउंकि उह गुरमत दे भगती मारग नूं मन्नदा ही नहीं। जिन्हाँ ने उसदी किताब पढ़ी है जाँ टेपाँ सुणीआँ हन उन्हाँ नूं शाइिद इिह पता होओगा कि अचारीआ रजनीश शुरू विच ही कहि रिहा है कि स्री गुरू नानक देव जी ने कोई भगती कीती ही नहीं, कोई साधना नहीं कीती। बस उहनाँ ने सिरफ प्रमातमा नूं गाइिआ, ते गा के ही पा लइिआ। गुरमत मारग दीआँ जड़ाँ उते इिह इिक बड़ी वडी सट है जो कि असीं आपणी अगिआनता दे कारन बड़ी खुशी नाल बरदाशत कर गओ हाँ, किउंकि जिस मारग दा बानी खुद प्रभू भगती नहीं करदा उह आपणे शरधालूआँ नूं प्रभू भगती वल किवें प्रेरेगा? सिख जगत दे प्रचारकाँ ने वी इिस नुकते वल धिआन नहीं दिता किउंकि उह खुद गुरबाणी नूं गाण अते पाठ करी जाण विच ही रुझे होओ हन। हालाँ कि गुरबाणी ने सानूं गुरबाणी नूं गाओ जाण वल नहीं सी लगाइिआ, सगों इिशारा कीता सी:

“कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नहीं हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइि किआ कीजै॥” (पन्ना ४५०)

भाव कि किसे दे अलग अलग रागाँ विच बाणी गाण नाल हरी दे नाम विच नहीं भिजिआ जा सकदा किउंकि जद तक हिरदा कपट अते विकाराँ नाल भरिआ रहेगा उतना चिर इिह गाणा बजाणा सिवाओ रोणे धोणे दे होर कुझ वी नहीं है।

“सभना रागाँ विचि सो भला भाई जितु वसिआ मनि आइि ॥”
(पन्ना १४२३)
भाव सारिआँ रागाँ विचो उही चंगा है जिस नाल प्रमातमा दा हिरदे विच प्रकाश हो जावे।

“रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ॥” (पन्ना ६५०)

रामकली (इिक राग दा नाम) गावी वी उस समें शोभा बणेगी जिस समे रामु (प्रभू) हिरदे विच प्रगट हो जाओगा।

इिसतराँ दे कई इिशारे करके गुरबाणी ने गुरसिख नूं मारग दिखलाइिआ कि सुर (धुन) भगती मारग ते चलण लई इिक साधन है। शबद अते सुर दा मेल करके सुरती नूं प्रमातमा दे चरना नाल जोड़न दा अभिआस करना है। इिह जुगती इितनी आसान अते शकतीशाली है कि इिस जुगती नाल गृसत निभाउंदे होओ वी प्रभू प्रापती हो सकदी है। इिस विच सिख जगत दे बहुत मंदे भाग समझे जाणे चाहीदे हन कि इिह मारग सिरफ इिक तराँ दा गाणा बजाणा बणके ही रहि गिआ है। भगत कबीर जी ने इिस बारे गुरबाणी विच सानूं इिहना शबदाँ नाल याद वी दिवाइिआ सी:

"लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥" (पन्ना ३३५)

पर असीं इहनाँ शबदाँ नूं ब्रहम विचार दे भाव नाल समझण दी कोशिश ही नहीं कीती, बलकि होर ज़ोर शोर नाल गाण लग पओ हाँ। ताँ ते इस विच कोई अचंभा नहीं कि अचारीआ रजनीश वरगा प्रमुख विचारक वी सिख मारग दे पहिले ब्रहम गिआनी नूं इक आम गवईआ कहिके संबोधन होवे।

इंटरनैट (Internet) दे परचलित होण नाल इक होर मसला उठ खलोता है। इस मीडीअम (Medium) ते किसे दा कोई कंटरोल (Control) नहीं। जिसदा जो जीअ चाहवे उह लिखके सारी दुनीआँ ते प्रकाशत कर सकदा है। इंटरनैट नूं दुनीआँ विच जानकारी दा भंडार (Information Highway) किहा जा रिहा है। इसदा भाव इह होइआ कि इंटरनैट उते सच अते झूठ दोवाँ नूं ही बड़ी तेज़ी नाल दुनीआँ ते फैलाइआ जा सकदा है। अज दे परचलत धरमाँ दी दुनीआँ विच जिथे सच ते झूठ पहिलाँ ही बुरी तराँ रले होओ हन, उथे इस Medium दी मदद नाल होर वी भुलेखे गहिरे हो जाण दा ख़तरा पैदा हो गिआ है।

मिसाल वजों कुझ इतिहासकाराँ ने जपु बाणी "कदो होंद विच आई" बारे इंटरनैट उते बहिस-मुबासा शुरू कर दिता है। हर कोई तराँ-तराँ दीआँ कहाणीआँ जोड़के इसदी होंद बारे आपणे आपणे फैसले दे रिहा है। कोई कहिंदा है कि गुरू नानक देव जी दे साहमणे बैठा कोई सिख सवाल कर रिहा है अते गुरू जी जवाब दे रहे हन। कोई कहिंदा है कि जद भाई लहिणे नूं परम अवसथा प्रापत होई ताँ गुरू नानक देव जी ने फ़ुरमाइआ कि पुरखा हुण तूं जपु बाणी दी रचना कर। कोई कहिंदा है कि जोगीआँ नाल होओ सवालाँ-जवाबाँ दा निचोड़ है। कोई कहिंदा है कि वेंई नदी दे इशनान तों बाद जद स्री गुरू नानक जी बाहर आओ ताँ उस वकत उहनाँ ने जपु बाणी उचारी। इतनीआँ-इतनीआँ मन घड़त गलाँ चलीआँ होईआँ हन कि बेकसी दे विच उस गुरू दे चरना विच सिवाओ अथरू डेगण दे होर कोई वस नहीं चलदा। सिख जगत विच सूझवान हसतीआँ मानो बिलकुल छुप के चुप चाप बैठ गईआँ हन। किसे कोने विचों आवाज़ नहीं उठदी लगदी जो इहना गुमराह होओ विद्वाना नूं कहे कि बहुत हो गिआ। हुण इस ब्रहम गिआन दी होर तौहीन ना करो। सानूं इहि बार बार भुल जाँदा है कि इह धुर की बाणी है। सानूं धुर की बाणी दी परीभाशा ही याद नहीं रहिंदी। असीं जद वी गुरबाणी दी विचार नाल जुड़दे हाँ ताँ इसनूं इक कविता मन्न लैंदे हाँ अते ब्रहम गिआनी नूं इक कवाल दे रूप विच देखण लग पैंदे हाँ। इह ताँ मत उची होण दी थाँ नीवीं हो जाण दी निशानी है। धुर की बाणी उचारी नहीं जाँदी, इह ताँ धुरों उतरदी है; इह लिखी नहीं जा सकदी, इसनूं ताँ कोई लिखवाउंदा है; इह किसे दे साहमणे बैठे दे सवालाँ दा जवाब नहीं हो सकदी किउंकि जवाब देण वाला ते कोई है ही नहीं; उह ताँ परम जोती नाल अभेद हो चुका है। उसदा सरीर ताँ परम शकती दी बाँसुरी बण चुका है। हथ किसे होर दे हन, बुल किसे होर दे हन, हवा दी फूक किसे होर दी है, सुराँ किसे होर दीआँ हन, ताँ बाँसुरी किंज कहे कि "मैं" वज रही हाँ। इह ताँ सुणन वाले दी ही ज़िद है कि उह बार बार इह कहिंदा है कि बाँसुरी गीत गा रही है, बाँसुरी कोल ताँ इह कहिण लई ज़ुबान वी नहीं। बस हू ब हू ब्रहम गिआनी दी इहो जिही हालत है। गुरबाणी सानूं याद दिलाउंदी है:

"सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाओ ॥" (पन्ना ३०८)

"जैसी मै आवै खसम की बाणी
तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥" (पन्ना ७२२)
"हउ आपहु बोलि न जाणदा
मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥" (पन्ना ७६३)

पर अज दा विचारक इस गल नूं मन्नदा ही नहीं, अगो बहिस करन लई तिआर हो जाँदा है अते कहिंदा है कि इह तुकाँ सिरफ लिखारी दी निमरता भाव दरसाउण लई हन। विचारक ने इस दलील नूं देण तो पहिलाँ सोचिआ ही नहीं कि उसने ब्रहम गिआनी नूं इक ढंग नाल झूठा अते फरेबी बणा दिता है जिसदी "मैं" (Ego) काइम ते है पर उह दुनीआँ साहमणे नकली हलीमी पेश कर रिहा है। ओसी हालत नूं गुरबाणी ने इहना शबदाँ विच दरसाइआ है:

"जिस नो आपि खुआओ करता
खुसि लओ चंगिआई ॥३॥" (पन्ना ४१७)

भाव जिसनूं वी प्रमातमा जीवन यातरा विच खुआर करना चाहुंदा है, उस पासों उह चंगी मत खोह लैंदा है। सिख जगत दी मौजूदा हालत देखके इंज ही लगदा है कि प्रमातमा ने साडे पासो बिबेक बुध खोह लई है ताँ ही ताँ असीं आपणे रहिबराँ दे इशारे समझण विच असमरथ हो गओ हाँ। जपु बाणी नूं निरोल "धुर की बाणी" मन्न के जेकर अधिआतमिकवाद दे पहिलू तों खोजिआ जावे ताँ साडे आपणे ही पाओ होओ सारे भुलेखे दूर हो जाणगे। आओ, सारे रलके, प्रभू पासों बिबेक बुधी दी जाचना

करके जपु बाणी दी खोज दी यातरा नूं शुरू करीओ।

स्री गुरु गरंथ साहिब दी सारी बाणी इक महान कावीओ दे रूप विच है। सिरफ पहिले पन्ने दे मुढले कुझ अखर ओसे हन जिहड़े कि कावीओ रूप विच नहीं हन। सारी बाणी रागाँ विच वी नहीं है जिवें कि शलोक, फुनहे, चउबोले, सहसक्रिती, भटाँ दी बाणी आदि। इसतृाँ दीआँ कई होर बाणीआँ हन जिहड़ीआँ कि रागाँ विच वी नहीं दरज कीतीआँ गईआँ। हर बाणी जिस ब्रहम गिआनी दे मुखारबिंद राही साडे तक पुजी है, उसदा हवाला बाणी विच दे दिता गइिआ है जिवेंकि "सिरी राग महला १"। इिह सिरफ इतना इशारा करन लई है कि हेठ लिखिआ शबद स्री गुरु नानक देव जी दे मुखारबिंद विचों आइिआ है अते इिह स्री राग विच गाइिआ जाणा चाहीदा है। याद रहे कि इिह कहिणा मन मत है कि इिह शबद स्री गुरु नानक देव जी दा लिखिआ जाँ उचारिआ होइिआ है। शबदाँ अते बाणीआँ दे सिरलेख सिरफ समें वल इशारा करन लई सन, किसे विअकती वल नहीं। स्री गुरू ग्रंथ साहिब दे शुरू विच जिहड़ी बाणी पहिलाँ रखी गई है उस उते किसे वी सरीर रूपी करते दा नाम नहीं दरसाइिआ गिआ। इिस तरीके नाल सिख जगत नूं साडे परम पुरखाँ ने इिक सुनेहा दिता सी। पर असीं ज़िद पकड़ लई है कि इिह सुनेहा असाँ नहीं सुणना। उह सनेहा इिह सी कि बाणी उतना चिर बाणी कही ही नहीं जा सकदी जितना चिर उसनूं लिखण वाला अजे बैठा है। उह इिक बहुत वधीआ कविता ताँ कहिला सकदी है पर उह बाणी नहीं है। बाणी दी डैफीनिशन ही इिह है।

बाणी कद अते किसनूं आउंदी है? उस बारे गुरबाणी दा इशारा है:

''धुर की बाणी आई ॥
तिनि सगली चिंत मिटाई ॥'' (पन्ना ६२८)

भाव कि धुरों बाणी उदों अते उसनूं आउंदी है जिसने आपणीआँ सारीआँ चिंतावाँ मिटाके प्रमातमा नूं दे दितीआँ होण, जिस कोल इिक वी चिंता आपणे पास नहीं है। बाणी ताँ आउंदी है;

"जैसी मै आवै खसम की बाणी"।

चंदन दे पास जिहड़ा वी पौदा बैठ जाओ उह वी खुशबोदार हो जाँदा है पर बाँस इिक ओसा पौदा है जो चंदन लागे बैठ के वी नहीं असर कबूल करदा किउंकि बाँस दी बणतर ही ओसी है। हर बाृाँ-चौदा इिंच दे फासले ते इिस विच गंढ हुंदी है, अते विचों खोखला हुंदा है। इिस करके इिसदे विच कुझ टिकदा नहीं। बाँस कोलों कंम लैण लई जिथे गंढाँ हन उह दोनों पासे कट दिते जाँदे हन, हुण उह पोरी बण गई। हुण उहदे विच हवा ना ओस पासे रुक सकदी है नाँ उस पासे रुक सकदी है। महाराज ने इशारा कीता कि बाणी उदों आउंदी है, और उस शरीर नूं आउंदी है जो बाँस दी पोरी वरगा बण जाँदा है भाव कि जिसदे विचों "मैं" निकल जाँदी है। जिसदी "मैं" दा इिक भोरा वी बाकी नहीं बचदा। बाहरों इिंज लगदा है कि उह बोल रिहा है। पर उह बोल रिहा नहीं हुंदा । उह उत्थे है ही नहीं। जपु बाणी आई, उस दा प्रमातमा तों सिवाओ होर कोई करता (Author) नहीं हो सकदा। महाराज ने शुरू विच ही इिह इशारा कर दिता कि बाणी दा आथर कदी नहीं हुंदा। पर दुनीआँ दी हर भाशा विच इिक मजबूरी है कि जिवें जिवें समाँ बदलदा है उसदे नाल नाल भाशा वी बदलदी जाँदी है। रिवाज बदलदे जाँदे हन, मुहावरे बदलदे जाँदे हन, कई नवें अखर रल जाँदे हन, कई अखर पुराने होके पिछे रहि जाँदे हन। सो जेकर पहिले महिले नूं आई बाणी समझणी है ताँ उस वकत दी भाशा नूं वी समझणा पओगा। मिसाल वजों बाणी विच फुरमान है "अंमृत सरु सिफती दा घरु"। जेकर इिसदे पहिले महिला ३ ना लिखिआ होवे ताँ असीं इिसनूं अंमृतसर समझके इिह कहि सकदे हाँ कि अंमृतसर शहिर बारे इशारा कीता जा रिहा है। हालाँकि तीसरे महल दे समे तक अंमृतसर शहिर अजे बणिआ ही नहीं सी। इिस करके बाणी दे सिरलेख वजों स्री राग महला पहिला लिखके समे वल इशारा कर दिता गिआ। इिसदा होर कोई मकसद नहीं सी। कुझ लोग हुकमनावाँ लैण लगिआ कहिण लग पओ हन "सलोक महला पंजवाँ धन्न-धन्न गुरू अरजन देव साहिब जी महाराज जीओ" इिह असाडी मन मत दी निशानी है। गुरू अरजन देव साहिब नूं आपणे आप नूं धन्न-धन्न कहिलाउण दी कोई लोड़ नहीं, नाँ उनृाँ ने किसे थाँ किसे वी गुरू विअकती लई लिखिआ है। बाणी किसे वी सरीर दी नहीं है। इिस भेद नूं हिरदे विच वसाउण दी ज़रूरत है।

इिथे इिक सवाल उठ सकदा है कि पहले महल अते दूसरे महल इिस धरती ते सरीरक रूप विच कई साल इिको समे विच रहे हन। ताँ ते उहनाँ दी भाशा वी ताँ इिको जिही होणी चाहीदी है सो हुण समे वाली गल बेकार हो जाओगी। इिह दलील संपूरन नहीं है किउकि इिक पीड़ी दी उमर कोई २५ साल मन्नी गई है अते हर पीड़ी कुझ नवीआँ गलाँ अते नवे रिवाज पैदा करदी है। महला नंबर लिखके गुरबाणी ने उस समे दी चाल वल इशारा कीता है, किसे सरीर वल नही। जेकर इिह मन्न वी लिआ जावे कि महला नंबर सरीर नाल सबंध रखदा है ताँ इिस करके सिख जगत दे बानीआँ उते इिक बड़ा भारी दोश लग जाण दा खतरा है। जद असीं पुराणे रिशीआँ मुनीआँ दी रचित वल देखदे हाँ ताँ पता लगदा है कि उहनाँ ने आपणा नाम इिस तराँ नाल सारे ग्रंथ विच नही वरतिआ। इिक वेदाँत दा गिआता इिह कहि सकदा है कि उहनाँ रिशीआँ दी हाउमे मर चुकी सी अते उह सही रूप विच ब्रहम

गिआन नूं प्रापत सन, इस करके उहना ने आपणा नाम लिखण दी कोशिश ही नहीं कीती। पर सिख बानीआँ नूं शाइद इस भेद दा पता नही सी जो कि बिलकुल ही बेकार हुज़त है।

स्री गुरू ग्रंथ साहिब दुनीआँ विच पहिला धारमिक ग्रंथ है जिहड़ा किसे अखर नाल शुरू नहीं कीता गिआ बलकि इक नंबर नाल शुरू कीता गइआ है। इह कोई मामूली जिही गल नहीं सी कि गुरबाणी कहि रही है कि प्रमातमा इक है। इह बहुत वार पहिलाँ वी किहा जा चुका सी कि प्रमातमा इक है। गुरबाणी दा ओका कुझ होर वी इशारा कर रिहा है। उह इह कहि रिहा है कि इस ग्रंथ विच उसदी कहाणी शुरू होण लगी है जिसनूं अखराँ विच किहा ही नहीं जा सकदा। शुरूआत विच ही इस गल नूं आपणे हिरदे विच वसा लओ। उसदी गल शबदाँ तों बहुत दूर है, उसदे लई हर शबद कचा पै जाँदा है, बहुत छोटा जिहा लगदा है, इस करके उस वल इशारा करन लई शबद नहीं, नंबर वरतिआ जा रिहा है। इह अकथ दी कहाणी है, शबदाँ विच नहीं बधी जा सकेगी, इस करके शबदाँ नूं पकड़के नहीं बहि जाणा। जो शबदाँ दे पिछे छुपिआ बैठा है उसनूं धिआन विच लिआउण दी कोशिस करनी है। पर इह भेद साडे कोलों गवाच गिआ अते अजोके विदवानाँ ने भाशा दी विआकरन (गरामर) उते इतना वाधू ज़ोर दे दिता कि बाणी दे अधिआतमिक इशारे ही गुंम हो गओ। अकथ दी कथा शुरू करन तों पहिलाँ ओका इह वी इशारा करदा है कि उस लई मरदाँवें शबद अते ज़नाने शबद दोवें ही अधूरे हन। जद कोई इह पुछदा है कि प्रमातमाँ मरद किवें बण गिआ, की उह औरत नहीं हो सकदी ताँ गुरबाणी ने ओसे भुलेखिआँ दी जड़्ह ही कट सुटी है। उसदे लई हर शबद ही अधूरा है, उह भाँवे पुलिंग होवे ते भाँवे इस'ी लिंग होवे। उह सभ कुझ हुंदिआँ होइआँ वी नहीं हो जाँदा है। इस करके उसदे बारे हर तराँ दी बहिस बेकार है। उस बारे जो वी कहिआ जाओगा उह कुझ ग़लत वी होवेगा अते कुझ सही वी होवेगा। प्रमातमा असली रूप विच की है इह कहिआ ही नहीं जा सकदा। उह जो नहीं है उह कहिके उस बारे कुझ इशारे कीते जा सकदे हन। हिंदोसतान दी धरती ते देवीआँ (माता) दा ज़िकर होण दा इही मूल कारन है कि प्रमातमा दी शकती नूं मरदावीं शकती मन्नन तों इनकार कर दिता गइआ। सो उस शकती दे बहुत सारे पहिलू होण करके ७ देवीआँ दे नाम रखे गओ अते फिर उहनाँ देवीआँ दे शरधालूआँ विच आपस विच ईरखा शुरू हो गई। लकशमी (दौलत दी देवी) वडी है कि दुरगा (शकती दी देवी) वडी है? जगिआसू किवें चुणे अते किस दी पूजा विच जुड़े? गुरबाणी ने दुनीआँ दे इह सारे ही भुलेखे इक इशारे नाल ही दूर कर दिते अते फुरमाइआ कि जिसदी गल अगे होणी है उसदा कोई नाम नहीं, उसदी कोई सूरत नहीं, उसदा कोई लिंग (सैकस) नहीं। उह बस है, जो उह है उह कहिण तों बाहर है, जो उह नहीं है उस बारे कुझ इशारे कीते जाणगे। उहनाँ इशारिआँ विचों उसनूं महिसूस करन दा यतन करना है। इसे करके स्री गुरु ग्रंथ साहिब दा सारिआँ तो पहिला इशारा ओका पाके कीता गइआ है:

1. उह इक है
2. उहनूं शबदाँ विच बिआन नहीं कीता जा सकदा इसे करके पहिलाँ नंबर रख दिता गइआ है।
3. उस नाल इनसानी भाशा दे सवभाव नहीं जोड़े जा सकदे
4. उसनूं मरद कहिणा वी उतना ही सही/ग़लत है जितना कि औरत जाँ कुछ होर
5. भाशा भाँवे इह ताँ कहि लवे कि उह की नहीं है, पर इह सिधा नहीं दस सकदी कि उह की है।

इक ब्रहम गिआनी लई ताँ इतना ही इशारा बहुत है। उस लई ताँ ग्रंथ इतने विच ही पूरा हो जाँदा है पर इक जगिआसू दी पिआस इस नाल नहीं मिटदी, बलकि तृशना होर जाग उठदी है। गुरबाणी ओसे यातरूआँ लई अगे शबद वरतके अकथ कहाणी नूं अगे चलाउंदी है।

मूलमंतर (भाग-२)

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
(उह इक है, उह धुन्न सवरूप है, उसदा नाम उसदी रचना दी तरह इक अटल सचाई है, सिरफ उह ही सारी सृशटी दा रचनहार है अते उह सभ विच विआपक है, उह सारी सृशटी वाँगू भउण तों आज़ाद है, उह वैर-रहित है किउकि उसदा कोई सानी ही नहीं, उह वकत दी पकड़ तों बाहर है, उह जूनाँ विच नहीं आउंदा, उह खुद ही प्रकाशमान होइिआ है भाव उह आपणे आप तों होइिआ है अते उसदा मेल उसे दी किरपा नाल ही हो सकदा है।)

स्री गुरू ग्रंथ साहिब दे शुरू दे पहिले कुझ अखर कविता विच वी नहीं हन, रागाँ विच वी नहीं हन। इिह ओवें ओकसीडैंटल (accidental) गल नहीं है, इिस दा बहुत गहिरा कारन है। इिथे इिशारा कीता जा रिहा है कि जिस अकथ कथा नूं लै के सिख धरम दी यातरा शुरू होई है उसनूं किसे तृाँ दे वी बंधन विच बंधिआ नहीं जा सकदा। उसनूं शबदाँ विच कहिआ नहीं जा सकदा, गीताँ विच गाइिआ नहीं जा सकदा, कविता विच दसिआ नहीं जा सकदा। किउंकि कविता लिखण दे वी कुझ कानून्न हन, कुझ बंधन हन। कविता जाँ कावीओ दा वी इिक रूप है। साडे तों सभ तों वडी गुसताखी जिहड़ी जपुजी साहिब बारे होई है उह है साडी भाशा। असीं कहिण लग पओ हाँ कि जपु जी दीआँ पउड़ीआँ हन। जपुजी पउड़ीआँ विच नहीं लिखी गई, जपुजी दीआँ पउड़ीआँ नहीं हन। जिहड़ी बाणी पउड़ीआँ विच लिखी गई है, उस दे उपर महाराज ने लिखिआ है कि इिह पउड़ीआँ हन जिवें आसा दी वार। उस वार दीआँ पउड़ीआँ हन इिस करके उथे पउड़ी कहिआ गइिआ है। पउड़ी नूं लिखण दी इिक खास बणतर है। जिस तृाँ कि शबद नूं लिखण दा इिक खास कनून्न है उसेतृाँ पउड़ी लिखण दा इिक खास कनून्न है। शबद दा सारा धुरा, साराँश, मूल मुदा उसदे रहाउ दी तुक विच हुंदा है। पउड़ी दा सारा मुदा उस दी आखरी लाईन दे विच हुंदा है। सो जपुजी दीआँ पउड़ीआँ नहीं हन, जपुजी दे पदे हन, जपुजी दे अंक हन। इिन्हाँ नूं पउड़ीआँ कहिणा साडी मन मत है, भुलेखा है। पउड़ी नूं समझण लई सभ तों पहिलाँ आखरी लाईन वल धिआन देणा पैंदा है। पदे नूं समझण दे लई सारा पदा पढ़ना पैंदा है। जिवें सुखमनी दीआँ असटपदीआँ हन। जिनाँ चिर सारे ८ पदिआँ नूं तुसीं नहीं पढ़ लउगे, सुखमनी दे उस इिकठ विच की भेद है समझ नहीं आओगा। असीं ना समझदिआँ होइिआँ गुरबाणी बारे ओसीआँ बड़ीआँ गुसताखीआँ कीतीआँ हन। सो जिहड़े पहिले चंद अखर हन उहनाँ नूं कविता विच बंद ना करन विच इिक इिशारा है कि जिसदी गल होणी है उह किसे तृाँ दे वी बंधन विच नहीं है। इिसे करके पहिलाँ ओका पाइिआ और उस ओके विच इिकला ओही इिशारा नहीं है कि उह इिक है। उहदे विच होर इिशारा इिह है कि जिस बारे अगे चलके शबद वरते जाणगे उसनूं अखराँ विच कहिआ ही नहीं जा सकदा। इिस करके इिह ग्रंथ नंबर नाल शुरू कीता गइिआ है। हुण ज़रा इिहना अखराँ दी तरतीब वल देखणा है।

ओके तों बाअद जो सिंबल (Symbol) है उस नूं असीं ओंकार दे नाँ नाल पढ़दे हाँ। ओके तों बाअद इिह सिंबल इिस करके लगा होइिआ है कि जिस "इिक" बारे गल करनी है उह धुन रूप है, उह साऊंड है, उह शकती है, इिक ओनरजी (Energy) है। उस ओनरजी नूं किस तृाँ रैपरिज़ैंट (Represent) कीता जाओ? उह ओनरजी आपणे-आप नूं किस तृाँ नाल ज़ाहिर करदी है? इिह आम परचलित है कि इिस ओ दी धुन विच तिन्न आवाजाँ छुपीआँ होईआँ हन अ, ऊ, ते म; ओम दा सिंबल वी इिस तों ही बणिआ है। ओम नूं जदों लिखिआ जाँदा है ते उस दा (ॐ) बणाइिआ जाँदा है। आपणीआँ अखाँ साहमणे ज़रा ओम दी तसवीर लिआउ। उस दीआँ इिह जिहड़ीआँ तिन्न लताँ दिखाईआँ जाँदीआँ हन उहनाँ नूं बंद नहीं कीता गइिआ। इिशारा इिह है कि इिह बिलकुल खुल्हीआँ हन, इिनफिनिटी (Infinity) वल जा रहीआँ हन। गुरबाणी ने इिस नूं 'ੴ' नाल इिशारा कीता है। हुण असीं तुहाडा धिआन इिक विचार वल खिचना चाहुंदे हाँ। ज़रा अखाँ बंद करके उंगली दे नाल अखाँ तों अगर तुसीं सिधी लाईन लगाउ अते फिर आपणे चिहरे तों लइिआ के बुलाँ दे विचों दी लाईन लगाउ। फिर आपणी ठोडी तों लै के उप्पर चलो ते इिह 'ओ' बण गइिआ। अते उस 'ओ' दे उत्ते गुरबाणी ने इिक खुल्ही डंडी दिती है। उहनूं ओपन (Open) लाईन रखिआ है। इिसेतराँ ओम विच वी तिन्न लाईना सिधीआँ बणा के हौरीजौंटल (Horizontal) ही रहिण दितीआँ गईआँ सन। गुरबाणी ने होर खुलासा करन लई दसम दुआर वल इिशारा कीता है, भाव कि इिनसान दे सरीर दी ताँ कुझ हद (limit) है पर उस दी कोई हद नहीं। उस नूं दिखाउण (Represent) दे लई उसदे उप्पर डंडी रख दिती गई है, उह इिनफिनिटी दी निशानी है। जितनी सृशटी साजी गई है उस विच हर चिहरे विच तुहानूं इिह शकल कुझ ना कुझ जरूर नज़र आओगी, अखाँ, मूंह, ते ठोडी। इिह चिहरा उस प्रमातमा दी किरत दी इिक खास निशानी है। बाकी धरमाँ ने वी इिही कहिआ है कि प्रमातमा ने इिनसान नूं आपणी प्रछाई दी तृाँ बणाइिआ है। आपणे इिमेज (Image) दी तृाँ ही बणाइिआ है। उह है ते धुन रूप, पर उस धुन रूप नूं ओसे तृाँ रैपरिज़ैंट (Represent) करना पओगा जिवें उसदी पहिली झलक मिलदी है। ऊ कोई अखर नहीं है, किउंकि हर अखर नूं अलग मातरा लगदी है; सिआरीआँ, बिहारीआँ, औंकड़, दुलैंकड़, टिपीआँ, कन्ने सभ कुझ लगदे हन। पर इिह इिक ओसा निशान (Symbol) है जिस दे नाल कोई वी अखर नहीं बणाइिआ जा सकदा। इिसे तृाँ जिहड़ी उस दी निशानी है, उह वी इिक सिंबल ही है। उह भाशा दे कंटरोल विच नहीं आउंदा। हिंदी जाँ संसकृत विच ओम नाल वी असीं कोई शबद नहीं बणा सकदे। उह सिंबल अलग ही रहिंदा

है। गुरू नानक देव जी महाराज ने सानूं ओंकार दा सिंबल दिता अते कहिआ कि उह धुन रूप है। उस धुन दा जदों प्रकाश इनसान दे अंदर पहिली वार हुंदा है ताँ किसे नूं उह ओंकार दे रूप विच आओगा, किसे नूं उह ओम दे रूप विच आओगा किउंकि आपणे ही चिहरे वरगा अकस नज़र आउंदा है। उसदा होर कोई अलग रूप ही नहीं। इसे करके गुरबाणी ने फैसला दिता अते याद दिलाइआ है:

"मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥" (पन्ना ४४१)

भाव कि आपणा मूल, सैंटर, मुदा, धुरा, बुनिआद (Foundation), आदि उस नूं पहिचाण, तैनूं पता लग जाओ कि तूं कौण है। तूं उस दी अंश हैं, तूं उस दी प्रछाई हैं, तेरा चिहरा उस वरगा है। इिह बहुत ही बरीक भेद है।

इसतों इशारे तों इिह भुलेखा नहीं खाणा कि उस शकती दा आपणा कोई सरूप है। इसतों वडी होर गलती नही हो सकदी कि असी परम शकती दीआँ कुझ निशानीआँ नूं समझण दी कोशिश करदिआँ होइआँ इिह भुल ही जाईओ कि उह निरआकार अते निरलेप शकती है। उपर लिखी विचार सिरफ भाशा वगिआन दा आसरा लैके उस लई कुझ शबद चुण रही जो कि खुदइ निहशबद है। अगे चलके इसते होर खुलके विचार होवेगी। इथे सावधान होण दी ज़रूरत है कि निरआकार विचों आकार उपजिआ है अते सारे आकाराँ विच इक डूंगी साँझ है। उह साँझ आकाराँ दा चिहरा धिआन नाल वेखण ते दिखाई देंदी है। हुण तुसीं देखो कि इस सरीर विच साडीआँ ५ करम इंदरीआँ हन, अते ६ दरवाज़े हन। इिहनाँ नाल दोनों अखाँ संबंधत हन, नक संबंधत है, कन्न संबंधत हन, मूंह संबंधत है, इसदी मैळ कढण लई दो दरवाज़े हन। सरीर दीआँ इिहना नौवाँ मोरीआँ विचों सरीरक शकती बाहर नूं जाँदी है। दसवाँ दरवाज़ा गुपत है, उस दरवाज़े राहीं उसदी झलक मिलदी है, ऊड़े दा उपरला हिसा खुला रखण तों भाव इस दसम दुआर वल इशारा है। इिह सरीर उसदा बणाइआ होइआ इक खास रूप है। इक इनसान वी सरीर बणा सकदा है। जद इक बुतकार पथर घड़दा है, उह वी मूरती बणाँदा है। उहने वी दो अखाँ लगा दितीआँ हन, उहने वी बुल बणा दिते हन, उहने वी दो कन्न लगा दिते हन। मूरती सभनूं नज़र आउंदी है। तुसीं मूरती नूं लै के घर चले जाउ। बुत बणाउण वाला आपणे घर बैठा है, मूरती किसे होर घर बैठी है। बुतकार मूरती नालों अलग है। इसेत्ऱाँ तसवीर बणा दिउ, उसदीआँ अखाँ, कन्नाँ, मूंह आदि सभ कुझ है पर पेंटर (Painter) आपणे घर चला जाओगा, तसवीर किसे होर दे घर चली जाओगी। पेंटिंग ते पेंटर इकठे नहीं हो सकदे। बुत घड़न वाला ते बुत इकठे नहीं हो सकदे। पर प्रमातमा दा बणाइआ होइआ इिह खास रूप, इस विच प्रमातमा आप छुप के बैठा होइआ है। बणाउण वाला बुत तों अलग नहीं है। ओसे गल नूं गुरबाणी ने कहिआ सी:

"आपीनै्‍ आपु साजिओ आपीनै्‍ रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीओ <u>करि आसणु डिठो चाउ</u> ॥"
(पन्ना ४६३)

भाव कि उसने पहिले आपणे आप नूं प्रकाशमान कीता अते फेर सारी कुदरत बणाई। कुदरत नूं बनाउण तों बाद उह उसे कुदरत विच छुपके बैठ गइिआ है अते इस आपणे ही बणाओ होओ खेलु नूं वेख वेख के खुश हो रिहा है। सो गुरबाणी ने जगत दे साहमणे उसदी शबदाँ विच इक तसवीर खिची है कि उह आप ताँ धुन रूप है। पर उसदी पहिली झलक जद वी किसे नूं वी आओगी, इस त्ऱाँ दे मिलदे-जुलदे निशान विच आओगी। उसदी कोई हद नहीं भाव उह किसे त्ऱाँ नाल वी लिमिटड (limited) नहीं, उह अनलिमिटिड (Unlimited) है। जिहड़ी उ੍पर दी डंडी है उह इिह इशारा करदी है कि उह इनफिनिट (Infinite) है।

हुण सवाल पैदा हो जाओगा कि जो धुन रूप ते इनफिनिट है उहनूं बुलाउंगे किवें, उहदा नाम की होणा चाहीदा है, उहनूं ओडरैस किस त्ऱाँ करोंगे? ताँ दूजा अखर अगे आ गइिआ। इन्ऱाँ अखराँ दी तरतीब वल धिआन देणा है अते देखणा है कि इिहनाँ विच इक दूजे नाल की रिशता है, की कामन लिंक (common link) है। जेकर मोतीआँ नूं परो देईओ ताँ माला बण जाँदी है। जद गल विच माला पा लईओ ताँ बाहरों मोती-मोती नज़र आउंदे हन। किसे नूं इिह नहीं दिसदा कि उहदे अंदर इक धागा वी है। धागे वल किसे ने कदी धिआन नहीं दिता। हालाँ कि उह धागा ही है जिहड़ा मोतीआँ नूं बन्न्‍ के रख रिहा है। पर अज तक धागे ते किसे ने ज़ोर नहीं दिता। मोतीआँ वल बहुत धिआन दिता जाँदा है। इिह मोती कितने सुहणे हन, कितने चमकदे हन, पर इसनूं माला दा रूप किस ने दिता है उस वल साडा धिआन नहीं हुंदा। इन्ऱाँ अखराँ दे सैंटर दे विच वी इक धागा है।

सो पहिली पहेली इिह उठ पई कि उस नूं किस नाम नाल पुकारिआ जावे ताँ उसदे जवाब विच गुरबाणी ने इशारा कीता कि जद सारी काइनात विच उही इक सचा है ताँ उसनूं सचाई नाल ही बुलाइआ जा सकदा है सो अगला शबद है "सति नाम"। इस करके उसदे नाम नूं सति कहिआ है। हुण गुरबाणी दे 'सति' अखर नूं समझणा है।

असीं आम तौर ते कहिंदे हाँ कि हिसाब किताब (Mathematics) दी दुनीआँ विच इिह इक सचाई है कि २ + २ हमेशा ४ हुंदे हन। की प्रमातमा दी सचाई वी कुझ इस त्ऱाँ दी ही है? अगर असाँ सारिआँ ने इक गल मन्न लई है कि अज

ओतवार है ताँ की इसनूं सचाई कहिआ जा सकदा है? इह ज़रा विचार करन वाली गल है किउंकि जिसनूं वी पुछोंगे कि अज की वार है ताँ उह कहेगा अज ओतवार है। ताँ फिर उह सच बोल रिहा है जाँ झूठ बोल रिहा? जेकर सारिआँ ने रल के इह कहिआ हुंदा कि अज दे दिन नूं ओतवार नहीं कहिणा सोमवार कहिणा है ताँ फिर इह सोमवार बण जाँदा। २ + २ = ४ कहिण दी जगा जेकर असाँ ५ कहिआ हुंदा ताँ सारिआँ ने इंज ही मन्न लिआ हुंदा कि ५ हुंदे हन। इसतों इह साबत हो गड़िआ कि ओसीआँ गलाँ नूं सचाईआँ नहीं कहिआ जा सकदा। इह साडा सरबसंमती नाल कीता होइिआ समझौता है। इसनूं अंगरेज़ी विच कनसैनसूअल रीओलटी (Consensual Reality) कहिआ जाँदा है। भाव कि बहुतिआँ ने मिल के जिहड़ी गल मन्न लई होवे उहनूं असीं इक फैकट (Fact) ताँ कहि सकदे हाँ पर उह सचाई नहीं हो सकदी। इस बारीकी नूं समझणा है। २ + २ = ४ इक फैकट है किउंकि बहुत सारिआँ लोकाँ ने मन्नज़ूर कीता होइिआ है। "मैं" जदों जनमिआँ सी ताँ मेरे माँ-बाप ने मेरा नाम जसवंत रखिआ। की इसनूं इक सचाई कहिआ जा सकदा है? अगर उह मेरा नाम तेजा सिंघ रख दिंदे ताँ की "मैं" बदल जाँदा? की "मैं" उही नहीं हुंदा? मेरी आतमा, मेरे हथ, मेरा सरीर, मेरे पैर इहनाँ विचों किहड़ी चीज़ बदल जाँदी? नाम इक समझाउता है। ओस सरीर नूं जसवंत सिंघ कहिणा शुरू कर देणा कोई सचाई नहीं है। इह कनसैनसूअल रीओलटी दा इक हिसा है।

अगर असीं इह कहीओ कि सचाई इह इस करके है किउंकि इसदे मुकाबले विच बाकी सभ झूठ है; ताँ जिस दिन इह झूठ ख़तम हो जाओगा उस दिन की इह सच वी ख़तम हो जाओगा? जद असीं कहीओ कि इह इक पहाड़ी है ते पहाड़ी दे नाल ही मैदान जाँ वैली (Valley) है। जे हुण पहाड़ी नज़र आउंदी है ताँ की असीं इह कहि सकदे हाँ कि पहाड़ी दा होणा इक सचाई है। जदों कोई जा के वैली नूं भरना शुरू कर देवे, उस विच मिटी पाउणी शुरू कर देवे अते वैली जिस दिन भर गई, उस दिन पहाड़ी किथे गई? उह वी नाल ही ख़तम हो गई हालाँ कि उसनूं हथ वी नहीं लगाइिआ गड़िआ। इस करके जिहड़ीआँ सचाईआँ इक-दूजे ते अधारत हुंदीआँ हन, उहनाँ नूं गुरबाणी सचा नहीं मन्नदी, उह इक समझौता है। गुरबाणी ने कहिआ प्रमातमा दा नाँ सच है अते इह उह सच है जिस दे मुकाबले विच होर कुझ वी नहीं। इस सच लई होर कोई सबूत नहीं मिल सकदा। इस नूं अंगरेजी भाशा विच ओगज़िसटैनशल रीओलटी (Existential Reality) कहिआ गड़िआ है। उह किसे दे मुकाबले विच नहीं खड़ी है। जेकर कोई धरम ओस करके चंगा है कि दूजे धरम माड़े हन ताँ उह धरम बहुती देर चंगा नहीं रहि सकदा। धरम उह चंगा हुंदा है जिहड़ा कि आपणी चंगिआई करके चंगा है। जिसनूं किसे होर आसरे दी लोड़ नहीं, किसे होर सबूत दी लोड़ नहीं। सानूं इह इशारा कीता गड़िआ है कि गुरसिख नूं किसे ओसी सचाई दे पिछे नहीं चलणा चाहीदा जिहड़ी सचाई, किसे दी बुराई दे उते आधारत है। किउंकि इह जरूरी नही कि बुरा हमेशा बुरा ही रहे, उह कदी ना कदी आपणे-आप नूं बदल लओगा। सो प्रमातमा दा नाम आपणे आप विच इक अटल सचाई है।

जिस दा नाम सचा है, उस दा कंम की है? उह किउं है, उहदे होण दा कारन की है? ताँ अगला अखर आ गड़िआ "करता"। उह हर इक दा करता है, करता कहिलाण दा हक सिरफ उसे नूं है, सिरफ उही करता है। जदों वी इनसान आपणे-आप नूं करता कहिंदा है ताँ उसी वेले प्रभू कोलों दूर हो जाँदा है किउंकि हुण हंकार बण गड़िआ। जे तूं करता हैं ते फिर तैनूं भोगता वी बणना पओगा। जे तूं कहिणा चाहुंदा हैं इह कंम "मैं" कीता है ताँ फिर इस कंम दा इनाम वी हो सकदा है अते सज़ा वी हो सकदी है। जे चंगा कंम कीता है ताँ इनाम वी तैनूं ही लैणा पओगा। ते जे माड़ा कंम कीता है ताँ सज़ा वी तैनूं ही भुगतणी पओगी। गुरबाणी ने दसिआ है कि दरअसल इनसान करता है ही नहीं। करता सिरफ अकाल पुरख ही है। इनसान नूं सिरफ भुलेखा पइिआ होइिआ है। जो वी हो रिहा है, उही कर रिहा है। इह अलग गल है कि उह साडे कोलों करवा रहिआ है। सभ कुझ उही कर रिहा है, करता उही हो सकदा है, दुनीआँ ते होर कोई करता हो ही नहीं सकदा। जिस नूं वी इह भुलेखा पै गड़िआ कि मैं करता हाँ, मैं बोलदा हाँ, मैं विखिआन करदा हाँ, मैं गाउदा हाँ, मैं साज बजाउदा हाँ, मैं बचे पाल रिहा हाँ, मैं प्रबंध कर रिहा हाँ, मैं गुरदुआरे चला रिहा हाँ आदि, उसदी इह "मैं" उसनूं लै के बैठ जाओगी। उह अधिआतमिक दुनीआँ विच अगे चल ही नहीं सकदा। गुरबाणी दा फुरमान है:

"जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥
तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥
जब इह जानै मै किछु करता ॥
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥" (पन्ना २७८)
"जब लगु मेरी मेरी करै ॥
तब लगु काजु ओकु नहीं सरै ॥
जब मेरी मेरी मिटि जाइ ॥
तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥" (पन्ना ११६०)

करता कहिलाण दा हक उस नूं है जिस ने सभ कुझ पैदा कीता है। इनसान नूं सिरफ भुलेखा है कि उह वी करता है किउंकि उह जो वी बणाउंदा है उस लई जितना राअ मटीरीअल (Raw Material) है, लकड़ है, पथर है, सीमैंट है, रेता है जो

वी है इिह सभ प्रमातमा दा दिता होइिआ है। जे इिह मटीरीअल नाँ होवे ताँ इिनसान की बणाओगा? जे लोहे दी खाण है नहीं ताँ हथिआर किवें बणाओगा? इिनसानी सरीर नूं उस ने पदारथ दा रूप बदलण दी हिंमत ते अकल दिती है। असीं ख़ुद कुझ वी नहीं बणा सकदे, बलकि प्रमातमा दी बणाई होई वसतू दा रूप बदल सकदे हाँ। असीं आपणे अंदरों कुझ पैदा नहीं कर सकदे। सो प्रमातमा ने हर तरहाँ दा राअ मटीरीअल (raw material) बणाइिआ है, इिस करके असली करता उही है।

इिनसानी दिमाग़ दी इिक बहुत मजबूरी है कि उस लई इिक पहिलू वाली गल दा अंदाज़ा करना बहुत औखा है। उस लई जिथे रात है उथे दिन दा होणा ज़रूरी है नहीं ताँ उह भंबल भूसिआँ विच पै जाँदा है। इिसे करके जद वी कदी प्रमातमा बारे विचार चलदी है ताँ उह झट उसनूं आपणे वरगे गुणाँ दे रूप विच वेखण दी कोशिश करदा है। जिवें कि जेकर उह इिनाम देण वाला है ताँ फिर उह सज़ा देण वाला वी होणा चाहीदा है। अगर उसनूं इिक करम चंगा लगदा है ताँ उसतों उलटा करम माड़ा लगणा चाहीदा है। इिह सभ विचार इिनसानी सोचणी दी कमज़ोरी विचों निकले हन। प्रमातमा नाल कोई इिनसानी सवभाव नहीं जोड़िआ जा सकदा। उह निरलेप है। उह इिक ओसी सचाई है जिसदे मुकाबले विच होर कोई मिसाल नहीं दिती जा सकदी, नाँ उस वरगी होर सचाई है अते ना ही उसदा विरोधी कोई झूठ है। उह बस सति नामु है।

मूलमंतर (भाग–३)

"ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥"
(उह इिक है, उह धुन्न सवरूप है, उसदा नाम उसदी रचना दी तरह इिक अटल सचाई है, सिरफ उह ही सारी सृशटी दा रचनहार है अते उह सभ विच विआपक है, उह सारी सृशटी वाँगू भउण तों आज़ाद है, उह वैर-रहित है किउकि उसदा कोई सानी ही नहीं, उह वकत दी पकड़ तों बाहर है, उह जूनाँ विच नहीं आउंदा, उह ख़ुद ही प्रकाशमान होइिआ है भाव उह आपणे आप तों होइिआ है अते उसदा मेल उसे दी किरपा नाल ही हो सकदा है।)

गुरबाणी दा फुरमान है:

"मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा" (पन्ना ७२७)

उह बहुत घट सुभाग जीव इिसतरीआँ हुंदीआँ हन जिन्नाँ लई उस दे नाम दी खूंडी आसरा बण जाँदी है। इिह बहुत वडे करमाँ दी निशानी है। गुरबाणी ने जीव इिसतरी नूं मछली दे नाल तशबीह दिती है, इिसदा इिक खास कारन है। गुरबाणी इिशारा करदी है कि जिहड़ा "तूं" नाल जुड़ जाओगा उह दरिआ नाल जुड़ जाओगा पर जिहड़ा "मैं" नाल जुड़ जाओगा उह मछली वाँग लोभ नाल जुड़ जाओगा। मछली दी सारिआँ तों वडी कमज़ोरी उसदी जीभा दे रस दा लोभ है। गुरबाणी विच इिशारा है:

"जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥" (पन्ना ११४०)

वैसे मछली बहुत सुंदर अते सिआणी है। जिन्नाँ दे घराँ विच मछलीआँ दे टैंक रखे होओ हन उथे बचे मछलीआँ नूं देख-देख के बड़े ख़ुश हुंदे हन। मछली दा सरीर बड़ा पिआरा हुंदा है अते कुदरत ने उस नूं शकती बख़शी है कि उह पाणी विच डुबदी नहीं, हालाँकि उसदे तैरन वाले कोई पर वी नहीं दिसदे। उस नूं प्रमातमा ने तैरन दी हिंमत बख़शी होई है। पाणी नाल मछली दा पिआर ही नहीं है, सगों पाणी उस दी ज़िंदगी दा आधार है। जिस तरहाँ मानुख हवा तों बगैर नहीं रहि सकदे, इिवें ही मछली पाणी तों बगैर नहीं रहि सकदी। अगर उह समुंदर तों बाहर निकलेगी ताँ मर जाओगी। पर उसदी संभाल दा सारा इिंतज़ाम होइिआँ हुंदिआँ वी उस नूं जीभ रस दा लोभ है। सो गुरबाणी ने फुरमाइिआ कि जिहड़ा "मैं मैं" करन नाल जुड़ गइिआ, उह मछली दी तरहाँ लोभी हो जाओगा। लोभ विच फसी जीवआतमा बारे गुरबाणी दा फैसला है:
"लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइि ॥ अंति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइि ॥ मनमुख सेती संगु करे मुहि कालख दागु लगाइि ॥ मुह काले तिन् लोभीआँ जासनि जनमु गवाइि ॥"

(पन्ना १४१७)

भाव लोभी जीव अगर दरिआ दे दूसरे पासे खलोता होवे ताँ वी उसदा विसाह नहीं करना चाहीदा किउंकि उसदी चलाकी दा कोई हिसाब नहीं। उह पता वी नहीं लगण देंदा कदों ते किसतराँ तुहाडी वसतू तुहाडे कोलों खोहके लै जाओगा। ओसीआँ जीव इसतरीआँ बहुत घट हुंदीआँ हन जो कि कबीर जी वाँङूं इह कहि सकण कि जिन्ना चिर "मैं" खडी दा ताणा बुणदा हाँ अते जिस वेले इक पासिउं नड़ी नूं सट मारदा हाँ ताँ मूहों राम निकलदा है, अते जिस वेले दूजे पासिउ सट मारदा हाँ ताँ वी मूहों राम निकलदा है। बड़ा सुहणा जीवन गुज़र रिहा है। हर साह दे नाल मूंह विचों राम निकल रिहा है। पर इक मुसीबत है कि नड़ी विचों कदी ना कदी धागा मुक जाँदा है। हुण उस नड़ी विच धागा पाउणा पैंदा है। जिन्नाँ बीबीआँ ने कदी सिलाई कढाई कीती है उन्नाँ नूं इस गल दा पता है कि सूई दी मोरी बहुत बरीक हुंदी है ते जे धागा पाउंदिआँ साह लै लउ ताँ हथ कंब जाँदा है। कबीर जी कहिंदे हन कि बस मेरी जान उते इह इक मुशकिल बणदी है। जदों धागा पाउणा पैंदा ताँ साह रुक जाँदा है अते उस समे राम नहीं कहिआ जाँदा ताँ मेरी आतमा दुखी हो जाँदी है।

"मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥ ओ बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥१॥ तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ॥
हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥१॥ रहाउ ॥
जब लगु तागा बाहउ बेही ॥ तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥२॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥३॥
कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥
हमरा इन का दाता ओकु रघुराई ॥४॥" (पन्ना ५२४)

साडे विच कोई ओसा माँ-बाप नज़र नहीं आउंदा जिहड़ा मन विच इह चाउ रखदा होवे कि मेरा पुतर कबीर जी भगत वरगा बण जाओ। कबीर भगत जी वरगा बणन लई बचिआ नूं सिखिआ कुझ होर तरीके दी चाहीदी है, इस कंम लई ट्रेनिंग किसे होर ढंग दी लैणी पैंदी है। जिन्नाँ ने उह सिखिआ लैके आपणे जीवन दी यातरा शुरू कीती ताँ उहनाँ लई गुरबाणी दा इह मुखवाक सही हो गइआ:

"मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥" (पन्ना ७२७)

जदों उह प्रमातमा नाल अभेद होओ, सागर विच बूंद मिल गई, परम अवसथा दी प्रापती होई ताँ उसदीआँ कुझ निशानीआँ स्री गुरू ग्रंथ साहिब दे शुरू विच दसीआँ गईआँ हन जिहड़ीआँ ब्रहम गिआनीआँ दे आपणे असळी (Experience) जाणकारी दा नतीजा हन। इह विचार असीं पहिले साँझी कीती सी कि गुरबाणी ने सानूं दसिआ है कि जितनी वी काइनात बणी है उस विच हर जीव दे कोल मथा, मूंह, अते ठोडी है। इहना तिन्ना अंगाँ दी बणतर भाँवे वखरी वखरी है पर हर जीव कोल इह तिन्ने निशानीआँ प्रमातमा दीआँ दितीआँ होईआँ हन अते उस दी बणतर लग भग इही है जिवें 'ओ' बणदा लगदा है। आपणे भरवटिआँ तों लाईन लगाउ ते बुलाँ ते लाईन लिआउ अते फिर आपणी ठोडी दे हेठ दी लाईन लिजा के सिर तों उपर लै जाउ ताँ इह 'ओ' बण गइआ। नमूने लई इथे दिती तसवीर वल धिआन दिउ। इसदे विच बहुत सारीआँ करम इंदरीआँ आ जाँदीआँ हन भाव दोने कन्न, मूंह, दोने नासकाँ, दोनें अखाँ, अते चमड़ी। गुरबाणी ने जो सरीर दे नौं दरवाज़े दसे हन उहनाँ विचों ७ दरवाज़े इस "ओ" दे आकार विच आ जाँदे हन; अते गुरबाणी ने कहिआ कि इह जिस आखरी अवसथा दा ज़िकर कीता जा रिहा है, ओह इनफिनिटी है। गुरबाणी ने कहिआ कि इह सिरफ दसवें दुआर दी ही गल नहीं है बलकि इह दसवें दुआर तों अगे जाण वाली गल है। जिसदे वल इशारा कीता जा रिहा है उसदा किसे वी दरवाज़े नाल संबंध नहीं। दसवाँ दुआर कोई दिमाग़ विच खास जगाह नहीं है। दसवाँ दुवार सुरती लई उह दहिलीज़ (Boundary) है जिथे सभ करम इंदरीआँ राही शकती बाहर जाणो बंद हो जाँदी है। मानों सभ इंदरिआँ नूं नथ लइआ गइआ है। जो उस समें जीव नूं अंदरो महिसूस हुंदा है उसनूं दसवाँ दुआर खुलणा कहिआ गइआ है। इसे करके दसवाँ दुआर अकसर सिर तों उपर दिखाइआ जाँदा है ताँ कि इस बारे भुलेखा ही ना पवे। गुरमति तों पहिलाँ जितने वी धरम दुनीआँ ते आओ हन उहनाँ ने जीव इसतरीआँ नूं तमो गुण तों तोड़ के ज़िआदा तों ज़िआदा सतो गुण तक पहुंचण लई सिखिआ दिती है। हर सरीर विच इह तिन्ने गुण पाओ जाँदे हन तमो गुण, रजो गुण, अते सतो गुण। तमो गुण विच जीवन बिताण वाला सिरफ आपणे सरीर दी ही फिकर रखदा है, रजो गुण वाला आपणे परिवार अते सबंधीआँ दी फिकर रखदा है पर उह इस तों अगे नहीं जाँदा। उह आपणा सवारदा है, आपणे घर दा सवारदा है। सतो गुण वाला सारे संसार दा फिकर करदा है। सारे संसार नूं सवारन दी चाह विच जिउंदा है, सतो गुण विचों ही वडे वडे समाज सेवक पैदा हुंदे हन। पर गुरबाणी ने कहिआ है कि गुरसिख दी मंज़िल इह नहीं है। गुरसिख तिन्नाँ गुणाँ तों ही अतीत है, इस ने इस तों अगे जाणा है। इस करके इशारा कीता है कि दसवें दुआर तक ही नहीं रहि जाणा। इह जिहड़ी 'ओ' ते डंडी लगी होई है, उह दसवें दुआर तों अगले पासे दी गल करदी पई है। फिर कहिआ कि उस दा नाम सचाई है। असीं पिछे विचार कीती सी कि सचाई, टरुथ ते फैकट विच की फरक है। सतिनाम दा मतलब है कि उस दा नाम रचना विचों आइआ है, उसदा नाम रचनातमिक है।

"आपीनै् आपु साजिओ आपीनै् रचिओ नाउ ॥" (पन्ना ४६३)

इह धिआन जोग विचार है कि इथे "रखिओ नाउ" वी कहिआ जा सकदा सी। पर उसने कोई वी आपणा नाम आपे नहीं रखिआ। उसदा नाम रचना विचों ही आउंदा है, इस करके नाम नूं रचनातमक होणा दसिआ है। जिस तूाँ रचना विच कंम हुंदा है उसे तूाँ दा उहदा नाम बण जाँदा है। जिसदे सिर तों जुलम टल गइिआ है, उसने नाम मिहरवान रख लइिआ, जिसनूं रोटी मिल गई अते पेट पालण हो गइिआ उसने नाम पृतपाल रख लइिआ है। इसे तूाँ दइिआलू, बखशिंद, परवरदगार आदि इह सारे नाम उसदी रचना विचों आओ हन। माँ-बाप ने आपणे पुतर दा नाम ते शेर सिंघ रख दिता पर रात नूं ज़रा खड़का हुंदा है ताँ ज़नानी नूं कहिंदा है वेखी जरा की होइिआ है, आप डर दे मारे उठण दी हिंमत वी नहीं करदा। भाव कि साडे नाम साडे करम नाल नहीं मिलदे पर उसदा नाम उसदे हर करम नाल मिलदा है। इस करके उह सतिनाम है। अगे उहनूं कहिआ है कि उह करता है। सानूं भुलेखा पइिआ होइिआ है कि सभ कुझ असीं आप करदे हाँ। असल विच असीं खुद करदे नहीं, साडे कोलों करवाइिआ जाँदा है। असीं करन वाले नहीं हाँ, इह सानूं भुलेखा पै गइिआ है। इसे करके ही उसदे विच अते साडे विच हाउमें दी दीवार पैदा हो जाँदी है। जदों असीं कहि दिता कि असीं करन वाले हाँ ताँ उहने कहिआ हुण जे तूं ही करन वाला हैं ताँ फिर इसदा फल वी तैनूं भोगणा पवेगा। साडे नाल बिलकुल उही गल होई जिवें इक छोटा जिहा बचा चारपाई ते पिआ ज़रा जिन्नाँ घुसर-मुसर वी करे ते अगर लागे माँ नाँ होवे ताँ गवाँढी ही उठ के आ जाँदा है, किउंकि बचा बेवस है। उह कुझ नहीं कर सकदा, बस सिरफ रो सकदा है। सारी सृशटी विच कोई ही ओसा पथर दिल होवेगा कि बचा विलकदा होवे ते उहनूं जा के उठावे नाँ। फिर उही बचा जवान हो जाँदा है अते आपणे बाप नूं कहिंदा है कि "मैं" आपणी जिंदगी आपणे ढंग नाल गुज़ारना चाहुंदा हाँ। ताँ बाप अगों जवाब देंदा है कि जेकर आपणा हुकम चलाउणा है ताँ आप कमाई कर, आपणे पैराँ उते खड़ा हो अते मेरे कोलों पैसे दी आस ना रख। जिन्नाँ चिर उह पुतर है उतन्नाँ चिर बाप कहिंदा है कि तूं बैठ अते मैं तैनूं खुआँदा हाँ। पर जद पुतर झंडा गडके खड़ा हो जाँदा है ते बाप कहिंदा है निकल घरों। इह ते दुनिआवी बाप दा कंम है, उस बाप दा वी कुझ इसतराँ दा ही कंम है। जितना चिर असीं उहदे साहमणे बचे बणे रहिंदे हाँ कि असीं कुझ नहीं कर सकदे उतना चिर सारी ज़िंमेवारी उसदी है पर जदों असीं ज़िंमेवारी आपणे सिर ते लै लैंदे हाँ कि असीं करन वाले हाँ ताँ उह बाप वी कहिंदा है कि जा हुण सभ कुझ आपे ही भोग। इस करके बाणी दा फैसला है कि सिरफ उही करता है।

अगे अखर है 'पुरखु' किउंकि जदों पहिलाँ कहि दिता है उह 'करता है' ताँ जिहड़ा करन वाला हुंदा है उसदी कोई होंद होणी जरूरी है। जिसदी आपणी होंद ही नहीं है उह करता किवें हो सकदा है? इस दुबिधा नूं गुरबाणी ने पहिलाँ ही हल कर दिता है अते फुरमाइिआ कि उसदी होंद है। इस करके अगला अखर आइिआ है 'पुरख'। बहुते विचारक प्रचारक इस अखर तों भुलेखा खा गओ हन। 'पुरख' दी विआखिआ करन लई असाँ दो अखर लभ लओ हन कि इक उहदा निरगुण सरूप है अते दूजा उहदा सरगुण सरूप है। जितनीआँ वी परचलत टराँसलेशनाँ हन उहनाँ विचो बहुतीआँ सरगुण सरूप लै के कीतीआँ गईआँ हन। जितने वी रसमो-रिवाज गुरबाणी दे आधार ते बणे हन उह इही कहिंदे हन कि उसदे सरगुण सरूप दी गल करो, निरगुण सरूप दी नहीं। मिसाल वजों मिलनी दी रसम अदा करन वेले शबद गाइिआ जाँदा है:

"हम घरि साजन आओ ॥ साचै मेलि मिलाओ ॥ सहजि मिलाओ हरि मनि भाओ पंच मिले सुखु पाइिआ ॥ साई वसतु परापति होई जिसु सेती मनु लाइिआ ॥ अनदिनु मेलु भइिआ मनु मानिआ घर मंदर सोहाओ ॥ पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आओ ॥१॥" (पन्ना ७६४)

इथे गल सचे नाल मिलन दी हो रही है जिथे कि अनहद नाद सुनाई देंदा है। सरीर (हम घरि) दे विच प्रमातमा दी झलक आई है उस सचे दी कृपा होई है। पर असाँ इसदा मतलब दुनिआवी मिलना बणा लइिआ है। इसे तूाँ पले दी रसम वेले इह सलोक गाइिआ जाँदा है:

"उसतति निंदा नानक जी मै हभ वञाई
छोड़िआ हभु किझु तिआगी ॥
हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी ॥" (पन्ना ९६३)

गुरबाणी ने कहिआ सी जीव स्री गुरू नानक देव जी दे घर दे नाल पला इस करके बंनिआँ किउंकि इस घर विचों सही गिआन मिलिआ है। इस घरों आवाज़ आई है कि प्रमातमा तक पहुंचण लई उसतति अते निंदा दोवें ही छडणे पैणगे। बाकी सारे धरम सिरफ निंदा छोडण लई ही कहिंदे हन पर उस नाल गल नहीं बणदी। इह बहुत गहिरा भेद गुरू नानक जी दे दर तों खुल्ला है इस करके हुण सारे दर छडके उसदा दर पकड़ लइिआ है। मगर असाँ इह बणा लइिआ कि विवाह वेले लड़की लड़के दा पला फड़न लगी है। भाव कि साडे भुलेखे ओडे-ओडे गहिरे हो गओ हन कि गुरबाणी दा असली सुनेहाँ ताँ खंभ लगाके उड गइिआ जापदा है।

'पुरख' दा इथे मतलब सरगुण सरूप नहीं है। सारी सृशटी ही उसदा सरगुन सरूप है। इक वी किणका नहीं है जो उसदे सरगुण सरूप नूं नहीं दिखा रहिआ। 'पुरख' शबद नाल इशारा कीता गइिआ है कि उसदी होंद है पर इह होंद आम शरीराँ वाली नहीं है। नौवें महिल दे मुखारबिंद तों उस दे बारे बहुत ख़ूबसूरती नाल ख़िआल पेश होइिआ है।

"पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥" (पन्ना ६८४)

कदी बाग़ विच जाउ ताँ दूरों ही फुलाँ दी ख़ुशबू आउण लग पैंदी है। पर ख़ुशबू कदी वी किसे नूं नज़र नहीं आउंदी। ख़ुशबू तन उ`ते वी अते मन उ`ते वी असर करदी है। उह इक खास तरॣाँ दी शकती (ओनरजी) है जो असर कर रही है। भाँवे आले-दुआले साहमणे फुल खलोता वी होवे ताँ वी पता नहीं लगदा कि किहड़े फुल विचों ख़ुशबू आई है पर उहदी होंद है। जदों नासका दी करम इंद्री किसे चीज़ नूं माण रही है ताँ इहदा मतलब है कि किसे नूं सुंघ रही है। जिवें फुल दे अंदर ख़ुशबू ताँ छुपी होई है पर सरीर उसनूं महिसूस करदा है, इहदा मतलब है कि ख़ुशबू दी होंद है। अगर कहिआ जावे कि इसनूं पकड़के दिखाउ ताँ तुसीं नहीं कर सकदे। भगत जनु इही कहिंदे हन कि असाँ वेखिआ है अते जेकर तुहाडीआँ अखाँ वी उहनाँ वरगीआँ बण जाण ताँ तुसीं वी देख सकदे हो। पर इह ना कहो कि सानूं विखा दिउ। जेकर तुहानूं दसिआ जावे कि इह प्रमातमा है ताँ तुहाडे कोल की निशानी है जिस नाल तुसीं पहिचाणोगे कि इह सही रूप विच प्रमातमा ही है। कोई तुहाडे नाल धोखा वी ते कर सकदा है। ताँ गुरबाणी ने सानूं इह निशानी दिती अते कहिआ कि उस दी होंद है। पहिली पातशाही ने कहिआ है कि उह धुन रूप है। जदों उहदी पहिली झलक आउंदी है ताँ ओंकार दे रूप वरगी शकल विच आउंदी है जो कि उसदे धुन रूप दी निशानी है।

उसदी होंद दी दूसरी निशानी दसी गई है कि शीशे (मुकर) दे विच जिहड़ी तुहाडी परछाई है तुसीं दसो कि शीशे विच कौण है? जो तुहानूं नज़र आ रिहा है उह तुहाडा ही साइिआ (रिफलैकशन) है। तुसीं इह कहि सकदे हो कि मैं आपणे आपनूं देख रहिआ हाँ। पर जदों तुसीं शीशे विच नहीं देख रहे हुंदे ताँ उस समें तुसीं नहीं हुंदे। किसे शाइिर ने इसे करके लिख दिता है:

"आईने में है चिहरा या चिहरे में आईना,
मालूम नहीं कौन किसे देख रहा है।"

गुरबाणी दस रही है कि जिस तरॣाँ रिफलैकशन हुंदा वी है अते नहीं वी हुंदा है, इसे तरॣाँ प्रमातमा ना हुंदा होइिआ लगण दे बावजूद वी है। हुण जेकर शीसे विच आपणा चिहरा देखणा होवे ताँ तिन्न चीज़ाँ ज़रूरी हन। पहिली शरत है कि शीशा साफ होवे, दूसरी शरत है कि शीशा विंगा टेढा ना होवे, तीसरी शरत है कि शीशा हिलदा ना होवे। इथे ही बस नहीं - देखण वाला किसे तरॣाँ दे नशे करके मदहोश ना होवे। चाहे उहने माइिआ दा नशा पीता है, चाहे उहने रूड़ी वाली शराब लिआ के पीती है, इस नाल कोई फरक नहीं पैंदा। जवानी दा नशा शराब दे नशे नालों घट माड़ा नहीं है। शराब दा नशा २४ घंटे विच उतर जाओगा पर जवानी दा नशा बहुत सारी उमर नहीं उतरदा। दौलत दा नशा, हंकार दा नशा इह सभ तरॣाँ दे नशे माड़े हन। गुरबाणी ने कहिआ कि जेकर इह चारे चीज़ाँ इकठीआँ हो जाण ताँ शीशे विच सही रिफलैकशन नज़र आ जाओगा। भाव, साफ मन जिसनूं कोई दुबिधा नहीं अते पूरन टिकाउ विच है उह आपणा सही चिहरा आपणे ही अंदर देख लओगा अते इसे झलक नूं प्रमातमा दी झलक कहिआ गइिआ है। सो उह 'पुरख' इस करके है कि उस दी होंद है।

हुण अगे दो अखर आओ हन "निरभउ, निरवैरु"। इहनाँ सारे ही अखराँ दी तरतीब बहुत ही विसमाद विच लिजाण वाली है। किउंकि पहिलाँ कहिआ कि उह करता है अते फिर सानूं इह भुलेखा ना पओ कि जिहड़ा नज़र नहीं आउंदा उह करता किस तरॣाँ हो सकदा है ताँ नाल ही कहि दिता उह पुरखु है। पर जिहड़ा "पुरख" है उसदा पता किस तरॣाँ लगे? जेकर कोई होर साहमणे होवे ताँ असीं कहि सकदे हाँ कि इह पुरखु नहीं है पर उह पुरखु है। दूजे जिसदी होंद है असीं उसनूं असीं अकसर इधर उधर, समें विच, माइिआ विच भउंदा वेखदे हाँ। पर संदेश आइिआ कि उसदा नाँ ते कोई सानी है अते नाँ ही उह भउण विच है। "निरभउ" दी जो परचलत टराँसलेशन है कि उह बिनाँ डर दे है; इह इस अखर नाल बहुत बेइिनसाफी है किउंकि डर दे लई वी ताँ दूजा चाहीदा है। कोई उस वरगा होर होओगा ताँही ताँ उहदे कोलों डरिआ जा सकदा है। जदों दूजा कोई है ही नहीं ताँ डरना किहदे कोलों। इह अखर डर वल इशारा नहीं कर रिहा बलकि इह इशारा कर रिहा है कि दूजा है ही नहीं। उह सथिर है, अटल है, अते हर तरॣाँ दीआँ भउणीआँ तो आज़ाद है। इसेतरॣाँ जदों दूजा होवे ताँ उहदे नाल दुशमणी वी कीती जा सकदी है अते उहदे कोलों डरिआ वी जा सकदा। जदों दूजा कोई है ही नहीं ताँ डरना किसदे कोलों ते वैर किसदे नाल करना है, दोनों करन दे लई दूजे दी लोड़ है।

इथे इक होर वी गल समझण वाली है। कई वार साडे दिल विच किसे लई वैर हुंदा ते है पर असीं आपणे वैर नूं दबाके

रख लैंदे हाँ। असाँ वैर करना कंटरोल विच रखिआ होइआ हुंदा है पर जे मन विच आ जाओ ताँ असीं वैर बाहर ज़ाहिर कर सकदे हाँ। पर प्रमातमा इस तरृाँ दा वी नहीं है। उसने वैर नूं कंटरोल विच नहीं रखिआ होइआ, बलकि उस कोल वैर नाम वरगी कोई वसतू है ही नहीं। इंज हो ही नहीं सकदा किउंकि दूसरा ओगजिसट (Exist) ही नहीं करदा। जिस तरृाँ गुरबाणी ने कहिआ है:

''मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा ॥
हउ संमलि थकी जी ओहु कदे न बोलै कउरा ॥
कउड़ा बोलि न जानै पूरन भगवानै अउगणु को न चितारे ॥''
(पन्ना ७८४)

भाव कि उसदी सारी बोली मिठी है पर उह मिठास इस करके नहीं है कि उहनूं मिठा बोलणा आ गइआ है जाँ उहने चंगी भाशा सिख लई है। आम तौर ते धारमिक असथानाँ उ-ते लोकी पिआर दी गल ही करदे हन। बड़ीआँ मिठीआँ-मिठीआँ गलाँ करदे हन। मन विच भावें कितनी वी कड़वाहट किउं नाँ छुपी होवे पर साहमणे ते मिठा ही बोलीदा है ताँ इहदा मतलब इह है कि असीं आपणी कड़वाहट नूं इथे आ के छुपाइआ है। असीं अंदरों ताँ कौड़े हाँ पर उस कड़वाहट दे उ-ते परदा पाइआ होइआ है।

पर प्रमातमा नूं कउड़ा बोलणा आउंदा ही नहीं। ''कउड़ा बोलि ना जानै'' भाव उथे कड़वाहट है ही नहीं है। ''निरभउ, निरवैरु'' इह दो अखर इह दस रहे हन। उसदा कोई होर सानी नहीं है। जदों उह होइआ सी ताँ उहनूं वेखण वाला कोई नहीं सी। इसे करके उस बारे कोई वी कुझ वी नहीं दस सकिआ। उह इकला ही है। हुण सवाल उठ सकदा है कि जदों इह कहिआ है कि उह इकला है अते उसदी होंद है ताँ उस दी होंद दा कोई समा ताँ होणा चाहीदा है। दिमाग़ झट पट उन्हाँ चकराँ विच फसदा है ताँ अगला अखर आ गइआ ''अकाल''। गुरबाणी नाल-नाल ही ओसे भुलेखे कढी जा रही है। इशारा होइआ कि उह टाईम तों रहित है। सोचो कि टाईम जाँ वकत जाँ समाँ कदों बणिआँ। सानूं वकत दा पता कदों लगदा है? सूरज, चंदरमा, अते धरती इह तिन्न ग्रहि जिस वेले आपस विच खेलदे हन, भाव इह इक दूजे दुआले घुंमदे हन ताँ वकत बणदा है।

जिहड़े जीव धरती दे नोरथ पोल (North Pole) उते रहिंदे हन उथे छे महीने दा दिन ते छे महीने दी रात हुंदी है। उन्हाँ नूं साडे वाँग वकत दा पता ही नहीं लगदा। जदों इस काइनात दे विच सूरज अते चंद नहीं सन बणे उदों टाईम दी कोई होंद ही नहीं सी। ओसे करके गुरबाणी विच कहिआ गइआ है ''आदि सचु जुगादि सच''। 'आदि' दा मतलब है बीत गइआ समाँ, पर अगे अखर आइआ है 'जुगा तों आदि' भाव जदों जुग नहीं सन बणे। जदों वकत दा कोई अहिसास नहीं सी होइआ, उदों तों उह प्रमातमा है। उस दा टाईम नाल बिलकुल कोई संबंध नहीं है, उह अकाल है, काल रहित है।

इस तों अगला अखर है ''मूरति''। इह धिआन योग है कि दोवाँ पहिलूआँ दे अखर साथ साथ अगड़ पिछड़ चल रहे हन, उह है, उह नहीं है। जिथे पहिलाँ पुरख कहिके याद दिलाइआ सी कि उह है इसे तरृाँ अकाल तों बाअद फिर मूरत कहिके याद दिलाइआ है कि उह है। उह अकाल है भाव समें तों आज़ाद अते पिऊर ओनरजी (Pure Energy) है, सिरफ इक शकती है पर उसदी होंद वी है, इहनूं समझणा है। इह उह मूरत है जिहड़ी कदी जूना विच नहीं पैंदी। है मूरत पर पैदा नहीं हुंदी, इह जूना विच नहीं आउंदी, आजूनी है। इह है वी ते इह नहीं वी। इह है किउंकि इह ख़ुशबू वाँगू है। इह नहीं है किउंकि इह शीशे दे विच इक साओ दी तरृाँ है। तुहाडे कोल उहो जिही सुरती होणी चाहीदी है, उहो जिहीआँ अखाँ होणीआँ चाहीदीआँ हन जो कि उस नूं वेख सकण, उसनूं पहिचान सकण।

हुण जिहड़ा अजूनी है भाव उह जूनाँ विच नहीं आउंदा पर उसदे बारे अगला अखर आइआ है ''सैभं''। भाव जूना विच ते नहीं आउंदा पर पैदा होइआ है। पर जिहड़ा वी जूनाँ विच नहीं हुंदा उसदी ते कोई होंद हो ही नहीं सकदी। जद बूंद सागर विच मिल जाओ ताँ उह जूनाँ तों आज़ाद ते हो गई पर उसदी होंद वी नाल ही मिट गई। सागर विच मिली बूंद नूं कोई नहीं पहिचाण सकदा। गुरबाणी ने समझाइआ कि इही उसदी वडिआई है, इही उसदा विलखण पन है। उह जूना विच नहीं है पर पैदा होइआ है। जो इनसानी हसती ते बंधन हन उह इस करके हन कि उहनूं किसे ने पैदा कीता है पर प्रमातमा नूं किसे ने पैदा नहीं कीता, उह आपणे आप होइआ है। ''सै'' तों भाव है स्वै, खुद बखुद, आपणे आप ही। उह सवै भंग है। ''भं'' तों भाव है होणा। आपणे आप पैदा होइआ है।

अगला अखर है 'गुर प्रसादि'। पर इह समझ विच आउण वाली कोई सौखी जिही गल नहीं है। इह उतना चिर पले नहीं पैंदा जिन्ना चिर गुरू दा प्रसादि ना मिल जाओ। इह आपणे आप नहीं मिल सकदा। बाणी ने मोहर लगा दिती है। उह जद वी किसे नूं प्रापत होइआ है ताँ प्रसादि दे रूप विच ही प्रापत होइआ है। अज तक कोई इह नहीं कहि सकिआ कि उह प्रसादि किसे खास किरिआ करम नाल मिल जाँदा है। उह किसे किरिआ करम दा ग़ुलाम नहीं है। जद वी किसे नूं उसदी झलक मिली है ताँ उसदी मिहर दा सदका ही मिली है। उसदी नदर दे पातर बणन दी जुगती गुरू पास है। गुरदेव दसदे हन कि पहिलाँ नाम

अभिआस कर जिस नाल तेरा मन टिकाउ विच आवे। नाम जपण नाल बस मन दी सफाई हुंदी है, सरीर रूपी भाँडा साफ हुंदा है। उस साफ होओ भाँडे विच उह वसत कदों ते किस तरह्राँ पवेगी इह उसदी मरज़ी उते निरभर है, इह उसदा प्रसाद है। इसे करके इह दोंवे अखर साथ रख दिते गओ हन। शबद गुरू दी शरन विच आइिआ मन दी सफाई दी कूंजी मिल जाँदी है, नाम अभिआस दी सही जुगती दा पता लग जाँदा है। इसतों अगे बस उसदा प्रसाद ही है, जीव दे बिलकुल कुझ हथ वस नहीं है ।

मूलमंतर (भाग-४)

''१ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥''
(उह इिक है, उह धुन्न सवरूप है, उसदा नाम उसदी रचना दी तरह इिक अटल सचाई है, सिरफ उह ही सारी सृशटी दा रचनहार है अते उह सभ विच विआपक है, उह सारी सृशटी वाँगू भउण तों आज़ाद है, उह वैर-रहित है किउकि उसदा कोई सानी ही नहीं, उह वकत दी पकड़ तों बाहर है, उह जूनाँ विच नहीं आउंदा, उह खुद ही प्रकाशमान होइिआ है भाव उह आपणे आप तों होइिआ है अते उसदा मेल उसे दी किरपा नाल ही हो सकदा है।)

मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा ॥ ईघै निरगुन ऊघै सरगुन
केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (पन्ना ८२७)

उपर लिखे शबद दी पहिली तुक पड्हदिआँ ही इिंज लगदा है जिस तरह्राँ कि महाराज कहि रहे हन कि ''मैं'' कुझ नहीं। जे इिह टराँसलेशन सही मन्न लई जाओ ताँ लगदा है जिस तरह्राँ कुझ आपणे आप बारे कहिआ जा रिहा है। हुण जे सोचिआ जाओ ताँ ''मैं'' कहिण दे लई वी ताँ ''मैं'' दा होणा ज़रूरी है। पर ब्रहम गिआनी विच ते ''मैं'' हुंदी ही नहीं। इिस विचार तों नतीजा इिह निकलदा है कि गुरबाणी कोई होर गहिरा इिशारा कर रही है। दरअसल पंचम महिल इिह नहीं कहि रहे कि ''मैं'' नहीं। सगों पंचम महिल वलों इिशारा हो रिहा है कि ''मैं'' दी कोई होंद नहीं है। ''मैं'' है ही नहीं। ''मैं'' होण दा सिरफ इिक भुलेखा ही है। इिनसान दी ''मैं'' दा होणा इिक इिलूयन (Illusion) है। उह भुलेखे विच कहि रिहा है कि ''मैं'' कोई चीज़ हाँ। अकसर असीं हथ जोड़ के कहाँगे कि देखो जी ''मैं'' ते सारिआँ तों नीवाँ हाँ। मैं ते सारिआँ तों गरीब हाँ। देखण सुणन नूं इिह गल बड़ी चंगी लगदी है जिवें कि कोई बड़ी निमरता वाली गल कर रिहा है। पर जे ज़रा धिआन नाल सोचिआ जावे ताँ सारिआँ तों ज़िआदा ग़रीब कहिण दी की लोड़ सी? देखो इिसदे पिछे हउमे किस तरह्राँ छुपके बैठी होई है। अगर कागज़ लै के झूठ बोलण वालिआँ दी इिक लिसट बणाई जावे ताँ मेरा नाम सारिआँ तों नीवाँ होवेगा। ते हुण वेखण वाला इिह कहेगा कि इिसदा नाम सारिआँ तों आखर ते आइिआ है इिस करके इिह सारिआँ तों नीवाँ है। पर जेकर कागज़ नूं उलटा करके देखिआ जावे ताँ मेरा नाम फिर सारिआँ तों उपर हो गइिआ। हउमे नीवीं रहि ही नहीं सकदी भाँवे उसनूं सिर दे भार खड़ा होणा पै जावे। हउमे इिह नहीं कहिण देवेगी कि मैं झूठा हाँ, उह कहेगी मैं सारिआँ
तों ज़िआदा झूठा हाँ। सारे इिक पासे रहि गओ, 'मैं' इिक पासे हो गई, उह इिकली खड़ी हो गई। गुरबाणी ने कहिआ है ''मैं नाही'' भाव इिह इिक इिलूयन है। सिरफ तूं ही है, सिरफ तूं ही ओगजिसट (Exist) करदा है। 'मैं' ओगज़िसट करदी ही नहीं। इिह सिरफ भुलेखा पइिआ होइिआ है। इिह उह सुपना है जिहड़ा टुटदा ही नहीं। इिसतों इिनसान जागदा ही नहीं। सभ कुझ

उसदा ही है। कई विदवाना ने इिह कहिणा शुरू कर दिता है कि प्रमातमा दे दो रूप हन, इिक निरगुण अते दूजा सरगुण सरूप है। गुरबाणी ने इशारा कीता है कि सारी दी सारी काइनात ही उस दा सरगुण सरूप है इस तों इलावा होर अलग सरगुण सरूप कोई नहीं है। उह हर किणके विच छुपिआ बैठा है।

"ईघै निरगुन ऊघै सरगुन
केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥" (पन्ना ८२७)

उह सरगुण सरूप दे विच छुप के बैठा होइिआ है। उह निरगुन सरूप होके किसे जगह अलग होके नहीं बैठ गइिआ बलकि उसदे अंदर ही बैठा है। पर असीं भाशा दी गरामर विच फसके इिह भेद गवा लिआ है अते गुरबाणी दे बड़े अजीब अजीब भावअरथ कढण लग पओ हाँ।

जिन्ना मुढले शबदाँ नूं सिख जगत ने मूल मंतर कहिआ है दरअसल उह उस परम शकती दीआँ कुझ निशानीआँ, कुझ करैकटरिसटिकस (Characteristics) हन। उस दीआँ थोड़ीआँ जिहीआ निशानीआँ दसीआँ गईआँ हन। पर उन्नाँ अखराँ दी तरतीब ओसी है कि दो पहिलू नाल नाल चल रहे हन। इिक पासे ते जो आम देखण विच नहीं आउंदा उह दसिआ जा रिहा है अते दूजे पासे जो नज़र आउंदा है उसदी गल कीती जा रही है। प्रमातमा दे विच बहुत सारे विरोधी भाव नज़र आउंदे हन। इिनसानी दिमाग़ दी इिक कमज़ोरी है कि उह विरोधी चीज़ाँ नूं संभाल नहीं सकदा। इिक गल झूठ है जाँ इिक गल सच है, इिह ताँ मन्नण विच आ जाँदी है। पर इिह गल सच वी है अते झूठ वी है दिमाग़ नूं भंबल भूसिआँ विच पा दिंदी है, मानो कनफिऊज़ (Confuse) कर दिंदी है। आम इिनसानी दिमाग़ विच इिह खूबी बहुत घट दिखाई दिंदी है कि उह दो विरोधी विचाराँ नूं इिकठिआँ देखके मन्नजूर कर सके। इिसे करके गुरबाणी नूं इिक बुझारत कहिआ गइिआ है। गुरबाणी ने जदों प्रमातमा नूं अकाल कहिआ है ताँ नाल ही दूसरा अखर रख दिता है (मूरत)। जे उसनूं 'करता' कहिआ है ताँ नाल ही अखर रख दिता है 'पुरखु'। आसा राग दे छंताँ विच इिशारा कीता गइिआ है:

"कंचन काइिआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥" (पन्ना ४४६)

कंचन कहिंदे हन सोने नूं अते सोना बड़ा नरम हुंदा है। सोना पवितरता दी निशानी है। पिउर (Pure) सोने दा गहिणा पाइिआ होवे ते उह टेढा ही रहिंदा है। इिसे करके दूजी धात दा खोट मिलाइिआ जाँदा है। ओसे करके २२ कैरट (carat) दा सोना २४ कैरट नालों ज़िआदा हंढदा है। सो पहिलाँ ताँ समझाइिआ कि 'कंचन काइिआ' भाव सरीर सोने वरगा पवितर है ते निमरता विच है, हंकार मर चुका है। पर नाल ही अखर रख दिता है "कोट गड़"। हुण कोट गड़ तों भाव है इिक किल्हा जो बड़ा मज़बूत ते सखत हुंदा है। सो गुरबाणी कहि रही है कि प्रमातमा दे रसते ते चलण लई गुरसिख नूं इिन्नाँ दो चीज़ाँ दा धिआन रखणा पओगा। जिथे 'काइिआ' सोने वरगी पवितर हो जाओ, उथे जे उह पिउर सोने वरगी नरम रहि गई ताँ उन्नाँ चोराँ (काम, क्रोध, लोभ, मोह, हंकार) ने फिर आ जाणा है। हरनाखश इितना वडा भगत सी कि जो वी मंगिआ उही हासल कर लइिआ अते इिसे गल ने इितना हंकार वधा दिता कि खुद ही प्रमातमा बणके बैठ गइिआ अते आपणे ही पु" दा दुशमन बण बैठा। इिहो जिहीआँ कई उधारना हन कि जेकर जगिआसू सावधान ना होवे ताँ भगती वी हउमें पैदा कर सकदी है। इिसे करके गुरबाणी गुरसिख नूं याद दिलाउंदी है कि जिथे 'काइिआ' सोने वरगी पवितर होणी चाहीदी है उथे 'कोटि गड्ड' किले वरगी पकी वी होणी चाहीदी है। इिह वेखण विच ते विपरीत गुण हन पर प्रमातमा दे नेड़े होण लई इिह बहुत ज़रूरी हन। ओसे विरोधाभास गुण होण करके ही गुरबाणी नूं सिवाओ अधिआतमिकवाद दे होर पहिलूआँ वलों विचारन लगिआँ अनेकाँ भुलेखे पैण दा ख़तरा है।

मन नूं इिक आदत है कि उह इिक पासे रहि सकदा है। इिक आम दिमाग़ लई जो गुनाह है उह गुनाह ही हो सकदा है, जो सच है उह सच ही हो सकदा है। पर जे इिह कहिआ जावे कि सच ते झूठ इिकठे हन ताँ हुण उहदे कोलों बरदाशत नहीं हुंदा। इिस करके गुरबाणी ने स्री गुरू ग्रंथ साहिब दे शुरूआत विच इिह जिहड़े अखर आओ हन इिह दोवाँ पहिलूआँ नूं मुख रखके दिते गओ हन। जिथे 'अकाल' है उथे 'मूरति' है। जिथे 'करता' है उथे 'पुरखु' है। जे उह 'निरवैर, निरभउ' दसिआ गइिआ है ताँ इिशारा कीता गइिआ है कि वैर करन लई वी दूजा चाहीदा है अते डरन लई वी दूजा चाहीदा है। जे 'अजूनी' कहिआ है कि जूनाँ विच नहीं आउंदा पर नाल ही विपरीत गल कहि दिती कि उह जंमिआँ वी है पर आपणे आप ही होइिआ है। उसनूं किसे वी करम नाल पाइिआ नहीं जा सकदा, उह जदों वी आउंदा है प्रसादि रूप विच ही आउंदा है।

इिथे फिर भुलेखा पैण दा ख़तरा है कि जेकर उसनूं पाइिआ नहीं जा सकदा ताँ इिहदा मतलब इिह बण सकदा है कि मैनूं कुझ वी करन दी लोड़ नहीं है। गुरबाणी इिनसान दी मानसिक अवसथा नूं इितनी गहिराई नाल जाणदी है कि उसने इिक दम ओसे भुलेखे दी जड्ड ही कट दिती है। अगले अखर विच इिशारा कर दिता कि तेरी ज़िंमेवारी बिलकुल खतम नहीं हो गई। अगे अखर आ गइिआ 'जपु'।

नोट: इथे पाठकाँ दी जानकारी लई इह दसणा ज़रूरी है कि पिछलीआँ कुझ विचाराँ नूं संखेप विच दुबारा इस करके दुहराइआ जा रिहा है ताँ कि असीं देख सकीओ कि गुरबाणी दे शबदाँ दी तरतीब विच की भेद है। इस विच हर अखर, हर तुक, हर शबद, अते हर सलोक इक दूजे नाल गहिरा सबंध रखदा है। पंजवें महिल वलों सिख जगत नूं इह बहुत अनमोल तोहफा प्रापत होइआ है।

"जपु" अखर दी परचलत टराँसलेशन इह कीती गई है कि इह बाणी दा सिरलेख (टाईटल) है। इह उ‍परों-उ‍परों वेखण वाली गल है। दरअसल इह जपु बाणी दा टाईटल ही नहीं है बलकि इस विच कोई होर भेद वी है, किउंकि इह अखर सारे पन्ने दे उ‍पर इकला खलोता है। इसदे दोने पासे ते दो डंडीआँ हन अते 'पपे' नूं औंकड़ लगा होइआ है। गुरबाणी विच औंकड़ अखर वल खास धिआन दिवाउण लई वरतिआ गइिआ है। इसतों भाव इह लैणा है कि जिस अखर हेठ औंकड़ हुंदा है उसदी विआखिआ करन लगिआ जलदी नहीं करनी अते आम मतलब नहीं मन्न लैणा सगों उसदी गहिराई विच जाणा है कि गुरबाणी किस गूड़े भेद वल इशारा कर रही है। इसनूं अंगरेज़ी भाशा विच हाईलाईटर (Highlighter) कहिआ जाँदा है। दरअसल "जपु" अखर जिहड़ा सवाल 'गुर प्रसादि' विचों पैदा होइआ है उसदा जवाब है। भाव कि उह आउंदा ताँ प्रसादि नाल ही है पर तेरी वी इक ज़िंमेवारी है। तैनूं उहनूं जपणा पओगा। तूं उस दे नाम नूं जपु। इह गुरू नानक दे घरों सुनेहा है। बाणी विच साफ शबदाँ विच आइिआ है:

"सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिआ ॥
जन नानक के गुरसिख पुतहहु
हरि जपिअहु हरि निसतारिआ ॥२॥ (पन्ना ३१२)

जो भी गुरू नानक दे घर दा पुतर बणना चाहुंदा है उस लई 'हरि जपिअहु' दा आदेश है। जेकर जपिआ नहीं अते इकला गाइिआ ही है, जे इकलीआँ विचाराँ ही कीतीआ हन, जे सिरफ टराँसलेशनाँ ही लिखीआँ हन, जे इकले उस दे पाठ ही कीते हन, ताँ गुरू नानक दे घर दा इह सुनेहा वी धिआन देण वाला है:

"अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नहीं मानै ॥" (पन्ना २६६)
"जपहु त ओको नामा ॥ अवरि निराफल कामा ॥" (पन्ना ७२८)

भाव कि उसदे शबद दी कमाई तों बगैर होर बाकी सारे ही करम बेकार हन। बाकी करम समाज सेवा ते हो सकदी है, पर प्रमातमा दी सेवा नहीं हो सकदी। इह विचार कि जद प्रमातमा सभ विच है ताँ समाज सेवा उसदी सेवा किउं नहीं ताँ गुरबाणी बहुत थाँवाँ ते दसदी है कि नाम जाप तों बिनाँ होर किसे करम नाल छुटकारा नहीं हो सकदा। गुरसिख ने समाज सेवा दा भाव इह नहीं लैणा कि उसनूं हुण नाम जपण दी ज़रूरत नहीं रही। जे असीं उसनूं नहीं जपु रहे ताँ उस दे नेड़े होण दा कोई मौका ही नहीं बणेगा। उसदे नालों साडा फासला घट नहीं रहिआ बलकि वध रहिआ है। इथे झट सवाल उठ जाओगा कि किसनूं जपिआ जाओ ताँ इस सवाल दा जवाब अगलीआँ तुकाँ विच आ गइिआ है। इथों जपु बाणी शुरू हुंदी है। गुरबाणी ने प्रानी नूं हुकम दे दिता कि तेरा पहिला कदम अते तेरा आखरी कदम, जपु तों शुरू होओगा अते जपु ते ही मुकेगा। हुण अगले ३८ अंकाँ दे विच गुरबाणी जपण दी गल करेगी अते समापती तों पहिलाँ जपण दा तरीका दसेगी कि जपण दा सही की ढंग है। जो असीं इहनाँ अगलीआँ तुकाँ दी टराँसलेशन कीती है कि बाणी इकठी करन तों पहिलाँ सलोक उचारिआ है उह सिरफ सलोक ही नहीं है, उह "जपु किस नूं" दा जवाब है। किउंकि उस ज़माने दे विच विदाँत दा वी ज़ोर सी, इसलाम दा वी बोल बाला सी, योग मत वी फैलिआ होइआ सी, उदासी मत वी सी ताँ फिर किसनूं जपणा है ताँ उस दा जवाब आइिआ:

"आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥"

पहिलाँ सचु दे अखर नूं समझ लईओ, किउंकि 'सचु' दे 'चचे' थले औंकड़ लगा होइआ है। इह इस करके याद दिलाइिआ जा रहिआ है कि जिथे औंकड़ है उह हाईलाईटर (Highlighter) है। जदों तुसीं किताब पढ्दे हो ताँ तुहाडे कोल पीला मारकर (Marker) हुंदा है। जिहड़ी गल नूं खास देखणा होवे उहनूं असीं मारकर लगा देंदे हाँ। गुरबाणी ने भेद खोलिआ है कि सचु उह हुंदा है जिसदे मुकाबले विच कोई वी झूठ ना होवे, सचु आपणे आप विच संपूरन है, उसदी पहिचान किसे झूठ नूं साहमणे रखके नहीं कीती जा सकदी। सचु कदी अधूरा नहीं हुंदा, सचु जाँ ते १००६ सचु है जाँ बिलकुल सचु नहीं है, पर झूठ अधूरा हो सकदा है। झूठ नूं अधा झूठ कहिआ जा सकदा है पर सचु नूं अधा सचु नहीं कहिआ जा सकदा। अधिआतमिकवाद दी दुनीआँ दे असूल माइिआ वाली दुनीआँ नाल कदे मेल नहीं खा सकदे, इह इक बहुत वडा राज़ है जिसने कई भुलेखिआँ नूं जनम

दिता है।

'आदि' दा मतलब है पासट (Past) जो समाँ चला गइिआ है, जो वकत गुज़र गइिआ है। पर अगला अखर बहुत ही धिआन नाल वेखण वाला है। किउंकि जिहड़ा चला गइिआ है, उहदा संबंध वकत दे नाल है, टाईम अते सपेस (Time P Space) दे नाल है। अगर असीं अरबाँ खरबाँ साल वी कहीओ ताँ वी उह समाँ ताँ है। पर इथे उस वल इशारा है जो समे तों पहिलाँ सी। 'जुगादि' दा मतलब है जुग + आदि, जुगाँ तों जो पहिला सी, जदों टाईम दी कोई होश नहीं सी। सिरफ मिसाल वजों इक गाथा साँझी करदे हाँ।

इक विआह विच इक बाबे ने आपणे पोतरे नूं मोढे ते चुकिआ होइिआ सी ते जंञ दे नाल तुरिआ जा रिहा सी। हर थाँ ते मिठाईआँ लगीआँ दे थाल सजे नज़र आ रहे सन, बैंड बाजे वज रहे सन, पोतरे ने नवें कपड़े पाओ होओ सन, भाव की सारा दिन बड़ी मसती विच लंघिआ। शाम नूं दोवें वापस आ रहे सन ताँ पोतरे ने पिआर नाल पुछिआ, बापू तेरा वी विआह होइिआ सी। बापू ने कहिआ हाँ काका होइिआ सी। ताँ पोतरा कहिण लगा कि फिर मैं तेरे नाल नहीं बोलणा। बाबा बड़ा हैरान होइिआ अते पुछिआ कि किउं, पुतर इह की गल होई? ताँ पोतरे ने जवाब दिता कि देखो ना विआह ते कितना मज़ा आउंदा है। तेरा वी विआह होइिआ पर तूं मैनूं बुलाइिआ किउं नहीं ? मैं उदों होर ज़िआदा खिडौणे लैंदा, होर कपड़े मिलदे पर तूं मैनूं सदिआ ही नहीं, सो मैं नहीं हुण तेरे नाल बोलणा। हुण बापू की जुआब देवे? बापू इही कहि सकदा है कि पुतर तूं उस वेले दा सवाल कर रिहा है जदों तूं खुद है ही नहीं सी। इह गल उसदी समझ आवे भावें ना आवे, पर बाबा होर कुझ कर ही नहीं सकदा, उह लाजवाब है। इसे तराँ असीं जो वी सवाल प्रमातमा दे बारे करदे हाँ ताँ साडा उह हाल है कि असीं आपणे बाबे नूं पुछ रहे हाँ कि तूं सानूं आपणे विआह ते किउं नहीं बुलाइिआ। किउंकि जिहड़ा दिमाग़ सवाल कर रिहा है इह सवाल उस समें दा पुछ रहिआ है जद उह दिमाग अजे खुद पैदा ही नहीं सी होइिआ। उसदा कोई जवाब नहीं दिता जा सकदा किउंकि अकल उस जवाब नूं जलदी पकड़दी ही नहीं। इसे करके बाणी दा फुरमान है:

"पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥" (पन्ना २८४)

सो गुरबाणी ने कहिआ है कि जिसनूं तूं जपणा है उह सिरफ इक ही है। हुण होर किसे नूं पुछण दी ज़रूरत ही नहीं रही।

गुरू नानक देव जी दे घरों आवाज़ आई कि तूं उसनूं जप जो समें तों पहिले वी सी, समे दे बणन तों बाद वी सी, हुण भी है अते अगे वी हमेशा लई रहेगा। माला दे उस धागे नूं पकड़ना है, मणकिआँ वल धिआन नहीं करना। जिहड़ा धागा सभ दे अंदर है, उस शकती दा जाप करना है। होर किसे देवी देवते दे चकर विच नहीं पैणा, सिधा उस प्रभू नाल रिशता जोड़ना है, होर किसे विचोले दी आस नहीं तकणी। ओसा किउं ज़ोर दिता जा रहिआ है इह वी समझण दी लोड़ है। हर देवी देवते अते अवतारी पुरश नाल कई तराँ दीआँ मन्नघड़त कहाणीआँ लगीआँ होईआँ हन। जेकर जाप करन वाला शबद किसे देवी देवते दी याद दिलाँदा है ताँ उस नाल लगीआँ होईआँ कहाणीआँ दा मन्न विच विचार उठणा सवभावक है। इस नाल मन बजाओ टिकाओ दे होर पासे तुर जाओगा अते जाप दा कोई लाभ नहीं होओगा, उह इक सिरफ धुनी बणके रहि जाओगा। इह गुरमत दे गहिरे भेद हन, इहनाँ नूं समझे बिनाँ जीव बजाओ सही मारग दे उलटे रसते चला जाँदा है अते फिर निराश होके किसमत नूं कोसण लग जाँदा है। इह याद रखण वाली गल है कि गुरमत दी जुगती संपूरन है, उसनूं सारे ही गुरू सहिबान ने करके विखाइिआ है।

(अंक १)

स्री गुरू ग्रंथ साहिब दे विच गुरबाणी ने हर इक नूं जाप करन दी ही सिखिआ दिती है। हुण इथे सवाल पैदा हो जाओगा कि इह नवाँ मारग शुरू करन दी की ज़रूरत है। जो अजे तक हो रिहा है उहदे विच की घाट है? वेदाँत, इसलाम, योग मत वरगे कितने ही ताँ सिसटम पहिले ही हन फिर इक होर नवाँ सिसटम किउं बणाइिआ जावे। इहनाँ सभ वखरे वखरे तरीकिआ करके पहिलाँ ही बहुत झगड़े हो रहे हन। सो गुरबाणी ओसे सारे सवालाँ दे जवाब पहिलाँ ही दस रही है। जिहड़ीआँ साडीआँ दिमाग़ी मुशकिलाँ हन उह नाल दे नाल ही हल हुंदीआँ जाणगीआँ किउंकि हर अखर दूजे अखर नाल जुड़िआ होइिआ है। जे पहिलाँ प्रमातमा दीआँ कुझ निशानीआँ दसीआँ हन ताँ फिर कहिआ है कि भाँवें उह आपणी किरपा सदका ही प्रगट हुंदा है पर तूं हिंमत छड के नाँ बहि जाईं। तेरा कंम है उसदे नाम नूं जपणा। पर उस शकती नूं जपणा है जिहड़ी है वी अते दिसदी वी नहीं। जपण लई अखर भावें जिहड़ा मरज़ी चुण लउ, भावें राम कहि लउ, भावें बीठल कहि लउ, भावें अला कहि लउ, भावें गोबिंद कहि लउ, भावें वाहिगुरू कहि लउ, भावें आमीन कहि लउ, भावें ओम कहि लउ, ते भावें सतिनाम कहि लउ, पर इह हमेशा याद रहे कि जिहड़ा वी अखर चुणिआ है, इह उस शकती दी ही याद दिलावे, किसे गुरू, पीर, देवी, जाँ देवते दी नहीं। देवी देवतिआँ नाल जुड़ीआँ होईआँ कहाणीआँ मन विच होर शोर पैदा करदीआँ हन अते मन नूं टिकाउ विच लिआउण लई सहाइिक नहीं हुंदीआँ। जाप दा इको ही मूल मकसद है कि मन इकागर होवे। अगे चलके इसदी विचार होर गहिराई नाल कीती जावेगी।

हुण जिहड़ा सवाल शुरू विच रखिआ गइिआ सी उसदा जवाब शुरू हुंदा है कि परचलत तरीके ग़लत नहीं हन, पर उह इतने विगड़ चुके हन कि उहनाँ विच बहुत खतरे पैदा हो गओ हन, उन्ना्ँ रसतिआँ विच कई अड़चनाँ हन:

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥
चुपै चुप न होवई जे लाइि रहा लिव तार ॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बन्ना पुरीआ भार ॥
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होईओ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥
(लखाँ वार नहाउण नाल वी अंदरूनी पवि"ता नहीं हासल हो सकदी, बगले दी तराँ लिव लाके चुप बैठण नाल वी अंदरूनी खामोशी हासिल नहीं हो सकदी, सारी सृशटी दी दौलत हासिल करके वी अंदर दी भुख नहीं मर सकदी, हज़ाराँ तराँ दा गिआन वी दरगाहे साथ नहीं दे सकदा। ताँ फिर इसि झूठ दी दीवार नूं तोड़न दा की साधन अपनाइिआ जावे? उसदे उस हुकम अते रज़ा विच जीवन गुज़ारन नाल ही इसि झूठ दी दीवार नूं तोड़िआ जा सकदा है जो कि हर इक जीव दे अंदर ही लिखिआ पइिआ है)

गुरबाणी ने उस समें दे चार सिसटम लैके उहनाँ बारे इशारा कीता है कि प्रभू प्रापती दीआँ पुरातन जुगतीआँ विच की अड़चनाँ पै गईआँ हन। पहिला सिसटम वेदाँत विचों आइिआ किउंकि इह सभतों पुराणा सिसटम है। वेदाँत ने पाणी दे तत नूं लैके प्रमातमा तक पहुंचण लई जुगती लभी सी। इसे करके जितने वी हिंदू मत दे वडे तीरथ हन उस सभ पाणी दे किनारे ते बणाओ गओ हन। इस जुगती दा मूल निशाना इह सी कि पाणी दे कोल बैठके पाणी वरगा बणना है। आपणे अंदर पाणी वरगीआँ सारीआँ सिफताँ पैदा करनीआँ हन जिवेंकि पाणी हमेशाँ नीवें पासे वल चलदा है। भाव कि पाणी विच हंकार लेस मातर वी नहीं है। पाणी दी आपणी कोई मरज़ी नहीं है। जिस तराँ दे बरतन विच पाणी पा दिता जावे, उसदा रूप वी बरतन जैसा ही हो जाँदा है। जिस इनसान दी हाउमें मरके पाणी दी तराँ हो जाओ उह प्रमातमा दी नदर दा पातर बणन दे काबिल हो जाँदा है। पर इह जुगती गाइिब हो गई ते पाणी दे विच नहाके सफाई करन उते ज़ोर दे दिता गइिआ। इस नाल तीरथ यातरा वी जुड़ गई ताँ कि हर जगह दे पाणी विच नहाइिआ जा सके। इसितराँ दी सुचिता, इसि तराँ दी पवितरता ही धरम बणके रहि गई।

"सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥"

इथे सोच दा मतलब विचारना नहीं है बलकि इथे सोच दा मतलब है सुचिता, पवितरता। गुरबाणी ने याद दिलाइिआ कि इसितराँ लखाँ वारी कीती होई पवितरता किसे कंम नहीं आ सकदी किउंकि पाणी सिरफ तन नूं साफ करन विच ही सहाइिक हो सकदा है। मन दी सफाई दा इस किरिआ नाल कोई वी सबंध नहीं है। गुरबाणी दा अटल फैसला है:

"सूचे ओहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइि ॥
सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइि ॥" (पन्ना ४७२)

सूफी मत दा इक फकीर लिखदा है:

"बाहरों धोते लताँ गोडे, अंदरे रही पलीती। कन्नाँ नूं हथ लाइिआ फेर नमाज़ तैं कीती। तेरा दिल खडावे मूंडे कुड़ीआँ सजदें करें मसीती। दुनिआँदारा रब दे नाल वी चार सौ वीह तैं कीती।"

भाव कि बाहरों लताँ गोडिआँ नूं धोके तूं प्रमातमा नूं धोखा देण दी कोशिश कर रहिआँ है जो बिलकुल ही न-मुमकिन है।

"चुपै चुप न होवई जे लाइि रहा लिव तार ॥"

दूसरा तरीका सी चुप करके भगती करनी, अंदर धिआन लगाणा, चुप करके बैठणा अते प्रमातमा दा धिआन लगाउण दा अभिआस करना। इिह तरीका धिआन मारग वालिआँ ने परचारिआ जिहनाँ विच मुख धिआनी सी महातमा बुध। उस समें भगती करन दे दो तरीके मशहूर सन, गिआन मारग अते धिआन मारग। धिआन मारग इिह कहिंदा है कि चुप करके बैठ जाउ। इिसतरहाँ चुप कीतिआँ कदी ना कदी अंदर वी शोर घट जाओगा अते मन इिकागर हो जाओगा। पर इिह बहुत ही कठिन मारग है किउंकि बाहर दी चुप अंदर दे शोर नूं आसानी नाल बंद नहीं कर सकदी बलकि मन होर ज़िआदा भटकण लग पैंदा है। इिथे इिही विचार गुरबाणी दे रहीं है कि बाहर दी चुपी नाल अंदर दी चुपी दा कोई संबंध नहीं है। इिसे करके इिस मारग दा नाजाइिज़ फाइिदा उठाउण वाले बहुत पैदा हो गओ। उसदी मिसाल बगले दी चुपी नाल दिती जाँदी है। बगले दा अकार बाहरों देखण विच बिलकुल अडोल लगदा है। बगला छपड़ दे किनारे ते इिक लत ते खलोता हुंदा है। अखाँ दोवें वैसे बंद लगदीआँ हन पर डेढ अख बंद हुंदी है किउंकि अधी अख नाल उस ने मछली नूं देखणा है। जिस वेले मछली दी परछाई उसनूं साहमणे नज़र पैंदी है ताँ उहने झट चुंझ मारके मछली नूं पकड़न दी कोशिश करनी है। बाहरों उह इितना अडोल लगदा है जिवें कि उसदी वाकिआ ही लिव लगी होवे। सो गुरबाणी ने इिशारा कीता कि इिह मारग वी हर जगिआसू दे कंम नहीं आ सकिआ बलकि बहुतिआँ चलाक बंदिआँ लई दूजिआँ नूं गुंमराह करन दा साधन बण गइिआ है।

"भुखिआ भुख न उतरी जे बन्ना पुरीआ भार ॥"

तीसरा जोग मत दा टैकनीक (Technique) है। जोग मत दे जगिआसू तरहाँ तरहाँ नाल सरीर नूं दुख देके उसदीआँ पुराणीआँ आदताँ तोड़न दा अभिआस करदे सी। मूळ विचार इिह सी कि जितना ज़िआदा सरीर सुखी होवेगा उतना ही ज़िआदा माइिआ विच खुभेगा। जितना ही इिह दुख विच रहेगा उतना ज़िआदा प्रमातमा दी याद विच जुड़ेगा। सो भुखे रहिणा, नंगे रहिणा, कन्न पाड़ने आदि तरीके सन सरीर नूं माइिआ नालों तोड़न दे। महातमा बुध ने वी इिह जुगती वरतण दी कोशिश कीती सी। उसनूं किसे ने कहि दिता के इिक दाणा चावल दा खा के २४ घंटे गुज़ारा करना है। उस ने ९० दिन (90 Days) रोज सिरफ इिक चोल दा दाणा खाधा, हडीआँ तों सारा मास उड गइिआ, करंग दा करंग रहि गइिआ। जिस वेले मरन दे किनारे पहुंच गइिआ ताँ उस दिन उसने हौसला छड दिता। सवेर दा समाँ सी, इिक नदी विच पाणी चल रिहा सी, उथे नहाउण लई पाणी विच उतरिआ। पाणी ताँ हौली-हौली ही चल रिहा सी पर इितनी हिमंत नहीं सी कि पाणी विच खड़ा हो सके सो पाणी दे नाल रुड़्ह गइिआ। इिक बोहड़ दे दरखत दी जड़्ह पाणी विच लटकदी पई सी उहनूं फड़ के ते आपणी जान बचाई। उस दिन उहने आपणे-आप नूं पाणी विचों बाहर कढ के सारा कुझ छड दिता। उसने सोचिआ कि इिह जितने सारे लोग मैनूं गाईड करदे आ रहे हन इिह सारे झूठे हन। किसे करम नाल प्रमातमा नूं पाइिआ नहीं जा सकदा। इिह भेद महातमा बुध नूं १२ साल धके खा के पता लगा। सानूं ताँ गुरदेव ने इिह सभ कुझ पहिलाँ ही दस दिता है। साडे लई कंम इिन्ना सौखा कर दिता होइिआ है ताँ ही शाइदि असीं कुझ करदे ही नहीं बस गलाँ ही करी जाँदे हाँ किउंकि बाणी विच इिशारा कीता गइिआ है:

"भूली भूली मै फिरी पाधरु कहै न कोइि ॥
पूछहु जाइि सिआणिआ दुखु काटै मेरा कोइि ॥" (पन्ना १०८७)

"नीहि जि विधा मनु पछाणू विरलो थिओ ॥
जोड़णहारा संतु नानक पाधरु पधरो ॥" (पन्ना ३२७)

भाव कि सभ दुनीआ रौला पाउंदी फिरदी है कि कोई सही अते सौखा रसता नहीं दसदा, इितनिआँ असथानाँ ते गओ हाँ, कई संताँ दा पिछा कीता है, कई महातमावाँ दी पूजा कीती है पर गुरबाणी ने कहिआ है कि किउं भटकदे फिरदे हो। रसता ते ओसा पधरा है बस चलण दी लोड़ है, तूं किउं भटकदा फिरदा हैं, जो तैनूं करना दसिआ है उह ते तूं करदा ही नहीं, बस होर करम काँढा विच ही गवाच गइिआ हैं।

सो इहि तीसरी जुगती वी इक करम कॉंड बणके रहि गई अते लोग भुखाँ कटण लग पओ। "बन्ना पुरीआ भार" तों भाव पूरीआँ दे पहाड़ नहीं है। पुरीआँ तों भाव है सारी काइनात दी दौलत वी अगर साहमणे पई होवे ताँ जो मन भुखा है उहदे लई इतनी दौलत वी घट है। इहि आम परचलत सी कि मन नूं वस करन लई जाँ ते इसदी कोई लालसा पूरी ना करो भाव हर वासना तों भुखिआँ रखो, जाँ फिर हर वासना इतनी पूरी कर दिउ कि इसदा जीअ भर जाओ अते उकता के सारीआँ वासनावाँ छड देवे। गुरबाणी ने फिर याद दिलाइआ कि इहि दोवें ही तरीके खतरनाक हन। तन दी भुख नाल मन दी भुख दा कोई सबंध नहीं। तन नूं दुख देण नाल मन दी लालसा नहीं मिट सकदी। जिसदे अंदर भुख बैठी है उहदा की करोगे? मन नूं नाँ ताँ भुखिआँ रखके वस कीता जा सकदा है अते नाँ ही सारी सृसटी दी दौलत देके वस कीता जा सकदा है। मन विच जितनाँ मरज़ी पाँउदे जाउ इहि खाली दा खाली रहिंदा है। इहि इक थले (Bottom) तों बगैर भाँडे दी तराँ है। इहदे विच जितना पाउंदे जाओ उतना ही गाइब हो जाँदा है। उहदा पता ही नहीं लगदा कि किथे चला जाँदा है, होर लिआ, होर लिआ, होर लिआ, अते जितना चिर मन होर लिआ विच लगा रहेगा उतनाँ चिर प्रमातमा दे कोल नहीं आ सकदा।

"सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥"

इथे सिआणीआँ गलाँ करन दी जाच दा ज़िकर नहीं हो रहिआ बलकि चउथे मारग बारे दसिआ जा रहिआ है। वेदाँत दसिआ, हठ जोग (धिआन मारग) दसिआ, जोगीआँ अते उदासीआँ दा मत दसिआ, हुण गिआन मारग दी गल होण लगी है। गिआन मारग दा इहि विशवास सी कि किसे विशे ते इतनी खोज कीती जावे कि खोजी खोजदा खोजदा उसे विच ही समा जावे। उसदी "मैं" बचे ही ना किउंकि खोजण तों बाद ही इहि होश आउंदी है कि उसदी हर वसतू रहसमई है। जिसतराँ ब्रहमा वी उसदा भेद ना पा सकिआ अते नेती नेती (इहि वी नहीं, इहि वी नहीं,) करदा जीवन दे आखरी सवास पूरे कर गइिआ इसे तराँ हर जीव अगर गिआन मारग उते इस ढंग नाल चले ताँ उह वी प्रमातमा दी किरपा दा पातर बण सकदा है। पर गिआन दे मारग दे शुरू विच ही इनसान नूं भुलेखा पै गइिआ। उह सिरफ जाणकारी इकठी करन लग पइिआ। उस ज़माने दे विदवानाँ ने जितनीआँ किताबाँ वी पड़ीआँ हुंदीआँ सन उहनाँ नूं आपणे नाल गडिआँ ते लद के लिजाइिआ करदे सन।

"पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥"
(पन्ना ४६७)

जिस जगह वी बहिस मुबासा छिड़ना, उहनाँ विदवानाँ ने उथे ही किताबाँ खोहलके बैठ जाणा अते इक दूजे नूं किताबाँ दा हवाला दे के दलीला दसणीआँ। इहि वी मारग आम जीव दे कंम ना आइिआ किउंकि जितना गिआन वधदा जाओगा उतना ही हंकार वधदा जाओगा। पर हंकार ताँ अगे जा ही नहीं सकदा, उह ते सगों होर माइिआ दीआँ बेड़ीआँ पैराँ विच पा देंदा है अते बार बार जूनाँ विच भटकण दा कारन बणदा है।

"पड़ि पड़ि बेड़ी पाईओ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ (
पन्ना ४६७)

हउमै ओहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥
हउमै ओई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥" (पन्ना ४६६)

सो अज कल दी दुनीआँ विच गिआन दा मारग आपणे घर दे साहमणे खूह पुटण वाली गल है। इकठा कीता होइिआ ओसा गिआन उसदे दर तक ना ही पहुंच सकदा है अते ना ही किसे होर नूं पहुंचा सकदा है।

"किव सचिआरा होईओ किव कूड़ै तुटै पालि ॥"

सो हुण सवाल उठ जाओगा कि जेकर अजे तक इनसान इहनाँ वखरे वखरे मारगाँ दीआँ उलझणाँ करके भटकदा रहिआ है ताँ फिर इहि इस उलझण विचों किवें बाहर निकले ताँ कि इहि सही सचु दी प्रापती कर सके। सो गुरबाणी इथे बहुत गहिरा इशारा कर रही है। इहनाँ सभ धारमिक करम काँडाँ दा इनसान दी सुरती ते जो सभ तों गहिरा असर होइिआ उह इहि है कि हर इनसान आपणे आप नूं प्रमातमा नालों अलग समझण लग पइिआ, जो कि सारिआँ तों वडा झूठ है। जद हर इक नूं आपणा मारग दूजे नालों सही जापण लगा ताँ हाउमें होर मज़बूत हुंदी चली गई। प्रमातमा साडे लई इक जज बणके रहि गइिआ जो अगर खुश होवे ताँ इनाम दे देवे अते जे नाराज़ होवे ताँ सज़ा दे देवे। सानूं इहि भुल ही गइिआ कि उह निरलेप है। आपणे हंकार वस होके असाँ प्रमातमाँ वी आपणी आपणी पसंद दे बणा लओ। इस तराँ नाल जीव प्रमातमाँ कोलों इतना दूर हो गइिआ कि आम इनसान दा उह फासला वेखके ही हौसला टुट जाँदा है। असीं पिछे इहि विचार कर आओं हाँ कि 'मैं' है नहीं, इहि इक झूठ है, इहि इक

बहुत वडा भुलेखा है, इहि लगदी है पर है नहीं। सो इहि जिहड़ा भुलेखा बार बार लगदा है, इहि जिहड़ी कूड़ दी दीवार बण गई है, झूठ दी लाईन लग गई है इहि किंज दूर होवे ताँ कि प्रमातमा नाल सुरती जोड़नी सुखाली हो जावे? गुरबाणी आशावादी है, निराशावादी नहीं। गुरबाणी वलों सभनूं इहि सुनेहाँ आइिआ कि इिस कूड़ दी दीवार नूं तोड़न लई पहिला कदम बहुत ही सुखाला है।

"हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥"

भाव कि जेकर उसदे हुकम विच जीवन बिताणा सिख लवें ताँ इिस कूड़ दी दीवार दा नाश हो सकदा है। भाव जेकर जो वी हो रहिआ है उसनूं जीव खिड़े मथे प्रवान कर लओ ताँ हौली हौली हाउमें दी पकड़ घटणी शुरू हो जाओगी। अज कल साडी आदत है कि जीवन विच सुख है ताँ साडी आपणी मिहनत करके है, अते जेकर दुख है ताँ जाँ किसे होर दा दोश है जाँ प्रमातमा दी क्रोपी है। इिस आदत करके साडी हाउमें हमेशा काइिम रहिंदी है। पर गुरबाणी सुझाउ दे रही है कि आदत ओसी बणा जिथे मन विच इहि हमेशा गूंजदा रहे:

"जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥
जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१॥" (पन्ना ५२५)

भाव जो कुझ वी हो रहिआ है, सभ कुझ सही है। पर जिथे इहि वेखण सुणन विच आसान लगदा है उथे करन विच उतना ही मुशकिल है। मिसाल वजों कोई इिनसान दरिआ विच डुब रहिआ है, तुसीं उथे समें ते पहुंच जाँदे हो। हुण इहि किवें फैसला कीता जाओ कि उस इिनसान दा डुब जाणा उसदा हुकम है कि उसनूं बचा लैणा उसदा हुकम है। की डुबदे नूं बचाउण विच उसदे हुकम दी उलंगणा वी हो सकदी है? ओसे समे इहि फैसला किस आधार ते कीता जावे। सारा जीवन ही ओसीआँ घटनावाँ नाल भरिआ पइिआ है। सो सही हुकम किथे है? गुरबाणी वलों आवाज़ आई कि सही हुकम हर जीव दे अंदर ही छुपिआ बैठा है। हर जीव दे जनम दे नाल ही इहि हुकम अंदर लिख दिता गइिआ है। इहि ज़रा गहिरा विचार है। कुदरत विच हर सवाल दा जवाब हर हालत विच इिक ही नहीं हो सकदा। जिवें हालात बदल जाणगे तिवें ही जवाब वी बदल जाओगा। जेकर इहि ही हुकम है कि डुबदे नूं बचाउणा ज़रूरी है ताँ जिसदीआँ बाहाँ ही नहीं हन उह की करेगा, जिस नूं तैरना नहीं आँउदा उह की करेगा, जो बिमारी करके इतना कमज़ोर है कि बचाउण जोगी सरीरक शकती ही नहीं उह की करेगा आदि ओसीआँ बुझारताँ हन जो आसानी नाल हल नहीं कीतीआँ जा सकदीआँ। इिस करके गुरबाणी इिस भेद नूं खोलदी है कि हर जीव लई उसदा हुकम अंदर है। उस हुकम नूं सुणन दी शकती पैदा करन दी लोड़ है। अकसर साडे अंदर आपणीआँ ही इिछाँवाँ दा इतना रौला हुंदा है कि उसदा हुकम सुणाई ही नहीं दिंदा अते असीं फैसला आपणी मन मत मुताबिक कर बैठदे हाँ। दूसरी मुशकिल इहि है कि इतनी पुराणी आदत तोड़नी पैणी है जो साडे लहू दे हर कतरे विच रल चुकी है। सो जेकर उसदा हुकम सुण वी जावे ताँ वी असीं उसनूं नज़र अंदाज़ करके आपणी मन भाँउदी गल कर लैंदे हाँ। इिस हुकम बारे होर विसथार विच विचार गुरबाणी अगले अंक विच वी देवेगी।

(अंक २)

गुरबाणी ने गुरसिख लई कुझ बुझारताँ साहमणे रखीआँ हन। हर गुरसिख दा इहि फरज़ बणदा है कि उह आप बाणी नूं पढ़े, समझे, ते फेर उस मुताबिक जीवन नूं बदले। गुरबाणी नूं उपरली जिही निगाह नाल पढ़के जाँ सुणके बुझारत हल नहीं कीती जा सकदी। मिसाल वजों हेठ लिखी तुक वल धिआन दिओ:

"सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥" (पन्ना १२५१)

इिसनूं अकसर इिंज पढ़िआ जाँदा है "सभे जी समाल अपणी मिहर कर ॥" हुण जदों इिसनूं इिस तराँ पढ़ीओ ताँ इिस दे बारे जो प्रचलत विचार है उह इिस तराँ लगदा है जिस तराँ गुरबाणी इहि कहि रही है कि हे प्रमातमा तूं सारिआँ उते आपणी मेहर

कर अते सारिआँ दी संभाल कर। अगर समालि दे लले दी सिहारी नूं बुलाईओ ताँ इसदा मतलब बदल जावेगा। असीं इसनूं पढ़दे हाँ "सभे जी समाल" असली पाठ है "सभे जीआ समाले"। धिआन रहे कि इथे सिरफ "ओड़े" नूं पूरा बुलाउण दा सुझाउ दिता जा रिहा है, सबदाँ दा जोड़ (Spellings) बदलन दा नहीं। साडे पढ़न विचों लले दी सिहारी अते जीअ दा ओड़ा दोवें उड गओ हन जिस करके टराँसलेशन वी विगड़ गई है। इिह तुक बेनती रूप विच नहीं है बलकि शुकराने दे रूप विच है। सो इिह तुक कहि रही है कि उह ही मिहराँ दे घर विच बैठा होइिआ सभ नूं पैदा कर रहिआ है, पाल रहिआ है, अते नाश कर रहिआ है। इिह समालण दी अवसथा है, समालण दा मतलब संभालणा नहीं है। 'समाले' सृशटी दा साजना, सृशटी दा पालणा, सृशटी दा नास करना ते फेर उस सृशटी नूं बनाउणा इस सारे cycle नूं 'समालणा' कहिआ गइिआ है। पर इिह सोचण दी लोड़ है कि की उस ने साडे कहिण नाल सभ कुझ करना है? जे असीं नहीं कहाँगे ताँ की उह नहीं करेगा? की उस बिनाँ होर वी कोई करन वाला है? इिह गुरबाणी दीआँ गहिराईआँ हन, इिस विच सिहारी लग, मातर, अउंकड़, दुलैंकड़ उहनाँ नूं धिआन नाल वेखणा है। उह औंवे नहीं पाओ गओ। अज ताँ मशीनाँ नाल किताबाँ लिखीआँ जाँदीआँ हन। उहनाँ दिनाँ विच ताँ मशीनाँ वी नहीं सन। हथ नाल कापीआँ बणाईआँ जाँदीआँ सन। जेकर सिहारी लगाई है, अउंकड़ लगाइिआ है ताँ उहनाँ दे कुझ खास मकसद हन। सिरफ विआकरन (गरामर) ही नहीं है बलकि अधिआतमिक इिशारे वी हन, जिवें कि अउंकड़ इिक तराँ दा हाईलाईटर (Highlighter) है। जिथे वी आउंकड़ है उस शबद दा आम मतलब नहीं लिआ जा सकदा बलकि इिक खास गहिरा भावअरथ हुंदा है। जिवें कि जेकर सुखु दे खखे हेठ अउंकड़ है ताँ इिह दुनिआवी सुखाँ वल इिशारा नहीं बलकि अधिआतमिक सुख वल इिशारा कीता जा रहिआ है। इिस करके गुरबाणी पढ़न लगिआँ जाँ विचारन लगिआँ जलदी नहीं करनी चाहीदी। इिह गल हमेशाँ याद रखणी चाहीदी है कि इिह धुर की बाणी है, इिह पूरन ब्रहम गिआन है अते इिस दा कुझ लाभ ताँ ही हो सकदा है जेकर असीं इसनूं अधिआतमिक पहिलू तों पढ़ीओ अते विचारीओ।

"किव सचिआरा होईओ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥"

इिक वार फेर याद दिलावाँ, इिसनूं जपु बाणी दी पहिली पउड़ी नहीं कहिणा चाहीदा। इिह असाँ ग़लत रिवाज पा लिआ है, आसा दी वार दीआँ ताँ पउड़ीआँ हन पर जपु बाणी दे पदे हन, अंक हन। इिह अंक दसण लई ही नंबर लगाओ गओ सन अते उह Numbering System ओसा है कि उस विच कोई वी शबद इिधर-उधर नहीं हो सकदा। गुरबाणी विच जिथे वी पउड़ी आई है उसदे उपर साफ हैडिंग लिखिआ गइिआ है। इिह साडी मन मत है कि असाँ इिह रिवाज आपणे कोलों ही बणाके मशहूर कर दिता है।

जपु बाणी दे पहिले अंक विच इिस दुनीआँ दे जो अहिम सवाल हन, उह पेश करके उहनाँ दा संखेप विच जवाब दिता गइिआ है। उह सवाल ("किव सचिआरा होईओ किव कूड़ै तुटै पालि ॥") इिह है कि की मेरी ज़िंदगी इिस तराँ ही रहेगी? की ज़िंदगी दा मकसद सिरफ इितनाँ ही है के जंमे ते मरे? थोड़ा जिहा मेला वेख लइिआ, थोड़ीआ जिहीआँ खुशीआँ कर लईआँ, थोड़े जिहे हासे कर लओ, थोड़ा जिहा दुख पा लइिआ, थोड़ा जिहा चुप रहे, थोड़ा जिहा रौला पा लइिआ, की जीवन इिही है? मैं कौण हाँ, मैं किथों आइिआ हाँ, मैं किथे जाणा है? करम करना मैं बंद कर नहीं सकदा। की चंगा करम कीता होइिआ वी जनम देंदा है अते माड़ा करम कीता वी जनम देंदा है? ताँ इिह जंमन मरन दा चकर किंज तोड़िआ जावे? संसार लई इिह समसिआ इिक बुझारत बणके रहि गई है। अजे तक सारे धरमाँ ने इिहो गल कही है कि तूं चंगे करम करिआ कर, बस। पछम विच मूसा (Moses) ने दस Commandments दितीआँ सन। उसने वी इितना ही कहिआ। उस तों बाद Bible आई, उसने वी इिही कहिआ। पूरब विच गीता वी कहि चुकी है कि तूं करम योगी हैं सो चंगे करम कर, कुरान ने वी इिही कहिआ कि तूं चंगा मुसलमान बण। सिख जगत विच पहिला ओसा पैगंबर धरती ते आइिआ जिसने कहिआ कि चंगे करम करन नाल चंगा जीवन ताँ मिल जावेगा पर मुकती नहीं है। करम दे विच इिको Quality दिती है उह सिरफ सरीर रूपी कपड़ा दे सकदा है, कपड़ा चंगा हो सकदा है हंढण वाला हो सकदा है। चंगा कपड़ा मिल गइिआ, चंगे करम कीते सन, नहीं चंगे करम कीते क पड़ा माड़ा मिल जाओगा पर करम तुहानूं मुकती नहीं दिवा सकदा। गुरबाणी ने कहिआ कि इसदा मतलब इिह नहीं कि मुकती पाई ही नहीं जा सकदी, उस दा वी तरीका है। इिह नवाँ रसता जो कि सारी धरती दे उते किसे ने दसिआ ही नहीं सी, पहिली वारी दुनीआँ विच पेश कीता गइिआ। जेकर जनम मरन दे चकर विचों बाहर निकलन दा चाओ है ताँ तुसीं जीवन दे विचों बाहर निकल सकदे हो।

गुरबाणी ने फुरमाइिआ "हुकमि रजाई चलणा", बस इिह ही भेद है। जेकर जीवन उसदे हुकम विच रहिके गुज़ारिआ जावे ताँ इिह झूठ दा परदा आपणे आप ही गिर जाओगा। हुण झट ही सवाल पैदा हो गइिआ कि जिहड़ा तुसाँ हुकम कहि दिता है, उह की है, जाँ किथे है? इिस सवाल दा जवाब आइिआ कि "नानक लिखिआ नालि ॥" भाव कि उह हुकम तेरे अंदर ही नाल लिख दिता गइिआ है। उह हुकम तेरे अंदर छुपिआ बैठा है। हुण तूं उस हुकम नूं बुझणा है 'नानक हुकमै जे बुझै"। इिह है बुझारत, इिह मिसटरी (mystery) नहीं। खिआल करना mystery उस नूं कहिआ जा सकदा है जो कदी हल ही नहीं हो सकदी। mystery

दा ताँ सिरफ मज़ा ही लिआ जा सकदा है। पर इस हुकम दी पालना किस तराँ हो सकदी है, इह बुझारत हल हो सकदी है। हुकम की है अते किवें पहिचानिआँ जा सकदा है उसदे कुझ विसथार लई अगला अंक शुरू हो गइआ:

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥
(हर चीज़ जिस हुकम मुताबिक बणदी है उसनूं संपूरन तौर ते बिआन नहीं कीता जा सकदा। हर जीव उसदे हुकम मुताबिक पैदा हुंदा है अते उसदे मुताबिक ही सनमान प्रापत करदा है। उचा, नीवाँ, सुख, दुख सभ कुझ उसदे हुकम विच है। कई दाताँ नाल भरे पओ हन अते कईआँ नूं भटकण दा हुकम है। मुकदी गल कि कुझ वी उसदे हुकम तों बाहर नहीं है। जो इस बुझारत नूं बुझ लैंदा है उह "मैं हाँ" कहिण जोगा नहीं रहिंदा। उस विचों "मैं" दी भावना ख़तम हो जाँदी है।)

"हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥"

गुरबाणी विच थाँ-थाँ ते बुझारताँ हन, जिवें कि हुकम दी गल शुरू करके नाल ही कहि दिता है 'हुकम ना कहिआ जाई'। पर जे हुकम कहिआ ही नहीं जा सकदा ताँ इस बारे गल ही छेड़न दी की लोड़ है? दरअसल इथे इशारा कीता गइआ है कि हुकम सही रूप विच कहिआ ते नहीं जा सकदा, पर उस बारे कुझ इशारे कीते जा सकदे हन। जिस तराँ इक आशिक आपणी महिबूब दी ख़ूबसूरती बिआन करन दी कोशिश करदा है ताँ उह कहिंदा है कि उस दे वालाँ विच मसिआ आ जाँदी है, चन्न छुप जाँदा है। जिवें शिव कुमार बटालवी ने कहिआ है "तेरे वालाँ विच मसिआँ नूं वेख के किन्ने चन्न डुब के मरे"। की वाकिआ ही दुनीआँ मरदी पई है? की वाकिआ ही चन्न वालाँ विच छुप सकदा है? ओसा ते बिलकुल ही नहीं है, पर उह उसदी ख़ूबसूरती नूं बिआन करन दे लई इक शबदाँ दी तसवीर बणा रहिआ है किउंकि उह बेवस है। उह किस तराँ दसे कि जिन्हाँ अखाँ नाल उह आपणी महिबूब नूं वेख रहिआ है बाकी दुनीआँ वेख ही नहीं रही। जेकर सरीरक खूबसूरती इस धरती ते इक कवी दे लई बिआन करनी इतनी मुशकल हो जाँदी है ताँ की तुसीं इक ब्रहम गिआनी दी अवसथा नूं समझ सकदे हो जिहड़ा कि प्रमातमा नूं देख रहिआ है ते उसनूं बिआन करन दी कोशिश कर रहिआ है? इस लई उह कहिंदा है कि मैं तुहानूं कुझ इशारे कर देंदा हाँ कि जो तेरे नाल लिखिआ होइआ हुकम है, उह किस तराँ दा है।

मिसाल वजों इक घर वाली ने घर दे विच बड़े पिआर नाल माँहाँ दी दाल बणाई है, नाल नरम नरम रोटीआँ लाह दितीआँ हन। इनसान सवाद सवाद विच ज़िआदा खा गइआ, हुण शाम नूं मंजे ते लंमाँ वी नहीं पइआ जाँदा। की हुण किसे डाकटर नूं पुछण दी लोड़ है कि मंजे ते लंमाँ किउं नहीं पै सकदा? किसे नूं माँहाँ दी दाल चंगी लगदी है, जिन्नी मरज़ी खा जाओ उसनूं कुझ वी नहीं हुंदा। किसे नूं माँहाँ दी दाल खाँदिआँ ही ढिड विच दरद हुंदी है। भाव कि इह सभ कुझ हर इक दे अंदर है। इह मिसाल ताँ बड़ी आसान है पर किसे दे घर बाराँ बचे भजे फिरदे हन ते किसे दी गोद विच इक वी नहीं है। की इह उसदी बेइनसाफी है? बिलकुल नहीं, इह उसदा हुकम है। इसदे पिछे कोई राज़ है। इह ते हो सकदा है कि असीं उस भेद नूं नहीं जाणदे पर है इह उसदा हुकम ही। किसे नूं सारी उमर सिर दरद नहीं होई, कोई जंमदा ही कैंसर दा बिमार है। इह नाल लिखिआ होइआ उसदा हुकम है। किसे दी खूबसूरती तों अखाँ नहीं थले उतर दीआँ। किसे वल वेखण नूं जीअ नहीं करदा, इह उसदा हुकम है। सभ कुझ तेरे नाल लिखिआ आइआ है, तूं की खाणा है, तूं की पीणा है, तूं किस तराँ पहिनणा, तूं किस तराँ सौणा, तूं किस तराँ वरतणा। तूं समाज विच किस तराँ रहिणा, गुरू नाल गल किस तराँ करनी है, प्रमातमा नूं किस तराँ मिलणा है, इह सारा तेरे अंदर लिखिआ है। बस उह तैनूं अंदर नज़र नहीं आउंदा किउंकि,

"ओका सेज विछी धन कंता ॥ धन सूती पिरु सद जागंता ॥ पीओ मदरो धन मतवंता ॥ धन जागै जे पिरु बोलंता ॥" (पन्ना ७३७)

गुरबाणी ने इशारा कीता कि प्रभू पती ताँ सदा ही जागदा है, उसनूं मिलण विच कोई अड़चण नहीं है पर जीव इसतरी ही इक गूड़े नशे विच सुती पई है। किसे नूं जवानी दा नशा हो गइआ, किसे नूं दौलत दा नशा हो गइआ, किसे नूं आपणी ताकत दा नशा हो गइआ, किसे नूं आपणे भैणाँ-भरावाँ दा नशा हो गइआ है:

"किस ही धड़ा कीआ मि" सुत नालि भाई ॥ किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥ किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥" (३६६)

हर कोई आपणे-आपणे नशे विच सौं गइआ है। उह रोज़ उठाउंदा है, अवाज़ाँ दिंदा है। उह कदी गुरू नानक देव जी दे मूंह ते बहि जाँदा है, कदे फरीद जी दे मूंह ते बहि जाँदा है, कदी उह कबीर जी दे मूंह ते बहि जाँदा है अते आवाज़ाँ दिंदा है

कि भोलिआ इिह की कर रहिआ हैं। पर असीं उह आवाज़ सुनणी ही नहीं, घूक सुते होओ हाँ, जागण दी तड़प ही नहीं।

"साचे नाम की लागै भूख ॥
उतु भूखै खाइि चलीअहि दूख ॥" (पन्ना ६)

जे भुख ही नहीं है ताँ खाणा सानूं किसे ने किउं देणा है। जदों होर रसाँ दे नाल सारा जीवन भरिआ पइिआ है ताँ इिस रस नूं लभण दी की लोड़ है?

"रसु सुइिना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥ रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥ ओते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥" (पन्ना १५)

कन्न रस, जीभा दा रस, चमड़ी दा रस, नक दा रस, अंखाँ दा आदि सारे छडण नूं जीअ नहीं करदा इिस करके जिहड़ा हुकम अंदर है उह सुणाई नहीं दिंदा। गुरबाणी ने फरमाइिआ कि हुकम ताँ तेरे नाल लिखिआ होइिआ है, इिस हुकम करके ही सारी सृशटी बणी है। इिसनूं सारा दसिआ नहीं जा सकदा किउंकि हुकम उतना ही विशाल है जितनी विशाल इिह सृशटी है। हर इिक दी आपणी-आपणी ज़िंमेवारी है। सूरज दी ज़िंमेवारी है कि इितनी तपश पहुंचाउणी है, चन्न दी ज़िंमेवारी इितनी ठंड है, धरती दी ज़िंमेवारी है उसने माँ वाँगू पालणा है। किस-किस दा बिआन कीता जाओ। किसतर्ह़ाँ दसिआ जाओ कि हुकम किथे-किथे फैलिआ होइिआ है। सारा कहिआ ही नहीं जा सकदा।

"हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥"

इिस तुकनूं हुकमी होवनि जी ना पड़्हिआ करो बलकि जीआ करके पड़्हिआ करो भाव कि अगे लगे 'ओड़े' दा खिआल करो। जीव दा आउणा ते जीव दा जाणा सारा इिस संसार विच सुख दुख दा कारन बण गइिआ है। जे कोई आइिआ ताँ असाँ खुशी मना लई है जे कोई गइिआ है ताँ असाँ दुख मना लइिआ है। ओस धरती उ᷃ते ओसे वी लोक हन जिहड़े जद जीव आउंदा है ताँ उह दुख मनाउंदे हन अते जदों जाँदा है ताँ उह खुशी मनाउंदे हन। भाव कि उह साडे तों बिलकुल उलट करदे हन। उहनाँ दा विशवास है कि जदों प्रमातमा नालों आतमा विछड़ गई है ताँ बड़ी दुख दी गल है। पर जदों जीव मर जाँदा है ताँ उह कहिंदे हन कि वापस मिल गइिआ है इिह बड़ी खुशी दी गल है। हर इिक दा वेखण दा नज़रीआ अलग है पर इिथे गुरबाणी इिक होर विचार पेश करदी है।

इिह कहिंदी है कि जीव इिथे आउण करके नहीं विछड़िआ, विछड़िआ है जदों उसने आपणे आप नूं प्रमातमा नालों अलग समझ लिआ है, जदों "मैं" दा परदा ओड़्ह लिआ है। विछड़िआ प्रभू करके नहीं है, विछड़िआ आपणी ज़िद करके है, प्रमातमा ने किसे नूं आपणे नालों नहीं विछोड़िआ। उह ते सगों साडे सभदे अंदर बैठा होइिआ है। इिसे करके फरीद जी ने हथ खड़्हा करके दुनीआँ नूं कहिआ कि भोलिओ इिह मंजिल दूर किते नहीं है,

"आजु मिलावा सेख फरीद
टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥" (पन्ना ४८८)

भाव कि अज ही मिलाप हो सकदा है जेकर साडे विचार जो कूंजाँ वाँग बाहर उडदे फिरदे हन उह रुक जाण। मन विच जिन्हाँ विचाराँ ने अंदर शोर मचाइिआ होइिआ है, इिहनाँ नूं बंद करके मन नूं इिक थाँ ते टिका ताँ प्रमातमा हुणे ही तेरे साहमणे है। तैनूं इिह गल सुणाई दिंदी ही नहीं, हुकम नूं समझण दे लई अंदर झाती मारनी पवेगी, बाहर जा के तैनूं किसे नूं पुछण दी लोड़ नहीं, किउंकि हुकम तेरे नाल लिखिआ होइिआ है, हुकम तेरे अंदर है। उसदी कुदरत विच सारे जीव उसदे हुकम मुताबिक हन अते हर इिक नूं इिह वडिआई उसदे हुकम मुताबिक है। अगर कोई सरीर इिनसान दा है ते कोई सरीर जानवर दा है ताँ इिह उसदे हुकम करके है, किसे दी शिफारश करके नहीं है।

"हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥"

उसदे हुकम मुताबिक हर तर्ह़ाँ दे जीवाँ विच वी कोई उचा ते कोई नीवाँ है। पथराँ विच कोइिला वी है अते हीरा वी है। भाँवें दोंवे ही पथर हन पर दोंवाँ दी कीमत विच बहुत अंतर है। कोइिला पैसिआँ दे मुल विच है अते हीरा लखाँ दे मुल विच है। पंछीआँ विच गिलझ (ड़ुलटुरड़) वी है अते हंस वी है। इिक मरे होओ जानवर दीआँ हडीआँ तों बचिआ होइिआ मास नोचके खाँदीआँ हन ते इिक दुध ते पाणी नूं अलग करके खाँदा है। जानवराँ विच सूर वी है अते शेर, घोड़ा, अते गाओ वी है। इिनसानाँ

विच हिटलर, नादर शाह, अते औरंगज़ेब वरगे हन अते भगत कबीर, शेख फरीद, अते श्री गुरू गोबिंद सिंघ वी हन। पर इहनाँ सभ दीआँ बदीआँ अते खूबीआँ सभ उसदे हुकम विच हन। कंडा अते फुल दोंवे उसदे बणाओ होओ, उसदे हुकम विच आपणा आपणा पारट (पउरट) अदा कर रहे हन। कंडे दे हिसे जो खरवापन है, जो यातरीआँ नूं दुख देण वाली आदत है, इिह प्रमातमा दी ही देण है, उसने जाण बुझ के आपणे आप नूं ओसा नहीं बणाइिआ। भगत कबीर जी उसदे प्रसाद दा सदका ब्रहम गिआन नूं प्रापत हन, भाव की हर चंगिआई अते हर बुरिआई उसे दी ही बणाई होई कुदरत दे हिसे हन, किउंकि रात बिनाँ दिन नहीं अते दिन बिनाँ रात नहीं। इिह ही उसदी लील्हा है। जीवन दो ही पहिलूआँ विच चलदा है। सुख ते दुख उसे दे बनाओ होओ हन। इिह इिक जीवन दे दो पासे हन, जिस तृ्राँ इिक पासे वाला सिका नहीं हो सकदा इिसे तृ्राँ इिक पहिलू नाल जीवन दी कहाणी नहीं चल सकदी। इिह सभ कुझ उसदा बणाइिआ होइिआ निज़ाम है।

"इिकना हुकमी बखसीस इिकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥"

भगत जनु वी हन अते माइिआ विच डुबे होओ वी हन, इिह उसदे हुकम विच खेड्ह हो रही है। भगत जनु उसदी क्रिपा दे पातर बण चुके हन पर माइिआ दा आनंद भोगण वाले अजे जूनाँ विच भउंदे पओ हन। इिह उसे दी बखशिश है कि भगत जनाँ दी घाल थाइि पै गई है अते उह प्रवान हो गओ हन। इिह उसे दा हुकम है कि माइिआ भोगण वालिआ नूं आवण जाण दे चकर विच घुंमणा पओगा। इिह खेल्ह किसे आम इिनसान दा बणाइिआ होइिआ नहीं है कि इिसते किंतू कीता जा सके जाँ इिस विच कोई तबदीली लिआँदी जा सके। इिह हुकम अटल है, सदीवी है।

"हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइि ॥"

भाव कि प्रमातमा दी बणाई होई सारी काइिनात विच कुझ वी उसदे हुकम तों बाहर नहीं है। उसदी दुनीआँ विच अनहोणी शबद है ही नहीं। जो वी होइिआ है उसदी मरज़ी मुताबिक ही होइिआ है। इिसे करके गुरबाणी ने गवाही दिती है:

"चिंता ता की कीजीओ जो अनहोनी होइि ॥
इिहु मारगु संसार को नानक थिरु नहीं कोइि ॥" (पन्ना १४२९)

असीं इिह शलोक अकसर किसे दे अकाल चलाणे समें पड्हदे हाँ पर इिसदा भाव बहुत गहिरा है। गुरबाणी इिशारा कर रही है कि इिस सृशटी विच कुझ वी अनहोणी नहीं हो सकदी। जो वी है उह उसदे हुकम विच ही है। अनहोणी शबद सिरफ इिनसान दे दिमाग़ दी आपणी ही काढ है, पर उसदी दुनीआँ विच इिह अखर है ही नहीं। इिक इिक पता वी उसदे हुकम दे बाहर नहीं हिल सकदा।

"नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइि ॥२॥"

इिस तुक दा प्रचलत पाठ है: 'हउमै कहै ना कोइि'। इिह पद छेद साडे कोलों सही नहीं होइिआ। "हउमै" शबद दे दो हिसे हन पहिला है 'हउ' जिसतों भाव है हंगता, हंकार; अते दूजा है "मैं" जिसतों भाव है करता होण दा अहिसास, जाँ करता दा भाव। इिह दोवें अखर अलग करन नाल इिहना दा गहिरा भाव खुल्ह जाओगा। आसा दी वार विच गुरबाणी ने हंगता दी लिसट दिती है:

"सलोक मः १ ॥ हउ विचि आइिआ हउ विचि गइिआ ॥ हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइिआ ॥ हउ विचि खटिआ हउ विचि गइिआ ॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुन्न वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ हउ विचि भरीओ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइिआ हउ विचि छाइिआ ॥ हउमै करि करि जंत उपाइिआ ॥ हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ नानक हुकमी लिखीओ लेखु ॥ जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥" (पन्ना ४६६)

इिथे सारी 'हउं' दी गल चल रही है। जिस दिन हुकम दी गल समझ विच आ गई, उस दिन इिह बुझारत वी बुझ लई जाओगी कि हाउमें किस तृ्राँ बणदी है। उसदा पहिला हिसा है "हउं" अते दूजा हिसा है 'मैं'। "मैं" तों भाव है करता दी भावना, मैं इिह करदा हाँ दा अहिसास, इिक तृ्राँ दी identity ('I am') सो जेकर जीव "सभ कुझ हो रिहा है, कीता नहीं जा रिहा" दी भावना नाल करम करदा है ताँ हंकार नहीं बणदा। "मैं करता हाँ" दा अहिसास इिक भुलेखा ही है। संसार विच 'मैं' नूं सिरफ समाजिक

सहूलता लई बणाइआ गइआ सी, पर 'मैं' है नहीं, इक इक लिलुसीन है। इनसान पैदा होइआ ताँ इक सहूलीअत लई उसदा नाम रख दिता गइआ। पर नाम ताँ इनसान नहीं है, नाम ते इक निशानी है, इक (शेमबोल) है, इह इक reflection है, इक साइआ है, अते साओ नूं ही सही समझ लिआ गइआ है। जिन्नाँ चिर इह सचाई याद रहे उतना चिर 'हउं' नाल नहीं जुड़दी, हंगता नाल नहीं जुड़दी। पर जिस वेले 'हउं' ते 'मैं' जुड़ जाँदे हन, फिर उह गल जीव दे हिरदे विच गहिरी चली जाँदी है। इस करके बाणी ने इशारा कीता सी: "नानक हुकमै जे बुझै त हउ मै कहै न कोइ।" फिर आपणे आप नूं कहिण वाली गल नहीं किउंकि हुकम दी समझ आ गई है कि जो हो रिहा है उह ही कर रिहा है। इह केवल लगदा है कि ओथे बैठा इनसान कुझ कहि रिहा है अते उथे बैठा कोई सुण रिहा है। जदों उह बुझारत बुझी जाँदी है ताँ पता लगदा है कि:

"कथता बकता सुनता सोई ॥
आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥" (पन्ना १५२)

हुकम समझ लिआ जाँदा है ताँ इह जिहड़ा 'मैं' दा 'हउं' दे नाल बंधन है उसदा रिशता टुट जाँदा है। हुण 'मैं' कहिण वाला कोई नहीं रहि गइआ। हुण 'हउं' ग़ाइब हो ही गई, किउंकि हुकम बुझिआ गइआ, बुझारत बुझ लई गई ।

(अंक ३)

पिछे असीं हुकम दे बारे कुझ गलाँ विचारीआँ सन। गुरबाणी ने उथे फैसला दिता सी "नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥" इिह इिक बड़ी सवादली बुझारत है। पहिले अंक विच सिखिआ आई कि उसदे हुकम विच जीवन गुज़ारना शुरू कर अते दूजे अंक विच फैसला दे दिता कि उसदे हुकम दे बाहर कुझ हो ही नहीं सकदा। जेकर दूजे अंक दा फैसला अटल है ताँ फिर पहिले अंक दी सिखिआ दा की मतलब? जद कोई वी जीव उसदे हुकम तों बाहर जा ही नहीं सकदा ताँ फिर इिह किउं कहिणा कि उसदी रज़ा दे मुताबिक चल? इिह ब्रहम गिआन दीआँ अड़ाउणीआँ हन इिसे करके इिसनूं इिक बुझारत (हुकमै जे बुझै) कहिआ गइिआ है। आओ इिस बुझारत नूं हल करन दा यतन रलके करीओ।

असीं इिह सारे समझ चुके हाँ कि जीवन प्रमातमा दा बणाइिआ होइिआ इिक खेलु है, इिह इिक लीलृा है, इिह इिक डरामा है। हर खेलु दे खिलाड़ी लई कुझ असूल हुंदे हन। जेकर खिलाड़ी खेलु दे असूलाँ नूं तोड़दा है ताँ उसनूं कोई न कोई जुरमाना भरना पैंदा है। जेकर उह खेलु दे आसूलाँ दी उलंघणा कीते बग़ैर खेडदा है ताँ उसनूं कोई न कोई इिनाम हासल हुंदा है खेलु दा असूल तोड़ना जाँ मन्नणा उसदी आपणी मरज़ी ते निरभर है। इिस विच खेलु नूं बनाउण वाला कोई हिसा नहीं पा सकदा पर इिनाम अते सज़ा दोंवे ही खेलु बनाउण वाले दे नीयत कीते होओ हन सो खिलाड़ी भावे कुझ वी चुणे, खेलु बनाउण वाले दी मरज़ी दे उलट कुझ नहीं चुण सकदा। हर असूल, हर जुरमाना, अते हर इिनाम खेलु दे करता ने पहिलाँ ही चुणके सभ्नूं दस दिता होइिआ है। इिसेतृाँ ही प्रमातमा ने जीवन दा खेलु रचके उसदे कुझ असूल बणा दिते हन। हर जीव नूं पूरी अज़ादी है कि उहनाँ असूलाँ मुताबिक जो मरज़ी चुण लवे। इिसनूं अंगरेज़ी भाशा विच (ढरइइदोम ोड छहोचिइ) जाँ चोण दी आज़ादी कहिआ जाँदा है। इिनसान उह करम वी चुण सकदा है जिस नाल उह प्रमातमा दी नदर दा पातर बण सके अते उह करम वी चुण सकदा है जिस नाल उस माइिआ विच होर गहिरा फस जावे। पर उह दोवें करम अते उहनाँ दा फल उसे दे ही नीयत कीते होओ हन सो कोई जीव उसदे डीज़ाइिन तों बाहर नहीं जा सकदा। सो जेकर माइिआ दी निगाह नाल वेखीओ ताँ हर जीव नूं हर तृाँ दी चोण करन दी पूरी आज़ादी है सो पहिले अंक विच गुरबाणी सिखिआ देंदी है कि ओसी चोण कर जिस नाल उसदे नेड़े हो सकें। उस हुकम नूं जो तेरे नाल लिखिआ है पहिचान अते उस मुताबिक जीवन दीआँ चोणा कर। पर जेकर अधिआतमिक निगाह नाल उहनाँ चोणा नूं देखीओ ताँ सारीआँ ही उसदे हुकम मुताबिक हन, इिक वी फैसला ओसा नहीं कीता जा सकदा जो उसदे हुकम दे उलट होवे। मिसाल वजों जो वकत गुज़र गइिआ है उसनूं इिनसान चाहे वी ताँ वापस नहीं कर सकदा। प्रमातमा ने इिह चोण बणाई ही नहीं। इिह उसदा हुकम है कि जो चोण कर लई गई है उसनूं वापस नहीं कीता जा सकदा, उसदा फल जो वी नीयत कीता गइिआ है उह भुगतना ही पवेगा। इिह उसदा हुकम है। जीव इिह नहीं कहि सकदा कि हुण उसनूं समझ आ गई है सो उह इिस चोण नूं वापस लैणा चाहुंदा है। सो पहिले अंक विच सही चोण करन दी राओ दिती गई है अते दूसरे अंक विच याद दिलाइिआ गइिआ है कि उसदे बणाओ कानूंनाँ नूं कोई जीव तोड़ नहीं सकदा। इिस विचार नूं तीसरे अंक विच होर खुलासा करके दसिआ है कि इिह जाणदे होओ कि उह बेअंत है, जीव उसदे गुणा दा वरनन करन दी कोशिस नहीं छडदा। हुण जरा अगले पदे वल धिआन देईओ:

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाओ राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

(उसदे गुणा नूं उह गावे जिस विच ओसी शकती है, भाव उसदे गुण गाओ ही नहीं जा सकदे। पर जिस जीव ने वी उसनूं गाइिआ उसने आपणे किसे सवारथ करके ही गाइिआ है। किसे नूं उस कोलों दाताँ चाहीदीआँ हन, किसे नूं सोहणे गुण चाहीदे हन, किसे नूं कठिन गिआन दी शकती चाहीदी है, किसे नूं मौत दा डर है अते किसे नूं जनम मरन दे फेर दा फिकर है, कोई उसनूं आपणे तों अलग समझदा है अते कोई आपणे ही अंदर छुपिआ समझदा है। अनेकाँ परकार नाल उसनूं गाइिआ गइिआ है जिसदा कि कोई अंत ही नहीं। उह जुगाँ जुगाँ तों बेशुमार दाताँ वंड रिहा है जिन्नृाँ नूं लैण वाले ही हार जाँदे हन। सभ निज़ाम उसदे हुकम विच है जो कि आपणी इिस किरत विच सदा ही बेपरवाह अते खेड़े विच रहिंदा है।)

जेकर इिहना तुकाँ नूं उपरली निगाह नाल पढ़ीओ ताँ इिहना दोवें गलाँ दा आपस विच सबंध दिखाई नहीं देवेगा किउंकि गल 'हउमै' दी चल रही सी ते अगे तुकाँ आ गईआँ हन 'गावै को ताणु'। पहिले अंक विच दसिआ कि तूं जपणा है, अगे दसिआँ कि किस नूं जपणा है। फिर दसिआ कि अज तक जो वी परम अवसथा हासल करन दे रसते दसे गओ हन उह की हन अते उहनाँ विच की खतरे हन, जिवें कि पवि"ता दी निशानी सिरफ सरीर दी 'सुचता' बण गई (तीरथ इिशनान)। शाँत रहि के भगती करनी (धिआन मारग) सिरफ मोन वरत बणके रहि गइिआ, गिआन मारग सिरफ विचाराँ करनीआँ ते बहिसाँ करनीआँ बणके रहि गइिआ, संजम रखणा (जोग मत) सिरफ भुखाँ कटणीआँ बणके रहि गइिआ। ग्रहिसथ दे विच रहिंदिआँ होइिआँ प्रमातमा तक पहुंचण लई

कोई सही साधन ही न बचिआ।

गुरबाणी ने इस समसिआ दा हल दसिआ कि 'हुकम' नूं समझण दी कोशिश कर ते हुकम दे मुताबक चलणा सिख। इह पहिला सबक सी। उसतों बाद इह दसिआ कि हुकम असल विच की है इह पूरी तराँ दसिआ नहीं जा सकदा पर थोड़ा जिहा इशारा कीता जा सकदा है। जिस दिन तूं उस इशारे नूं समझ के हिरदे विच वसाइआ ते हुकम दा भेद तैनूं खुलिआ उस दिन तों तेरी हंगता (हंकार) दा जिहड़ा तेरे उते बोझ है उह घटणा शुरू हो जाओगा। 'हउं' ते 'मैं' दा सबंध (link) टुट जाओगा। इसतों अगे हुण 'हउं' ते 'मैं' दा रिशता तोड़न दा साधन की है उसदा होर खुलासा कीता जाओगा। गुरबाणी फरमा रही है कि बहुत सारे लोकाँ ने इस सबंध नूं तोड़न दीआँ कोशिशाँ कीतीआँ हन। इस दीआँ कुझ मिसालाँ देण लई अगला अंक शुरू हो गइआ।

तो शबद आइआ 'गावै को तान', इथे सानूं भुलेखा पै गइआ किउंकि अखर है 'गाउणा' ते सारे तरजमे (translations) कीते गओ हन कि कोई तैनूं इस तराँ गा रिहा है कोई उस तराँ गा रिहा है हालाँकि इथे गाउण दी कोई गल ही नहीं हो रही। इह बाणी दे भेद हन जो कि बाणी विचों ही खोज करन ते लभदे हन। उस हंगता नूं तोड़न दे लई जाँ हउमै तों बचण दे लई जो तराँ-तराँ दे तरीके अपणाओ गओ सन उहनाँ लई अखर वरतिआ गइआ है 'गावहि'। इह आम कहावत है कि जद कोई इको गल नूं बार बार दुहराई जाओ ताँ किहा जाँदा कि उह ते बस इको ही गीत गाई जाँदा है। इथे जो गाउणा है उस दी परीभाशा बाणी ने इस तराँ दिती है:

सलोक महला ९ ॥ गुन गोबिंद गाइओ नहीं जनमु अकारथ कीनु ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥
(पन्ना १४२६)

भाव तूं उसनूं गाइआ ही नहीं, इस तराँ नाल जनम बेकार चला जा रिहा है। जो अज कल सवेरे शाम वाजे तबले कुटे जा रहे हन उसनूं गुरबाणी गाउणा नहीं मन्नदी। अगली तुक विच गुरबाणी सही गाउण बारे इशारा करदी है। अगला शबद है 'कहु' भाव कि उस दे शबद नूं बार-बार कहिणा, उह है गाउणा उह है भगती 'कहु'। की कहाँ? जिहड़ा अखर नानक ने किहा सी 'कहु नानक' किउंकि इह ही हरी दा सही भजन है, 'हर भजु मना'। उस दे इक अखर नूं कमाउण नूं गाउणा किहा है। और किस ढंग नाल कमाउणा? 'जिह बिधि जल कउ मीनु'। जिस तराँ मछली दी मजबूरी है कि उह पाणी विचो इक सैकंड (second) वी बाहर नहीं रहि सकदी। जेकर जीव इसतरी इस तराँ नाल गुण गाउण दे काबल हो जाओ ताँ कि जे उसनूं इक वार वी वाहिगुरू कहिणा भुल जाओ ताँ उसदी जान निकल जाओ ताँ इह उसदे सही गुन गाउणे कहिला सकदे हन। इसे विचार बारे कबीर जी ने किहा सी:

"जब लगु तागा बाहउ बेही ॥
तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥" (पन्ना ५२४)

भाव कि "मैं" जिस वेले खडी नूं ताणा-पेटा पाउंदा हाँ ताँ इधरों खडी नूं सट मारदा हाँ ताँ राम कहि हो जाँदा है, जद उधरों सट मारदा ताँ राम कहि हो जाँदा है। पर जदों उस नाली विचों धागा मुक जाँदा है ते मैनूं सूई नूं धागा पाउणा पैंदा है। जिस वेले सूई दी छोटी जिही मोरी दे विच मैं धागा पाउंदा (बाहउ = बहाउना) ताँ मैनूं साह रोकणा पैंदा है। सुआणीआँ इस गल नूं जाणदीआँ हन कि जदों धागा बारीक सूई विच पाउण लगीओ ते जे साह लईओ ताँ हथ कंब जाँदा है। इस करके साह नूं रोक के नीझ लगा के धागा पाउणा पैंदा है। कबीर जी फुरमाँदे हन कि मैनूं कुझ सैकंड लई जदों आपणा साह रोकणा पैंदा है ते मेरी जान निकल जाँदी है किउंकि "मैं" राम नहीं कहि सकदा, मेरा धिआन सूई दी मोरी विच है, प्रमातमा विच नहीं रहि जाँदा। इह है 'जिह बिधि जल कउ मीनु' दी अवसथा। दूसरे अंक विच गुरबाणी ने हाउमें वल इशारा कीता सी अते तीसरे अंक विच जो 'हउ' ते "मैं" दा रिशता तोड़न दी कोशिश कीती गई सी उस वल इशारा कर रही है।

लोकाँ ने उस नूं गाइआ है पर इह उस दी भगती नहीं है किउंकि हर इक ने 'मैं' पहिलाँ रख लई जैसे कि मैं भगती करन लगा हाँ। प्रमातमा नूं पाउण लई जेकर 'मैं' पहिलाँ रखी गई ताँ जिस नूं मारना सी उही अगे लग के तुर पई है। की मेरे कोल भगती करन दी शकती है? की "मैं" आपणी शकती दा सदका भगती कर सकदा हाँ? 'ताणु' दा मतलब है शकती (energy), कुवत, हिंमत। पहिला कदम ही ग़लत चुकिआ गइआ। जिसने वी भगती शुरू कीती, उसने पहिलाँ इह धार लिआ कि 'मैं' भगती करन लगा हाँ। उसदे मन विच इह नहीं आइआ कि उह मेरे कोलों भगती करवा रिहा है। उसनूं इह याद नहीं रिहा कि उह नाम जपवा रिहा है। उसनूं इह याद रिहा कि मैं नाम जप रिहा हाँ। बाणी ने दूसरे अंक विच पहिलाँ ही कहि दिता सी कि तूं हुकम नूं समझ, जिन्ना चिर 'हुकम' नूं नहीं समझेगा उतना चिर अगला कदम सही नहीं होवेगा। इह तुक जीव लई (हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ) कमाउणी बहुत ही औखी है। सो उस ने आपणी हिंमत दे नाल, आपणी अकल दे ज़ोर नाल भगती करन दी कोशिश कीती ताँ गुरबाणी ने समझाइआ:

“गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥”

भाव कि किसे कोल वी इतनी शकती नहीं है जो कि उस प्रभू नूं किसे करम नाल पा लवे। इसतों इलावा इस भगती दे पिछोकड़ विच उस दीआँ जो दाताँ छुपीआँ बैठीआँ हन, आस इह लगी होई है कि मैं भगती कर रिहा हाँ ताँ कि मैनूं दाताँ मिलन, किउंकि उह दाताँ वाला है, दातार है। सो धिआन उस दी भगती ते ना रिहा बलकि उसदीआँ दाताँ वल चला गइिआ। उसदी उसतत उ`ते ज़ोर ना रिहा। ‘गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥’ दाता दीआँ सभ निशानीआँ बाहर नज़र आउंदीआँ पईआँ हन। कोई इतना वडा धनाढ है, कोई इतना अमीर है, कोई इतना तंदरुसत है, कोई इतना वडा विदवान है, कोई इतना वडा लीडर है। उसदीआँ बख़शीआँ होईआँ दाताँ साहमणे नज़र आ रहीआँ हन। उहनाँ दीआँ निशानीआँ नज़र आ रहीआँ हन ते उहनाँ निशानीआँ विच धिआन रहि गइिआ। गुरबाणी ने परदा उठा दिता अते फुरमाइिआ, उसदे गुण नहीं गाओ जा रहे दरअसल दाताँ दी तालाश हो रही है।

‘गावै को गुण वडिआईआ चार ॥
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥

गिआन मारग विच ब्रहमा ने कोशिश कीती सी कि उह सारी कुदरत दा अधिआन करके उस दा भेद पा लवेगा। उह कुदरत नूं वेखदा-वेखदा कादर तक पहुंचण दे चकर विच सी पर बाणी ने फैसला दिता:

“सनक सनंद अंतु नहीं पाइिआ ॥
बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइिआ ॥१॥” (पन्ना ४७८)

भाव कि ब्रहमा ते उसदे पु” (सनक ते सनंद) उसदा भेद नहीं पा सके, उसदे विच अभेद नहीं हो सके, उह वेदाँ दे गिआन विच फसके आपणे जीवन नूं बरबाद कर गओ। इकली अकल दे उ`ते ज़ोर दे दिता, Intellect दे उ`ते ज़ोर दे दिता ताँ उस कोलों होर दूर हो गओ, उह नेड़े नहीं आ सके, ‘हउं’ ते ‘मैं’ दा संबंध टुट नहीं सकिआ, सगों होर पका हो गइिआ।

“गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥”

असाँ शकतीआँ बणा लईआँ अते उहनाँ दी पूजा करनी शुरू कर दिती। शिवजी ने आपणे गल दे विच खोपरीआँ दी माला पा लई सिर ते सप रख लओ भाव कि उह मौत तों अगे निकल गइिआ है ते जदों इह निशानी (symbol) साडे साहमणे आओ ते जीवन ते मरन दा खेड्ड साहमणे आइिआ ताँ उसे दी विचार विच उसे दे डर दे विच उसे चीज़ दे गाणे शुरू कर दिते कि उसने इह बणाइिआ है अते इह तबाह कीता है। सारीआँ तुकाँ इशारा कर रहीआँ हन कि उसदे उतों focus उतर गइिआ। धिआन “उह सरीर नूं जनम दिंदा ते सरीर दा नाश करदा है”, उस उपर हो गइिआ बस। इसतृाँ नाल विचारधारा ही विगड़ गई।

“गावै को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥”

पंजाब दे पिंडाँ दे विच इक कहावत है, छोटे-छोटे बचिआँ नूं छेड़न दे लई वडा कहिंदा है कि काका दस रब नेड़े है कि घसुन्न। हुण काका भोला है, उसनूं पता नहीं लगणा। जे उसने कहि दिता रब ताँ उहदे मूंह ते चुपेड़ मारके उसनूं किहा जाँदा है कि ओइि तेरा रब किथे है; उसने हथ रोकिआ किउं नहीं? पर जे उसने कहि दिता चुपेड़ ताँ कहिणा कि तेरे पिओ ने तैनूं कुझ दसिआ नहीं कि रब ताँ सभदे दिलाँ विच बैठा है, इसतृाँ नाल बचा अड़चन विच फस गइिआ। पर इह सवाल ही ग़लत है ताँ जवाब सही किवें आओगा? सवाल ग़लत किउं है? सारी काइिनात दे विच चार तृाँ दी जीवनी है, भोतिक (Physical), जज़बाती (Emotional), गिआनमई (Intellectual) अते अधिआतमिक (Spiritual)। हर तृाँ दे जीवन दे कानूंन अलग हन। जिवें कि भौतिक जीवन विच पदारथ वंडण नाल घटदा है पर जज़बात जाँ गिआन वंडण नाल वधदा है। इसे तृाँ गिआन मई जीवन विच दलीलाँ हुंदीआँ हन पर जज़बाती जीवन विच कोई दलील नहीं हुंदी बस विशवास ही हुंदा है। इह कानूंन इक दूजे तों बिलकुल उलट हन। उपर वाली शरारत विच मुका भौतिक जीवन नाल सबंध रखदा है अते रब अधिआतमिक जीवन नाल सबंध रखदा है। इहनाँ दोवाँ नूं मिलाइिआ ही नहीं जा सकदा किउंकि दोवाँ दे कानूंन इक दूजे दे विरोधी हन। गुरबाणी ने इशारा कीता कि जीवाँ नूं इसतृाँ दे कई भुलेखे पै गओ, झगड़े शुरू हो गओ, आपस विच बहिसाँ शुरू हो गईआँ कि प्रमातमा नेड़े है कि नहीं। जे नेड़े है ताँ नज़र किउं नहीं आउंदा, जे दूर है ताँ कितना कु दूर है। जिहड़ा उसदे नाल जुड़िआ होइिआ है उह आतमिक रूप विच अंदर वेख रिहा है, जिहड़ा नहीं जुड़िआ होइिआ उह बाहर भटकदा फिरदा है। जितना चिर दिल दिमाग़ ओसीआँ गलाँ विच फसिआ रहेगा उतना चिर ‘हउं’ अते ‘मैं’ दा सबंध टुट नहीं सकदा।

"कथना कथी न आवै तोटि ॥
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥"

प्रमातमा बारे इह कुझ अज ही नहीं कीता जा रिहा बलकि जदों तों काइनात बणी है इस विशे ते बहिसाँ हो रहीआँ हन। इस धरती उते सभ तों वध किताबाँ प्रमातमा बारे लिखीआँ मिलदीआँ हन। प्रमातमा बारे दुनीआँ दे हर कोने विच अज वी किताबाँ लिखीआँ जा रहीआँ हन पर कोई इह दाअवे नाल नहीं कहि सकदा कि उस बारे हुण लिखण लई कुझ नहीं बचिआ। उलटा इह ही कहिआ गइआ है कि उह अकथ है। उह किसे कथनी विच नहीं आउंदा। गुरबाणी ने ताँ साडे लई सारा ही झगड़ा मिटा दिता ते फुरमाइआ:

"नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥" (पन्ना ४६७)

भाव कि जितनीआँ बहिसाँ करनीआँ, इक दूजे नूं ग़लत जाँ सही साबत करन दी कोशिश करनी, प्रमातमा कदों होइआ सी कदों नहीं सी होइआ सी, उसने धरती किस तरुाँ बणाई है, बंदा किस तरुाँ बणाइआ आदि सभ हाउमें नूं वधाउण दे उपराले हन, इहना गलाँ नाल हंकार सगों वधेगा, घटेगा नहीं। उस तक पहुंचण लई 'हउ' ते 'मैं' दी तार नूं तोड़न दी लोड़ है पर अजे तक जिहड़े उपराले कीते गओ हन उह अधूरे हन किउंकि निशाना इक ते नहीं है।

"देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥"

इह उस प्रभू दी वडिआई है कि जिहड़ा उस बारे कहिंदा है कि उह है, उसनूं वी पदारथ दिंदा है अते जिहड़ा कहिंदा उह नहीं है, उसनूं वी पदारथ दिंदा है। गल की कि जद तों सृशटी साजी है, उदो तों ही उह सभ नूं दे रिहा है। लैण वाले लै लै के थक जाँदे हन भाव कि मर मिट जाँदे हन पर उह उसे तरुाँ नाल प्रकाशमान है। खाली गलाँ बाताँ दे नाल गल बणनी नहीं। उस दी भगती करनी पैणी है। उसदे अखर दी कमाई करनी पैणी है। कमाई करन दे लई सभ तों पहिली शरत है कि हुकम नूं बुझ अते उस मुताबिक जीवन बिताउणा शुरू कर।

"हुकमी हुकमु चलाओ राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥"

हुण इह लड़ी जुड़ गई। दूसरे अंक विच हुकम नूं बुझण दी गल कीती सी कि उस हुकम नूं बुझ तीसरे अंक विच दसिआ कि हुकम नूं बुझण दे जो पुराणे तरीके सन उह सारे ही विगड़के करम काँड बणके रहि गओ हन, जे सही तरीके नाल हुकम दी बुझारत हल हो जावे ताँ हउमैं नहीं बणदी, गुरबाणी विचों सानूं इको सुनेहा बार-बार आओगा, कि उस दे नाम नाल जुड़, उस दे शबद दी कमाई कर ताँकि मन सहिज अवसथा विच पुजके उसदे प्रसाद दा पा" बण सके ।

(अंक-४)

सिख जगत विच इक बहुत भुलेखा पै गइआ है और असीं हुण खुल्ले तौर ते आम इह कहिण लग पओ हाँ कि गुरबाणी किसे थाँ कुझ कहि देंदी है अते किते कुझ होर कहि देंदी है। जेकर सिख होण दे नाते साडा विशवास ही डोल गइआ है कि गुरबाणी विच विरोधी विचार हन ताँ असीं गुरूदेव पासों कुझ नहीं हासिल कर सकाँगे। असीं सिख हो के जिसदे अगे सिर झुकाइआ है, जिसनूं असीं अकाल पुरख दी जोत कहिआ है, जिसनूं असीं दसाँ गुरूआँ दी जागदी जोत मंनिआँ है, जिसदा इनाँ सतिकार करदे हाँ, इन्नाँ पिआर करदे हाँ, इन्नी शरधा रखदे हाँ अते इतनी शरधा हुंदिआँ होइआँ वी साथ साथ साडे मन विच नाल इह विचार वी चल रिहा कि गुरबाणी भुलेखे (Confusion) पाँउंदी है अते विरोधी (Contradictory) गलाँ दसदी है। दरअसल जिहड़ी गल भूल भुलईआँ (Confusing) वाली लगदी है उह Confusion वाली गल नहीं, उह साडी अकल दी घाट है, साडी समझ दी घाट है। इथे इह सवाल उठ सकदा है कि पिछले ३०० सालाँ तों इहो जिहीआँ गलाँ चलदीआँ आ रहीआँ हन; की कारन है कि अज तक ३०० साल विच किसे गिआनी ने इह गल विचारी ही नहीं? हर गुरसिख दे धिआन विच इक गल रहिणी चाहीदी है कि अज तक जितने वी सटीक लिखे गओ हन, जितने वी तरजमें (Translations) स्री गुरू ग्रंथ साहिब दे होओ हन, जाँ अलग-अलग बाणीआँ दे तरजमें होओ हन, उह जाँ ताँ उदासी संप्रदा नूं मुख रखके होओ हन अते जाँ उहनाँ सभ विच इक बुनिआदी कानूंन (Basic Assumption) साहमणे रखिआ गइआ है कि गुरबाणीं दा कोई विआकरण (Grammar) है। इस करके सभ विआखिआवाँ दिमाग़ी दलीलाँ बणके रहि गईआँ हन। पर गुरबाणी ताँ "धुर" की बाणी है, इसदा दिमाग़ नाल ताँ बहुत ही थोड़ा रिशता है, इह ताँ ब्रहम गिआन है, अनुभवी सुनेहे हन। इसनूं ताँ सिरफ अधिआतमिकवाद वजों ही समझण दी कोशिश करनी चाहीदी है। पर अजे तक इस पहिलू वल बहुत ही घट धिआन दिता गइआ है जिस करके कई तराँ दे बहुत भुलेखे प्रचलत हो गओ हन।

मन्न लउ कि तुसीं इक फुल विच छुपे भेद (secret) नूं जानणा चाहुंदे हो, ते जे फुल दी पती नूं तोड़ के ते उसनूं लैबोरटरी विच लिजा के ते कट के, उबाल के वेखोगे कि फुल दे विच की छुपिआ होइआ है ताँ तुहानूं उह भेद नहीं लभेगा। तुहानूं इह ताँ पता लग जावेगा कि उहदे विच किहड़ा ओरोमैटिक कंपाऊंड (aromatic compound) जाँ (chemical) है। तुसीं उहो जिही खुशबू ताँ पैदा कर लउगे, इक अतरफुलेल बणा लउगे, पर फुल बारे नहीं जाण सकोगे। फुल बारे जानण लई ताँ फुल वरगा ही बणना पवेगा। उसदे अंदर वड़न दी जाच सिखणी पवेगी। इही भुलेखा गुरबाणी बारे है। गुरबाणी ने इशारा कीता सी कि जितना चिर इनसान तिन (३) अवसथावाँ दे विच विचरदा है "तमो गुण, रजो गुण, ते सतो गुण" जिन्नाँ चिर उसदी सोचणी, जिन्ना चिर उसदी करनी, जिन्नाँ चिर उसदा विचार इहनाँ तिन्नाँ गुणाँ दे विच घुंमदा रहेगा उह गुरबाणी बारे कुझ नहीं जाण सकदा किउंकि गुरबाणी तुरीआ अवसथा तों, चौथे पद तों आई है। और उह सिरफ चौथे पद दी गल करदी है, चौथे पद वल इशारा करदी है। मजबूरी इह है कि भाशा इन्नाँ तिन्नाँ अवसथावाँ दी वरतणी पैंदी है, अखर इथों दे वरतणे पैंदे हन, पर इशारा कुझ होर हो रिहा है। भाशा बाहर दी लई गई है, गल अंदर दी कीती गई है। ते जिन्नाँ चिर सानूं इह गल याद नहीं रहेगी कि गल अंदर दी हो रही है, उतनाँ चिर असीं बाणी नूं नहीं समझ सकाँगे ते इसदा कोई फाइदा नहीं उठा सकाँगे। असीं इस विधान नूं मदे नज़र रखदिआँ होइआँ इस भुलेखे नूं समझण दी कोशिश कीती सी कि जदों गुरबाणी ने पहिले अंक विच किहा "हुकम रज़ाई चलणा" दूसरे अंक विच कहि दिता, "हुकमे अंदर सभु को" ताँ इस विच की भेद है? उस भेद वल इशारा करके गुरबाणी ने दसिआ कि "हुकमी होवन आकार" भाव उस हुकम दी थोड्डी जिही विआखिआ कीती गई ते फैसला दिता कि "नानक हुकमै जे बुझे ताँ हउमै कहै न कोइ"। हउमैं सबद दे दो अंग हन, "हउं" ते "मैं"। जदों "हउं" अते "मैं" मिलदी है उथों हउमैं बणदी है। तो गुरबाणी ने किहा कि जिसनूं हुकम दी समझ आ गई है उह फिर "हओं" दे नाल "मैं" जोड़ नहीं सकदा। उसनूं पता लग जाओगा कि जो कुझ है, सारा कुझ हो रिहा है, कीता नहीं जा रिहा। जो इह सभ कर रिहा है उह कौण है, उसदे नाल रिशता किस तराँ जुड़े इह गाथा अगे चली है। चौथे अंक दे विच गुरबाणी ने साडे नाल गल शुरू कीती है:

"साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगे रखीओ जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीओ जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक ओवै जाणीओ सभु आपे सचिआरु ॥४॥"

(रुजीव ने उस शकती नाल सबंध पैदा करना हैरू जो इक सचा मालिक है अते जिसदा नाम अटल सचाई है। उसदी भाशा दा वी कोई अंत नहीं। सारे उसदे साहमणे दुनिआवी मंगतिआँ वागूं अरदासाँ कर रहे हन अते आखदे हन कि हे प्रभू सानूं होर दाताँ देह। पर असी किहड़ी भेटा उस अकाल पुरख दे अगे रख सकदे हाँ (भाव साडे पास उसनूं भेटा करन जोग कुझ वी नहीं), जिस दे सदके सानूं उस दा दरबार दिस पओ? असी मूंहों किहड़ा ओसा बचन बोल सकदे हाँ (भाव, साडे पास ओसे बोल ही नहीं हन)

जिस नूं सुण के उह सानूं पिआर करे । उस सचिआर नूं ते उस वेले ही जाणिआ जा सकदा है जिस वेले जीव आपणे अंदरों अंमृत दी बूंद पैदा करन दे काबिल हो जावे अते इह वेला तद प्रापत हुंदा जद जीव दे अंदर सिवाओ उसदी सिफतो-सालाह अते उसदीआँ वडिआईआँ दे होर कुझ ना रहि जाओ। होर हर करम-काँड नाल नवाँ सरीर रूपी कपड़ा ही प्रापत हुंदा है, मुकती प्रापत करन लई ताँ उसदी नदर दे पातर बणन दी लोड़ है।)

जद "हओं" ते "मैं" टुट जावे ते प्रमातमा नाल रिशता जोड़न दी मन विच विचार पैदा हो जाओ ताँ उस लई कुझ गलाँ समझण दी लोड़ है। जिवें कि जिहड़ा रिशता बणाउणा है उह रिशता की होणा चाहीदा है। जेकर असीं दूजे धरमाँ वल झाती मारीओ ताँ जुडाइज़्म (Judaism) पछम विच सारिआँ तों पहिला धरम मंनिआँ गइिआ है। जुडाइज़्म ने इक खुदा दा, इक अला दा नाअरा, इक प्रमातमा दा, इक God दा जिसनूं उहनाँ ने यहोवा कहिआ है, नाअरा लगाइिआ ते उसदे नाल रिशता बणाइिआ जज अते मुजरिम दा। जद असीं उसदी कचिहरी दे विच पेश हुंदे हाँ, ताँ उह सानूं जज करदा है। चंगे करम दा इनाम दिंदा है ते मंदे करमाँ दी सज़ा दिंदा है। उसदे कानून्न दस दिते गओ, इसे करके उसदे बानी मोज़ज़ (Moses) नूं Law giver कहिआ गइिआ है। जुडाइज़्म दीआँ Ten Commandments इही सन कि जो वी उहनाँ नूं तोड़ेगा उसनूं सज़ा मिलेगी ते बाकीआँ नूं इनाम मिलेगा। उस तों बाअद ईसा मसीह (Jesus) ने प्रमातमा नाल रिशता बणाउण लई दुनीआँ नूं किहा कि असीं सारे उसदे बचे हाँ ते उह साडा पिता है। उसदा प्रमातमा दे नाल पुतर दा ते पिओ दा रिशता है। उस तों बाअद मुहंमद आओ, पैग़ंबर पैग़ाम लै के आओ, उसने वी रिशता सज़ा देण वाला ते इनाम देण वाला बणाइिआ। इिसलाम विचों सूफी मत निकलिआ। सूफी मत ने कहिआ कि जेकर प्रमातमा दे नाल रिशता बणाउणा है ताँ पिआर दा रिशता बणाउणा है। उह साडा महिबूब है। असीं उसदे नाल पिआर करन वाले हाँ। जे तुसीं फरीद जी नूं धिआन दे नाल पड़्हो ते उसदे विच "मैं तेरा आशिक हाँ तूं मेरा महिबूब हैं", इह विचार धारा नज़र आउंदी है। गुरू नानक दे घर विचों आवाज़ आई कि इहनाँ सारिआँ रिशतिआँ नूं बणाउण विच ख़तरे हन। इिस करके गुरू नानक ने प्रमातमा दे नाल ओसा कोई रिशता नहीं बणाइिआ।

जेकर उसदे नाल जज दा रिशता बणाउ अते आप मुजरिम बणो ताँ मतलब इह होइिआ कि किसे कंम नूं कीतिआँ उह ख़ुश हुंदा है ते किसे दूजे कंम नूं कीतिआँ उह ख़ुश नहीं हुंदा। ताँ फेर सवाल पैदा हो जाओगा कि जिस कंम विच उह ख़ुश नहीं हुंदा ताँ उसने सानूं इिसतराँ दा बणाइिआ ही किउं? जेकर बाअद विच चुपेड़ मारनी है कि इह कंम ना कर, ताँ मैनूं ओसी शकती ही किउं दिती? जिस कंम विच उह ख़ुश है उही रहिण देवे अते बाकी सभ वापिस लै लवे। जेकर शैतान बुरे कंम कराउंदा है ते भगवान नेक कंम कराउंदा है ताँ शैतान नूं किस ने बणाइिआ है। शैतान नूं नाँ ही बणाउंदा।

ईसा (Jesus) ने किहा कि नहीं शैतान दी गल नहीं, उह सभ दा पिओ है। हुण पिओ ते पुतर दा रिशता जिहड़ा है, उह कितनी देर तक चलेगा किउंकि पुतर कदे नाँ कदे जवान हो के पिओ दे साहमणे खड़ा हो जाओगा। हर बचा कदी नाँ कदी जवान हो के पिओ दी जग्हा लैणी चाहुंदा है। पिओ दा ते पुतर दा रिशता उतना चिर तक निभदा है जदों तक बचा जवान नाँ हो जाओ। उस तों बाअद पिओ-पुतर दा रिशता बदल जाओगा। पंजाब दे पिंडाँ विच कहावत सी कि जिस दिन पुतर पिओ दी जुती नूं पूरी तराँ पा लओ उस तों बाअद पिओ पुतर नूं कुझ नहीं कहिंदा किउंकि हुण पुतर जवान हो गइिआ है। हुण उसनूं टोकणा नहीं चाहीदा। तो ओस रिशते दी वी उमर लंबी नहीं। इह रिशता जेकर दोसती विच ना बदले ताँ जीवन विच बहुत मुशकलाँ आँउदीआँ हन।

फेर सूफीआँ ने किहा है कि पिआर होणा चाहीदै, महिबूब होणा चाहीदै। तो गुरबाणी ने किहा कि पिआर दे रिशते लई दोवें इको जेहे होणे चाहीदे हन। पिआर दा रिशता बहुत बज़ुरग ते बहुत छोटे विच नहीं चल सकदा। इको जिहे जवान होण ताँ ही पिआर पलदा है। सो जे प्रमातमा नाल पिआर करना है ताँ बाणी दा फैसला है:

"ओवडु ऊचा होवै कोइि ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइि ॥" (पन्ना ५)

भाव कि उहदे वरगा ही बणना पओगा, नहीं ते पिआर नहीं चल सकदा। इक बहुत उ च्चा होवे अते दूजा बहुत नीवाँ होवे ताँ पिआर दा रिशता नहीं निभदा। किसे बादशाह दे नाल तुसीं पिआर दा रिशता नहीं पैदा कर सकदे। उह बहुत अमीर है ते तुसीं बहुत गरीब हो, बहुत फरक पै गिआ है। ओसे करके जदों असीं आपणे बचे-बचीआँ दीआँ शादीआँ करदे हाँ ते परिवाराँ दा मैच करदे हाँ ताँ कि परिवार इको जिहे होण। बचे-बची दी उमर इको जिही होवे, पड़्हाई लिखाई इको जिही होवे। उह ओस करके है कि जोड़ी दा पिआर बणे। सो पिआर दा रिशता बराबर दे नाल हो सकदा है ते असीं उसदे बराबर नहीं हाँ। असीं उसदे बराबर हो ही नहीं सकदे।

इिस करके गुरबाणी ने किहा कि उसदे नाल जिहड़ा रिशता असली निभ सकदा है उह है मालक दा ते ग़ुलाम दा। उह साहिब है ते "मैं" उसदा ग़ुलाम हाँ। ग़ुलाम ते साहिब दे रिशते विच कदी तबदीली नहीं आ सकदी। जिहड़ा ग़ुलाम बण गइिआ, उह बिलकुल

मानो विक ही गइिआ:

"मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा ॥
गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइिआ तितु लागा ॥" (पन्ना ६६१)
"मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥" (पन्ना ३९६)

बैख़रीद तों भाव है पंजाब विच जदों ज़मीन खरीदी जाँदी सी कि उहनूं बै कीता जाँदा सी, भाव कि नाम ते लिखवाइिआ जाँदा सी कि इिह ज़मीन अज तों बाअद इिहनाँ दे खानदान दे नाम रहेगी। इिस विच कोई अदला-बदली नहीं कर सकदा। गुरबाणी ने सिख नूं किहा कि तेरा रिशता प्रमातमा दे नाल गुलाम दा ते मालक दा बणना चाहीदा है। गुलाम हमेशा मालिक दे शुकराने विच रहिंदा है। गुलाम विच हंकार हो ही नहीं सकदा। इिसे करके अगर सिख ने प्रमातमा दे नाल रिशता बणाउणा है ताँ उह साहिब है अते असीं उसदे गुलाम हाँ। जो उह कर रिहा है, उह सभ ठीक है। सो जो गल पहिले अंक विच कही सी कि "हुकम रज़ाई चलणा" उस बारे हुण चौथे अंक विच सानूं दसण लगे हन कि हुकम दी रज़ा विच चलिआ किस तरृाँ जाँदा है। उस लई पहिली शरत दसी है कि उस दे दर उते गुलाम बणके आ। हुण जिहड़ा सच दा गुलाम बण गइिआ उही इिह यातरा कर सकदा है। असीं सच दी विचार कर चुके हाँ कि सच उस नू कहिआ गइिआ है जिहड़ा किसे झूठ दे बराबर ते नहीं खड़ा है बलकि जिहड़ा Existantial है, आपणे आप विच संपूरन है, जिसदे मुकाबले विच होर कुझ वी नहीं है।

"साचा साहिबु साचु नाइि भाखिआ भाउ अपारु ॥"

भाव कि जिस नाल इिह रिशता जोड़ना है इिह उस दीआँ निशानीआँ हन; सिरफ उही इिक सचा साहिब (मालिक) है, बाकी सभ झूठे अते कचे साहिब हन किउंकि होर सभ नाशवान हन, उसदा नाम वी सच है और उसदी बोली दी कोई हद (limit) नहीं, उह बेहद (unlimited) है,। जिसदी ओसी प्रीभाशा है अगर उसदा गुलाम बण के चलेंगा, अगर उस दे लई ओसी भावना बण जाओगी ताँ इिह रिशता मंज़िल तक पहुंचण तक निभ जाओगा। दुनीआँ दे जितने जीव-इिसतरीआँ हन उस दे नाल मालक दा ते गुलाम दा रिशता नहीं बणा रहे बलकि इिक दाते दा ते इिक मंगते दा रिशता बणा लिआ। उहदे कोलों मंगणा शुरू कर दिता है।

"आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥"

"आखहि मंगहि" जीव ने उसदे नाम नूं आखण दी जगह कहिणा शुरू कर दिता है "देहि-देहि" भाव कि मंगता बणके उसदे दर खड़ा हो गइिआ है। होर देह, होर देह दी ही रट लगा लई है। उह गुलाम बण के उसदे दर उते नहीं आउंदा, मंगता बण के आउंदा है। मंग वी उह कुझ रिहा है जिहड़ा उसने बिनाँ मंगिआँ ही दिता होइिआ है। उह नहीं मंग रहिआ जिहड़ा कि उसने मंगण ते देणा सी। गुरबाणी ने गुरसिख नूं मंगण लई वी किहा है:

"मागनि माग त ओकहि माग ॥" (पन्ना २५८)
"मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई
हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥" (पन्ना ५९७)
"पावउ दानु ढीठु होइि मागउ
मुखि लागै संत रेनारे ॥" (पन्ना ७३८)
"मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥"
(पन्ना १०१८)

इिको ही चीज़ ढीठ हो के मंगण वाली सी, उह ते मंगणी बंद कर दिती ते उह दाताँ मंगदा है जिहड़ीआँ उह बिना मंगिआँ ही दे रहिआ है। उसने तन दिता है, अकल दिती है, मन दिता है, दौलताँ दितीआँ हन, होर कई प्रकार दे जो वी है सुख दिते हन। उहनाँ लई ताँ अरदास करन दी लोड़ ही नहीं सी, उस नूं आखण दी ज़रूरत नहीं सी कि मैनूं इिह वी देह ते उह वी देह। जेकर इिक गल याद रहि जाँदी कि रिशता मालक दा ते गुलाम दा है ताँ सभ मंगाँ ख़तम हो जाँदीआँ किउंकि गुलाम दी ते कोई मंग ही नहीं हुंदी।

गुलाम दे रिशते दी इिक बड़ी मज़ेदार खूबी है। मिसाल वजों अगर किसे राजे नूं दूजे राजे ने मिलण जाणा होवे ताँ उहनूं पहिलाँ उह कारड भेजेगा जाँ चिठी भेजेगा। उहदे कोलों मिलण लई समाँ अते दिन (appointment) लओगा। फेर उहनूं जे मिलिआ वी जावेगा ते बाहरले वराँडे विच मिलिआ जाओगा। इिक राजा दूजे राजे दे घर सिधा अंदर नहीं जा सकदा हालाँ कि उह बराबर दा रिशता है। पर गुलाम दा रिशता की है? उसदे मोढे ते बस इिक परना हुंदा है, उह गुलाम है, नौकर है, चाकर है। राजा

आपणे महिल विच बैठा होइआ है। गुलाम चुप करके दरवाज़ा खोल्ह के अंदर चला जाँदा है। नाँ उहनूं किसे कारड दी लोड़ है अते नाँ ही उहनूं कोई समा नीयत करन दी लोड़ है। उसनूं हमेशा पूरी खुल्ह है कि जद वी चाहवे आ जा सकदा है किउंकि जाँ उह कोई गल करन आइिओ, कुझ दसण आइिओ, जाँ कुझ पुछण आइिओ। इिसेतर्हाँ नाल जेकर असीं सही रूप विच प्रमातमा दे गुलाम बण जाईओ ताँ सानूं उस नूं मिलण लई किसे कोलों इिजाज़त लैण दी लोड़ नहीं पवेगी।

"फेरि कि अगे रखीओ जितु दिसै दरबारु ॥"

इिस तुक दी प्रचलित विआखिआ इिंज कीती गई है

"फिर असीं किहड़ी भेटा उस अकाल पुरख दे अगे रखीओ, जिस दे सदके सानूं उस दा दरबार दिस पओ?"

इिस दे इिह तरजमे (translation) विच फेरि तों भाव है फिर, कि हुण की करीओ? अगर धिआन नाल वेखिआ जाओ ताँ पड्ढन विच ते फेर है पर 'रारे' नूं सिहारी है। विआकरण (Grammer) दे तौर ते भाँवे इिह गल ठीक लगदी है पर अधिआतमिक पहिलू ते इिह विआखिआ ठीक नहीं बैठदी किउंकि उसदे दरबार दे दरशन किसे वी उपराले नाल नहीं हो सकदे। इिह भेद ताँ पहिलाँ ही खोल दिता गइिआ है कि उह ताँ जद वी मिलदा है आपणे प्रसाद सदका ही मिलदा है। दरअसल गुरबाणी कहि रही है कि जीव इिह सोचके दाताँ मंगदा है कि उह दौलत खरच करके उसदी पूजा कर लओगा। अते उस पूजा दे बदले विच उसदे दरशन दी अभिलाशा रखदा है। पर जे उसदी ही चीज़ मोड़ के उसे नूं दे दिती ताँ ते उह फेरा पाउणा हो गइिआ। "फेरि कि" दा भाव इिथे है फेरा दे के, तेरे कोलों चीज़ लई उह मेरी जेब विच आ गई, मेरे कोलों फेर तेरे कोल चली गई, इिह इिक फेरा हो गइिआ। ओसे करम करन नाल उसदा दरबार किस तर्हाँ नज़र आ जाओगा? गुरबाणी इिशारा कर रही है कि उसदे दरशन करन लई इिसतर्हाँ दी कोई भेटा कंम नहीं आ सकदी। उसदे अगे कुझ लिआ के रखिआ ही नहीं जा सकदा। सभ कुझ उसे दा ते दिता होइिआ है। आपणे तोहफे नूं वापस लैके उह खुश नहीं हो सकदा। इिह सिरफ सानूं इिक भुलेखा है। जितने असीं चड्ढावे देंदे हाँ, जितनीआँ बिलडिंगाँ बणाउणे हाँ, जाँ जो कुझ वी करदे हाँ, उह सभ समाज सेवा ते हो सकदी है, प्रमातमा दी सेवा नहीं है। इिन्हा करम काँडाँ नाल उसदे दरशन दी चाह रखणी बहुत वडी भुल है।

"मुहौ कि बोलणु बोलीओ जितु सुणि धरे पिआरु ॥"

इिस तुक दी विआखिआ वी सरसरी निगाह नाल ही कर दिती गई है। जिवें उपर दसिआ गइिआ है उसदे दरशन दी अभिलाशा किसे तर्हाँ दीआँ भेटावाँ नाल नहीं पूरी हो सकदी उसेतर्हाँ गुरबाणी समझा रही है कि किसे वी शबद नाल उसनूं मोहिआ नहीं जा सकदा है। आख़िर कार मूंह तों कोई की बोलेगा? जिहड़ी साडी भाशा है, उह किथों आई है? अखर किथों आओ हन? गुरबाणी दा फुरमान है:

"सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥" (पन्ना ९८८)

जदों बोली उसदी ही है, जद हर इिक विच बोलण दी शकती उसे दे दिती होई दात है ताँ उहदे साहमणे आके कोई की बोलेगा जिस नाल उह खुश हो जाओगा? भाव कि जो वी बोलिआ जा रिहा है उह उसे दी ही आवाज़ है। इिस करके किसे तर्हाँ दी तारीफ जाँ उसतत उसनूं रिझा नहीं सकदी। गुरबाणी प्रानी दे हंकार दी जड्ह कट रही है, हउमैं दी जड्ह कट रही है। नाँ कुझ दिता होइिआ, ना कुझ उहदी तारीफ कीती, नाँ कोई अरदास कीती, नाँ कुझ उसदे साहमणे बोलिआ-चालिआ, किसे वी ओसे करम नाल तूं उसनूं खुश नहीं कर सकदा कि तेरे ते उह मिहर करके जिहड़ी दात उसने आपणे हथ रखी होई है उह तेरी झोली विच पा देवे। इिक दात ही उसने आपणे हथ विच रखी होई है जो उह बिनाँ मंगिआँ किसे नूं नहीं देंदा:

"दातै दाति रखी हथि अपणै
जिसु भावै तिसु देई ॥" (पन्ना ६०४)

बस इिह इिक दात (शबद दी कमाई, नामु) है जो कि बार बार मंगणी है। पर उह दात कोई विरला ही मंगदा है। बहुते उही होर मंगदे हन जिहड़ा उहने पहिले ही दिता होइिआ है।

"अंमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥

नानक ओवै जाणीओ सभु आपे सचिआरु ॥"

गुरबाणी उपर दस चुकी है कि जीव करम काँड करन लई होर पदारथ प्रमातमा कोलों मंगदा है। इस भुलेखे बारे इह दसिआ जा रिहा है कि दुनीआँ दा हर करम सिरफ नवाँ कपड़ा (सरीर) लिआ सकदा है। उह नवाँ सरीर पैदा कर सकदा है, उह होर कुझ नहीं कर सकदा। दुनीआँ दे सभ धरम इह कहिंदे हन कि चंगा कंम करो अते सुणन विच इह गल जचदी वी है। इस दुनीआँ विच सिख धरम पहिला धरम है जिसने कहिआ है कि इह गल ताँ सही है कि चंगे करमाँ दे नाल चंगा इनसान बणदा है, चंगा समाज बणदा है, पर सिरफ चंगे करमाँ दे नाल भगत नहीं बणदा। सिरफ चंगे करमाँ दे नाल ब्रहम गिआनी नहीं बण सकदा। भगती करन नाल ब्रहम गिआनी बणदा है। 'करमी आवै कपड़ा' भाव तूं चंगे करम कर भावें माड़े करम कर। इक गल याद रख लईं कि उह करम तैनूं तमो गुण विचों कढके रजो गुण विच लै जाणगे, फिर रजो गुण विचों उठा के सतो गुण विच लै जाणगे। तमो गुण तों भाव है जिहड़ा सिरफ आपणे ही बारे सोचदा है, रजो गुण तों भाव है जिहड़ा आपणे प्रीवार अते नेड़े दे समाज बारे फिकर करदा है, अते सतो गुण तो भाव है जिहड़ा सारे संसार बारे सोचदा है। गुरबाणी ने कहिआ कि किसे वी ओसे करम नाल उसनूं पाइआ नहीं जा सकदा। दुनीआँ दे उते कोई ओसा भगत नहीं होइआ जिसने इह किहा होवे कि उसदी भगती दा इनाम प्रमातमा दे दरशन हन। इह असीं आपे ही कहाणीआँ घड़ लईआँ हन। स्री गुरू अमरदास जी बारे कहिंदे हन कि उह १२ साल पाणी ढोंदे रहे अते आपणे गुरू नूं नल्हाउंदे रहे, गुरू नूं इशनान करवाउंदे रहे ते ब्रहम गिआनी हो गओ। गुरबाणी दा फैसला है कि नहाउंण दा संबंध सिरफ सरीर दी सफाई नाल है। जे १२ साल किसे इक बंदे नूं रोज़ नहाउंण नाल कोई ब्रहम गिआनी हो सकदा हुंदा ताँ अज तक अनेकाँ ब्रहम गिआनी पैदा हो जाणे चाहीदे सन। इह असाँ मन घड़ंत अते फजूळ कहाणीआँ बणाईआँ हन। सानूं ओसीआँ सभ कहाणीआँ नूं गुरबाणी दे कसवटी उते परखणा चाहीदा है। जो वी कहाणी गुरबाणी दे आशे नाल नहीं मिलदी उसनूं सही मन्नण तों इनकार करना चाहीदा है। गुरबाणी साफ कहि रही है कि किसे वी करम काँड नाल उसदी प्रापती नहीं हो सकदी। उसदी प्रापती उसदे प्रसाद, उसदी किरपा, उसदी नदरे-करम करके ही हो सकदी है। जिन्नाँ चिर उसदी किरपा नहीं हुंदी, प्रसाद नहीं आउंदा, जिन्नाँ चिर grace नहीं आउंदी, उनाँ चिर मुकती दा दुआरा नज़र नहीं आ सकदा। उसदे प्रसाद मिलण बारे पहिली तुक विच इशारा है कि जिस समें जीव इसतरी दे अंदर सिवाओ उसदे सचे नाम तों होर कुझ नहीं बचदा उस समे उसदे अंदर अंमृत दी बूंद पैदा हुंदी है। उह सही अंमृत वेला है जिस वेले सरीर रूपी भाँडा बिलकुल साफ हो जावे अते अंमृत दी बूंद हलक विच ढलक पवे। उस वेले सिवाओ उसदी उसतत दे होर कोई विचार नहीं बचदा। उस वेले उसदा प्रसाद झोली विच डिगदा है। बाकी सभ करम काँड दे वेले हन जो चंगा जाँ माड़ा जनम होर दे सकदे हन।

जो असाँ सवेरे २ वजे नूं अंमृत दा वेला समझ लिआ है इह साडी बहुत वडी भुल है। इस काइनात विच कोई वेला वी माड़ा नहीं किहा जा सकदा। की भगती करन दा जाँ नाम जपण दा कोई खास समाँ हो सकदा है? इह गल ताँ मन्नी जा सकदी है कि सवेर दीआँ कुझ घड़ीआँ दुनीआँ दे शोर शराबे तों बिनाँ हुंदीआँ हन। पर इसदा मतलब इह ते नहीं कि हर इनसान दे अंदर सुतिआँ उठण वेले शाती हुंदी है। अंमृत अंदर दी वसतू है, इस नाल बाहर दी दुनीआँ दा कोई सबंध नहीं। भगती मारग विच गुरबाणी दा हुकम है:

"जो सासि गिरासि धिआओ मेरा हरि हरि
सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥" (पन्ना ३०६)

इह बहिंदिआँ उठदिआँ हरि नाम धिआउन दी गल है। अंमृत वेले दा मतलब है उह समाँ जदों अंमृत अंदरों डिगे। जिस दिन भगती करदिआँ-करदिआँ आपणे अंदरो अंमृत दा सुआद आइआ उस वकत दी निशानी है कि सिवाओ उस दी वडिआई ते उसदे विचार तों सभ विचाराँ मर जाणगीआँ। उसे तरीके दे नाल सिरफ उसदे दर ते जाइआ जा सकदा है बाकी सारे करम सिरफ जनम चंगा जाँ माड़ा बणा सकदे हन होर कुझ नहीं। आखरी तुक विच इशारा करदे हन कि इस तरूाँ नाल ही उसनूं जाणिआँ जा सकदा है। जेकर रिशता बणे गुलाम दा ते मालिक दा, ते गुलाम हो के होर सभ मंगाँ बंद हो जाण, ताँ हुकम दे विच चलणा आ जाओगा। इस नाल हउमैं मर जाओगी अते उस सचिआर नूं जाणिआ जा सकेगा ।

(अंक ५)

अजे तक असीं इह देखिआ है कि सानूं सभ तों पहिलाँ उह परम शकती की है उस दे कुझ चिन्न्ह समझाओ गओ हन, फिर इशारा कीता गइिआ कि उस दी प्रापती दे लई की करना चाहीदा है अते नाम जपण दी गल शुरू होई। पहिले अंक विच इह दसिआ गइिआ कि जो अज तों पहिले रसते सन उहनाँ दे विच की मुशकलाँ सन ते अज कलजुग दे विच की करना चाहीदा है। तो इशारा कर दिता कि हुकम नूं मन्नण दी जाच सिख। दूसरे अंक विच इशारा कीता कि 'हुकम' की है, उह किथे है अते उस नूं किस तर्हाँ पहिचाणिआ जा सकदा है। सारा कुझ उसदे हुकम विच है जो कि हर इक दे अंदर लिखिआ होइिआ है। इथे इक बहुत ज़रूरी सवाल उठदा है कि इस सरीर दी चाह देवी देवते वी रखदे हन इसदा मतलब इह होइिआ कि इस सरीर दीआँ कुझ खास ज़ुमेवारीआँ हन। जेकर सारा कुझ हुकम दे विच है ते फिर मेरी की ज़ुमेवारी है, इसदे उते असीं खुल्ली विचार कीती सी। इह असीं पहिलाँ ही कहि चुके हाँ कि इह सिरफ विचार ही हन, इह फैसले नहीं हन। फिर हज़ूर ने इशारा कीता कि दुनीआँ ते साहिब बहुत हन। असीं वी आपणे सुपरवाईज़र (शुपइरवसिोर) नूं साहिब कहि दिंदे हाँ। "भाई साहिब" अखर असीं बहुत सौखा रखिआ होइिआ है। गुरबाणी ने किहा कि इह सारे साहिब झूठे हन, कचे हन। सचा साहिब इको है। फिर उस सचे साहिब दे बारे विचार कीता गइिआ कि सानूं गुरू नानक दे दर तों इक नाल रिशता बणाउण दी जाच दसी गई सी। जे उस तक पहुंचणा है ताँ तूं उस दे नाल ग़ुलाम दा ते मालिक दा रिशता बणाके अगे चल, नहीं ताँ हंकार किते ना किते रोक के बैठ जावेगा। इतना कु संखेप विच इस करके दुहराइिआ है ताँकि तुसीं देख सको कि बाणी विच इक लड़ी चल रही है।

जे तुसीं इहना अंकाँ नूं अलग-अलग देखोगे ताँ पता नहीं लगेगा। हुण इह इक कहाणी उभर के साहमणे आ रही है। उस सचे साहिब दा ज़िकर हो रिहा है ताँ इक सवाल पैदा हो जाओगा कि पहिले ताँ सानूं निशानी दसी गई सी कि उह निरंकार है पर हुण उस नाल इस तर्हाँ गलाँ कर रहे हो जिस तर्हाँ कि उह साहमणे बैठा है, उह मालिक है ते असीं ग़ुलाम हाँ। मालिक दे साहमणे बैठ के उहदा हुकम मन्नणा है। इस विच की भेद होइिआ? गुरबाणी ने दसिआ है कि जद उसनूं साहिब किहा है ताँ इहदा मतलब इह नहीं है कि उस दा कोई सरीर है। साहिब किहा है पर इस दा मतलब इह नहीं कि असीं उस नाल कुझ कर सकदे हाँ, ताँ अगला अंक शुरू हो गइिआ:

"थापिआ न जाइि कीता न होइि ॥ आपे आपि निरंजनु सोइि ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइिआ मानु ॥ नानक गावीओ गुणी निधानु ॥ गावीओ सुणीओ मनि रखीओ भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइि ॥ गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥"
(उस परम शकती नूं किसे ने बणाइिआ नहीं अते ना ही इस बारे कोई कुझ कर सकदा है। उह आपणे आप विच संपूरन अते निरलेप है। जिसने वी उसनूं सिमरिआ है सिरफ उसने ही उसदी दरगह विच कोई सतिकार प्रापत कीता है। ताँ ते सानूं सही जुगती नाल उसदी भगती विच जुड़ जाणा चाहीदा है जिस नाल आवागवन दा दुख गवाके सदीवी सुख दी प्रापती हो सके। उसदी भगती लई गुरदेव पासों ही शबद मिलदा है किउंकि गुरदेव पास ही उसदा सही गिआन है अते गुरदेव परम शकती विच अभेद हो चुका है जिस विच पैदा करन, पालण, अते गिआन देण वालीआँ शकतीआँ बैठीआँ दिखाई देंदीआँ हन। गुरदेव कोल माइिआ दे अनेक रूपाँ दा गिआन अते उसदे भेद प्रगट हो चुके हन। हउमे विच डुबिआ जीव इस बारे कुझ नहीं जाणदा, अते जे कुझ जाणदा वी होवे ताँ इस बारे उह कुझ बिआन नहीं कर सकदा। इसे करके गुरदेव ने इह बुझारत सभ लई पहिलाँ ही हल कर दिती है कि सारी ही सृशटी नूं पालण वाला उही इक निरंकार है अते इह सानूं कदी वी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहीदा।)

चौथे अंक विच किहा सी "साचा साहिबु साचु नाइि भाखिआ भाउ अपारु"। हुण भाखिआ बोलणा, नाम होणा, ते मालिक होणा इह तिन्ने निशानीआँ किसे सरीर दीआँ वी हो सकदीआँ हन ते फिर भुलेखा पै सकदा है कि "मैं" किस दी पूजा करनी है, किस दा नाम जपणा है, किस नूं याद करना है। ताँ गुरबाणी ने किहा कि उस नूं याद करना है जिहड़ा:

"थापिआ ना जाइि कीता ना होइि ॥
आपे आपि निरंजनु सोइि।"

भाव कि रिशता उस नाल बणाउंणा है जिहड़ा निर-अंजन है, अते 'अंजन' तों भाव है कालख। काला सुरमा जिहड़ा अखाँ विच पाइिआ जाँदा सी उसनूं अंजन कहिआ जाँदा है। गुरबाणी उसदी याद दिला रही है जिहड़ा कि हमेशाँ ही निर-अंजन है, बिनाँ किसे दोश दे है, जिस दा कोई सरीर नहीं, जिस नूं किसे ने पैदा नहीं कीता, जिस दी सथापना इनसान जाँ कोई शकती नहीं कर सकदी। जिहड़ा ''सवै भं'' है तूं उसदी याद विच डुबणा है। गुरबाणी ने सानूं इिथे इिशारा कीता है कि उसने तुहाडे साहमणे कोई रूप बणा के नहीं आउणा, कोई शकल बणा के नहीं आउणा, उस ने कोई आवाज़ दे के नहीं आउणा। इिह विशवास होणा चाहीदा है कि इिह सिखिआ गुरदेव तों आई है। सानूं यकीन होवे कि गुरू ने किहा है कि उह निराकार है पर उह निर आकार हुंदा होइिआ वी आकाराँ दी पालणा करदा है।

''जिनि सेविआ तिनि पाइिआ मानु ॥
नानक गावीओ गुणी निधानु ॥''

जिसने वी उसनूं सिमरिआ है भाव कि उसनूं जपिआ है उसने ही उसदी दरगह विच कोई सनमान प्रापत कीता है। इिथे ''सेविआ'' तों भाव सेवा करनी नहीं है किउंकि निरआकार दी कोई होर सेवा कीती ही नहीं जा सकदी। ''सेविआ'' तों भाव है सिमरिआ, जाँ जपिआ। इिसेत्राँ गाउण तों भाव गीत गाउणा नहीं है। गुरबाणी इिको गल नूं अलग अलग शबदाँ नाल कहिके उसते ज़ोर दे रही है अते समझा रही है कि सभ नूं उस गुणा दे ख़ज़ाने दा नाम जपणा चाहीदा है।

गावीओ सुणीओ मनि रखीओ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइि ॥

गावीओ दा मतलब इिथे Physically जपणा है।
असीं गाउण दा मतलब जपणा किउं कहि रहे हाँ?
गुरबाणी दे विच इिशारा कीता है,

''कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥
गुरमुखि जपीओ लाइि धिआना ॥'' (पन्ना १०७५)

खिआल करो कि जिथे कीरतन नूं महान किहा है उथे कीरतन कहिण तों की भाव है उह भी दसिआ गइिआ है। साफ शबदाँ विच इिशारा कीता है कीरतन तों भाव गाणा बजाणा नहीं है बलकि गुरदेव दे (गुरमुखि) दसे होओ तरीके नाल जाप करना है (जपीओ) जिस नाल धिआन लग जावे (लाइि धिआना)।

ओसा कीरतनु करि मन मेरे ॥
ईहा ऊहा जो कामि तेरै ॥१॥ रहाउ ॥
जासु जपत भउ अपदा जाइि ॥
धावत मनूआ आवै ठाइि ॥
जासु जपत फिरि दूखु न लागै ॥
जासु जपत इिह हउमै भागै ॥२॥ ------
अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥
कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥८॥२॥ (पन्ना २३६)

इिस शबद विच वी कीरतन दा ही ज़िकर है पर कीरतन उह होणा चाहीदा है जो दोनाँ जहानाँ विच कंम आवे। ओसा कीरतन सिरफ अज कल दा गाणा बजाणा नहीं हो सकदा किउंकि उह सिरफ इिस जहान विच ही कन्न रस दे कंम आउंदा है। सो कीरतन दी सही प्रीभाशाँ अगलीआँ तुकाँ विच कीती गई है जिस विच ज़ाहर है कि उसदे नाम जपण नूं ही गुरबाणी असली कीरतन कहिंदी है। असली कीरतन उह है जिसदे करन नाल पंजे चोर काबू विच आ जाण, जिसदे करन नाल बाहर भजा होइिआ मन टिक जाओ। सो पहिले नाम नूं जपु। अते जो जप रिहा हैं उसनूं आप सुण। हौली हौली दूसरी अवसथा आओगी। जपण तों शुरू करेंगा अते जे इिह तेरी भगती प्रमातमा कोल प्रवान हो गई ते हुण उही अखर अंदरों सुणन लग पओंगा। शुरू ताँ करेंगा बाहरों सुणन तों, दूसरी सटेज (stage) विच शबद जपदिआँ-जपदिआँ सिमरन बण जाँदा है, तीसरी सटेज विच सिमरदिआँ सिमरदिआँ उह धिआन बण जाँदा है अते चउथी सटेज ते धिआउंदिआँ धिआउंदिआँ उह समाधी बण जाँदी है। इिकले गिआन इिकठा करन नाल ताँ गल कुझ नहीं बणनी, गलाँ बाताँ नाल ताँ घर पूरा नहीं होणा। जद धिआन दी अवसथा विच पहुंच गओ ताँ सुख दुख महिसूस करन वाली शकती

वी धिआन विच लग जाओगी इस करके सुख दुख तों छुटकारा हो जाओगा। जदों पंजवीं पातशाही तती तवी ते बैठे हन अते सिर ते गरम रेता पै रही है ताँ उहनाँ दा सरीर ताँ जल रिहा है, मसल (muscle) नूं, Nerve Ending नूं तकलीफ ते हो रही है पर उह जिहड़ी जोती है उह समाधी विच बैठी है। इस करके 'दुख परहर' दुख गइिआ किउंकि दुख हुण सरीर दा रहि गइिआ है, जिहड़ी महिसूस करन वाली शकती सी, उह धिआन विच जुड़ गई है। फिर जो कुझ वी है सारा कुझ सुख ही सुख है। इिह है 'दुख परहर सुख घर लै जाउ', इिह किसे इिटाँ-पथर वाले घर दी गल नहीं हो रही है। जदों जीव धिआन दी अवसथा तक चला जाओगा ताँ इिस सरीर रूपी घर विच फिर सुख ही सुख हो जाओगा। इिह तीसरी मंज़िल है, गुरसिख नूं इिस तों पहिलाँ कोई पता लग नहीं सकदा। जपणा शुरू कर, जपदिआँ-जपदिआँ मन टिकाउ ते आ जाओगा। जदों असीं जाप लई बैठदे हाँ ताँ मन विच इिक पासे ते इिक शैतान बैठ जाँदा है अते कहिंदा है कि कोई होर कंम कर। मन दा इिक हिसा कहिंदा है नहीं, इिह नहीं करना। तीसरा हिसा कहिंदा है इिह तुसीं दोवें की करदे पओ हो। तिन्न शैतान अंदर ज़रूर बैठे हन, इिक- कहेगा जाप करना है, दूजा कहेगा नहीं करना, अते तीजा कहेगा पहिले इिह फैसला ताँ कर लओ हुण की करना है। गुरबाणी ने किहा है कि जितना चिर इिह तिन्ने इिकठे हो के इिक नहीं हो जाँदे उन्नाँ चिर सिमरना नहीं बणेगा। सो जपण दा कंम सिरफ इितना है कि मन दे हिसिआँ नूं इिकठा कर देवे। गुरबाणी ने इिसे करके इिशारा कीता है,

''बीउ बीजि पति लै गओ
अब किउ उगवै दालि ॥'' (पन्ना ४६८)

छोलिआँ दे दाणे नूं जे रगड़के दो हिसे कर देईओ ताँ दाल बण जाँदी है। हुण जे छोलिआँ नूं बीजणा होवे ताँ दाल नूं धरती विच बीज के देख लवो, उसदा पौदा नहीं बणना। जे पौदा बणाउणा है ताँ बीजण लई ताँ दाणा साबत चाहीदा है। इिसे त्ररॉं जे मन ने प्रमातमा तक अगे जाणा है ताँ उहनूं इिक होणा पओगा।

''जे इिकु होइि त उगवै रुती हू रुति होइि'' (पन्ना ४६८)

इिस लई मन नूं इिक करन उपर बहुत ज़ोर दिता जा रिहा है। इिह भगती मारग दा पहिला कदम है, इिह भगती मारग दी नींह (foundation) है। अगर इिह नींह सही नहीं है ताँ अगे होर यातरा चल ही नहीं सकदी।

''गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥''

जिसनूं जपण उते इितना ज़ोर दिता जा रिहा है उह किहड़ा शबद है, उसनूं किस ढंग नाल जपणा है इिसदा खुलासा इिस तुक विच कीता गइिआ है। नाद (शबद) उह चुणना है जिहड़ा गुरू दे मूंह तों आइिआ है, गुरमखि दे 'खखे' नूं सिहारी है भाव गुरू कोलों नाद आइिआ है, गुरू कोलों इिक आवाज़ आई है उस आवाज़ नूं लै के जपणा शुरू करना है। उह जिहड़ी आवाज़ गुरू नानक तों आई है किस ढंग दी आई है? उसदी थोड़्ही जिही विचार ज़रूरी है किउंकि इिथे इिक गल आ गई है। सिख जगत तों पहिलाँ राम, ओम, अल्ला बीठल, गोबिंद, राधे क्रिशना, आमीन, ओमन, सोहं, आदि अखर जपण वाले सन अते गुरू नानक दे घर विचों चउअखरा शबद वाहिगुरू आइिआ है। उह 'चउअखरा' अखर गुरबाणी ने सानूं सिधा नहीं दसिआ किउंकि इिह बीज है। बीज दा अगर पौदा बणाउणा होवे ताँ धरती विच बीज पाके किरसान फिर भुल जाँदा है। जिस बीज नूं बार-बार पुट के वेखीओ कि इिहदा पौदा बणिआ कि नहीं ताँ उह कदी पौदा नहीं बण सकदा। बीज पा के छड देईदा है, दबा के भुल जाईदा है। जिहड़ा बीज धरती दे उ`पर नंगा रहि जाओ उहनूं चिड़ी काँ खा जाँदा है। बीज छुपिआ रहिणा चाहीदा है ताँ ही पौदा बणदा है। इिसे करके किउंकि नाम बीज है इिह गुरू ग्रंथ साहिब दे विच छुपाके रखिआ गइिआ है, सिधा नंगा नहीं कीता गइिआ। किसे किसे जगह इिस दा इिशारा कीता है 'वाहु वाहु' जाँ 'वाहि वाहि' जाँ 'गुरू गुरू' 'गुरू गुरू जपु मीत हमारै', 'वाहु-वाहु का बड़ा तमाशा' ते भटाँ दे मूंह तों पूरा वाहिगुरू कहाइिआ है। तो गुरबाणी ने इिह अखर सानूं दिता है।

इिथे इिक होर गल वी समझण वाली है। जितने वी दुनीआँ विच धारमिक सिसटम (system) हन उहनाँ ने पंजाँ तताँ विचों इिक तत नूं लै के भगती करन लई इिशारा कीता है। जिस त्ररॉं के वेदाँत प्रमातमा तक पहुंचण लई पाणी दा आसरा लैंदा है। इिसे करके बहुत सारे धारमिक असथान पाणी दे किनारे ते बणे हन। इिस सिसटम विच जगिआसू पाणी जैसे गुण आपणे अंदर पैदा करदा होइिआ आपा मिटाके प्रभू विच अभेद होण दा अभिआस करदा है पर इिह पुरातन तरीका विगड़के सिरफ तीरथ यातरा अते इिशनान ही बणके रहि गइिआ है। जोग मत ने अगनी तत नूं लइिआ है। इिसे करके धूणीआँ धुखाके बैठणा मशहूर हो गइिआ। इिसदा वी मकसद सी कि अगनी वाँङू आपने विचों सभ मैल कढके जला देणी है अते प्रमातमा नाल अभेद होणा है। पर इिह वी आपणे असली निशाने नूं छड चुके हन। इिसलाम ने धरती दे तत नूं लै के परमातमा तक पहुंचण दी कोशिश कीती है। इिसे करके इिसलाम विच नमाज़ है, मिटी उ`ते बार-बार सिर झुकाउण दा भाव है मिटी नाल मिटी हो जाण दा अभिआस करना। उहनाँ ने

मिटी दा तत लइिआ है। गुरमत ने परमातमा तक पहुंचण लई पवण (हवा) तत लइिआ है। हवा नूं चुणन दा कारन है कि इनसान परमातमा तों हवा दे करके टुटा है। जितना चिर जीव गरभ विच है उतनाँ चिर प्रमातमा नाल उसदी लगन लगी होई है। गुरबाणी इशारा करदी है:

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मि"ा हुकमि पइिआ गरभासि ॥ उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मि"ा खसम सेती अरदासि ॥ खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥ (पन्ना ७४)

पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मि"ा हरि पाइिआ उदर मंझारि ॥ हरि धिआवै हरि उचरै वणजारिआ मि"ा हरि हरि नामु समारि ॥ (पन्ना ७६)

बचा माँ दे गरभ विच प्रमातमा नाल जुड़िआ होइिआ है। बचे लई साह अंदर नूं ते माँ लै रही है, पर बाहर दा सवास बचा आप लै रिहा है अते हर उस सास नाल नाम जप रहिआ है। इिसनूं बाणी ने 'उरध तपु' कहिआ है। जिस वेले बचा जनम लैंदा है ताँ उह पहिला साह अंदर लैंदा है। इिसदे नाल ही उसदीआँ पंजे करम इिंदरीआँ दे दरवाज़े खुल जाँदे हन अते दसवाँ दवार बंद हो जाँदा है। सो जीव इिस हवा करके प्रमातमा तों विछड़िआ है अते इिही हवा दा घोड़ा इिसनूं वापस लै के जाओगा। जिस घोड़े ने इिसनूं मातलोक विच लिआँदा है, उसे हवा दे घोड़े ते इिसनूं वापस चड़्हा दिओ। इिसे करके पवन नूं 'गुरू' कहिआ गइिआ है। हवा दे उ"ते अखर ने चलणा है। शबद (धुन, आवाज़) हवा तों बिना चल ही नहीं सकदी ते हवा दे दो पहिलू हन। हवा सरीर अंदर जाँदी है, थोड़्ही देर लई अंदर रुकदी है फिर रुख बदल के हवा बाहर वल आउंदी है। गुरबाणी ने कहिआ कि इिह साह तेरी माला बण जाणी चाहीदी है। इिस नूं बाणी दे विच अरध उरध दा अभिआस जाँ सास गिरास दा अभिआस किहा गइिआ है।

"इिकि आखि आखहि सबदु भाखहि
अरध उरध दिनु राति ॥" (पन्ना १२३६)

"धधा अरधहि उरध निबेरा ॥ अरधहि उरधह मंझि बसेरा ॥ अरधह छाडि उरध जउ आवा ॥
तउ अरधहि उरध मिलिआ सुख पावा ॥" (पन्ना ३४१)

बस इितनी गल है कि सानूं वाहिगुरू अखर दिता गइिआ है किउंकि उह गुरू दे मुख तों आइिआ है 'गुरमुखि नादं'। 'गुरमुखि वेदं' दा मतलब है 'गिआन'। गुरबाणी ने समझाइिआ कि इिह अखर तैनूं दिता गइिआ है अते इिस दा अभिआस तूं किस तर्हाँ करना है उह वी गिआन गुरू कोलों ही लैणा है, आपणी मन मत नहीं करनी किउंकि प्रमातमा दी जोती गुरू विच समाई होई है। इिह अखर वी गुरू दे अंदर समाइिआ होइिआ है। गुरू हर जीव इिसतरी दे लई इिक पउड़ी बण गइिआ है। हर पउड़ी दा इिक डंडा धरती ते हुंदा है अते इिक डंडा छत नाल लगा हुंदा है। इिसेतर्हाँ गुरू मात लोक विच वी विचर सकदा है अते परलोक विच वी विचर सकदा है। ओसा गुरू ही किसे दे कंम आ सकदा है। इिस करके गुरू दे विच उह अखर छुपिआ बैठा है। इिसे करके गुरबाणी ने कहि दिता:

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कची आखि वखाणी ॥ (पन्ना ६२०)

जिहड़े अखर गुरू दे मूंह तों आओ हन सिरफ उही सचे हन। किउंकि:

"सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाओ ॥" (पन्ना ३०८)

सतिगुर विच हंकार नहीं हुंदा, उसदे विच हउमें नहीं हुंदी। इिस करके जाप वाला अखर गुरू कोलों लैणा है।

"गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥"

गुरबाणी इिशारा कर रही है कि वेदाँत ने अलग अलग तिन्न शकतीआँ बणा लईआँ हन, इिक शकती पैदा करन वाली, दूजी पालण वाली, अते तीसरी नाश करन वाली। पर इिह गल झूठ है। इिको ही शकती पैदा करन वाली है, इिको ही शकती पालण वाली है, अते इिको ही शकती नाश करन वाली है। उही शकती गुरू विच परगट होई है। उह तिन्ने शकतीआँ जिहड़ीआँ वेदाँत ने बाहर बणाईआँ हन उस नाल गुरसिख नूं भुलेखा नहीं खाणा चाहीदा। उहनाँ तिन्नाँ शकतीआँ दी शाखशात जोत गुरू विच बैठी है।

इिह तिन्न शकतीआँ वाली गल मनघड़ंत है। असली शकती इिको ही है। 'पारबती माई' दा मतलब शिवजी दी औरत नहीं है। इिसतों भाव है माइिआ, इिह सारी माइिआ उसदा साकार रूप है, उह आप निराकार है अते इिस कुदरत नूं बणा के इिस विच आप छुप के बैठ गइिआ है। गुरबाणी समझा रही है कि गुरू उह है जो उसदा रूप हो चुका है। जिहड़ा उस दा रूप नहीं होइिआ उस नूं गुरू नहीं किहा जा सकदा सो गुरू वी उसदी तर्हाँ निरगुन सरूप अते सरगुन सरूप (पारबती माई = माइिआ) है। मगर इिह बड़ा गहिरा भेद् है:

"जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥"

पहिली गल ते इिह है कि जिहड़ी हउमें (हउं) है उह कुछ जाण ही नहीं सकदी और जे जाण सके वी ताँ कुछ कहि नहीं सकदी किउंकि जिसदी गल हो रही है उह अखराँ तों बाहर है। इिह अकथ दी कहाणी हो रही है। इिह अकथ कथा है। इिह जाणदिआँ होइिआँ कि उस बारे कुझ वी किहा नहीं जा सकदा फिर वी कहिणा पैंदा है। भाँवें उह लफज़ाँ विच नहीं आउंदा, जिन्नाँ मरज़ी ज़ोर ला लईओ फिर वी बोलाँ विच पकड़िआ नहीं जाँदा, लगदा है कि घट ही कहिआ गइिआ है। इिक अकथ दी कहाणी है। इिसे करके गुरदेव ने मातलोक विच आ के इिक बुझारत हल कर दिती जिहड़ी गल सारिआँ नूं भुली होई है। गुरदेव ने समझाइिआ 'सभना जीआ दा इिकु दाता' भाव कि तूं इिस गल नूं कदी ना भुलीं। पर असीं दाते ही अलग अलग बणा लओ हन। हर इिक ने आपणी मरज़ी मुताबिक वखरे वखरे नाम रख लओ हन। गुरबाणी गुरसिख नूं याद् दिवाउंदी है कि वखरे वखरे नाम सुणके भुलेखा नहीं खाणा। दाता सभदा इिको ही है, इिह बुझारत नहीं रहिणी चाहीदी, इिह भेद् वाली गल नहीं है। सभना दा इिको मालिक है, सो इिस गल नूं कदे नहीं भुलणा।

(अंक ६)

विगिआन (science) दीआँ मुढलीआँ जमाताँ विच सारे विदिआरथीआँ (students) नूं पड़्हाइआ जाँदा है कि रौशनी (light) हमेशाँ सिधी लाईन विच चलदी है। उस नूं साबत करन लई इक तजरबा वी कीता जाँदा है। तिन्न गतिआँ दे विचकार (center) मोरी करो। फेर उहनाँ तिन्नाँ गतिआँ नूं लाईन विच रखो। जिनाँ चिर उह तिन्ने गते बिलकुल सिधी लाईन विच नहीं आउंणगे तुहानूं रौशनी नज़र नहीं आओगी। जदों रौशनी नज़र आ जाओ ताँ इक गते नूं ज़रा जिन्ना वी हिला दिउंगे ताँ लाईट फिर बंद हो जाओगी। इह तजरबा (Experiment) करके सानूं दसिआ जाँदा है कि लाईट सिधी (straight) लाईन विच चलदी है। जद विदिआरथी होर उचीआँ जमाताँ विच पुजदा है ताँ उ्थे समझाइआ जाँदा है कि लाईट टेढी वी चल सकदी है, इह बैंड (bend-मुड़) हो जाँदी है। सिधी लाईन ते नहीं चलदी। इह टेडी हो जाँदी है ते उहदे लई तजरबे करके दसिआ जाँदा है कि पाणी दी बालटी विच इक डंडी रखो। जिहड़ा डंडी दा हिसा पाणी तों बाहर है उह डंडी दे पाणी अंदर वाले हिसे दे किसे होर कोण (Angle) ते दिसेगा ते इंज लगदा है जिवेंकि डंडी मुड़ गई है। पर डंडी ते मुड़ नहीं सकदी बलकि लाईट ही मुड़ गई है। जद होर वी उचीआँ जामाताँ विच पुजीदा है ताँ उ्थे पड़्हाइआ जाँदा है रौशनी लहिराँ वाँङू वेव फारम (Wave Form) विच वी चल सकदी है। इह साबत करन लई वी विगिआन दे तजरबे सिखाओ जाँदे हन। जद उसतों वी उची पड़्हाई विच विदिआरथी पुजिआ ताँ उ्थे दसिआ गिआ कि लाईट कुअंटम (Quantum) विच चलदी है। हुण विचारन वाली गल है कि की उचीआँ जमाताँ दी पड़्हाई ने पहिलीआँ जमाताँ दी पड़्हाई नूं ग़लत साबत कर दिता है? जे ओसी गल है ताँ छोटीआँ जमाताँ विच इह पड़्हाइआ ही किउं जाँदा है? दरअसल इथे ग़लत की है ते सही की है दा सवाल ही नहीं है। आपणे आपणे पहिलू तों सारे ही ठीक हन। जितनी बरीकी नाल किसे सबजैकट (subject) नूं विचारिआ जावे उस विचों उसे तरृाँ दे भेद दिखाई देण लग पैंदे हन, सिरफ देखण दा ढंग बदलण दी लोड़ हुंदी है। इसे तरृाँ ही गुरबाणी नूं जिसने सिरफ अखराँ तों ही देखणा है उह कहेगा कि भगत धन्ना *जी कहिंदे हन:*

"दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥" (पन्ना ६६५)

उसदे लई इसदा भाव है कि धन्ना जी वी प्रमातमा कोलों दाल मंग रहे हन सो मैं वी दाल मंगणी चाहुंदा हाँ। सो उसने इस तुक दा लफज़ी मतलब कढ लइिआ है किउंकि उस ने बाणी नूं पदारथवाद जाँ मटीरीअलिसटिक (Materialistic) पहिलू तों देखिआ है। जिसने बाणी नूं ज़जबाती पहिलू तों वेखिआ है उसनूं बाणी दी विआखिआ नाल कोई मतलब ही नहीं है। उह सिरफ उसदे सतकार करन विच, पूजा करन विच, पड़्हन विच, गाउण आदि विच ही खुश है। जिसने इस तुक नूं धुर की बाणी समझके वेखिआ है उह कहेगा कि कोई वी भगत प्रमातमा पासों पदारथ कदी मंग ही नहीं सकदा किउंकि इह बाणी दे असूलाँ दे विरुध है। जद धन्ना जी दाल दा शबद वरत रहे हन ताँ उह मन दे उस सवभाव वल इशारा कर रहे हन जिहड़ा कि दाल दे दाणिआँ दी तरृाँ दोफाड़ होइिआ पइिआ है, जिस विच दुचिता पन है। भगती करन लई उहनाँ बिखरे होओ विचाराँ नूं पहिले इकठे करन दी लोड़ है। इस करके धन्ना जी प्रमातमा पासों उसदी किरपा रूपी घिओ मंग रहे हन जिस नाल मिलके दाल दे टुटे होओ दो हिसे फिर इकठे हो जाण। भगत जी दाल दा भता (सीधा) बणाउणा चाहुंदे हन। हर कोई जाणदा है कि छोलिआँ दी सुकी दाल विच जे घिओ पा लईओ ताँ उह खाण लई नरम हो जाँदी है, भाव कि उह भते वरगी हो जाँदी है। इसे तरृाँ जेकर उसदी किरपा दा घिओ मिल जाओ ताँ इह दाल दी तरृाँ बिखरे अते सुके विचार वी इतने नरम हो जाणगे कि उहनाँ ते काबू पाउणा आसान हो जाओगा। सो तुहाडे साहमणे इस तुकदी कई तरृाँ दी विआखिआ रखी गई है। इहनाँ विचों किहड़ी विआखिआ नूं तुसीं सही मनदे हो इह तुहाडी आपणी अंदर दी आवसथा ते निरभर है। किसे वी विआखिआ नूं ग़लत नहीं किहा जा सकदा। इथे इतना ही कहि देणा काफी है असीं गुरबाणी नूं अधिआतमिकवाद दे पहिलू तों वेखण दी कोशिश कर रहे हाँ, किउंकि बाकी पहिलूआँ तों अज तक बहुत सारे सटीक लिखे जा चुके हन। उह उहनाँ पहिलूआँ तों आपणी जगह बिलकुल ठीक हन। इह फैसला हर पड़्हन वाले नूं आप करना पओगा कि उस लई किहड़ी विआखिआ सही है, लिखारीआँ दा इस विच कोई हथ नहीं हो सकदा।

पंजवें अंक विच गुरबाणी ने किहा सी कि उह ही इक सचा साहिब है अते जीव दा प्रमातमा नाल रिशता साहिब ते ग़ुलाम दा है।। गुरूदेव ने इक बुझारत हल कर दिती ते समझाइआ कि जे तैनूं कोई हिंदू नज़र आउंदा है, जे तैनूं कोई मुसलमान नज़र आउंदा है ताँ तूं सिरफ बाहरों ही देखके भुलेखा खा रिहा हैं। सभना विच उही विचर रिहा है अते सभना नूं उही पाल रिहा है, इस गल नूं कदे नहीं भुलणा। जितने वी इसतर्हाँ दे भुलेखे हन, उहनाँ दे पिछोकड़ विच कोई ना कोई करम काँड ही बैठा दिसेगा। गुरबाणी ने खुलासा करके समझाइआ है कि ग़ुलाम नूं उही कंम करना शोभा देंदा है जो उसदे साहिब नूं चंगा लगे। छेंवाँ अंक इसे विचार तों शुरू हुंदा है।

"तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥" *(जिहड़ा तीरथ इसनान उसनूं चंगा ना लगे उह इसनान करन दा की मकसद हो सकदा है? जीव इह इस करके करदा है किउंकि उसनूं भुलेखा पै गइआ है कि प्रमातमा होर सृशटी वाँग कुझ बाहरों यतन करके पाइआ जा सकदा है। पर जेकर गुरदेव दी इक गल वी सही तरीके नाल समझ लई हुंदी ताँ मानो जीव नूं रतन जवाहराँ वरगा भंडार प्रापत हो सकदा सी। उसे इक गल दी गुरबाणी गुरसिख नूं याद दिवाउंदी है कि वखरे वखरे नाम सुणके भुलेखा नहीं खाणा। दाता सभदा इको ही है, इह बुझारत नहीं रहिणी चाहीदी, इह भेद वाली गल नहीं है। सभना दा इको मालिक है, सो इस गल नूं कदे नहीं भुलणा।)*

गुरबाणी ने सभ तों पहिले अंक विच ही प्रचलत करम काँडाँ दा ज़िकर कर दिता सी। उह हन, तीरथ इशनान करने, जंगलाँ विच खामोश होके बैठणा, हठ योग करना, अते गिआन इकठा करना। इहनाँ चार तरीकिआँ विच जो मुशकलाँ हन उहनाँ बारे ज़िकर करके गुरबाणी ने उसदे हुकम दी रज़ा विच चलण वल इशारा कीता सी। हुण गुरबाणी फेर ओसे विचार नूं लैके उसदा खुलासा करदी है। हर करम काँड बारे इह देखण विच मिलदा है कि उह हंकार नूं वधा रिहा है। जदों कोई तीरथाँ दी यातरा कर के आउंदा है ताँ उसदा रंग-ढंग अलग ही हो जाँदा है। जेकर इह सही रूप विच धारमिक करम हुंदा ताँ तीरथ यातरी विच कुझ निमरता पैदा होणी चाहीदी है। पर देखण विच गल बिलकुल उलट नज़र आउंदी है। बजाओ निमरता आउण दे, बजाओ हलीमी आउण दे, बजाओ हंकार घटण दे, सगों हंकार होर वध जाँदा है। अते ओसी तीरथ यातरा प्रमातमा नूं नहीं चंगी लग सकदी। उही तीरथ दा इशनान असली है जिहड़ा उसनूं चंगा लगे। हुण इथे दिमाग़ ने चकर खा जाणा है। की प्रमातमा वी किसे कंम नूं सही मनदा है ते किसे कंम नूं ग़लत? की इस दा मतलब इह है कि उसनूं कोई-कोई ही भाउंदा है, अते बाकी नहीं भाउंदे? की उसदी मेहर किसे-किसे ते हुंदी है अते बाकीआँ ते नहीं हुंदी? की उसनूं वी ख़ुशामद चाहीदी है? गुरबाणी ने पिआर नाल सभनूं समझाइआ है कि उहनूं चापलूसी नहीं चाहीदी। जेकर तुसीं नाम ना जपना चाहो ताँ उसनूं कोई फरक नहीं पैंदा। बाणी दा फ़ुरमान है:

"जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥
वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥" (पन्ना ६)

जे सारे रल के उसनूं वडा कहिण लग जाण ताँ उह साडे कहिण करके वडा नहीं हो जाओगा। उह ताँ वडा है ही। जे सारी दुनीआँ दे लोग रलके इक आवाज़ विच कहिण लग जाण कि उह बहुत छोटा है ताँ की उह छोटा हो जाओगा? बिलकुल ही नहीं, साडे कहिण नाल उसते कोई असर नहीं है। उसदी मेहर, कृपा हमेशा २४ घंटे, सते दिन सभ उपर इको जिही है। जिवें सूरज दी रौशनी ताँ आ रही है, इह हो सकदा है जीव पिठ करके तुरिआ जा रहिआ होवें जाँ उस वल मूंह करके चल रिहा होवे। इह हो सकदा है कि घर दा दरवाज़ा बंद कीता होवे जाँ खुल्हा होवे। जे दरवाज़ा ही बंद है ताँ सूरज दी रौशनी कमरे दे अंदर नहीं आ सकदी। उह कदी नहीं कहिंदा कि मैं तैनूं रौशनी ज़रूर देणी है। उस दी कृपा ताँ हमेशा है। पर हंकार नाल बंद अखाँ उसनूं देख ही नहीं सकदीआँ। उसदा नाम जपना उहनाँ अखाँ नूं खोल्हण दा इक तरीका है, होर कुझ नहीं। इह उसदी ख़ुशामद नहीं है, इह ताँ इक टैकनीक (Technique) है जो मन नूं इकागर करके उसदे दरशनाँ लई तिआर करदा है। अगर तीरथ इशनान वी इह कर सकदा है ताँ उह वी प्रवान हो जाँदा पर ओसा देखण विच किते नहीं आइआ। इसतर्हाँ दे करम काँड मन उते बिलकुल उलटा असर करदे दिखाई देंदे हन। ताँ ही गुरबाणी कहि रही है:

"तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥"

तीरथ यातरा अते तीरथ इशनान जैसे करम काँड नूं ताँ ही कीता जावे जेकर इस नाल प्रमातमा दे नेड़े होइआ जा सकदा है, जेकर उसनूं ओसे करम चंगे लगदे होण, नहीं ताँ ओसे करमाँ दा होर कुझ फाइदा हुंदा ही नहीं, सगों नुकसान ही हुंदा नज़र आउंदा है। गुरबाणी ने इशारा कीता कि इह तेरा सरीर वी इक मंदर है। जिसतर्हाँ मंदर दी दहिलीज़ ते इक घड़िआल टंगिआ हुंदा है इसे तर्हाँ ज़ुबान इक घड़िआल है। जिसतर्हाँ मंदर दे अंदर वड़न तों पहिलाँ जगिआसू घड़िआल वजाँदा है उसे तर्हाँ अंदर दे तीरथ दा इशनान करन लई जीभा नाल शबद दा जाप करना पवेगा। जे मन दे अंदर वड़ना चाहुंदा हैं ताँ इस ज़ुबान दे घड़िआल नूं हिला:
"मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥
ओकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥"

(पन्ना ७९५)

बाहर दा तीरथ सिरफ तन दी मैल उतार देवेगा,
पर मन दी मैल वध जाओगी।

नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर ॥ इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर ॥ (पन्ना ७८९)

इहनाँ तुकाँ वल धिआन दिओ। न्नातिआँ तन दी मैल ताँ लथ गई (इकु भाउ लथी नातिआ) पर दूजे वल वेखके आपणे आप नूं उचा दसण दी चाह पैदा हो गई, हंकार वध गिआ (दुइ भा चड़ीअसु होर) कि मैं तीरथ यातरा कर के आइआँ हाँ पर दूजा कर के नहीं आइआ।

सो गुरबाणी याद दिला रही है कि उही तीरथ इशनान करना ठीक है जो उसनूं भा जावे नहीं ताँ जीवन अजाँईं ही गुवाच जाँदा है। हुण सवाल उठ जाओगा कि असीं ओसे भुलेखे विच किउं पै गओ हाँ। अगली तुक विच इसदा जवाब दिता गइआ है:

"जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥"

अजे तक इह गल बणी होई है कि इनसान ने हुण तक जो वी प्रापत कीता है उह बाहरदे करम करके प्रापत कीता है। इस करके उहनूं इह यकीन हो गिआ है कि उह प्रमातमा नूं वी इस तरुाँ प्रापत कर लवेगा। सो बजाओ उसनूं अंदरों लभण दे सारी कोशिश बाहर खोजण ते लग गई। पर उसदी प्रापती अज तक किसे नूं वी बाहर दे करम करन ते नहीं होई। पर असीं करम-काँड शुरू कर लिआ। समाज सेवा, दान, पूजा, पाठ, लंगर आदि कई तरुाँ दा करम-काँड चल रिहा है। इथे इक होर शंका उठ पवेगा कि की पूजा करनी, लंगर बणाउणे, लंगर छकाउणे आदि, इह सभ कुझ सही नहीं है, की इह ग़लत है? गुरबाणी कहि रही है कि इह सारे करम बाहर दे समाज (society) नाल सबंध रखदे हन। उह सेवा समाज दी सेवा है। सुसाइटी दी सेवा दा मतलब इह नहीं कि इह प्रमातमा दी सेवा वी होवे। इथे इक होर हुजत खड़ी हो जाँदी है कि जद प्रमातमा वी समाज विच वसदा है ताँ जदों समाज दी सेवा हो गई, उह प्रमातमा दी सेवा किउं नहीं हो गई। इह धिआन जोग गल है कि प्रमातमा दी सेवा दी इह डैफीनेशन असीं आपे ही जबरदसती बणा लई है। इसदी सही डैफीनिशन (definition) ताँ गुरबाणी विचों लभणी पवेगी। गुरबाणी ने सानूं इशारा कीता है:

"नामु हमारै पूजा देव ॥
नामु हमारै गुर की सेव ॥१॥" (पन्ना ११४५)

"हरि की टहल कमावणी जपीओ प्रभ का नामु ॥" (पन्ना ३००)

भाव जेकर तूं हरी दी सेवा करनी चाहुंदा हैं ताँ जिस दा सरीर नहीं है उस दी सेवा सिरफ उसदे नाम जपण नाल ही हो सकदी है (जपीओ प्रभ का नामु"))। असीं उह सेवा करन नूं तिआर नहीं हुंदे किउंकि इनसान नूं सवाद पै गिआ है, इक बहुत वडा भुलेखा पै गिआ है कि जो वी उसनूं मिलिआ है, उह सभ बाहरदे करमाँ नाल मिलिआ है। सो जेकर प्रमातमा अंदर वी बैठा होइआ है ताँ उह अंदरों वी करमाँ नाल ही मिलेगा। इस करके उह करम काँड इकठे करन लग पिआ है। सारी ज़िंदगी इह करम कर के ते जद उसने आपणे अंदर वल झाती मारी ताँ पता लगा कि इतना कुझ करन दे बावजूद वी मन दी भटकणा बंद नहीं होई। काम, क्रोध, लोभ, मोह, हंकार उसे तरुाँ तंग करदे हन। जेकर गुरबाणी कोलों पुछिआ जाँदा ताँ शुरू विच ही पता लग जाँदा कि प्रापती करन दा सही ढंग की है। इसतों बिना धरम दी सारी यातरा इक बचकानी खेड्ड बणके रहि गई अते जीवन बेकार चला गइआ। गुरबाणी दा फुरमान है:

"माथे तिलकु हथि माला बानाँ ॥
लोगन रामु खिलउना जानाँ ॥१॥" (पन्ना ११५८)
गुरबाणी कोलों पुछिआँ पता लगा कि उसदी प्रापती लई बस इक ही गल याद रखण दी ज़रूरत है। बहुतिआँ करम काँडाँ विच फसण दी लोड़ ही नहीं। उसदा नाम जपणा, इक शबद दा अरध उरध दा अभिआस ही उस तक लै जाओगा:

"मति विचि रतन जवाहर माणिक
जे इक गुर की सिख सुणी ॥"

स्री गुरू गोबिंद सिंघ जी ने सानूं याद करवाइिआ सी "जागतु जोति जपै निसु बासरु" भाव कि उस आकाल पुरख दी जागती जोत दा जाप करना शुरू कर अते इितना अभिआस कर जिस नाल उसदा शबद तेरे साहाँ (सास-गिरास) दा हिसा बण जाओ। ओसा करन नाल मन दे विचार जो कूंजाँ दी तूराँ बाहर नूं भजे फिरदे हन, थाँ थाँ उडदे फिरदे हन, उहनाँ दी उडारी रुक जाओगी। इिहनाँ विचाराँ ने तेरे मन विच शोर मचाइिआ होइिआ है जिस करके उसदी आवाज़ सुणाई नहीं देंदी, उसदा हुकम सुणाई नहीं देंदा। इिस शोर नूं बंद कर। जदों तेरे मन दा टिका होओगा, जदों ही हंकार मरिआ उसे समे प्रमातमा प्रगट हो जाओगा। हंकार दा मरना ही प्रमातमा दा होणा है। जद इिह हंकार भजणा शुरू होइिआ ताँ तेरे अंदर होली-२ हीरे, जवारताँ वरगी रौशनी आउणी शुरू हो जाओगी। अकल चमक जाओगी, हुण अगिआनता दा अंधेरा भजेगा बशरते उस गल नूं कमा लिआ जाओ, जे उस इिक अखर दी (गुरशबद) दी कमाई कर जाओं ताँ। पर असीं ते उस शबद नूं गाउणा, उसदा पाठ, उसदी विआखिआ आदि सभ कुझ कीता, पर कमाइिआ नहीं। गुरबाणी ने समझाइिआ कि गुरदेव दी इिक गल ही सुण लै। तैनूं बहुतीआँ तरजमिआँ (translations) दी लोड़ नहीं, बहुतिआँ कथाकाराँ दी लोड़ नहीं, तैनूं किते बाहर जाण दी लोड़ नहीं, तीरथाँ ते भटकण दी ज़रूरत नहीं। बस तूं उस इिक अखर दी कमाई कर लै, तूं इिक अखर दा जाप कर लै। तूं कोई इिक अखर लै लै, तूं गोबिंद कहि लै, तूं ओम कहि लै, तूं अल्हा कहि लै, तूं वाहिगुरू कहि लै, उसदे दर उते सभ प्रवान है। किउंकि सारिआँ दा उही इिक खसम है। गुरदेव ने इिह बुझारत इिसे करके पहिलाँ ही हल कर दिती है।

"गुरा इिक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इिकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥"

असीं सारीआँ उसदीआँ जीव इिसतरीआँ हाँ। सभदा मालिक उही इिक प्रमातमा है इिह गल तूं कदे वी भुलीं ना। कोई ओम जपदा है, कोई वाहिगुरू जपदा है, इिसदे विच वी हंकार ना बणे कि साडा अखर तुहाडे अखर तों वडा है। इिहदे विच ही झगड़ा शुरू नाँ हो जावे। इिस नाल कोई फरक नहीं पैंदा। इिह इिक बुझारत है। इिस नूं बुझ लै। इिसे करके गुरदेव ने रसता साफ कर दिता है। इिह बुझारत तैनूं हल कर के दे दिती है। तूं यकीन कर लै। सारिआँ दा मालिक उही है। संत दा मालिक वी उही है, चोर दा मालिक वी उही है। सभनूं पैदा करन, पालण वाला, अते नाश करन वाला उही है। सभ दाताँ उसे पासों आ रहीआँ हन, इिह गुरदेव दी सिखिआ कदी नहीं भुलणी।

(अंक ७)

"जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीओ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥"
(भाँवें किसे जीव दी चार जुगाँ दी थाँ चाली जुगाँ दी उमर वी हो जावे, अते उस जीव नूं सारी काइनात जाणदी होवे अते उसदा साथ देण लई तिआर होवे, अते उस जीव ने दुनीआँ दीआँ निगाहाँ विच इतने चंगे करम कीते होण कि सारे ही उसदी शोभा करदे होण; ताँ वी जेकर उह जीव प्रमातमाँ दी नदर दा पा" नहीं है ताँ उह किसे कंम दा नहीं है। बलकि उह जीव उस मामूली कीड़ी नालों वी बदतर अते दोशी है जिहड़ी उसदे दरबार विच प्रवान हो गई है। प्रभू उसदे दर दी चाह रखण वालिआँ नूं उस तक पहुंचण वाले गुणा नाल भर देंदा है अते जो उस तक पहुंचण विच पहिलाँ ही जुड़े होओ हन उहना नूं होर गुणवान बणा देंदा है। इहो जिहीआँ गुणी दाताँ बखशन वाला उस प्रभू दे इलावा होर कोई नहीं हो सकदा।)

जपु बाणी दे शुरू विच सानूं परमातमा दीआँ कुझ निशानीआँ (Characteristics) दसीआँ गईआँ सन। फेर दसिआ गइिआ कि उह आपणे ही प्रसाद सदका प्रापत हुंदा है, पर तैनूं आपणा सरीर रूपी भाँडा नाम जप के साफ करना पओगा। नाम उसदा जपणा है जो कि हमेशा तों है ते हमेशा रहेगा। उसदी प्रापती दे प्रचलत पुराणे जो चार तरीके सन उहनाँ दे खतरे अते मुशकलाँ दसके पहिलाँ उसदा हुकम मनण बारे दसिआ गइिआ। नाल ही इह याद दिवाइिआ गइिआ कि तूं हुकम तों मूंह मोड़ सकदा है, हुकम तों बाहर नहीं जा सकदा। फिर इशारा कीता गइिआ कि उसदा नाम मालक दा ते नौकर दा रिशता बणा के जपणा है किउंकि जिहड़ा गुलाम है उसनूं हंकार नहीं आ सकदा। हंकार दी जड्ढ कटी जाओगी। पर गुरू दी गल ना सुणी ते पुराणे तरीके फेर अपना लओ गओ। छेवें अंक विच इशारा कीता गइिआ सी कि जीव उस ज़िद तों हटदा नहीं अते फेर वी तीरथ यातरावाँ अते तीरथाँ दा इशनान करन विच ही रुझिआ होइिआ है किउंकि उसनूं यकीन हो गिआ है कि जदों दा जनम लिआ है उदों दा जो कुझ वी पाइिआ है उह सभ बाहरों कुझ करके प्रापत कीता है। इस दुनीआँ दे विच कुझ वी हासिल करना होओ ते उसदे लई करम करना पैंदा है। तो बाणी ने इशारा कीता "तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइि करी ॥" नहाउण दी गल इथे इस करके कीती गई है किउंकि पहिले अंक विच शुरू ही इथों कीता सी "सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥" भाव पवितरता बाहरों नहीं आ सकदी। पवितरता दा संबंध अंदर नाल है। उस नाल संबंध बणा, नाम जप ताँ तेरे अंदर पवितरता पैदा होवेगी। पर तैनूं यकीन ही नहीं आउंदा कि जो गुरबाणी कहि रही है उह सही है। अते इह यकीन इस करके नहीं आउंदा किउंकि इह भुलेखा पै गइिआ है कि जितनी वी बाहर सृशटी नज़र आउंदी है उहदे विचों उतना चिर कुझ हासिल नहीं हुंदा जिन्नाँ चिर कुझ कीता ना जावे। पर गुरबाणी इशारा कर रही है इस भुलेखे नूं आपणे मन विचों कढ। तूं इस गल नूं आपणे हिरदे विच वसा जिहड़ी इक गल ही बार-बार कही जा रही है कि जपणा ही सभ तों उ`ची गल है। बाकी ज़िदाँ छड दे, पर मन ओसा अड़ीअल है उह मनदा नहीं, ज़िदाँ नू छडदा नहीं।

गुरबाणी उस मन नूं फिर चोट मारदी है, फिर इशारा करदी है किउंकि गुरबाणी ने इक होर जगह मन दे इस अड़ीअळ सवभाव बारे इशारा कीता है:

"मन खुटहर तेरा नहीं बिसासु तू महा उदमादा ॥ खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा ॥१॥" (पन्ना ८१५)

पंजवें महल कोलों सानूं इह इशारा आइिआ है कि मन दी आदत इक अड़ीअल खोते वरगी है। पंजाब दे शहिराँ दे विच रिकशे टाँगे वालिआँ ने वेखणा कि गाँ, मझ, घोड़ा होर कोई वी रसते विच खड़ोता होओ ते उहनाँ ने उहनूं ककर्कक करना ताँ उहनाँ ने अगों हट जाणा पर खोता इक ओसा जानवर है जिस वेले सड़क ते खड़ो गिआ उहनूं डंडे वी मारो उह हिलदा नहीं। खोते दा अड़ीअलपन बड़ा मशहूर है। तो गुरबाणी ने मन नूं खोते दी तृाँ मंनिआँ है। ते खोते ते भार लदण लई घुमिआर ने इक तरीका लभिआ है। जेकर बिनाँ किसे इंतज़ाम कीते खोते उते भार पाइिआ जावे ताँ उह बड़ी ज़बरदसत छड़ मारदा है। पर जे भार रखण तों पहिलाँ रसी नाल उस दीआँ पिछलीआँ दोवें लताँ बन्नृ दितीआँ जाण ताँ उह छड़ मारन जोगा नहीं रहि जाँदा। उस रसी नूं पैखर कहिंदे हन। पैखर बन्नृके उहदे उते भार लदिआ जाँदा है। घुमिआर उहदे ते इन्ना भार लद देंदे हन कि जे रसी खोलृ वी दिती जावे ताँ वी उहदी लत ते भार इन्नाँ हुंदै है कि दुलती नहीं मार सकदा। तों गुरबाणी ने दसिआ कि इह मन इक खोते वरगा है। खोते दी तृाँ अड़ीअल है इहदा विसाह नहीं कीता जा सकदा। इह अंदर बड़ा शोर मचाउंदा है। सो इसनूं वस विच करन लई मन दे उ`ते नाम जपण दा इतना भार पाउणा पओगा, इन्ना ज़ोर देणा पवेगा कि हुण इहनूं होर कोई गल याद आवे ही ना। जे इहनूं

खाली छडिआ ते इिहने फेर शोर मचाउंणा शुरू कर देणे है। इिह अड़ीअल है, गल सुणदा नहीं। गुरबाणी ने सतवें अंक दे विच सानूं फिर इशारा कीता है कि तूं करम करनों हटदा नहीं। इिहनाँ करम काँडाँ लई ज़िद ताँ करदा हैं पर दस कितना कु करम कर सकदा है? तेरे विच कितनी कु हिंमत है? धिआन नाल सोचण ते पता लगदा है कि इिस अंक विच बहुत वडा हलूणा मारिआ जा रिहा है। असीं जाणदे हाँ कि आम बंदे दी (average) उमर ७० कु साल दी मनी गई है। ताँ हजूर इशारा कर रहे हन कि तेरे कोल कितनी कु उमर है, अते इिस सारी उमर विच तूं कितने कु करम कर सकदा हैं? चलो असीं ७० साल दी गल ही नहीं करदे। इिथों अगला अंक शुरू हुंदा है।

"जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइि ॥
नवा खंडा विचि जाणीऔ नालि चलै सभु कोइि ॥"

अज कल दे जुग विच इिक इिनसान दी औसत (Average) उमर ७० साल दी मन्नी जाँदी है। गुरबाणी इशारा करदी है कि ७० साल दी उमर दी गल ते की करनी है, जेकर ४ युगाँ दी उमर वी हो जाओ ताँ वी की हो जाओगा? चार जुगाँ दी जगह जेकर चाली जुगाँ (दस गुनी) दी उमर वी हो जाओ अते तूं सारी ६ खंड पृथवी दा लीडर वी बण जाओं; इिथे ही बस नहीं लीडर वी इितना चंगा होवे कि ६ खंड पृथवी दा हर जीव तेरे पिछे चलण लई तिआर हो जावे;

"चंगा नाउ रखाइि कै जसु कीरति जगि लेइि ॥"

अज ते तूं छोटी जिही पदवी लई पागल हो जाँदा हैं पर मन लउ कि कि चार बंदे ही तेरे पिछे नहीं लगे होओ बलकि तैनूं दुनीआँ दी धरती उ¬ते कोई माड़ा कहिण वाला होवे ही ना, सारे कहिण बई इिहदे वरगा कोई इिनसान पैदा ही नहीं होइिआ। तेरा नाम इितनाँ उ¬चा हो जाओ कि सारी पृथवी दे उ¬ते तेरे नाम दे ढंडोरे वज रहे होण। हालाँ कि जद तों सारी सृशटी बणी है, इिस धरती ते कोई वी ओसा इिनसान पैदा नहीं होइिआ अते ज़ाहिर है कि ओसा हो वी नहीं सकदा। पर गुरबाणी ने इिह इिक ओसी खूबसूरत तसवीर बणाई है कि जिस नाल करम काँडीआँ दे सारे भुलेखे दूर हो जाणे चाहीदे हन। गुरबाणी ने फैसला दिता है अते फुरमाइिआ है कि सारी दुनीआँ विच इितना नाम कमाउण दे बावजूद वी:

"जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥"

भाव कि जेकर उस प्रमातमा दी नदरे-करम दा पा" नहीं बणिआ ताँ इिह सारा कुझ ही बेकार चला गइिआ, इिह चंगीआईआँ किसे वी कंम ना आईआँ। उसदी दरगाह विच इिहनाँ करम काँडाँ दा रती भर वी मुल ना पइिआ।
समाज सेवा करन दा कोई नुकसान नहीं है। इिस विच कोई ग़लती नहीं है। भुलेखा इिह कढणा है कि जीव सेवा दे नाल प्रमातमा दी प्रापती नहीं हो सकदी। प्रमातमा दी प्रापती सिरफ उसदे नाम जपण नाल ही मुमकिन हो सकदी है।

»कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥"

इिथे ही बस नहीं, जदों उ¬थे इिह फैसला कीता जाओगा ताँ उह कीड़ा जिस नूं इिह गल समझ आ गई है अते उसदा नाम जपदा है, उस कीड़े नालों वी तूं ज़िआदा दोशी ठहिराइिआ जावेंगा। जिस ने इिह गल समझ लई है, भावें उह कीड़े दे जनम विच है, भावें कैसी वी नीवीं अवसथा विच उह किउं नहीं है, अगर उह परमातमा दे नाम नाल जुड़ गिआ है ताँ उहदे नालों तूं वडा दोशी हैं किउंकि तेरे कोल सारे सुख हुंदिआँ होइिआँ वी तूं उस नूं विसार दिता है।

इिथे इिक गल होर समझण वाली है। गुरबाणी इिक सुनेहाँ देण दी खातर कीड़े दी सिरफ मिसाल लै रही है किउंकि कीड़ा बहुत छोटा जीव है। इिसतों भाव इिह नहीं लैणा कि कीड़े दी जून विच वी भगती कीती जा सकदी है। भगती ताँ सिरफ मानुख दी जून विच ही कीती जा सकदी है किउंकि भगती करन दा सारा सामान (जीभा, बुध आदि) सिरफ इिसे जून नूं प्रापत हन। बाकी हर जून विच जीभा सिरफ खाण विच ही सहाइिक है, नाम जपण दी शकती सिवाओ इिनसानी सरीर दे होर किसे वी सरीर विच नहीं है।

नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥"

करम काँड विच फसे रहिण दी जगह जिहड़ा जीव उसदी भगती विच जुड़ जाँदा है अते शबद अभिआस विच लग जाँदा है उस बारे गुरबाणी ने वाअदा कीता है अते फुरमाइिआ कि जिहनाँ कोल भगती वरगा गुण नहीं है, जेकर उहनाँ दा भगती दा इिरादा बण जाओ ताँ उहनाँ विच उह गुण आ जाओगा अते जिहड़े इिस मारग ते पहिले ही चले होओ हन, उह किते निराश हो के

पिछाँह ना मुड़ जाण, इस लई उहनाँ नूं झलकीआँ आउंदीआँ हन, उहनाँ नूं इशारे मिलदे हन कि तूं ठीक चल रिहा है। ''नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआँ गुणु दे'' प्रभू होर इशारे करदा है, होर हिंमत बखशदा है, होर encouragement दिंदा है ताँ कि जिहड़ा इस पासे वल लगिआ होइआ उह लगा रहे अते पिछाँह ना मुड़े। किउंकि गुरसिख दी असली यातरा उस समे पूरी होणी है जदों सागर दे विच बूंद डिग जाओगी।

''तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥''

गुरदेव गुरसिख नूं उस तों नेड़े नहीं रहिण देणगे। जदों उस मंजिल ते बंदा पहुंच जाँदा है ताँ उथे सभ कुझ छडणा पैंदा है। उह किहड़ी अवसथा है? इस अंक दी आखरी तुक विच हजूर इशारा करदे हन कि इिह मिहनत अते इिह फल उसदे प्रसाद तों आउंदा है जिस वरगा होर कोई नहीं है, जिसदी किसे नाल वी मिसाल नहीं दिती जा सकदी। उह इको परम शकती है, उस विच अभेद होण दी जाचना अते मिहनत करनी ही इिनसानी जिसम दा असली निशाना होणा चाहीदा है।

(अंक ८-११)

सुणिओ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिओ धरति धवल आकास ॥ सुणिओ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिओ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिओ दूख पाप का नासु ॥८॥

(जेकर जीव सही सुणना सिख जावे ताँ उस पास रिधीआँ सिधीआँ दा गिआन आ जाँदा है, उह धरती, आकास, अते पाताल दे भेदाँ नूं जाण जाँदा है, उसनूं धरतीआँ अते उस उते वसे जीवाँ बारे गिआन हासल हो जाँदा है अते उह देस-काल (Time and Space) दे बंधन तों आज़ाद हो जाँदा है। पर ओसा केवल उह भगत जन जो सदा चड़्हदी कला विच रहिंदे हन ही कर पाँदे हन। उहना भगताँ नूं सारे दुनिआवी दुखाँ अते पापाँ (Negative Energy Of Physical Dimension) तों छुटकारा मिल जाँदा है।)

पिछले अंक विच गुरबाणी ने इशारा कीता सी कि करम इंदरीआँ नाल कीता होइआ उही करम सही है जिहड़ा उसदी दरगह दे नेड़े लै जावे। बाकी करम संसार नूं ताँ परवान हो सकदे हन पर करतार दी क्रिपा दे पातर नहीं बणाउंदे। इसदे विच की भेद हो सकदा है कि सारी दुनीआँ जिस करम नाल खुश है उह प्रमातमा दे करीब लैके नहीं जाँदा। गुरबाणी ने इशारा कीता है कि:

"कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगे रथवाहु ॥१॥"

(पन्ना ४७०)

भाव कि जिस समें विच असीं सभ विचर रहे हाँ इस विच सभनूं इहि विशवास बण चुका है कि झूठ ही जीवन नूं सही रूप नाल चला सकदा है सो जेकर सच बोलिआ ताँ जीवन विच कोई न कोई मुशकिल ज़रूर आवेगी।जिवें जे मैं खुद चोर हाँ ताँ फिर चोरी करन नूं मैं बुरा किवें कहि सकदा हाँ? सो दूजे चोर वल वेखके मैं इहि कहि ही दिआँगा कि उह वी बड़ा भला पुरश है। इस करके संसार दीआँ तरीफाँ दा सही इतबार कीता ही नहीं जा सकदा किउंकि संसार हमेशा चिहरा वेखके गल करदा है। कोई वी किसे दे मूंह ते सची गल करन लई तिआर नहीं है। हर कोई इहि कहिके टाल जाँदा है कि सच कहिके किसे दा दिल दुखाउण दी की लोड़ है। ओसे समाजक झूठ इतने पैदा हो गओ हन कि सच दी पहिचान करनी ही औखी हो गई है। इस करके गुरबाणी ने इहि याद दिलाइआ है कि संसार दी प्रवानगी किसे कंम दी नहीं है, सिरफ उसे दी प्रवानगी ही सही करम दी असली निशानी हो सकदी है। इथि सवाल उठ जाओगा कि सही करम करन दा की ढंग है? ताँ गुरबाणी ने इशारा कीता कि हर उह करम जिस नाल "मैं" दी भावना लगी होई है उह प्रवान नहीं हो सकदा। जे अखाँ खोल्ह के देखण लगिआँ मन विच विचार उठ पैंदा है कि मैं देख रहिआ हाँ, बोलण लई जीभा हिलदी है ताँ अहिसास जागदा है कि मैं बोल रहिआँ हाँ आदि। सिरफ इक ही करम इंदरी है जिसदे नाल करते दी भावना नहीं लगाई जा सकदी अते उह है कन्न। असीं इहि ते कहि सकदे हाँ कि दुबारा कहो किउंकि मैं सुणिआ नहीं पर मैं इहि नहीं कहि सकदा कि मैं सुण रहिआ हाँ। हर जीव दे कन्न पहिलाँ ही कुदरत ने खोल्हके रखे होओ हन। उसनूं सिरफ आपणा धिआन कहिण वाले नाल जोड़न दी लोड़ है जो कि इक करम नहीं है। "मैं" दी भावना सुणन विच बाधा ते बण सकदी है, मदद नहीं कर सकदी। इही कारन है कि गुरबाणी ने इस करम इंदरी नूं सभ तों पहिलाँ चुणिआ है अते इसदा सही प्रयोग करना सिखण दी राओ दिती गई है।
सो सभ तों पहिलाँ ते इहि समझणा है कि गुरबाणी ने सुणना किस नूं किहा है। जिसनूं असीं सुणना आखदे हाँ उह गुरबाणी दा सुणना नहीं है। किउंकि बाणी ते दाअवा कर रही है:

"सुणिओ जोग जुगति तनि भेद ॥"

भाव जे सही सुणना आ जाओ ताँ सरीर दे सारे भेदाँ दा आपणे आप ही पता लग जाओगा। इहि ज़रा विचारन वाली गल है। अज दी साइंस (science) कोल ओकस-रे (X-Ray) मशीनाँ हन। उह अज सरीर विच अंदर देख सकदे हन कि किसतराँ नाल कोई अंग कंम कर रिहा है। जिन्नाँ मुलकाँ दे विच आयूरवैदिक जाँ होमिऊपैथिक (homeopathic) दवाईआँ चलीआँ उन्नाँ नूं किस तराँ पता लगा कि दिल किस तराँ कंम करदा है, खून किस तराँ बणदा है, मिहदा किस तराँ चलदा है, गुरदे किस तराँ कंम करदे हन आदि। जिन्नाँ ने आयूरवैदिक जाँ होमिऊपैथिक दवाईआँ दितीआँ उन्नाँ नूं किस तराँ पता सी कि इस दवाई दा इहि असर होओगा? गुरबाणी ने इशारा कीता कि जदों जीव आपणे सारे ही बिखरे होओ विचाराँ नूं इकठिआँ करके इक थाँ फोकस (focus) कर लवे ताँ धिआन अंतरीव नूं चला जाँदा है। इस ढंग नाल जीव आपणे अंदर सरीर दी हर बणतर नूं देख सकदा है। उह अंदर दी यातरा कर सकदा है। तन दा भेद खुल्ह जाणा इहि बड़ी मामूली खेड्ह है। इहि ताँ जगिआसू दी पहिली ही अवसथा है।

जो आम सुणना है इहि ताँ हवा दे विच आवाज़ (sound) दी शकती (Energy) आई है। इहि लहिराँ (Sound Waves) साडे कन्न दे परदे नाल टकराँदीआँ हन। इस नाल कन्न दा परदा थर थराहट करदा है। परदे दी उह कंबणीं बिजली (Electrical Pulse) बणके दिमाग़ नूं उतेजत करदी है अते दिमाग़ दसदा है कि इहि अखर बोलिआ जा रिहा है। उह अखर साडे आपणे इकठे कीते होओ विचाराँ दे फिलटर (filter) दे विचों दी लंघदा है ते असीं नाल-नाल फैसला करीं जाँदे हाँ कि जो इहि किहा जा रिहा है इहि सही है कि नहीं। जे उह अखर साडे पहिले विचाराँ दे नाल ठीक बैठ जाओ ताँ असीं कहिंदे हाँ कि इहि गल सही कहि रिहा है। खास करके अधिआतमिकवाद दी दुनीआँ विच इहि गल अकसर देखी गई है कि असीं गुरू दे दरबार विच

आउंदे हाँ, अते गुरू अगे सवाल रखदे हाँ–

"कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥१॥" (पन्ना २०४)

भाव कि हे गुरदेव, मैं पती प्रमेशर नूं किस तरृाँ मिलाँ?

"इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥
करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥"
(पन्ना ७२२)

जीव इसतरी ते बहुत तरृाँ दे शिंगार करदी है, भाव कई तरृाँ दे पूजा पाठ अते किरिआ करम करदी है पर प्रभू पती खुश किउं नहीं हुंदा? ताँ फिर गुरबाणी इशारा करदी है–

"लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥
इनी बाती सहु पाईऔ नाही भई कामणि इआणी ॥२॥"
(पन्ना २०४)

गुरदेव ने साफ दस दिता कि इह गल बणनी ही नहीं। जिहड़ा तेरा आपणा हंकार है, उह जो वी गुरदेव उपदेश देंदे हन, उसनूं फिलटर कर दिंदा है। उलट हुजत बाज़ी करदा है कि तुसीं कहिंदे हो नाम जपो, भगती करो, पर की असाँ टबर नहीं पालणा, दुनीआँ विच रोटी नहीं कमाउणी, समाज दे होर कंम नहीं करने? साडे कोलों भगती करन लई समाँ ही किथे बचदा है? ताँ सवाल उठ जाओगा कि जद मन विच ओसे विचार पहिले ही बैठे होओ हन ताँ फिर गुरदेव कोलों जवाब मंगके की करना है? जेकर गुरबाणी दी कही होई सिखिआ दा असर ही नहीं होणा ताँ गुरबाणी नूं पड़्हन जाँ सुणन दी की ज़रूरत है। इसे करके गुरदेव दे दर तों सानूं आवाज़ आई है कि जिनाँ चिर अखर हिरदे तक पहुंचण दे विचकार तुहाडी अकल दा फिलटर (Filter) बैठा होइआ है उनाँ चिर जो गुरू ने किहा है उह सुणिआ जा ही नहीं सकदा। इह ना मुमकिन गल है। अते जिस दिन सुणना आ गइआ उस दिन इह वी सही हो जाओगा:
"सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥"

सही सुणन नाल रिधाँ सिधाँ वरगीआँ शकतीआँ दी जाणकारी हासल हो जाँदी है अते धरती, आकाश, अते पाताल दी सोझी आ जाँदी है। इह ताँ अखरी अरथ हन, पर इसदे पिछे इशारा की छुपिआ बैठा है उसनूं पकड़न दी कोशिश करनी है। इसतों मतलब इह नहीं लैणा कि गुरबाणी ओसीआँ शकतीआँ दा कोई मुल पा रही है। दरअसल इह समझाइआ जा रहिआ है कि रिधीआँ सिधीआँ ताँ बहुत ही मामूळी जिही खेड्ह है। इह ताँ यातरी लई पहिला ही कदम है। अगर कोई जगिआसू आपणे अंदर शबद दी गूंज नूं गहिरा लैजा सके ताँ उस लई इह सभ कुझ इक बचे दी खेड्ह वरगा बण जाओगा। किउंकि इस लई जगिआसू नूं आपणी "मैं" नूं बिलकुल इक पासे रखणा पवेगा, ताँ ही इह सभ कुझ हो सकेगा अते उसदी "मैं" ही उसनूं ब्रहमंड दे असली गिआन तों खाली रख रही है।

"सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥"

सही सुणन वाले नूं खंडाँ अते ब्रहमंडाँ दी सोझी हो जाँदी है अते उह समें दे बंधन तों आज़ाद हो जाँदा है। इह सभ किवें हो सकदा है? गुरबाणी दा फुरमान है:

"जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥"
(पन्ना ६९५)

भाव कि जितना वी कुदरत दा बाहर पसारा है उह सारा आपणे अंदरों ही वेखिआ जा सकदा है पर ओसा खोजी बणना ज़रूरी है। जद सही सुणन लई सुरती अंदर लैजाणी है ताँ उस लई आपणा सारा गिआन इक पासे रखणा पओगा, इसदे करन नाल ही हंकार दा अंधेरा उठ जाओगा अते शबद दी रौशनी विच उसदी काइनात दीआँ झलकीआँ मिलनीआँ शुरू हो जाणगीआँ। इह कोई गप नहीं मारी जा रही, बलकि जिहनाँ ने कमाइआ है उहनाँ दे तजुरबे दसे जा रहे हन। इसेतरृाँ समें दी पकड़ सिरफ "मैं" नाल सबंध रखदी है, जद सुणन लई "मैं" नूं इक पासे रखिआ ताँ समे दा परभाव आपणे आप ही ख़तम हो जाओगा।

"नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥"

जिहड़े उसदे भगत हन उह सही सुणन दा अभिआस करदे हन अते जिवें जिवें इह भेद खुल्हणे शुरू हो जाँदे हन ताँ उह हमेशा लई प्रसन्नता दी हालत विच पहुंच जाँदे हन। उहनाँ नूं इह पता लग जाँदा है कि दुख ते पाप विरोधी शकतीआँ हन, इहनाँ तों दूर रहिणा ही भगती दा पहिला कदम है। सही रूप विच सुणन दी जाच आउंदिआँ ही उह विरोधी (negative) शकती तों छुटकारा पा लैंदे हन। सुख दुख वी इनसान दी "मैं" ही महिसूस करदी है पर सही सुणन लई "मैं" नूं इक पासे रखणा पैंदा है सो दुखाँ पापाँ दा अहिसास आपणे आप ही ख़तम हो जाँदा है।

अधिआतमिकवाद दा पहिला कदम सरीर दीआँ करम इंद्रीआँ विचों जीभा अते कन्न दे सहियोग नाल चुकण लई इशारा कीता गइिआ है। इस पहिले कदम नूं चुकण लई कन्न ओस करके चुणिआ है कि कन्न इक ओसी करम इंद्री है जिस दी वरतों नाल "मैं" नहीं लगाई जा सकदी। सुणन विच अड़चन वी इकठे कीते होओ विचार, इकिठा कीता होइिआ गिआन ही बणदा है। सो गुरबाणी ने कहिआ कि इस करम इंद्री नूं पहिलाँ वरतणा सिख। इहना पदिआँ विच सही सुणना आ जाण दीआँ निशानीआँ दसीआँ जा रहीआँ हन।

सुणिओ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिओ मुखि सालाहण मंदु ॥ सुणिओ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिओ सासत सिमृति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिओ दूख पाप का नासु ॥੯॥
(सही सुणना आ जा नाल विशनूं, बरमा, अते इंदर वरगे सभ देवतिआँ दे भेद खुळ जाँदे हन। विरोधीआँ दे सवभाव बदल के शलाघा योग हो जाँदे हन। अंदरों सुणन वालिआँ लई सरीर दे अंदरले भेद खुल जाँदे हन अते उहना नूं सभ साशतर अते सिमरतीआँ दा गिआन हासल हो जाँदा है। पर ओसा केवल उह भगत जन जो सदा चड़्हदी कला विच रहिंदे हन ही कर पाँदे हन। उहना भगताँ नूं सारे दुनिआवी दुखाँ अते पापाँ (Negative Energy Of Physical Dimension) तों छुटकारा मिल जाँदा है।)

"सुणिओ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिओ मुखि सालाहण मंदु ॥"

इहदा तरजमाँ इह नहीं है कि ईशर ब्रहमा ने वी उसनूं सुणिआ है। इसदा तरजमाँ है कि सही सुणन दे नाल तैनूं पता लग जाओगा असली ईशर किस नूं कहिआ गइिआ है। वेदाँत ने तिन्न शकतीआँ दा ज़िकर वेदाँ विच कीता है। इक नूं विशनू, दूजे नूं ब्रहमा, अते तीसरे नूं शिवा किहा है। उहनाँ ब्रहमा नूं पैदा करन वाली शकती किहा है, विशनूं नूं पालण वाली शकती किहा है अते शिवा नूं नाश करन वाली शकती किहा है। गुरबाणी ने किहा कि जिस दिन तैनूं सही सुणना आ गइिआ उस समे असली करीओटिवटी (Creativity) की है, ईशर की है, इह तैनूं सही रूप विच समझ आ जाओगी। असली ब्रहमा की है, दुनीआँ दा पालणा की है इह सभ सही रूप विच दिखाई दे जावेगा। जिवें कि जद मैं पाणी पीता है ताँ इह खून किस तर्हाँ बण गइिआ, खाधा ते मैं अनाज है पर इह पठे (muscle) किसतर्हाँ बणे हन, हडीआँ किस तर्हाँ बणीआँ हन, नहूं किस तर्हाँ बण गओ हन, वाल किस तर्हाँ बण गओ हन? इके खाणे दे विचों इतनीआँ चीज़ाँ किस तर्हाँ बणदीआँ जा रहीआँ हन, उह सारा भेद खुल्ह जाओगा। वेदाँ वलों इंदर नूं पाणी दा देवता मंनिआँ गइिआ है पर पाणी दी वरखा की है अते किवें बणदी है उह वी सारे भेद खुल्ह जाणगे।

इसेतर्हाँ "सुणिओ मुखि सालाहण मंदु" तों भाव इह नहीं है कि जो सुणन वाले मंदे मुख ने उह वी प्रमातमा दी सलाहणाँ करन लग पैंदे हन किउंकि बाणी ने मंदा किसे नूं किहा ही नहीं:

"मंदा किस नो आखीओ जाँ तिसु बिनु कोई नाहि ॥"
(पन्ना १३८१)
"मंदा किसै न आखीओ पड़ि अखरु ओहो बुझीओ ॥" (पन्ना ४७३)

गुरबाणी ने 'मंदु' दे 'ददे' हेठ औंकड़ दिता होइिआ है, हाईलाईट (Highlight) कीता होइिआ है, इह कोई केवल भाशा विगिआन जाँ विआकरन ही नहीं है, इह इक खास इशारा है कि इथे इस अखर दा भाव बहुत गहिराई नाल सोच के लगाणा है। सो "मंदु" तो भाव है कि जिहड़ी विरोधी (Negative) शकती है उह अगर सही सुणना शुरू कर देवे ताँ उह पोज़ेटिव (Positive) विच बदल जाँदी है। भाव माइिआ दी खिच प्रमातमा दे पिआर विच बदल जाँदी है। गुरबाणी ने इसेतर्हाँ दा इशारा सूही राग विच वी कीता है:

"हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम दृड़ाइिआ बलि राम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु दृड़हु पाप तजाइिआ बलि राम जीउ ॥"
(पन्ना ७७३)

इिह सारिआँ तों पहिली निशानी है कि जद वी कोई जीव भगती दे रसते ते चलणा शुरू करदा है ताँ उह नैगेटिव शकती कोलों दूर होणा शुरू हो जाँदा है। पहिला कदम ही इिह है। जद वी जीवन विच परीवरतन करन दा मन विच चाउ पैदा हुंदा है ताँ जीव उस करम लई गिआन हासल करन दी कोशिश करदा है। गिआन विचों जो पहिला सबक मिलदा है उह है कि नैगेटिव शकतीआँ जिहड़ीआँ माइिआ नाल जोड़दीआँ हन, उहनाँ तो छुटकारा पाओ। सो इिथे इिह दसिआ जा रिहा है कि सही सुणन दे अभिआस करन नाल इिहनाँ शकतीआँ कोलों आपणे आप छुटकारा हो जाँदा है अते जीव उस प्रभू दी उसतत विच लग जाँदा है।

"सुणिओ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिओ सासत सिमृति वेद ॥"

सही सुणन दी जुगती नाल सरीर दे अंदरले भेद आपणे आप खुल्ह जाँदे हन अते सिम्रतीआँ अते वेदाँ दा गिआन हो जाँदा है। ओसा किउं अते किवें हो सकदा है? मिसाल वजों जदों पिआस लगदी है ते असीं पाणी पींदे हाँ। की सानूं उस वेले होश है कि साडे हथ विच गलास है, गलास उ`पर नूं आ रिहा है, गलास बुलाँ दे लागे आइिआ है, पाणी दा पहिला सवाद जीभा ने लइिआ है, पाणी दा घुट भरिआ गइिआ है, पाणी गले तों हेठ उतर रिहा है, पाणी पेट विच चला गइिआ है, पाणी पचणा शुरू हो गइिआ है? साडा उस वकत धिआन किथे है? की असीं सिरफ पाणी ही पी रहे हाँ कि जितने मन दे विचार हन उह सभ दुनीआँ दे होर खवाब लै रहे हन? हथ ते पाणी चुक रिहा है, मूंह ते पाणी पी रिहा है, की असीं वी पाणी पी रहे हाँ? गुरबाणी इिसनूं पाणी पीणा नहीं मनदी, इिसनूं करम काँड दा हिसा मनदी है। इिथे गुरबाणी ने इिशारा कीता है कि जिस दिन सही सुणना आ जाओगा ताँ उसदा मतलब इिह है कि मन दे विच होर कोई विचार सिवाओ सुणन दे नहीं होओगा। इिस करके सानूं आपणा अंदर दिखाई आउण लग जाओगा जिस नाल सारे तन्न दा भेद खुल्ह जाओगा।

सुणिओ सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिओ अठसठि का इिसनानु ॥ सुणिओ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिओ लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिओ दूख पाप का नासु ॥१०॥
(सही सुणन वाले दी निशानी है कि उस पास सचाई, संतुशटा, अते गिआन दे भंडारे भरे हुंदे हन। उसनूं किसे होर तीरथाँ दा इिसनान करन दी जरूरत नहीं रहि जाँदी अते उसनूं सतिकार बिनाँ मंगिआँ जाँ चाहिआँ ही प्रापत हो जाँदा है। उह सहिज नाल ही धिआन दी आवसथाँ विच प्रवेश करन दी जुगती नूं जाणदा है। पर ओसा केवल उह भगत जन जो सदा चड्ढदी कला विच रहिंदे हन ही कर पाँदे हन। उहना भगताँ नूं सारे दुनिआवी दुखाँ अते पापाँ (Negative Energy Of Physical Dimension) तों छुटकारा मिल जाँदा है।)

"सुणिओ सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिओ अठसठि का इिसनानु ॥"

जीवन दे विच सचाई नाल पिआर शुरू होओगा। जीवन दे विच संतुशटता पैदा होओगी। जद संतोख पैदा होओगा ताँ की करना अते किस तृाँ करना है उस दा गिआन आउणा शुरू होओगा। अठसठि दा मतलब है अठाहट (६८) अते इिस दा परचलत तरजमा इिह कीता गिआ है कि अठाहट तीरथ यातरा करन दा फल मिल जाँदा है। इिहदा मतलब ताँ इिह होइिआ कि तीरथ यातरा करनी चंगी है। इिह ताँ गुरबाणी दे मुढले असूलाँ दे बिलकुल उलट विआखिआ हो गई। नहीं, इिथे इिह इिशारा नहीं हो सकदा। गुरबाणी उहनाँ अठाहट तीरथाँ वल इिशारा नहीं कर रही। मैडीकल साइिंस (medical science) दा विदिआरथी इिस गल नूं जाणदा है कि सरीर दे अगले अते पिछले हिसे विच ग्रंथीआँ जाँ गंढाँ (Pressure Points) हन। इिसनूं चीनी लोग ओकिऊप्रैशर (Accupressure) पुआइिंट कहिंदे हन। सारे सरीर दी शकती इिहनाँ इिह ग्रंथीआँ विचो गुज़रदी है। जिवें-जिवें सुणना गहिरा हुंदा जाओगा, इिह गंढाँ खुल्हदीआँ जाणगीआँ अते तिवें-तिवें धिआन गहिरा हुंदा जाओगा, मन इिकागर होणा शुरू होओगा। गुरबाणी हर ग्रंथी दे खुल जाण नूं सुरती दा उथे इिसनान होणा दरसा रही है। विदवाना ने इिहना दी कुल गिणती ५८ दसी है (२६ सरीर दे पिछले पासे अते २१ अगले पासे)। ५८ ग्रंथीआँ + ५ गिआन इिंदरीआँ + ५ करम इिंदरीआँ = ६८; सुरती इिन्नाँ दे विचों दी विचरदी होई दसम दुआर वल यातरा शुरू करदी है। भाव इिह है कि सरीर दी शकती बजाओ हेठाँ वल नूं जाण दे उपर वल नूं चलणी शुरू हो जाओगी अते उन्नाँ अवसथावाँ विचों मन गुज़रेगा।

सुणिओ पड़ि पड़ि पावहि मानु॥सुणिओ लागै सहजि धिआनु ॥

सही सुणन वालिआँ नूं गिआनवानाँ वाला सतकार हासल हो जाँदा है अते सहिजे ही जीव धिआन मई आवसथा विच पहुंच जाँदा है। गुरसिखी सहिज दा मारग है, हठ योग नहीं है। तन नूं दुख देण दी कोई लोड़ नहीं है। बस आपणे सहिज सवभाव मुताबिक अभिआस करन नाल ही सभ कुझ हासल हो सकदा है।

सुणिओ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिओ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिओ अंधे पावहि राहु ॥ सुणिओ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिओ दूख पाप का नासु ॥११॥

(इक सही सुणन वाला बिबेकी उस गुणा दे सागर दे करीब हो जाँदा है अते उह सेखाँ पीराँ अते पातसाहाँ वरगे शबदाँ नाल याद कीता जाँदा है। सही सुणन नाल अगिआनीआँ नूं वी सही राह दिख पैदा है अते उस अपार शकती दे नेड़े होण दा सबब बणदा है। पर ओसा केवल उह भगत जन जो सदा चड्ढदी कला विच रहिंदे हन ही कर पाँदे हन। उहना भगताँ नूं सारे दुनिआवी दुखाँ अते पापाँ (Negative Energy Of Physical Dimension) तों छुटकारा मिल जाँदा है।)

"सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥"
सही सुणन नाल उस गुणा दे भंडार नाल सबंध जुड़ जाँदा है अते शेख, पीर, अते पातशाहीआँ वरगी आवसथा प्रापत हो जाँदी है। पातशाह तों भाव बादशाह जाँ राजा नहीं है। शेख, पीर, पातशाह इह इसलामी अहुदे हन जाँ अवसथाँवा हन। शेख उह है जिसनूं कुरान दा गिआन है, पीर उह है जिस ने भगती कर लई है, पातशाह उह है जिहड़ा प्रभू नाल मिल गइिआ है। गुरबाणी कहिंदी है कि जे असली पहिला कदम सही हो गइिआ अते सुणना आ गइिआ ताँ इह रसता खुल्ल जाओगा।

"सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥"

सुणन दे नाल गिआन दीआँ अखाँ मिल जाँदीआँ हन। इह किसे करामात वल इशारा नहीं कीता जा रिहा। सानूं अज असलीअत दिखाई नहीं दे रही। असीं अगिआनता करके अंधे हाँ। सिरफ सुणीआँ-सुणाईआँ गलाँ दुहराअ रहे हाँ। अज सानूं सभ जीवाँ विच छुपिआ होइिआ प्रमातमा नज़र नहीं आउंदा। भाँवे असीं सारे कहिंदे हाँ कि कण-कण विच भगवान है। पर जेकर कण-कण विच भगवान वाकई नज़र आउंदा होवे ताँ कोई लड़ाई झगड़े नहीं रहि जाणगे। जेकर साहमणे भगवान खलोता दिस जाओ ताँ कोई गुसा-गिला नहीं रहि जाओगा। उस दिन उह सही रूप विच अखाँ खुल जाणगीआँ, उह अंधेरा चला जाओगा।

"असगाहु" तों भाव है जिसदा नाप-तोल नहीं कीता जा सकदा, जो बेअंत है। ताँ सवाल उठ जाँदा है कि बेअंत कदों किहा जा सकदा है, कितनी कु गिणती मिणती करन तों बाद इह किहा जा सकदा है कि हुण इसतों अगे गिणती नहीं हो सकदी। जदों असीं कहिंदे हाँ कि उह प्रमातमा अथाह है ताँ किथों तक थाह पै चुकी है जिसतों अगाँह नहीं गओ? याद रहे कि अथाह कोई गिणती नहीं है, इह कोई नंबर नहीं है। इह अखर सिरफ इतना ही इशारा करदा है कि प्रमातमा इनसान दी हर शकती तों परे है। इह अहिसास अंदरों पैदा हुंदा है कि उह असीम है। जदों तूं सुणन लग जाओंगा ताँ तैनूं पता लग जाओगा कि समुंदर दा हिसा किस तरुाँ बणिआ जाँदा है।

गुरबाणी ने साडी यातरा कन्न दी करम इंदरी तों शुरू करवाई है। इशारा कीता है कि कन्न दे नाल "मैं" नहीं लग सकदी, हंकार नहीं लग सकदा, हउमें नहीं लग सकदी। तुसीं इह नहीं कहि सकदे कि मैं सुण रिहा हाँ। किउंकि कन्न कुदरत ने आटोमैटेकली (automatically) खोल्ले होओ हन। गुरबाणी ने ओस करके उस करम इंदरी नूं पहिलाँ लिआ ते जिहड़े ओस अवसथा ते पहुंच जाणगे, जदों सही रूप विच सुणना आ जाओगा ताँ उहनाँ लई अगली अवसथा दी कहाणी शुरू हो जाओगी।

(अंक १२-१५)

जपु बाणी दे शुरू विच अकाल पुरख दीआँ कुझ निशानीआँ दसीआँ गईआँ हन। फिर किहा गइिआ है कि उसनूं प्रसाद रूप विच ही प्रापत कीता जा सकदा है। उसदी प्रापती दी यातरा इिक शबद दे जाप नाल शुरू हुंदी है। जाप वाला शबद केवल प्रमातमा दी ही याद दिलाउण वाला होणा चाहीदा है, किसे देवी देवते दा नहीं। गुरबाणी ने इिशारा कीता है कि जेकर तूं जनम-मरन तों आज़ादी पाउणी है ताँ पहिला कदम इिथों चुकणा पओगा। गुरबाणी ने इिक करम इिंदरी अते इिक गिआन इिंदरी नूं पकड़ लिआ है, जीभा अते सुणन दी शकती। इिहनाँ दोवाँ नूं इिकठिआँ करके अभिआस करन दी विधी दसी जा रही है कि जिस शबद दा जाप कर रिहा हैं उस नूं आप सुण। जदों आप सुणना शुरू करेंगा ताँ जिहड़े मन दे विचार बिखरे होओ हन उह इिकठे हो जाणगे। इिस तर्हाँ अंदरूनी सारी शकती इिक थाँ इिकठी हो जाओगी। जिस तर्हाँ कि सूरज दीआँ किरनाँ इिक लैनस (Lens) दे विचों दी लंघाईओ ताँ उह इिकठीआँ हो जाँदीआँ हन, इिक पुआइिंट (point) बण जाँदीआँ हन इिसे तर्हाँ सही सुणन नाल अंदर दी शकती इिकागर हो जाँदी है। जिस गुरसिख ने सुणना सिख लिआ है उहदे विचार भजणे बंद हो जाणगे। जे सही सुणना आ गइिआ है ताँ ज़िंदगी दे विच संतोख आउणा शुरू हो जाओगा, ज़िंदगी दे विच झूठ माड़ा लगण लग पओगा, कूड़ माड़ा लगण लग पओगा। अज साडी कहावत है सच बड़ा कौड़ा लगदा है। गुरबाणी विच ताँ सारा सचो सच है सो हुण उह मिठा लगण लग पओगा। उसदे हिरदे विच गुरबाणी दा तीर खुभ जाओगा। हुण उहनूं सच कौड़ा नहीं लगेगा बलकि सच मिठा लगण लग पओगा।

इिसतों अगला कदम गुरसिख दे लई सरीरक नहीं है बलकि अधिआतमिक है। उस कदम नूं गुरबाणी ने 'मन्नै' दी आवसथा नाल संबोधन कीता है। इिथे मन्नै तों भाव इिह नहीं है कि किसे गल नूं असाँ मन्न लिआ है। असाँ कहावत बणा दिती है ''ओक ने कही दूसरे मानी दोनों ब्रहम गिआनी''। साडे लई ब्रहम गिआनी बणना बहुत सौखा हो गइिआ है। तुसीं कहो कि अज ओतवार है अते मैं कहाँ हाँ जी अज ओतवार है ताँ की असीं दोवें गिआनी हो गओ? नहीं, उह मन्नणा नहीं है। मन्नण तों भाव है जिथे मन ना होवे (मन + न)। जिस अवसथा ते मन है ही नहीं। पहिली घाटी सी कि मन नूं इितना काबू विच कर लिआ है कि उह बस इिक बिंदू हो गइिआ है, मन्न इिक पुआइिंट (Point) बण गइिआ है। सारे विचार सिमट के इिक पुआइिंट बण गओ हन। हुण मन नूं अगे लिजाणा है। शबदाँ तों शुरू कीता सी, हुण शबद नूं छड देणा है। हुण जिथे वेखण वाला दृश नाल बिलकुल इिक हो जाँदा है, उथे पुजणा है। अजे इिक देखण वाला है, अते दूजा दृश नज़र आ रिहा है। उह माईंड (mind) जिसने सारा गिआन इिकठा कीता होइिआ है, उह आपणे गिआन मुताबिक देख रिहा है, हुण उस गिआन नूं वी छड देणा है। उह है अगली घाटी अते इिथों अगला अंक शुरू हुंदा है।

''मन्ने की गति कही न जाइि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइि ॥ कागदि कलम न लिखणहारु ॥ मन्ने का बहि करनि वीचारु ॥ ओसा नामु निरंजनु होइि ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइि ॥१२॥''

(मन्ने ''मनन = मन+न जिथे मन बिलकुल नहीं हुंदा'' दी आवसथा नूं प्रापत कीते जीव दे विचाराँ विच मुकंमल खामोशी हुंदी है भाव कोई (गति) नहीं हो सकदी। इिस आवसथा बारे दुनिआवी भाशा विच कुझ वी नही कहिआ जा सकदा अते जो वी कहिण दी कोशिश करदा है उसनुं बहुत भारी कीमत देणी पैंदी है इिस करके उह बाद विच बहुत पछताँदा है। उस आवसथा विच करता, भोगता, अते करम वी नहीं रहि जाँदा भाव नाँ कुझ सामाण है अते ना ही सामाण नूं वरतण वाला कोई है। बाहरों वेखण वाले जीव ताँ इिस बारे बस विचाराँ ही कर सकदे हन पर जिन्ना ने उह आनंद माणिआ है इिसदा असली भेद उह ही जाणदे हन कि उह निरलेप आवसथा की हुंदी है)

''मन्ने की गति कही न जाइि ॥''

इिथे ''गति'' दा तरजमाँ ''हालत'' नहीं है। ''गति'' तों भाव है ''चाल, गती'', भाव उस आवसथा विच विचाराँ दी गती नहीं हो सकदी। जिथे मन ना होण दी आवसथा है उथे विचाराँ विच कोई हल चल जाँ मूवमैंट (Movement) हो ही नहीं सकदी। मन ना होण दी अवसथा दी इिह निशानी है, इिह इिमतिहान है कि उ्थे गती कोई नहीं है। हल चल लई मन दी लोड़ है। जे इिक विचार तों दूजे विचार तक गल आ जा रही है ताँ अजे सुणन दी अवसथा विच ही बैठे होओ हो, मन्ने तक नहीं जा सकदे। जदों मन मर जाँदा है ताँ कहिण, सुणन वाला उ्थे है ही नहीं। जिहड़ा कहिण वाला सी उह ख़तम हो गइिआ। जदों माईंड गिर (Mind Drop) गइिआ ताँ हुण कौण कहेगा। विचारो ज़रा, गहिराई विच जाउ। इिह बहुत ही औखी घाटी है। किउंकि असीं उसे मन दे नाल नो-माईंड (no mind) नूं समझण दी कोशिश कर रहे हाँ। बड़ा औखा है। जिथे माईंड नहीं है, जिथे कोई शबद नहीं है, जिथे कोई अवाज़ नहीं है, जिथे कोई विचार नहीं है, उ्थे कोई मूवमैंट (Movement) नहीं, जिथे मूवमैंट नहीं उ्थे कुझ कहिण वाला हो ही नहीं सकदा।

"जे को कहै पिछै पछुताइ ॥"

जिसने वी इहि कहिण दी कोशिश कीती है उह बाद विच बहुत पछताँउदा है। किउंकि जिहड़ा उस अवसथा ते पहुंच जाओ उहनूं इहि कुझ कहिण लई उस अवसथा तों वापस आउणा पओगा। मिसाल वजों इक बूंद समुंदर दे विच डिगण लई तिआर हो गई है, उस विच हुण कोई कमी नहीं रही, उसदी सारी मैल ख़तम हो चुकी है। हुण उह समुंदर दा हिसा बण सकदी है। अगर उह बूंद इहि दसणा चाहे कि इस अवसथा विच कोई विचार नहीं रहिंदा ताँ उह बूंद मंज़िल दे करीब पुजके वी मंज़िल हासल नहीं कर सकदी। उह भाशा दी दुनीआँ विचों निकल चुकी सी, पर इहि दसण लई उसनूं दुबारा शबदाँ दी दुनीआँ विच प्रवेश करना पवेगा। समुंदर दा हिसा बणन दा सवाद मानण दी जगह, उहनूं बाहर वल फिर वापस छलाँग लगाणी पवेगी। जदों उसने बाहर वल छलाँग मारी ताँ उहनूं कितनी कु तकलीफ होओगी इहि बिआन नहीं कीता जा सकदा। परम अवसथा नूं छड के मात लोक वल पिछाँह नूं भजणा बहुत ही दुखदाई है अते इहि उही जाणदे हन जिन्ना ने मानुख जाती लई ओसी कुरबानी कीती है। इसे करके बाणी ने किहा है: "जे को कहै पिछै पछुताइ ॥"

जे कोई इहि गल कहिण दी कोशिश करेगा कि जिथे मन नहीं हुंदा उह घाटी इसत्ढ़ाँ दी है ताँ उह बड़ा पछताओगा। उसदे लई इहि कोशिस करन दा बड़ा नुकसान है। इहि किहा जा नहीं सकदा। जिन्नाँ ने वी इहि इस दुनीआँ दा भला करन लई कुझ किहा है उन्नाँ ने परम (supreme) कुरबानी कीती है। इसे करके गुरबाणी फुरमाइिआ है:

"जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आओ ॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाओ ॥२॥"

(पन्ना ७४६)

ब्रहमगिआनी इसे करके इस दुनीआँ विच आउंदे हन किउंकि उन्नाँ विच सृशटी लई इक तढ़ाँ दा तरस हुंदा है कि इक सुनेहा पिछे छड जाईओ। हालाँकि उन्नाँ नूं इसदी बड़ी वडी कीमत देणी पैंदी है किउंकि परम धाम तों वापस आउणा पैंदा है, कदम वापस चुकणे पैंदे हन। फिर दुनीआँ दे चिकड़ विच कदम रखणा पैंदा है। जिस माइिआ कोलों आज़ादी पाई सी, फिर उस माइिआ विच फसणा पैंदा है। होर कोई तरीका ही नहीं, इसे करके गुरू दी इडी वडी महतता है। ओसे करके गुरू अगे सिर झुकाइिआ जाँदा है। उसदा इक कदम संसार दे विच है, इक कदम करतार दे विच है। उह साडे लई पउड़ी बण जाँदा है। पउड़ी दा इक डंडा ज़मीन नाल लगा होइिआ है, दूजा डंडा छत नाल लगा होइिआ है। जे ज़मीन दे नाल डंडा ना लगा होवे ताँ पउड़ी विचकार ही लटकदी रहेगी। उह किसे दे कंम नहीं आ सकदी। अते जिहड़ी पउड़ी उपर तक ना पहुंचे उह वी किसे दे कंम नहीं आ सकदी। इसे करके गुरबाणी ने किहा सी:

"गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु तरिआ न कोइ ॥
गुर प्रसादि प्रभु पाईओ गुर बिनु मुकति न होइ ॥"

(पन्ना १४०१)

जहाज़ इस किनारे नाल वी लग सकदा है, अते उस किनारे नाल वी लग सकदा है। ओसे करके उह सभनूं सागर तों पार उतार सकदा है। गुरू दा वी इस धरती उते कंम इसेतढ़ाँ दा है किउंकि उसदा इक कदम हमेशा संसार विच रहिंदा है अते इक कदम हमेशा करतार विच रहिंदा है। जिहड़े जगिआसू ने गुरू नूं पउड़ी वाँगू इसतेमाल कर लिआ उह ते करतार तक पहुंच सकदा है। पर गुरू इसदे लई बहुत वडी कुरबानी कर रिहा है। नहीं ते उसनूं की ज़रूरत है, उसदा कंम ते हो गइिआ। उह ते प्रमातमा विच मिल सकदा है। जिहड़ा आप छत ते चढ़ गइिआ उहनूं मुड़ के थले आउण दी की लोड़ है। इस करके बाणी ने अगली तुक विच किहा है:

"कागदि कलम न लिखणहारु ॥"

उथे कुझ वी नहीं है। उस अवसथा विच ना कागज़ है, ना कलम है, ना लिखण वाला है। किउंकि जिहड़े मन ने लिखणा सी, जिसदे विच विचार आउणे सन, उह ते ख़तम हो गइिआ, उह है ही नहीं। जद करता होण दा अहिसास मिट गइिआ है, हउमैं मर गई है ताँ उस जीव लई कुझ वी बाकी नहीं बच सकदा। इहि शबदाँ विच बिआन करन वाली अवसथा नहीं है, शबद सिरफ बहुत छोटा जिहा इशारा कर रहे हन किउंकि उह पूरा कहि सकण तों असमरथ हन।

"मन्ने का बहि करनि वीचारु ॥"

मन दा नाँ होणा ओसा है कि बाहरों देखण वाले विचार ही करदे रहि जाण किउंकि आप ताँ उहनाँ ने कुझ कीता ही नहीं हुंदा। उह बाहरों वेख-वेख के इिही सोचदे हन कि इिस जीव दी अंदर दी अवसथा की हो सकदी है? पर इिह सवाद हर इिक नूं नहीं मिलदा। इिह गलाँ-बाताँ सिरफ उहनाँ नूं पता लगदीआँ हन जिहना लई:

"ओसा नामु निरंजनु होइि ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइि॥१२॥

इिह उसे नूं ही पता है जिहड़ा उस अवसथा तक पहुंचिआ है। दूजे सिरफ गलाँ कर सकदे हन, अंदाज़ा लगा सकदे हन, पर असलीअत बहुत विरलिआ कोल है। कोई विरला ही उ-थों तक पहुंचदा है जिहड़ा कि मन ना होण दी अवसथा दा सवाद माण सकदा है किउंकि उह निर-अंजन अवसथा है, उह प्रमातमा नाल अभेद होण दी तिआरी दी अवसथा है। जिसने इिह सवाद चखिआ है, सिरफ उही इिसनूं सही रूप विच जाणदा है।

"हरि जनु हरि हरि होइिआ नानकु हरि इिके ॥(पन्ना ४४६)

उह 'हरि जनु हरि हरि होइिआ' वाली अवसथा है। उहनूं सही बिआन नहीं कीता जा सकदा। इिहदा सवाद उही लै सकदे हन जिहड़े आप उ-थों तक पहुंचे हन।

"मन्नै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मन्नै सगल भवण की सुधि ॥ मन्नै मुहि चोटा ना खाइि ॥ मन्नै जम कै साथि न जाइि ॥ ओसा नामु निरंजनु होइि ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइि ॥१३॥"
(मन ना होण दी आवसथा विच केवल निरोल सुरती ही बचदी है अते उस वेले जीव पूरन गिआन (Enlightenment) दी प्रापती नूं हुंदा है। इिस हालत विच माइिआ दी किसे चाल दी चोट असर नही कर सकदी किउकि जीव समे दी पकड़ तों आज़ाद हो चुका हुंदा है। जिन्ना ने उह आनंद माणिआ है इिसदा असली भेद उह ही जाणदे हन कि उह निरलेप आवसथा की हुंदी है)

जिस मन बुधी बारे असीं जाणदे हाँ, उथे इिसत्ह्राँ दी कोई चीज़ नहीं है। उथे सिरफ होश ही है, सुरती ही है (Pure Awareness Without The Subject-Object Relationship)। मन बुधी उस होश विच समा जाँदी है। जिस मन नूं असीं जाणदे हाँ उह विचाराँ दा इिक संग्रहि है। इिसेत्ह्राँ, जिस बुधी नूं असीं जाणदे हाँ उह जाणकारीआँ दा इिक इिकठ है। पर जिथे मन ही नहीं रहिआ, उथे जाणकारी वी ग़ाइिब हो जाँदी है। उथे सिरफ सुरती ही बचदी है। जिथे मन नहीं है, उ-थे सारी काइिनात दी सुरती है, सारी सृशटी दी होश है। सगल भवण तों भाव है कि सारी ही सृशटी दे विसथार तक दी पूरी होश आ जाँदी है। इिह गलाँ दिमाग़ दे जोर नाल नहीं जाणीआँ जा सकदीआँ। दिमाग़ नूं ताँ इितना ही पता है कि बहुत सारीआँ सृशटीआँ हन पर उहनाँ दे विसथार बारे कुझ पता नहीं। पूरी त्ह्राँ नाल इिह ताँ जाँ प्रमातमा जाणदा है जाँ प्रमातमा नाल इिक मिक होइिआ जाण सकदा है।

मन्नै मुहि चोटा ना खाइि ॥ मन्नै जम कै साथि न जाइि ॥

जिथे मन नहीं है उथे समे दी मार दीआँ चोटाँ नहीं सहिणीआँ पैंदीआँ। 'जम' तों इिथे भाव जमदूत नहीं है, जम दा इिथे मतलब है काल, समाँ (time)। समे दा अते आकाश (Space) दा सिधा सबंध है। इिसनूं अज दा वगिआन टाईम-सपेस कंटीनिउम (Time Space Continuum) कहिंदा है। विचाराँ दी चाल गुज़रे समे तों भविख वल रहिंदी है। विचार वरतमान विच नहीं टिक सकदा। जिथे विचाराँ दी चाल है उथे समाँ है, जिथे समाँ है उथे आकाश है। इिह सारा कुझ इिक दूजे नाल इिक संगली (chain) दीआँ कुंडीआँ दी त्ह्राँ जुड़िआ होइिआ है। जिथे माईंड नहीं उ-थे सपेस नहीं। जिथे सपेस नहीं, उ-थे टाईम नहीं। सो वकत ते है ही नहीं। मन नूं टाईम अते सपेस दा ही पता है। सो जद नो माईंड (no mind) दी अवसथा विच जीव पहुंच गइिआ है ताँ समें (जम) तों आटोमैटीकली (automatically) छुटकारा हो गइिआ। असीं जितना वी गम जाँ ख़ुशी महिसूस करदे हाँ उह सारा इिस टाईम-सपेस दी पाबंधी करके है। समें दी चाल वी दो त्ह्राँ है। बाहर दी घड़ी दा अंदर दी घड़ी नाल कोई संबंध नहीं। जदों असीं सुख विच बैठे हुंदे हाँ ताँ पता वी नहीं लगदा कि समाँ किसत्ह्राँ बीत गइिआ है। पर जद दुख विच बैठे हुंदे हाँ ताँ समाँ मानो रुक ही जाँदा है। पर जिथे समे नूं समझण वाला कोई है ही नहीं उ-थे वकत दी कोई सज़ा वी नहीं है। इिह सिरफ उसे नूं ही पता है जिहड़ा उस अवसथा तक पहुंचिआ है। दूजे सिरफ गलाँ कर सकदे हन, अंदाज़ा लगा सकदे हन, पर असलीअत बहुत विरलिआ कोल है। कोई विरला ही उ-थों तक पहुंचदा है जिहड़ा कि मन ना होण दी अवसथा दा सवाद माण सकदा है किउंकि उह निर-अंजन अवसथा है, उह प्रमातमा नाल अभेद होण दी तिआरी दी अवसथा है। जिसने इिह सवाद चखिआ है, सिरफ उही इिसनूं सही रूप विच जाणदा है।

"मन्नै मारगि ठाक न पाइि ॥ मन्नै पति सिउ परगटु जाइि ॥ मन्नै मगु न चलै पंथु ॥ मन्नै धरम सेती सनबंधु ॥

ओसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥''
(मन ना होण दी आवसथा दे रसते ते चलण वाले जद उस आवसथा नूं प्रापत कर लैंदे हन ताँ उह हर माइआवी रुकावट तो अगे निकल जाँदे हन। उह बाइज़्त इस जीवन यातरा नूं संपूरन करके जाँदे हन। उह आपणी धुन्न विच मगन होओ इस रसते ते तुरे जाँदे हन किउकि उहना दा सिरफ इक ही धरम (प्रभू दी प्रापती) नाल सबंध रहि जाँदा है। पर जिन्ना ने उह आनंद माणिआ है इसदा असली भेद उह ही जाणदे हन कि उह निरलेप आवसथा की हुंदी है)

मारगि दा मतलब है रसता अते ठाक दा मतलब है रुकावट। इशारा इह कीता जा रिहा है कि जदों जीव उस अवसथा ते पहुंच जाओ ताँ उत्थे ना कोई रसता रहि जाँदा है ना कोई रुकावट रहि जाँदी है, किउंकि रसते दा ते रुकावट दा दोनाँ दा वकत नाल संबंध है। उत्थे कोई मारग नाम दी कोई वसतू ही नहीं है। जद मंज़िल ते ही पहुंच गइआ, माईंड है नहीं हुण रसते दा की करना है। जदों पहुंच ही गइआ ताँ हुण रुकावट काहदे विच है !

«पति सिउ परगटु जाइ ॥''

इसदा भाव इह नहीं है कि उत्थे वी बड़ा माण मिलदा है। मान अते अपमान दा सबंध मन दे होण नाल है। जद मन ही नहीं बचिआ ताँ कैसा मान अते कैसा अपमान। इथे इशारा कुझ होर कीता जा रिहा है। सतिकार वालीआँ कुझ गलाँ नहीं हो रहीआँ। बलकि गुरबाणी कहि रही है कि ओसा जीव इस दुनीआँ विच जीवन दा सही मकसद पूरा करके गइआ है। जिहड़ा सरीर मन नाँ दी अवसथा तक पहुंच गइआ है उह इथे जिस कंम लई आइआ सी उह उसने पूरा कर लइआ है। इथे इज़्त वाली कोई गल नहीं हो रही। आम लोग इथों जीवन गवा के जाँदे हन अते भगत लोग इथों ज़ाहरे ही (परगट तौर ते) जीवन सवार के जाँदे हन किउंकि उह मन नाँ होण दी अवसथा नूं प्रापत कर लैंदे हन। भगताँ दी जीवनी वल झाती मारीओ ताँ साफ नज़र आउंदा पइआ है, कबीर जी दा नज़र आउंदा पइआ है , फरीद जी दा नज़र आउंदा पइआ है कि इन्नाँ ने इथे जीवन सवार लइआ है।

''मन्नै मगु न चलै पंथु ॥''

इस तुक दा पद छेद विच 'न' मगु नालों अलग कर दिता गइआ है। जेकर ''मगु न'' दी जगह इसनूं ''मगुन'' पढ़िआ जाओ ताँ इसदा भाव बाकी तुकाँ दे मुताबिक सही बैठ जावेगा। जिहड़ा मन ना होण दी अवसथा ते चला गइआ है हुण उह उसदे रंग विच मगन है। और उसनूं होर कोई अलग रसता नहीं चाहीदा। उसनूं होर किसे चीज़ दी लोड़ ही नहीं। उह उसे थाँ ते रहेगा। उसनूं होर किसे रसते ते चलण दी ज़रूरत नहीं है। जिहड़ा उथे पहुंच गइआ उह उस अवसथा दे विच मगन रहेगा। और उहनूं होर कोई रसता भटका नहीं सकेगा। उह उसे रसते ते चलदा रहेगा। हुण तुसीं उहनूं पिछाँह नहीं लिआ सकदे। बाकी अवसथावाँ तों बंदा फिर थले डिग सकदा है। रिधीआँ सिधीआँ तों थले डिग सकदा है। पर जिस वेले नो माँईंड (no mind) दी अवसथा ते पहुंचेगा, इह आखिरी घाटी है।

''मन्नै धरम सेती सनबंधु ॥''

उस जीव लई सिवाओ उस परम अवसथा तों होर कोई चीज़ चंगी नहीं लगणी। उसदीआँ करम इंद्रीआँ कंम करदीआँ होणगीआँ पर मन करतार नाल जुड़िआ होवेगा। अजे साडे हथ-पैर गुरू वल हन ते मन संसार वल है। फिर अवसथा बदलदी है। फिर हथ पैर संसार वल हुंदा है पर सुरती सउंदिआँ, उठदिआँ, जागदिआँ बैठदिआँ सास-गिरास प्रमातमा विच डुबी हुंदी है। उह आखिरी अवसथा है, उह आखिरी घाटी है, आखरी मंज़िल है। पर इह सिरफ उसे नूं ही पता है जिहड़ा उस अवसथा तक पहुंचिआ है। दूजे सिरफ गलाँ कर सकदे हन, अंदाज़ा लगा सकदे हन, पर असलीअत बहुत विरलिआँ कोल है। कोई विरला ही उत्थों तक पहुंचदा है जिहड़ा कि मन ना होण दी अवसथा दा सवाद माण सकदा है किउंकि उह निर-अंजन अवसथा है, उह प्रमातमा नाल अभेद होण दी तिआरी दी अवसथा है। जिसने इह सवाद चखिआ है, सिरफ उही इसनूं सही रूप विच जाणदा है।

''मन्नै पावहि मोखु दुआरु ॥ मन्नै परवारै साधारु ॥
मन्नै तरै तारे गुरु सिख ॥ मन्नै नानक भवहि न भिख ॥ ओसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥''
(मन ना होण दी आवसथा नूं प्रापत करन वाले मुकती दा दरवाजा कूल जाँदा है अते उस तो प्रभावत होके कई जीव होर इस रसते ते चलण लग पैंदे हन। अेसे गुरसिख कईआँ सिकाँ ददे भवसागर तो तर जाण विच सहाइक हो जाँदे हन अते उहना नूं होर किसे तराँ दी वी भीख (भुख) नहीं रहि जाँदी। पर जिन्ना ने उह आनंद माणिआ है इसदा असली भेद उह ही जाणदे हन कि उह निरलेप आवसथा की हुंदी है)

हुण बूंद सागर विच डिगण लई तिआर हो चुकी है, हुण मुकती दा दरवाज़ा खुल्ह गइिआ है, बस छलाँग लगाउणी बाकी बची है। हुण होर कुझ वी करन नूं नहीं बचिआ। बस दरवाज़े नूं पार करना है अते हमेशा लई सागर दा हिसा बण जाणा है, उह है सच खंड दा वासा, उह है सत चित आनंद दी अवसथा।

"मन्नै परवारै साधारु ॥"

जेकर इस दा तरजमाँ इिह कर लईओ कि ओसा जीव दूजिआँ दा वी सुधार कर जाँदा है ताँ इिसदा मतलब इिह होइिआ कि जे कुल दे विचों इिक बचा ब्रहम गिआनी बण जाओ ताँ बाकी परवार दे सारे मैंबर वी तर जाणगे। जेकर बाकी सारे वी तर जाणगे ताँ इिसदा मतलब इिह होइिआ कि उन्हाँ नूं कुझ वी करन दी लोड़ नहीं है। कुदरत विच ओसा कदी नहीं होइिआ। इिह कंम ओसा है कि इिह सभनूं आप ही करना पैंदा है। इिसदा भाव इिह नहीं हो सकदा। आओ इिसनूं ज़रा धिआन नाल विचारीओ:

असीं सारे आपणे करमाँ दे बधे होओ जनम लैंदे हाँ। असाँ सभने किसे कोलों कुझ लैणा है अते किसे दा कुझ देणा है। गुरबाणी ने फैसला कीता है:

"किरत संजोगी भओ इिक"ा करते भोग बिलासा हे ॥
(पन्ना १०७२)

भाव कि असीं सभ किरत संजोग दे बन्हे होओ इिथे आउंदे हाँ। इिस दुनीआँ दे खेड्ह दे विच किसे कोलों कुझ लैणा सी अते किसे नूं कुझ देणा सी, इिस करके आओ, इिक रिशता बण गइिआ। जिस तर्हाँ दा लैणा-देणा हुंदा है उसे तर्हाँ दा रिशता बण जाँदा है। जिहड़े सारिआँ तों नेड़े दे रिशते हन उन्हाँ तों कुझ बहुता लैणा देणा है। जिहड़े दूर दे रिशते हन, उन्हाँ कोलों कुझ थोड्हा लैणा देणा है पर लैणा देणा सारिआँ दा है। कुझ वी ओवें ओकसीडैंटल (accidental) सबंध नहीं है। सभ कुझ उस दे हुकम विच हो रिहा है। सो हुण मन लओ कि तुसीं भगती कीती अते मैं तुहाडा कुझ देणा सी। तुसीं भगती कर के आज़ाद हो गओ। जदों तुसीं अज़ाद हो गओ ताँ जिहड़ा मैं तुहानूं देणा सी उसदा आटोमैटकली (automatically) छुटकारा हो गइिआ। हुण मैं तुहाडे करके बधा होइिआ इिथे नहीं आवाँगा। किसे होर दा लैणा-देणा करके बधा ज़रूर हाँ। इिसेतर्हाँ जिहनाँ ने वी तुहाडा लैणा देणा सी उहनाँ दा तुहाडे नालों बिनाँ किसे मिहनत कीतिआँ ही बंधन टुट गइिआ किउंकि तुसीं अज़ाद हो गओ हो। उह आप वैसे ज़िंदगी तों अज़ाद नहीं होओ, उह सिरफ तुहाडे बंधन तों आज़ाद हो गओ हन। हुण उह तुहाडे करके वापस नहीं आउणगे, होर किसे करके आउण ताँ अलग गल है। जितना वी परीवार दा, समाज दा, संसार दा जो वी पहिलाँ कुझ लैण देण दा लिंक (link) बणिआ होइिआ सी उह ख़तम हो जाँदा है किउंकि बूंद सागर विच डिग पई है। उह दुबारा वापस खिच नहीं पा सकदी। इिस घटना दा गुरबाणी ने इिस तुक विच इिशारा कीता लगदा है।
"मन्नै तरै तारे गुरु सिख ॥"

जिसतर्हाँ कि पहिलाँ दस आओ हाँ कि गुरू इिह कुरबानी कर सकदा है कि उह बूंद सागर विच डिगण तों पहिलाँ थोड़ी देर लई रुक जाओ। ब्रहम गिआनी पिछे रहि के उह आपणे आप नूं कुझ देर लई रोकदे हन। संसार उते तरस खाँदिआँ होइिआँ उह स्री गुरू ग्रंथ साहिब वरगीआँ भेटावाँ देके जाँदे हन। संसार लई जुगती दरज कर दिती है। जो वी चाहे उस विधी नूं समझके वरत सकदा है अते मन ना होण दी अवसथा नूं प्रापत कर सकदा है।

मन्नै नानक भवहि न भिख ॥ ओसा नामु निरंजनु होइि ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइि ॥१५॥

हुण नाँ कोई देण वाला है, ना कोई लैण वाला है, किउंकि मन है ही नहीं। ना कोई मंगण वाला, ना कोई दाता, ना कोई लैण वाला, ना कोई देण वाला। तो भिखिआ वाली गल, दाते वाली गल कोई है ही नहीं। पर इिह किसनूं पता लगदा है? इिह सिरफ उसे नूं ही पता है जिहड़ा उस अवसथा तक पहुंचिआ है। दूजे सिरफ गलाँ कर सकदे हन, अंदाज़ा लगा सकदे हन, पर असलीअत बहुत विरलिआ कोल है। कोई विरला ही उ्थों तक पहुंचदा है जिहड़ा कि मन ना होण दी अवसथा दा सवाद माण सकदा है किउंकि उह निर-अंजन अवसथा है, उह प्रमातमा नाल अभेद होण दी तिआरी दी अवसथा है। जिसने इिह सवाद चखिआ है, सिरफ उही इिसनूं सही रूप विच जाणदा है।

(अंक १६)

पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु ओकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइिआ का पूतु ॥ संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ ओहु लेखा लिखि जाणै कोइि ॥ लेखा लिखिआ केता होइि ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ ओको कवाउ ॥ तिस ते होओ लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा ओक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

(जो जीव मुकती दे दवार तक पहुंच जाँदे हन उह मानो सभ जीवाँ विचो प्रमुख हो गओ हन, उहनाँ दीआँ पंजे करम इंद्रीआँ अते पंजे गिआन इंद्रीआँ प्रभू दी लगाई होई डिऊटी नूं पूरा करके सिरमोर हो गईआँ हन। उहना दीआँ शरूतीआँ उसदी दरगह विच सतकार दीआँ पातर बण गईआँ हन किउकि उह उस प्रभू दे धिआन विच इिक हो गईआँ हन। ओसी आवसथा बारे दुनिआवी शबदा विच कोई विचार नहीं कीती जा सकदी। इिह सभ कुझ जिसने बणाइिआ है उसदी कोई सार नही लै सकदा। इिह सारी धरती इिक धरमसाल वाँगू उसदे बणाओ होओ धारमिक नियम नाल चल रही है। किउंकि हर धारमिक नियम दइिआ विचो जनमदा है, ताँ इिंझ समझ लउ कि दइिआ धरम दी माँ है जो कि इिस नूं संतोख दी लड़ी नाल बन्नके संभालदी है। जिसने इिह बुझारत सही रूप विच बुझ लई है कि इिह सारी काइिनात (धरती) किस आसरे ते खड़ी है उही उसदीआँ निगाहाँ विच सचा बण सकदा है। इिह ताँ सभ जाणदे हन कि अनेकाँ ही धरतीआँ हन, सो जेकर इिक धरती नूं चुकके रखण वालाी कोई शकती (धौला बलद) होवे वी ताँ फिर उस शकती नूं कउण चुकेगा? उसदीआँ बणाईआँ होईआँ अनेकाँ ही वन्नगीआँ अते नावाँ वालीआँ सृशटीआँ हन। इिस बारे बहुत सारिआँ ने लिखण दा उपराला कीता है पर इिह ताँ ही होवे जेकर इिह शबदाँ विच पकड़ी जा सकण वाली गल होवे। उसदी शकती, उसदे बणाओ होओ अनेक रूप अते उसदीआँ दाताँ नूं बिआन करन दी किसे पास हिंमत नहीं है। उसदे इिक शबद विचों इिह सारी काइिनात प्रगट होई है अते उसदे इिक बोल सदका अनेकाँ दरीआवाँ दे वहिण चल पओ हन। उसदी सारी कुदरत दी विचार कीती ही नहीं जा सकदी। उह इितना महान है कि उसतों ताँ वारी वी नहीं जाइिआ जा सकदा। ताँ ते जो सदा ही रहिण वाला है उह जो वी करदा है उसनूं खिड़े मथे प्रवाण कर लैणा ही भला है।)

पिछे गुरबाणी इिशारा कर चुकी है कि जिन्ना ने सही सुणना सिखिआ (mindful listening), अभिआस कीता, कमाई कीती, अते घालणा घाली उहनाँ दा मन इिकागर हो गिआ। जिन्ना दा मन इिकागर हो गिआ उह अगली मंज़िल (stage) ते जाण लई तिआर हो गओ, जिथे बिलकुल मन नहीं हुंदा। जिथे मुकती दे दुआरे दी झलक मिलदी है उस अवसथा नूं प्रापत हो गओ। अगले चार अंक कादर अते कुदरत दे खेल्ह नाल सबंध रखदे हन अते उह इिस नतीजे वल इिशारा करदे हन:

"कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा ओक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥"

इिहनाँ तुकाँ दी गहिराई विच जाण तों पहिलाँ इिह समझण दी कोशिस करनी है कि इिहनाँ दा पहिलीआँ तुकाँ नाल की सबंध है। सरसरी निगाह नाल वेखण जाँ पड्ढन नाल इिह जलदी समझ विच आउण वाली गल नहीं है। इिस अंक दे आरंभ दीआँ तुकाँ हन:

"पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु ओकु धिआनु ॥"

भाव कि उह जीव इिसतरीआँ जिहनाँ नूं मुकती दा दुआरा नज़र आइिआ (१५वाँ अंक - मन्नै पावहि मोखु दुआरु ॥) उह प्रभू दे, परमेशवर दे, पती दे चरनाँ विच परवान होओ। उहनाँ दीआँ करम-इिंद्रीआँ अते गिआन इिंद्रीआँ, सारीआँ ही टिकाउ विच आ गईआँ। इिसदा बाहरली कुदरत नाल कोई सबंध नहीं है। इिह सभ अंदर दी खेड्ह है। इिसे करके इितना इिशारा करके अगे कुदरत दे बारे विचार शुरू होओ हन। गुरबाणी ने बहुत जगह इिशारा कीता है कि कुदरत दे गिआन विच इिनसान दा गवाच जाणा कोई बहुत वधीआ कंम नहीं है। अगर कुदरत दा पता लग वी जाओ कि इिह कितनी वडी है, इिह कदों बणी, इिसदा फैलाव कितना है, इिसदी हद कितनी है, ताँ इिस नाल जीवन दा कोई सुधार नहीं हुंदा। तुसीं आपणे मन नाल झाती मार के वेखो, अगर तुहानूं कोई दस देवे कि इितने करोड़ जगत हन, इितने करोड़ सितारे हन, इितनीआँ धरतीआँ हन, इिस धरती नूं बणे अज तक इितने लख साल हो गओ हन, ताँ हुण इिस सारे गिआन दा तुसीं की कर सकदे हो। इिस नाल तुहाडे आपणे जीवन विच की तबदीली आवेगी? गुरबाणी दा इिशारा है कि इिस काइिनात दी शुरूआत दा कोई पता नहीं है, नाँ कोई आदि है, नाँ कोई मध है, नाँ कोई अंत है। इिह सारा कंम ख़तम नहीं हो गइिआ, उह हुण वी चल रिहा है, अज वी चल रिहा है। काइिनात (Creation, Creativity) कदी ख़तम नहीं हुंदी, हो नहीं सकदी किउंकि जे ख़तम हो गई ताँ इिसदा मतलब है कि उह limited हो गई पर उह unlimited है,

उसनूं Boundary नहीं लगाई जा सकदी। इसे करके इशारा कीता गइिआ है, ''इह लेखा लिख जाणै कोइि, लेखा लिखिआ केता होओ।'' इसदा हिसाब किताब लिखिआ नहीं जा सकदा। इसनूं समझिआ ही नहीं जा सकदा। अगर इह समझिआ जा वी सके ताँ उहनाँ आँकड़िआँ दा की करोगे। उस गिणती दा तुसीं की फाइिदा उठा सकदे हो कि दस हज़ार सितारे हन पंजाह हज़ार धरतीआँ हन, दस करोड़ बंदे हन आदि, इस जानकारी दा की कर सकदे हो? इस करके जीवन नूं इस पासे लगाउण दा कोई फाइिदा नहीं। इस धरती ते सभ तों ज़िआदा कुदरत दा अधिओन करन वाला ब्रहमा दे नाम नाल याद कीता जाँदा है। बाणी विच उसदा ज़िकर है कि ब्रहमा ने आपणी सारी ज़िंदगी, उसदी कोई दस हज़ार साल उमर कही जाँदी है, सिवाओ कुदरत दी खोज (study) दे उसने होर कुझ नहीं कीता। तो बाणी ने ओसी जीवनी बारे इह फैसला दिता,

''सनक सनंद अंतु नहीं पाइिआ ॥
बेद पड़्हे पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइिआ ॥१॥'' (पन्ना ४७८)

ब्रहमा आपणा जनम बरबाद करके चला गिआ। कुदरत दी study करदा रिहा। कादर वल नहीं वेखिआ। कादर दे नाल अभेद होइिआ जा सकदा है, कादर नूं समझिआ नहीं जा सकदा। उसने इह कोशिश कीती ही नहीं। गुरसिख नूं इस पासे जाण दी लोड़ ही नहीं। कुदरत बारे बहिसाँ करन दा कोई फाइिदा ही नहीं। इथे इह खिआल रखण दी ज़रूरत है कि गुरबाणी ओवें इधरो उधरों टाँवे टाँवे विचार नहीं पेश कर रही, इह इक लड़ी विच परोओ होओ हीरिआँ दी माला वाँगूं है।

''कीता पसाउ ओको कवाउ ॥ तिस ते होओ लख दरीआउ ॥''

कवाओ दा मतलब है कूणा, बोलणा। ठेठ पंजाबी दा अखर है कि तूं कूंदा किउं नहीं? भाव बोलदा किउं नहीं? जिवें ईसाई मत ने मंनिआँ है, इह छे दिनाँ विच दुनीआँ बणाउण वाली गल नहीं है। इह सारा फैलाउ उसदी इक अवाज़ नाल होइिआ है। ओस चीज़ नूं अज विगिआन (Big Bang Theory) कहिंदा है। इक बहुत वडा धमाका होइिआ, धरती बण गई, असमान बण गओ। इसलाम कहिंदा है, अलहा ताला ने किहा 'कुन' भाव 'हो जा' अते उसदे इस इक हुकम दा सदका सभ कुझ बण गइिआ। इह सारी जो काइिनात है, उसदे शबद विचों निकली है, उसदी आवाज़ (sound) विचों निकली है। साडा फरज़ है कि असीं इस भावना विच आ जाईओ:

''जो तुधु भावै साई भली कार ॥''

तूं ओस अवसथा विच आ जा कि जो कीता है सो वाह-वाह, जो कर रहिआ हैं सो वाह-वाह, जो करेंगा सो वाह-वाह। जिहड़े इस अवसथा विच पहुंचे हन उहनाँ नें सही सुणिआँ, सही मन्नन कीता अते उहनाँ लई मुकती दा दवार खुल्ह गइिआ। उस दर उते जो होइिआ उस वल इशारा अगले अंक दीआँ मुढलीआँ तुकाँ विच है:

पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु ओकु धिआनु ॥

अखर "पंच" दे दो खास भाव हन। पंजाब दे पिंडाँ विच आपस विच दे गिले, शिकवे, शकाइिताँ, झगड़े आदि दा फैसला करन लई कचिहरीआँ विच रुलण दी जगह इक पंचाइित चुण लई जाइिआ करदी सी। उस पंचाइित दे पंज मैंबर हुंदे सन अते हर मैंबर नूं पंच कहिआ जाँदा सी। उहनाँ पंजाँ विच इक मैंबर नूं मोढी चुण लइिआ जाँदा सी अते उसनूं सरपंच कहिआ जाँदा सी। सो इह पिंड दे पंज सिरमौर विअकती हुंदे सन अते इहनाँ दा कीता होइिआ फैसला हर इक नूं परवान करना पैंदा सी। सो "पंच" दा भाव है जो बाकीआँ तों उपर दे दरजे उते पहुंच चुका है। दूसरा "पंच" तों भाव है नंबर पंज (५)। पंज नंबर कुदरत विच कई थाँवाँ ते दिखाई देंदा है जिवें कि पंजाँ तताँ तों सारी काइिनात दा पसारा है। ब्रहम गिआनीआँ ने पाणी, धरती, वायू, अगनी, अते आकाश सृशटी दे मुढले तत (Basic Elements) मने हन। इसेत्राँ साडीआँ पंज करम इंदरीआँ हन अते पंज ही गिआन इंदरीआँ हन। इनसान नूं प्रमातमा कोलों दूर लिजाण वालीआँ पंज बिमारीआँ हन, (काम, क्रोध, लोभ, मोह, हंकार)। इनसान नूं प्रमातमा दे नेड़े लिजाण वाले पंज गुण हन (सत, संतोख, सेवा, दइिआ, धरम) किउंकि इहनाँ गुणा तों बग़ैर नाम जपिआँ वी हंकार बण जाँदा है अते इनसान दुनीआँ नूं करामाताँ दिखाउण लग जाँदा है। सो "पंच" इथे दोवाँ तरीकिआँ नाल वरतिआ गइिआ जापदा है।

पिछले अंक दे मुताबिक जिहनाँ लई मुकती दा दरवाज़ा खुल्हिआ उह सिरमौर जीव हन। उहनाँ दीआँ पंजे करम इंदरीआँ अते पंजे गिआन इंदरीआँ मात लोक विच आपणा सारा कंम ख़तम कर चुकीआँ हन अते फिर उस सागर विच अभेद होके परवाण

चड्ढ गईआँ हन। उहनाँ दसाँ नूं ही उसदे दर ते इस प्रकार दी परवानगी है मानो किसे राजे दे दरबार विच किसे जीव दा बहुत वडा सतिकार कीता जा रिहा होवे। इस सतिकार दा सभ तों वडा कारन इह है कि उह पंजे करम इंद्रीआँ अते गिआन इंद्रीआँ उस इक दे धिआन विच गवाच गईआँ हन। उहनाँ दा गुरू उह इक प्रमातमाँ ही रहि गइआ है। इस तों पहिलाँ हर करम इंद्री मन दे कंटरोल विच चलदी सी अते मन हर इक इंद्री नूं अलग अलग कंम विच भजाई फिरदा सी। जीभा दा धिआन सिरफ सवाद विच ही सी, अखाँ दा धिआन सिरफ नज़ारिआँ विच ही सी, कन्नाँ दा सुआद सिरफ निंदिआ चुग़ली विच सी आदि। पर हुण उह सारीआँ मिलके इक मिक हो गईआँ हन, उहनाँ नूं भजाउण वाला मन है ही नहीं, इस करके उहनाँ दी भटकणा बिलकुल बंद हो गई है। जीभा हुण नाम रूपी अंमृत दा रस माण रही है, अखाँ हुण उसदे प्रतख दरशनाँ विच डुबीआँ होईआँ हन, कन्न हुण अनहद नाद नूं माण रहे हन। बस सभ पासे इक ही इक है। होर कोई हल चल नहीं, कोई दुबिधा नहीं, कोई सुख नहीं, कोई दुख नहीं, कोई "मैं" नहीं, कोई तूं नहीं, बस उही है।

"जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥"

इह तुकाँ करतार दी गाथा अते संसार दी गाथा विच पुल दी त्ऱ्हाँ दिसदीआँ हन। जो पिछला विचार चलदा आ रिहा है, जो कि अंदर दी अवसथा नाल सबंध रखदा है, जेकर उस वल देखीओ ताँ वी इह फैसला सही है कि जेकर कोई मन ना होण दी अवसथा बारे विचारके कुझ कहिण दी कोशिस करेगा ताँ उह नहीं कहि पाओगा किउंकि उथे कोई शबद, कोई भाशा, कोई निशानी बचदी ही नहीं। जाँ इंज कहि लउ कि उस अवसथा बारे कुझ वी कहिण तों पहिलाँ सोच विचार होणी चाहीदी है कि इह जाणके किहा जा रिहा है जाँ किसे कोलों सुण सुणाके किहा जा रिहा है। अज दी धारमिक दुनीआँ विच सभ तों ज़िआदा खलल उहनाँ प्रचारकाँ ने पाइआ है जो बिनाँ कुझ जाणे ही तोते दी त्ऱ्हाँ दुहराई जाँदे हन। जिहड़े आपणे घर दा नकशा नहीं बणा सकदे उहनाँ ने सवरग ते नरक दे नकशे बणाओ होओ हन अते दुनीआँ नूं भुलेखिआँ विच पा रहे हन। सो गुरबाणी हुशिआर करदी है कि उपर वाली अवसथा बारे हर गिआनी इही कहिंदा है कि इस बारे सही रूप विच कुझ नहीं कहिआ जा सकदा, इसनूं बस माणिआँ ही जा सकदा है। इह अवसथा शबदाँ दी गुलाम नहीं है। जेकर कुदरत वाले पासे वल वेखीओ ताँ वी इह फैसला सही है कुदरत दी विचार करन वाला थक जाओगा किउंकि उसदी कीती होई दा कोई अंत नहीं पा सकदा। इसत्ऱ्हाँ नाल गुरबाणी विचार दी लड़ी नूं टुटण नहीं देंदी बलकि लिंक बणाई रखदी है ताँ कि जगिआसू दी विचार धारा नूं इक दम झटका ना लगे कि अंदरली गल करदिआँ होइआँ इह इक दम बाहर दी गल किवें चल पई। इसतों अगे कुदरत बारे खुलासा शुरू हुंदा है।

"धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥"

इह धरती इक धरमसाल है भाव इह संसार धरम दी खेलु खेड्ढण लई बणाइआ गइआ है। धरम दइआ दा पु" है जाँ इंज कहि लउ कि दइआ धरम दी माँ है। जिथे दइआ रूपी माँ नहीं उथे धरम रूपी बेटा पैदा ही नहीं हो सकदा। धरम दी खेड्ढ खेड्ढण दे लई जीव दा हिरदा दइआवान होणा बहुत ज़रूरी है। कठोर, जिदी, अते खुदग़रज़ इनसान धरम दी खेड्ढ दा विखावा ते कर सकदा है पर असली खेड्ढ विच हिसा नहीं पा सकदा। इह धिआन योग गल है कि गुरबाणी इस धरती नूं दूजे धरमाँ दे बानीआँ नालों बिलकुल अलग निगाह नाल देख रही है। बाकी धरमाँ लई इस ब्रहमंड (Galaxy) विच धरती इक ओसा ग्रहि है जिस उते इनसानी जीवन संभव है। पर गुरबाणी इसनूं इक कुदरत दी बणाई होई धरमसाला समझदी है। इह विचार अगे चलके फिर दुहराइआ जाओगा। इस धरमसाला नूं संतोख रूपी धागे नाल बन्नृके खेड्ढ चलाई जा रही है। इह बड़ा गहिरा इशारा है। हर खेड्ढ दे कुझ नियम हुंदे हन। उहनाँ नियमाँ नूं रोज़ दिहाड़े बदलिआ नहीं जा सकदा। खास करके धरम दी दुनीआँ विच इह बहुत ज़रूरी है कि जिस मारग ते जगिआसू चल पइआ है उसनूं जदों जीअ करे बदलन दी कोशिश ना करे। जद वी ज़रा जिन्ना असंतोश होइआ ताँ रसता बदलन नूं दिल करेगा। बाहर दी दुनीआँ दी सारी उनती असंतोश (Discontentment) करके हुंदी है, धरम दी दुनीआँ विच अधिआतमिक उचाई दी प्रापती संतोख (Contentment) करके हुंदी है।

इथे इक गल होर वी धिआन योग है। संतोख दा सबंध जाती जीव दे आपणे अंदर नाल है, दइआ दा सबंध दूजिआँ दे नाल है भाव संतोख आपणे विच है अते दइआ दूजिआँ उते है। पर असीं इसतों बिलकुल उलटा करदे हाँ। सानूं तरस आपणे उते आउंदा है अते दूसरे नूं असीं संतुशट रहिण दी राओ देंदे हाँ। धरम दी दुनीआँ विच इह कदी नहीं चल सकदी। धरम दी दुनीआँ विच संतोख लोभ नूं वस विच रखेगा, विचाराँ नूं भटकण तों रोकेगा, अते मारग उते पूरन विशवास नाल चलदे रहिण विच सहाइक होवेगा।

"जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥"

जो वी इह दसिआ जा रिहा है इह इक बुझारत ही है अते जो वी इस बुझारत नूं बुझ लैंदा है उह सच दे मारग दी

यातरा लई तिआर हो जाँदा है। इहि कोई बहुत रहसमई फिलासफी नहीं है। इसनूं समझणा बहुता मुशकिल नहीं है किउंकि इहि छोटी जिही अड़ाउणी वाँगूं है, इहि इक बुझारत वाँगूं है। धरमसाल विच सही तरीके नाल जीवन गुज़ारन लई संतोख रूपी धागा मन नूं बन्नु रखणा ज़रूरी है। बाकी फिलासफीआँ ओंवे गपाँ ही हन। मिसाल वजों इहि कहिणा कि धरती नूं संभाल के रखण वाला इक बैल है जिसने आपणे दो सिंगाँ उते धरती नूं चुकिआ होइआ है, इक झूठी गप है। इस विच कोई सचिआई नहीं। इहि गप इस सवाल दे जवाब विच घड़ी गई है कि इस धरती दा इतना भार किसने चुकिआ होइआ है। जेकर इस जवाब नूं सही मन लईओ ताँ अगे इक होर सवाल पैदा हो जाओगा जो कि अगली तुक विच आइआ है।

"धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥"

सृशटी विच अणगिणत धरतीआँ (Planets) हन, उहनाँ सारिआँ नूं किसने चुकिआ होइआ है। इथे ही बस नहीं, हर धरती नूं चुकण वाले बैल नूं किसने चुकिआ होइआ है, उह बैल किवें खलोता होइआ है, उसनूं किहड़ी शकती संभाल रही है। उसदे हेठाँ (तलै) किहड़ी ताकत (जोरु) है। भाव इनसान नूं ओसीआँ फालतू कहाणीआँ विच यकीन नहीं करना चाहीदा। इहनाँ विच कोई सचाई नहीं है। इहि सभ मनघड़ंत (Fictional) गलाँ हन। असली बैल धरम है जो कि दइआ रूपी माँ विचों पैदा होइआ है अते उसनूं संतोख दा धागा बन्नुके सारी धरती उते इक खेड्ड चलाई गई है। प्रमातमा ने इस त्रुाँ इस धरती नूं इक ख़ास नियम, इक ख़ास धरम दे ज़ोर नाल ठहिराइआ होइआ है। बाकी सभ कहाणीआँ बेकार हन।

"जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ ओहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ लेखा लिखिआ केता होइ ॥"

इस धरती उते अनेक त्रुाँ दे अनेक जीव अनेक नाँवाँ वाले हन, उहनाँ दी गिणती कीती ही नहीं जा सकदी। हर विचारनवान इसे नतीजे ते पुजिआ है अते हर इक ने इही लिखिआ है कि इहि बड़ी मुशकिल गल बात है। प्रमातमा दीआँ बणाईआँ होईआँ चीज़ाँ दी गिणती नहीं हो सकदी। भाँवे असीं इहि विशवास कर लइआ है कि ८४ लख जूनाँ हन, पर इहि वी ताँ इक अंदाज़ा ही है। जो वी इस बारे विचारके लिखण दी कोशिश करदा है उस पासों इहि विचार ख़तम ही नहीं हुंदी, इहि लेखा अगे तों अगे वधदा ही जाँदा है। भाव कि इस यतन विच अज तक कोई कामयाब नहीं होइआ अते नाँ ही हो सकदा है किउंकि जिस त्रुाँ प्रमातमा असीम है उसे त्रुाँ उसदी कुदरत वी असीम है। जो ब्रहम गिआनी उस प्रमातमा विच अभेद हो गइआ है उह वी इस लेखे बारे कुझ कहि नहीं सकदा किउंकि बूंद समुंदर दा हिसा ते बण सकदी है पर समुंदर दे फैलाव बारे कुझ दस नहीं सकदी।

"केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
कीता पसाउ ओको कवाउ ॥ तिस ते होओ लख दरीआउ ॥"

"केता" अखर इथे सवालीआ रूप विच नहीं लैणा चाहीदा। इसनूं अंगरेजी भाशा विच रैटोरीकल (Rhetorical) वाक कहिंदे हन। भाव कि उसदी शकती (ताणु) जाँ उसदी ख़ुबसूरती दा अंदाज़ा किवें लगाइआ जा सकदा है जाँ इंज कहिणा चाहीदा है कि इहि बिलकुल ही संभव नहीं है। उसदीआँ दाताँ नूं जानण दी किसे विच वी हिंमत जाँ शकती (कूत=कुवत, शकती) नहीं हो सकदी। उह इतना सरव शकतीमान है कि उसदी इक आवाज़ (ओको कवाउ) करके इहि सारी श्रिशटी दा फैलाउ (पसाउ) हो गइआ है। उसदे इक ही बोल नाल लखाँ ही दरिआ बहि पओ हन। अज दी साँइंस कहिंदी है कि सारे ग्रहि अते धरतीआँ इक बहुत वडे धमाके (Big Bang) नाल बणे हन। शाइद उह वी उसे शबद नूं धमाका कहि रहे हन जिसनूं गुरबाणी उसदा इक बोल दस रही है। इहनाँ सारीआँ दलीलाँ दा जो नतीजा निकलदा है उह है:

"कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा ओक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥"

भाव कि कुदरत दी विचार कही नहीं जा सकदी। प्रभू वी बेअंत है अते उसदी कुदरत वी बेअंत है। जीव इक ओसे मामूली किणके दी त्रुाँ है जो कि आपणे आप नूं इतनी विशाल शकती ते कुरबान वी नहीं कर सकदा। ताँ ते बस इतना ही कहिणा बणदा है कि जो वी उसनूं चंगा लगदा है सानूं उसे विच खुश रहिणा चाहीदा है किउंकि उसदे इलावा सभ कुझ ही नाशवान है, सिरफ उही सदीव रहिण वाला है। उसदी रज़ा विच राज़ी रहिण दी जाच सिखणी ही इनसान नूं रास आ सकदी है। जो उसने कीता है सो वाह वाह, जो उह कर रिहा है सो वाह वाह, अते जो उह करेगा सो वाह वाह।

(अंक १७)

गुरबाणी ने पिछले अंक विच इहि सुनेहाँ दिता सी कि ओ जीव, तूं इिस अवसथा विच आ जा कि जो उसने कीता है सो वाह-वाह, जो कर रहिआ है सो वाह-वाह, अते जो करेगा सो वाह-वाह। जेकर इिस अवसथा विच नहीं आउंदा ताँ तेरे तों पहिलाँ दुनीआँ दे उ‍ते अणगिणत ओसीआँ आतमावाँ आ चुकीआँ हन अते जा चुकीआँ हन जिहनाँ ने कि बड़े-बड़े करम कमाओ हन। गुरबाणी ने अगले अंक विच इिस बारे खुलासा कीता है।

"असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग मनि रहहि उदास ॥ असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥ असंख सती असंख दातार ॥ असंख सूर मुह भख सार ॥ असंख मोनि लिव लाइि तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा ओक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥"
(अनगिणत जीव बड़े भाओ विच उसदा नाम जपदे आ रहे हन, अनेक ही पूजा अते तपसिआ करदे आ रहे हन, अनेक वेदाँ अते ग्रंथाँ दे पाठ हो रहे हन, अनगिणत जोगीआँ वाँग दुनीआँ तों उपराम फिर रहे हन, अनेकाँ भगत उसदे गुणाँ दी वीचार विच डुबे होओ हन, अनगिणत जीव दान करन विच रुझे होओ हन, अनेक बहादर लोग लोहे दे हथिआराँ दी चोट मूंह ते सहि रहे हन, अनगिणत लोग खामोश रहि के धिआन विच जुड़े होओ हन। तेरी कुदरत दी विचार कीती ही नहीं जा सकदी किउकि तेरी कुदरत वी तेरी तराँ ही बेअंत है। तेरे तों ताँ इिक वार वी कुरबान नही होइिआ जा सकदा। तूं ही सदा रहिण वाला है अते जो वी तैनूं चंगा लगदा है उही कंम सही है।)

गुरबाणी विच दो थावाँ ते इिसत्राँ दीआँ लिसटाँ आईआँ हन। इिह सभ तों पहिली लिसट है। सुखमनी साहिब विच वी इिसेत्राँ दी लिसट आई है। दोवें जगह पहिलाँ करतार वल झुकाउ रखण वालिआँ (Positive energy) दा ज़िकर कीता गइिआ है अते बाअद विच संसारिक माइिआ विच डुबे होइिआँ (Negative Energy) दा हवाला दिता गइिआ है। सुखमनी साहिब विच इिस बारे तुकाँ इिस परकार हन:

कई कोटि होओ पूजारी ॥ कई कोटि आचार बिउहारी ॥
कई कोटि भओ तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥
कई कोटि बेद के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥
कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥ कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥
नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥

जपु बाणी दे १६वें अंक विच इिशारा सी कि हे जीव "जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥" नूं हिरदे विच वसाणा ही सही है नहीं ताँ तैनूं थोड़ी जिही गिणती उहनाँ दी दसी जाँदी है जो तेरे तों पहिलाँ इिस धरती ते आके वापस जा चुके हन। गिणती करन लगिआँ जदों गुरबाणी ने उस नाल जुड़िआँ (Positive energy) होइिआँ दी गिणती कीती है ताँ सारिआँ तों उ‍पर पहिला अखर रख दिता है 'असंख जप'। इिहनाँ अखराँ दी तरतीब नूं समझण दी लोड़ है किउंकि इिस विच वी इिक इिशारा छुपिआ बैठा है। सिख जगत दे विच जपणा सभ तों अहिम है। गुरबाणी फुरमाँदी है:

"जपहु त ओको नामा ॥ अवरि निराफल कामा ॥" (पन्ना ७२८)
"अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नहीं मानै ॥" (पन्ना २६६)

इिथे पहिला अखर वरतिआ गइिआ है 'असंख'। इिह गल धिआन नाल समझण वाली है। सुणन नूं इिंज लगदा है कि कोई गिणती कीती जा रही है हालाँ कि असंख कोई नंबर नहीं है, असंख कोई गिणती नहीं है। जदों बाणी विच असंख अखर आइिआ है अते तुहानूं कोई पुछ लवे कि असंख कितना हुंदा है ताँ तुसीं की कहोगे? जेकर इिह कहो कि संख तक गिणती चल सकदी है उस तों बाअद कुझ नहीं हुंदा ताँ हुण तुहानूं कोई पुछ सकदा है कि जे तुसीं कहि नहीं सकदे ताँ कागज़ ते लिख दिओ कि ओके अगे कितने ज़ीरो पाओ जाण ताँ कि उह संख बण जाओ अते जदों संख तक पहुंच गओ ताँ उ‍थे फेर ओका होर नाल लगा दिओ। पर ओसा हो नहीं सकदा किउंकि असंख नाल कोई हिसाबी गल नहीं लाई जा सकदी। इिसदे विच कुझ जम्राँ नहीं कीता जा सकदा, कुझ घटाइिआ नहीं जा सकदा, इिसनूं तकसीम नहीं कीती जा सकदा, इिहनूं गुणा नहीं कीती जा सकदी। इिह नंबर नहीं है, इिह सिरफ ओसी गिणती, जिस नूं दसिआ नाँ जा सके, बारे इिशारा है। दूजा अखर है जपु। गुरबाणी विच जपणा ही सारिआँ तों उ‍पर मंनिआँ गइिआ है। दुनीआँ दे उ‍ते अनेक लोक होओ हन, जिहड़े जपण दी कोशिश कर रहे हन, करदे आओ हन अते करदे जा रहे हन। साडे धरम असथानाँ दे उ‍ते वी ढोलकीआँ-छैणे लै के धुनीआँ लगाईआँ जाँदीआँ हन। हुण सवाल उ‍ठेगा कि जेकर असंख जप करन वाले होओ हन ताँ की असंख ही प्रमातमा नाल मिल गओ हन? जे इिह गल सची है ताँ फिर बाणी इिह

किउं कहि रही है

"तेरा जनु ओकु आधु कोई ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित
हरि पदु चीन्है सोई ॥१॥" (पन्ना ११२३)
इहि कितनी हैरानी दी गल है कि असंख जीव इसतरीआँ जाप विच लगीआँ होण ताँ मंज़िल ते कोई इक अध ही पहुंचे। इहि की गल होई? ताँ गुरबाणी ने इस भेद दा खुलासा कीता अते फुरमाइआ:

"किआ जपु किआ तपु संजमो किआ बरतु किआ इसनानु ॥ जब लगु जुगति न जानीओ भाउ भगति भगवान ॥२॥"
(पन्ना ३३७)

कबीर जी ने इशारा कीता कि इनसान कोलों इही चीज़ गुआच गई है। जाप ताँ कर रहे हाँ पर सही जुगती नहीं है। जेकर सही रूप विच जाप हो रिहा होवे ताँ मन विच शाँती पैदा होणी चाहीदी है। धरम दे रसते उते चलदिआँ जेकर काम, क्रोध, लोभ, मोह, हंकार घटण दी बजाओ उलटा ज़िआदा हो गइिआ ताँ साफ है कि कोई बुनिआदी ग़लती हो रही है। इसे भेद वल कबीर जी ने इशारा कीता सी कि सही ढंग ना पता होण करके हर करम प्रमातमा कोलों दूर लै जा रहिआ है। गुरबाणी मुताबिक जाप करन दा सही ढंग जपु बाणी दे आखिर विच जाके दसिआ गइिआ है। इसदी खुल्ही विचार ३७वें अंक विच कीती जाओगी। इथे इतना ही समझणा काफी है कि अगर इतने किरिआ करम करन दे बावजूद अजे साडे विचों गुसा नहीं गिआ, लोभ नहीं गिआ, हंकार नहीं गइिआ ताँ इहदे विच गुरू दा कोई कसूर नहीं है जाँ शबद दा कोई दोश नहीं है। इहदे विच साडा ही दोश है किउंकि सही जुगती नहीं समझी।

"असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥"

अनेकाँ ही भावना रखके जाप विच लगे होओ हन अते अनेकाँ ही पूजा अते तपसिआवाँ विच जुड़े होओ हन। पर जिस तराँ दी पूजा होण लग पई है उस बारे कबीर जी वलों आवाज़ आई:

"पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥ जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥१॥ भूली मालनी है ओउ ॥
सतिगुरु जागता है देउ ॥१॥" (पन्ना ४७९)
"तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥
राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥" (पन्ना ११५८)

भाव कि इक निरजीव पथर दी पूजा करन दे लई जिउंदे जागदे फुल तोड़ देणे कोई सिआणप नहीं है। मालण ही नहीं सारा जग भुलिआ होइिआ है कि जागदी जोत दी पूजा किवें कीती जावे । भगत जनु कदी इसतराँ दी पूजा नहीं करदे। भगत रवीदास जी वलों आवाज़ आई:

"दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥१॥
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥
अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥१॥ रहाउ ॥
मैलागर बेर्हे है भुइअंगा ॥
बिखु अंमृतु बसहि इक संगा ॥२॥
धूप दीप नईबेदहि बासा ॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥३॥
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥४॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥
कहि रविदास कवन गति मोरी ॥५॥" (पन्ना ५२५)

भाव कि जिसतराँ नाल दुनीआँ तेरी पूजा करदी है "मैं" नहीं कर सकदा। कोई दुध चड़्हाउंदा है, कोई फुल चड़्हाउंदा है, कोई धूफ धुखाउंदा है पर दुध पहिलाँ ही बछड़े कोलों जूठा हो गइिआ है हुण तैनूं किस तराँ देवाँ? पाणी विच ताँ मछली नहा रही है उस अपवितर पाणी नाल तेरा इशनान किवें करावाँ, फुल नूं भंवरा पहिलाँ ही सुंघ गइिआ है, उह तेरे चरनाँ विच किस तराँ चड़्हा देवाँ? उसदी पूजा लई ताँ आपणा मन तन ही अगे रखिआ जा सकदा है ताँ कि जिहड़ा अंदर कूड़ा करकट इकठा कीता होइिआ है इहि खाली हो जावे। ओसी पूजा करन नाल हंकार घटदा है, मन नीवाँ हुंदा है। पर दुनीआँ ओसे लोगाँ नूं पागल कहिंदी है किउंकि उह दुनीआँ दी तराँ पूजा नहीं करदे।

"असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥
असंख जोग मनि रहहि उदास ॥"

अजकल इिस धरती दे उ ते पंजाब तों लै के अमरीका तक जितनाँ बाणी दा पाठ हुण हो रिहा है, पहिलाँ कदे नहीं सी होइिआ। दिन तों लै के रात तक, सवेर तों लै के शाम तक जाँ ताँ बाणी नूं गाई जाँदे हाँ, जाँ पड्ढी जाँदे हाँ। इिह कंम ताँ सही है पर इिसदा जो असली मकसद सी उह सानूं भुल चुका है। गुरबाणी नूं सुणन जाँ पड्ढन तों भाव इिह सी कि मन विच सवाल पैदा होओे कि जो मैं पड्ढ रिहा हाँ, उसदे पिछे की भेद छुपिआ बैठा है? गुरबाणी समझा रही है कि देखो अनेकाँ तरृाँ दे ही पाठ हो रहे हन पर उसदा सही मतलब ना समझण करके जगिआसू दुनीआँ छड के भज उठिआ, उदासी हो गइिआ किउंकि भुलेखा पै गइिआ कि गृहसथ विच रहि के ताँ कुझ हो ही नहीं सकदा। स्री गुरू गोबिंद सिंघ जी ने याद दिलाइिआ:

"रे मनु ओसो कर संनिआसा।
बन्न की सगन सभै कर समझो मन ही माहि उदासा"

भाव कि सही रूप विच संनिआसी लई हर जगह ही जंगल होणी चाहीदी है किउंकि उसदे मन विच संसार वलों उपरामता है। जंगल विच लकड़ीआँ, दरखत वेखेगा ताँ घराँ विच वी फरनीचर है। जंगलाँ विच पौदे (Plants) देखेगा पर घर विच वी पौदे रखे होओे हन। जंगल विच पंछीआँ दीआँ अते जानवराँ दीआँ अवाज़ाँ सुणेगा पर घर विच बचे रौला पा रहे हन। फिर जंगल विच ते घर विच की फरक है। तूं आपणे घर नूं ही जंगल समझ। "बन्न की सगन सभै कर समझो" जिथे वी हैं उसनूं जंगल ही समझ अते "मन्न ही माहि उदासा" भाव कि मन नूं माइिआ तों दूर करन दी लोड़ हुंदी है। सरीर दूर करन नाल मन दूर नहीं हुंदा। इिस करके गृहसथ दे विच रहिके 'असंख जोग मन रहे उदास' दी कमाई करन दी लोड़ है पर गल उलटी हो गई। जाँ सिरफ पूजा पाठ रहि गइिआ अते जाँ जंगलाँ वल भजण वाले उदासी रहि गओे।

"असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥
असंख सती असंख दातार ॥"

अनेकाँ ही भगती दे गुणाँ दीआँ विचाराँ करदे हन अते अनेकाँ ही दौलत वंडण विच लगे होओे हन। जिहनाँ ने आप कुछ नाँ करन दा इिरादा बणाइिआ होइिआ है उह गलाँ करन लग पओे कि इिसतरृाँ नहीं होणा चाहीदा बलकि ओस तरृाँ होणा चाहीदा है, इिह ग़लत है, उह ठीक है, आदि। आपणे-आपणे डेरिआँ दीआँ तारीफाँ होण लग पईआँ। जिहनाँ ने इिह वी नहीं सी करना उह दौलत वंडण लग पओे। अनेकाँ ही ओसे होओे हन जिहनाँ ने इिह मन विच धारिआँ होइिआ सी कि दौलत दा दान करके ही परम अवसथा नूं प्रापत कर लैणगे। इिसे करके अज कल वेखण विच आउंदा है कि धरम वी इिक तरृाँ दे धंधे दी गल बणके रहि गइिआ है। सभ गल पैसे दी बण गई है, शबद गुरू दे कोल बैठके गुरू दी सिखिआ लैण दा इिरादा ही ख़तम हो गइिआ जापदा है।

"असंख सूर मुह भख सार ॥ असंख मोनि लिव लाइि तार ॥"

अनेक बहादुर हन जो आपणे मूंहाँ उते (भाव सनमुख हो के) शास"ाँ दे वार सहिंदे हन अते अनेकाँ मोनी हन, जो इिक-रस बृती जोड़ के बैठ रहे हन। अनेकाँ बहादुर धरम दे नाँ ते लड़न लई तिआर हन, मरन मारन लई तिआर हन। उह आपणा सिर कटाउण लई तिआर हन। पर धरम दी दुनीआँ विच हडी मास दे सिर दी गल किते वी नहीं कीती गई। हंकार दा मरना हडी मास दा सिर कटवाण नालों वी मुशकिल गल है। गुरबाणी लई गुरसिख दी मंज़िल है:

"अखी बाझहु वेखणा विणु कन्ना सुनणा ॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥
जीभै बाझहु बोलणा इिउ जीवत मरणा ॥
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥१॥"

(पन्ना १३९)

इिह उहनाँ जीउंदिआँ होइिआँ दी यातरा है जो मर के फिर जिउंदा होओे हन। गुरबाणी दीआँ हेठ लिखीआँ तुकाँ बारे सानूं बहुत ही वडा भुलेखा पाइिआ गइिआ है:

“जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि न कीजै ॥” (पन्ना १४१२)

इहनाँ तुकाँ विच प्रमातमा नाल प्रेम दी खेड्ड खेड्डण वल इशारा है। प्रेमी आपणा हंकार काइम रखके पिआर दी खेड्ड नहीं खेड्ड सकदा। पिआर दी सभतों पहिली निशानी ही इहि है कि प्रेमी ही सभ कुझ बण जाँदा है, आपा बिलकुल ख़तम हो जाँदा है। गुरबाणी वी इही इशारा कर रही है कि जेकर प्रमातमा नाल प्रेम दी खेड्ड खेड्डण दा चाउ है ताँ आपणे हंकार, आपणी “मैं” (सिरु) नूं धरती दे तल (तली) दे बराबर कर भाव बिलकुल मिटी दे नाल मिटी बण ताँ इस रसते ते पैर रखिआ जा सकदा है। दूजे इहि वी गल याद रखीं कि इस रसते ते किसे तरुाँ दी हुशिआरी नहीं चलणी। उपरों उपरों दी निमरता अते अंदर दी कठोरता कंम नहीं आवेगी। इहि जिवें इक बेईमान दुकानदार तकड़ी तोलण लगिआँ काण मार जाँदा है उसे तरुाँ वाली गल हो जाओगी अते प्रमातमा दे दरबार विच ओसी हुशिआरी नहीं चलदी। इहनाँ तुकाँ दा जो परचलत भाव लइआ जा रिहा है उह गुरबाणी दे आशे दे बिलकुल उलट है। कबीर जी ने वी इशारा कीता है:

“कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ ॥ ओसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥”
(पन्ना ५५५)

भाव सदा लई जनम मरण दे बंधन तों आज़ाद होणा सही रूप विच मरना है बाकी सभ माइआ दे जाल विच फसे होओ आवण जाण दी खेड्ड है।

सो जपु बाणी दीआँ इहि तुकाँ (असंख मोनि लिव लाइ तार) इशारा कर रहीआँ हन कि अनेकाँ ने चुपी धार रखी है, मोन वरत रख लओ हन, अखाँ बंद कर लईआ हन। पर ज़ुबान बंद करन नाल मन चुप नहीं हो सकदा, उह ताँ अंदर रौला पा ही रिहा है। सो गुरबाणी ने इहि छोटी जिही लिसट दिती अते समझाइआ कि भाँवे इहि सारीआँ चंगीआँ गलाँ हन पर चंगीआँ गलाँ ने असली कंम नूं छड के बाहरदी दुनीआँ नाल जोड़ दिता है। जीव परमातमा नाल जुड़ नहीं सकिआ। जेकर परमातमा नाल जुड़न दा चाउ है ताँ कुदरत दीआँ विचाराँ छडदे। कुदरत नूं जाणिआ नहीं जा सकदा। भाव कि कुदरत दी विचार कही नहीं जा सकदी। प्रभू वी बेअंत है अते उसदी कुदरत वी बेअंत है। जीव इक ओसे मामूली किणके दी तरुाँ है जो कि आपणे आप नूं इतनी विशाल शकती ते कुरबान वी नहीं कर सकदा। ताँ ते बस इतना ही कहिणा बणदा है कि जो वी उसनूं चंगा लगदा है सानूं उसे विच खुश रहिणा चाहीदा है किउंकि उसदे इलावा सभ कुझ ही नाशवान है, सिरफ उही सदीव रहिण वाला है। उसदी रज़ा विच राज़ी रहिण दी जाच सिखणी ही इनसान नूं रास आ सकदी है। जो उसने कीता है सो वाह वाह, जो उह कर रिहा है सो वाह वाह, अते जो उह करेगा सो वाह वाह। उसदी रज़ा विच रहिणा सिख, उसदे हुकम विच जीवन यातरा करन दा अभिआस कर ताँ ही अगली मंज़िल दी तिआरी शुरू होवेगी।

(अंक १८)

पिछले अंक विच गुरबाणी ने सानूं सिधी शकती (Positive Energy) दी इक गिणती दसी सी जिसदी शुरूआत गुरबाणी ने "असंख जपु" तों कीती सी। असीं विचारिआ सी कि जपु सारिआँ तों पहिलाँ रखिआ गइआ है अते समझाइआ गइआ है कि जप करन दा सही तरीका जीव ने सिखिआ ही नहीं है। बहुत सारे जाप कर रहे हन, पर कोई विरला ही उहदे तक पहुंचदा है। उसदा कारन इहि है कि जिस किरिआ नूं जीव जप समझ के बैठ गइआ है उह गुरबाणी मुताबिक जप नहीं है। गुरबाणी ने जिथे वी सिधी शकती (Positive Energy) दी गिणती कीती है उहदे नाल ही विपरीत शकती (Negative Energy) दी गिणती वी रखी है। इसे तरूाँ इहि दो लिसटाँ गुरबाणी विच आईआँ हन। इक जप बाणी विच इहि लिसट आई है अते दूजी लिसट सुखमनी विच आई है जिहड़ी कि तुसीं अकसर इस तरूाँ पढ़दे हो:

"कई कोटि होओ पूजारी ॥
कई कोटि आचार बिउहारी ॥" (पन्ना २७५)

इथे वी पहिलाँ जपु करना रखिआ है अते दूसरे अंक दे विच इशारा कर दिता:

"कई कोटि भओ अभिमानी ॥
कई कोटि अंध अगिआनी ॥" (पन्ना २७५)

इथे इहि विचारन वाली गल है कि इहि दो लिसटाँ गुरबाणी ने नाल-नाल किउं रखीआँ हन। इस दा भेद समझणा है। संसार दे बहुते धरमाँ विच इस चीज़ दी बहिस है कि किहड़ा कंम चंगा है अते किहड़ा कंम माड़ा है। पर गुरबाणी फैसला दे रही है कि:

"पुन्नी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥"

सवाल इहि है कि जीव किसनूं पुन्न कहे अते किसनूं पाप कहे। पुन्न अते पाप दी की प्रीभाशा है? इहि फैसला किवें कीता जावे कि प्रमातमा दी निगाह विच की पाप अते की पुन्न है? गुरबाणी ने सुखमनी विच वी इहि इशारा कीता है:

"जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥
नानक करते की जानै करता रचना ॥" (पन्ना २७५)
भाव कि जो जो कंम किसे नूं दिता है उह उही कंम कर रिहा है। गुरबाणी इहि इशारा कर रही है कि हे गुरसिख ज़िंदगी दो पहिलूआँ विच चलदी है। जीवन दी यातरा दे लई दो पहीओ हन, इक सिधी शकती दा अते दूजा विपरीत शकती दा, रात दा अते दिन दा। कबीर जी ने इशारा कीता सी:

"पापु पुन्नु दुइि बैल बिसाहे पवनु पूजी परगासिओ ॥
तृसना गूणि भरी घट भीतरि इिन बिधि टाँड बिसाहिओ ॥१॥ ओसा नाइिकु रामु हमारा ॥
सगल संसारु कीओ बनजारा ॥१॥" (पन्ना ३३३)

भाव कि प्रमातमा ने जीव नूं साहाँ दी पूंजी दे के साथ दो बैल दे दिते हन, इक सिधी शकती दा ते इक विपरीत शकती दा। जीव ने उस गडी उते आशावाँ दी पंड रख लई है अते कुझ साह ओस तृशना विच गुज़ार रिहा है ते कुझ साह उस तृशना विच गुज़ार रिहा है। पर विपरीत शकती दा इक कंम है कि उह इक दम सवाद दे दिंदी है। उसदा फल झट ही मिल जाँदा है। पर सिधी शकती दा फल लगण विच देर लगदी है। अते मन दा सुभाअ है कि जो उह कर रिहा है उसदा फल उसे वेले ही मंगदा है। इस करके जीव विपरीत शकती वल ज़िआदा खिचिआ जाँदा है। अज दा साइंसदान माँ-बाप नूं समझाँदा है कि बचे नूं कदी इहि ना कहिआ करो कि झूठ ना बोल। अगर बचे नूं तुसाँ कहि दिता कि झूठ ना बोल ताँ उसनूं झूठ बारे उतसुकता (curiosity) हो जाँदी है किउंकि उसदे नाल 'ना' लग गइिआ है। तो साइिंसदाना ने राओ दिती है माँ-बाप नूं कि बचे नूं जदों वी कुझ कहिणा है ताँ Positive विच कहिणा है जैसे 'हमेशा सच बोल'। विपरीत शकती वाली गल ही नहीं करनी, हमेशा सिधी गल करनी है। पर गुरबाणी ने दोने लिसटाँ नाल-नाल रख दितीआ हन और इहि इशारा कीता है कि चंगे-माड़े दा फैसला जीव नहीं कर सकदा। उह फैसला प्रमातमा दे हथ विच है। कबीर जी ने बाणी विच दरज़ कर दिता है:

"अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥
मै किआ जानउ बाबा रे ॥" (पन्ना ८७०)

भाव कि मैनूं किस त्ररॉं पता लगे कि जिहड़ा कंम मैं आपणे वलों सही कर रिहाँ हाँ, उह वाकिआ ही सही हो रिहा है। अज तक किसे इनसान ने वी दुख दे लई कोशिश नहीं कीती:

"जतन बहुत सुख के कीओ दुख को कीओ न कोइि ॥
कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइि ॥" (पन्ना १४२८)

इनसान ने अज तक जान बुझके कदी दुख दा बीज बोइिआ ही नहीं। फेर की कारण है कि इिह दुख विच पैंदा है? जे कदी इिसने दुख मंगिआ ही नहीं ताँ इिह दुखी किउं हुंदा पइिआ है। गुरबाणी ने दसिआ कि इिक बहुत वडा भुलेखा पै गइिआ है। जीव ने फैसला आपणे हथ विच लै लइिआ है कि आह कंम सुख दा है ते उह कंम दुख दा है। हालाँ कि माइिआ दे विच रहिंदिआ होइिआँ कोई ओसा कंम नहीं है जिसदे दोनों पहिलू नहीं हन। कुदरत ने हर कंम दे विच दोनों पहिलू छुपाओ होओ हन। इिस करके गुरबाणी ने इिह दो लिसटाँ नाल-नाल रख दितीआँ हन। जदों सिधी लिसट (Positive list) शुरू कीती ताँ 'असंख जपु' तों शुरू कीती, पर जदों विपरीत शकती दी लिसट (Negative list) शुरू कीती ताँ 'असंख मूरख' तों शुरू कीती। सारिआँ तों पहिले मूरख रखिआ है। मूरख दी असीं लफजी विआखिआ कर लई है उह जीव जिहड़ा बेवकूफ हुंदा है, जिहड़ा पागल है, जिहड़ा शुदाई है। गुरबाणी विच मूरख इिस भाव नाल नहीं वरतिआ जा रहिआ किउंकि बाणी विच इिशारा कीता गइिआ है:

ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥
सदा साहिब कै रंगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥१॥
बाबा मूरखु हा नावै बलि जाउ ॥
तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥१॥ रहाउ ॥
मूरखु सिआणा ओकु है ओक जोति दुइि नाउ ॥
मूरखा सिरि मूरखु है जि मन्ने नाही नाउ ॥२॥(पन्ना १०१५)

गुरबाणी मुताबिक मूरख दी परीभाशा इिह है। गुरबाणी विच मूरख बेवकूफ नूं नहीं कहिआ गइिआ। मूरख अखर बणिआ है संसकित दे शबद मूरछित तों, मूरछित तों भाव जिहड़ा बेहोश हो जाओ। जो जीव माइिआ विच ओसा फस गइिआ है कि प्रमातमा दे नाम वलों उसदी होश ही ग़ाइिब हो गई है उहनूं मूरख कहिआ गइिआ है। इिस अखर दा दूसरा रूप है मू+रख। भाव जिहड़ी वी गल करनी है उह सुणन वाले दे मूंह दे मुताबिक करनी है पर सचाई नहीं कहिणी। गुरबाणी उसनूं "मू-रख" कहिंदी है। इिह आम सुभाअ बण चुका है कि जद असीं दोसत नाल गल करनी होई ते साडा चिहरा होर हुंदा है, मालक नाल गल करनी होई ते साडा चिहरा होर हुंदा है, बचे नाल गल करनी होओ ते चिहरा होर हुंदा है। जिहो जिहा जीव साहमणे खलोता हुंदा है उहो जिही मूंह रख के गल करदे हाँ, सच नहीं कहिंदे किउंकि सचाई वलों बेहोशी होई है। सो सारिआँ तों पहिलाँ गिणती विच उहनूं रखिआ है जिहड़ा मूरछत है। मूरख उह है जिहड़ा नाम तों बेहोश हो चुका है। साडा इिह हाल इिस करके हो गइिआ है कि साडे घराँ विच त्ररॉं त्ररॉं दे संत आउंदे हन। सारा परिवार किसे न किसे संत नाल जुड़िआ होइिआ है। असीं टकसालाँ अते संताँ साधड़िआँ दे पिछे पै गओ हाँ। गुरू दी गल छड दिती है। जदों गुरू दी गल छड दिती ताँ मूरछता दा पकड़ना कोई हैरानी दी गल नहीं। जाप दे अखर नालों टुटा होणा सारिआँ तों वडी मूरखता है। गुरसिख शबद दी कमाई नालों टुटके कन्न रस दे विच पै गइिआ है, करम इिंदरीआँ दे भोगाँ विच पै गइिआ है। गुरबाणी दा इिरादा किसे नूं माड़ा कहिण दे लई नहीं है।

"फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥
मंदा किस नो आखीओ जाँ तिसु बिनु कोई नाहि ॥"
(पन्ना १३८१)

बाणी दा इिह अतुट कानूंन है कि किसे नूं मंदा नहीं किहा जा सकदा। इिह सिरफ दो लिसटाँ दितीआँ गईआँ हन। समझाइिआ जा रिहा है कि पहिलाँ दसिआ सी कि जप करन वाले वी बड़े हन पर जप करना नहीं आउंदा। दूजे पासे इिह वी कुदरत दी खेड्ड है:

असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हरामखोर ॥

असंख अमर करि जाहि जोर ॥ असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा ओक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥
(अनगिणत जीव उसदे नाम तों बेहोश होण करके अगिआनता दे घुप हंदेरे विच भटक रहे हन, अनेक ही चोरीआँ विच फसके वेहलीआँ खाण दे आदी हो रहे हन, अनेक कतले आम करके गुनाहगार हो रहे हन, अनगिणत उापणे सिर ते पापाँ दी पंड चुकी फिर रहे हन, अनेकाँ झूठ दी जिंदगी जी रहे हन, अनगिणत पाशविक खाणिआँ दे सावाद विच रुझे होओ हन, अनेक दूजिआँ दी निंदा चुगली करके आपणे सिर ते फालतू भार उठा रहे हन, इिह ताँ बहुत थोड़ी विपरीत शकती (Negative Energy) नाल जुड़े होइिआ दी विचार ही दिती गई है। वैसे तेरी कुदरत दी विचार कीती ही नहीं जा सकदी किउकि तेरी कुदरत वी तेरी तराँ ही बेअंत है। तेरे तों ताँ इिक वार वी कुरबान नही होइिआ जा सकदा। तूं ही सदा रहिण वाला है अते जो वी तैनूं चंगा लगदा है उही कंम सही है।)

"असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हरामखोर ॥"

गुरबाणी मुताबिक हराम खोर तों भाव है जिहड़ा कुझ लै के देण वाले दा शुकराना ना करे, धन्नवाद ना करे। गुरबाणी ने इिशारा कीता है कि शुकराना ना करन वाले वी जीव हन अते शुकराना करन वाले वी जीव हन। पर उसदी प्रापती दा भेद दोवाँ कोल ही नहीं है। बस करम काँड विच फसके रहि गओ हन।

"असंख अमर करि जाहि जोर ॥"

अनेकाँ ही आपणी शकती दे जोर नाल दूजिआ उते दबाव पाँदे हन। जिथे राजनीतिक अखाड़े विच जुलम हुंदा है उथे धरम दी दुनीआँ विच वी ज़ुलम होण लग पइिआ है। धारमिक संसथाँवाँ दा आसरा लैके आपणी मन मरज़ी दी मरिआदा लागू करनी, इिह धारमिक ज़ुलम है। गुरबाणी ने सही धारमिक किरिआ दी इिक कसवटी (टैसट) सानूं दिती सी:

"किआ पड़ीओ किआ गुनीओ ॥ किआ बेद पुरानाँ सुनीओ ॥
पड़े सुने किआ होई ॥ जउ सहज न मिलिओ सोई ॥१॥"
(पन्ना ६५५)

गुरबाणी साफ कहि रही है अगर प्रभू दी प्रापती नहीं हो रही ताँ उह करम बेकार है पर साडीआँ धारमिक जथेबंदीआँ ने सिरफ पाठ करन दे हुकम (अमर=हुकम) कीते होओ हन। साडे ते सारा ज़ोर इिह ही पै गइिआ है कि पाठ करिआ करो अते पाठ सुणिआ करो, बस गल ख़तम हो गई। किसे ने इिह कदी नहीं सोचिआ कि जेकर जीवन दे विच कोई तबदीली नहीं आई, कोई revolution नहीं आइिआ, कोई evolution नहीं होइिआ ताँ इिह सारा किरिआ करम किस कंम आइिआ? गुरबाणी ने इिशारा कीता कि इिस तुराँ दी विपरीत शकती बहुत है। जदों बाणी नूं विचारना है ताँ तुकाँ दे संमेलन दा खिआल रखणा चाहीदा है। जिस तुराँ पहिलीआँ तिन्न लाइिनाँ दा इिको काफीआ सी पर हुण अगलीआँ ४ तुकाँ दा इिको काफीआ है।

"असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥
असंख पापी पापु करि जाहि ॥"

अनेकाँ ही खूंन खराबे करके आपणे सिर गुनाहाँ दा भार चुकी फिरदे हन। इिस काइिनात विच पापीआँ दी कोई घाट नहीं है। इिथे फिर याद करन दी लोड़ है कि गुरबाणी ओसे शबद वरतके सिरफ प्रमातमा नालो दूर होइिआँ जीवाँ बारे दस रही है। इिसतों भाव इिह नहीं लैणा कि गुरबाणी किसे नूं चंगा जाँ किसे नूं माड़ा कहि रही है। इिह भाशा दी मजबूरी है कि विरोधी शकतीआँ नूं बिआन करन लई विरोधी शबद ही वरतने पैंदे हन अते इिहनाँ शबदाँ करके ही सानूं बहुते भुलेखे पै जाँदे हन। गुरबाणी आपणे शबदाँ दा आप ही खंडन नहीं कर सकदी। गुरबाणी दा अटल फैसला असीं पिछे वेख आओ हाँ कि

"मंदा किस नो आखीओ जाँ तिसु बिनु कोई नाहि"।

"असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥"

बहुत ओसी दुनीआ है जिस नूं इिह ही समझ नहीं कि सरीर लई किहड़ा भोजन चंगा है अते किहड़ा माड़ा है। सिख

जगत विच इह बहिस अकसर हुंदी है कि मास खाणा चाहीदा है कि नहीं। की बाणी विच साफ शबदाँ विच किते लिखिआ है कि शराब ना पीआ करो? गुरबाणी साफ कहि रही है:

माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइि ॥
जितु पीतै मति दूरि होइि बरलु पवै विचि आइि ॥
आपणा पराइिआ न पछाणई खसमहु धके खाइि ॥
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइि ॥
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइि ॥
नानक नदरी सचु मदु पाईओ सतिगुरु मिलै जिसु आइि ॥
सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥१॥ (पन्ना ५५४)

गहिराई विच सोचण नाल पता लगदा है कि जेकर गुरबाणी किसे ख़ास खाणे नूं जाँ पीणे तों रोक देवे ताँ उस विचों कई होर सवाल पैदा हो जाणगे, जिवें जे मास नहीं खाणा ताँ किहड़ा नहीं खाणा, जाँ जे शराब नहीं पीणी ताँ जिन्ना दवाईआँ विच शराब हुंदी है उहनाँ दा की करना है, आदि। इस करके गुरबाणी ने हर करम लई इक कसवटी दे दिती है कि जेकर तूं आपणी सुरत (conciousness) नूं उपर नूं लिजाणा चाहुंदा हैं ताँ फिर उह कंम कर जिहड़ा बजाओ इस कंम विच रुकावट पाण दे इहदे विच मदद करे। बस ओनी गल है। शराब पी के आतमा जागेगी जाँ कि होर बेहोश होओंगा? मास खा के मनोबिरतीआँ हलकीआँ होणगीआँ कि भारीआँ होणगीआँ, इस चीज़ नूं विचार लै? उह खाणा जाँ पीणा जिस नाल मन विच विकार उठण जाँ तन दी शकती बेकार होओ बिलकुल ना वरतों विच लिआउ। इकिला शराब दा ही नशा माड़ा नहीं है, सारे नशे ही माड़े हन। इथे ही बस नहीं जवानी दा नशा, ताकत दा नशा, खूबसूरती दा नशा आदि, भाव की हर उह आदत जिहड़ी आतमा नूं प्रमातमा कोलों दूर लिजाँदी है माड़ी है। पर असाँ उहदे ते मासाअहारी अते शाकाअहारी दीआँ मोहराँ लगा दितीआँ हन। इस नाल दोवाँ दा ही हंकार वध गइिआ। किसे नूं vegetarian होण दा हंकार लगा है अते किसे नूं non-vegetarian होण दा हंकार लगा है, दोनों ही फसे बैठे हन। असली गल दा दोनाँ नूं ही पता नहीं है कि गुरबाणी की कहि रही है। कई इतिहासकाराँ ने ताँ इथों तक कहि दिता है कि स्री गुरू अंगद देव जी दे लंगर विच मास वरताइिआ जाँदा सी। अज साडे विच ओसीआँ ओसीआँ कुरीतीआँ पईआँ होईआँ हन कि साडे धरम असथानाँ दे उते बकरे झटकाओ जाँदे हन। इह ते भगती मारग सी पर असीं आपणी अगिआनता करके इसदा रूप ही विगाड़ दिता है। गुरबाणी ते इशारा कर रही है:

"जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥ आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई ॥२॥"
(पन्ना ११०३)

भाव जे तेरे धरम नूं शुरू होण दे लई तैनूं किसे जीव दी हतिआ करनी पैंदी है, जेकर किसे जीव नूं मार के तूं धरम नूं चला रिहा हैं ताँ इह सोच कि जिस दिन अधरम दा करम करना होवेगा उस दिन किहड़ा कंम करेगाँ। सो गुरबाणी ने कहिआ कि अनेकाँ कोल सही खाण-पीण दी समझ ही नहीं रही। अनेकाँ कोलों बुरे-भले (Negative-Positive) दी विचार ही ख़तम हो गई, सच झूठ दी पहिचाण ना रही अते जीवन इंज ही गुज़ार लइिआ गइिआ।

"असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥"

अनेकाँ ही निंदिआ दा भार आपणे सिर उते चुकी फिरदे हन। इह नैगेटिव शकतीआँ दी विचार गुर नानक दे दर तों दसी जा रही है। इथे ख़ास रुकण दी लोड़ है किउंकि इक पासे ताँ गुरबाणी ने इह किहा है:

"निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥६॥" (पन्ना ७५५)

भाव कि किसे दी वी निंदिआ नहीं करनी चाहीदी, जो करदे हन उह इस गल वलों बेहोश हन कि इह करम जीव नूं माइिआ दे गहिरे हनेरे विच धक दिंदा है। इस करके इसत्राँ दी नैगेटिव शकती नाल बिलकुल नहीं जुड़ना चाहीदा पर दूजे पासे कबीर जी दा शबद रख दिता है:
"निंदउ निंदउ मो कउ लोगु निंदउ ॥ निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥ निंदा बापु निंदा महतारी ॥१॥ रहाउ ॥ निंदा होइि त बैकुंठि जाईओ ॥ नामु पदारथु मनहि बसाईओ ॥ रिदै सुध जउ निंदा होइि ॥ हमरे कपरे निंदकु धोइि ॥१॥ निंदा करै सु हमरा मीतु ॥ निंदक माहि हमारा चीतु ॥ निंदकु सो जो निंदा होरै ॥ हमरा जीवनु निंदकु लोरै ॥२॥ निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ निंदा हमरा करै

उधारु ॥ जन कबीर कउ निंदा सारु ॥ निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥" (पन्ना ३३९)

हुण जेकर इसदे भेद विच नहीं जावाँगे अते नहीं विचाराँगे ताँ भुलेखे पैणे मुमकिन हन। गुरबाणी ने इशारा कीता है कि जाण बुझके विपरीत शकती ना चुण। उह मारग बहुत लंबा है। उस रसते ते चलिआँ बहुत देर लगदी है किउंकि आखिर मुड़ना ही पैंदा है। जदों असली धरम दे रसते दी यातरा शुरू हुंदी है ताँ उसदी निशानी है:

"हरि पहिलड़ी लाव करम दृड़ाइआ बलि राम जीउ ॥
बाणी ब्रहमा वेदु धरमु दृड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥" (पन्ना ७७३)

पहिला कदम (पहिलड़ी लाव) ही जीवन दे बदलण (परविरती) लई इिह है कि विपरीत शकती तों छुटकारा (पाप तजाइआ) पाउणा पैंदा है। इस करके विपरीत शकती नूं ना पकड़। इसदा मतलब इिह नहीं कि विपरीत शकती कंम विच नहीं लिआँदी जा सकदी। सगों भगत जनाँ लई इिह शकती
बड़े कंम दी चीज़ है। इिही विचार भगत कबीर जी दस रहे हन। जद कोई किसे भगत नूं इिह कहिंदा है कि तेरे विच गुसा बहुत है ताँ सही भगत इस गल दा लाभ उठाउण दी कोशिस करदा है। उह आपणे अंदर झाती मारदा है कि वाकिआ ही उसदे अंदर अजे क्रोध है कि नहीं। जेकर है, ताँ उह होर ज़िआदा भगती करन विच जुड़ जाँदा है ताँ कि क्रोध अंदरों बिलकुल ख़तम हो जावे। जेकर नहीं है ताँ वी उह धन्नवादी हुंदा है कि उसनूं आपणे अंदर झाती मारन दा मौका मिलिआ है। इिसे करके कबीर जी दा फुरमान है कि भगत दी निंदा करन वाला उसदा दुशमन नहीं सगों मि" है। पर इिह गल भगती मारग ते पहुंचे होओ ही कहि सकदे हन। जिहना ने अजे पहिला कदम ही चुकिआ है उहनाँ नूं विपरीत शकती वरतन दी जाच नहीं होवेगी। इस करके गुरबाणी सुझाव देंदी है कि जिन्ना वी हो सके निंदिआ वरगी विपरीत शकती तों दूर रहिणा चाहीदा है पर अनेकाँ जीव इस भेद नूं नहीं समझदे अते बेकार आपणे सिर ते निंदिआ दा भार चुकी फिरदे हन। तो गुरबाणी ने किहा इस तराँ दी दुनीआँ बहुत है। अगे जिहड़ी तुक आई है इस दी असीं बड़ी अजीब विआखिआ कीती है:
"नानकु नीच कहै वीचारु"

इिह गल धिआन योग है कि जपु बाणी दे ३८ अंक हन। अठतीआँ अंकाँ दे विच जिथे-जिथे नानक जोत दा शबद आइिआ है उसदे कके हेठ सिवाओ इिक थाँ तों औंकड़ नहीं है अते उह इस १८वें अंक विच है। धिआन करना कि इिथे अखर बदल गइिआ है, नानक शबद दे कके नूं औंकड़ दे के गुरदेव ने कोई इिशारा कीता है। जिथे वी 'कके' नूं औंकड़ है उथे उस वकत दे सरीर वल इिशारा है। जेकर चौथे महल वलों शबद आइिआ है "जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥३॥" इिथे नानक दे 'कके' नूं औंकड़ है सो इिह चौथे महल दे सरीर वल इिशारा है। उथे नानक जोत वल इिशारा नहीं है। जिथे जोत वल इिशारा है उथे 'कके' नूं औंकड़ नहीं है। सो इिथे इिशारा कीता जा रिहा है कि सरीरक रूप विच बैठे होओ पहिले महिल ने इिह इिक विचार विपरीत शकती बारे पेश कीती है। इिसतों भाव इिह नहीं कि गुरदेव आपणे आप नूं नीच कहि रहे हन। असीं इिह भुलेखा खा रहे हाँ कि निमरता वस बाबा नानक आपणे आप नूं नीच कहि रहे हन। नहीं, उह कहि रहे ने मैं विपरीत शकती ते सिधी शकती दोहाँ दा मुकाबला तुहाडे साहमणे रखिआ है नहीं ताँ कुदरत विच कुझ वी माड़ा नहीं है, सभ आपणी आपणी चोण दी गल है। कुदरत विच किसे नूं कुझ चंगा लगदा है अते किसे नूं उसदे बिलकुल उलट चंगा लगदा है। इिह गुरसिख दी अगवाई लई दरज कीता गइिआ है ताँ कि उसनूं पता लगे कि जीवन इिहनाँ दोवाँ शकतीआँ दे विचकार चलदा है। जगिआसू लई विपरीत शकती वलों सावधान रहिण दी लोड़ है।

"वारिआ न जावा ओक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥"

इिहनाँ दोहाँ शकतीआँ दी विचार दा नतीजा इिको ही है कि जिस नूं विपरीत शकती दा कंम मिल गइिआ है, उसनूं बुरा नहीं कहिणा। इिह खेलू किसे इिनसान दा बणाइिआ होइिआ नहीं है बलकि इिह उसदा हुकम है। फुल नूं खुशबू दा कंम दिता है अते कंडे दा आपणा कंम है। कंडा ही धरती दा सारा खुरदरापन चूसके फुल तक मुलाइिमीअत पहुंचाण विच मदद करदा है। जे कंडा ना होवे ताँ फुल वी इितना खुशबूदार अते मुलाइिम ना होवे। तूं आपणे आप जाणबुझ के कंडे वाला कंम ना कर। तूं आपणी जिहबा दे नाल चुभण वाली गल ना कर। साडी हर गल विच सूई हुंदी है। कदी सोचणा साडी बोली इितनी खरवी किउं है। असीं हर गल नूं लगा के किउं करदे हाँ। गुरबाणी ने कहिआ कि जिस नूं कंडा बणा के ही भेजिआ है उहनूं बुरा ना कहि, अते तूं कंडा ना होण दे बावजूद वी कंडा ना बण। जिहड़ा उहदे हुकम करके कंडा है, उसनूं निंदणा नहीं, उसनूं माड़ा नहीं कहिणा पर आप जाणबुझ के विपरीत शकती तों दूर होणा शुरू कर ताँ कि तेरी जो यातरा है उह अगे चंगी तराँ चल सके। जे तूं विपरीत शकती नूं चुण लइिआ ताँ तैनूं मुड़ चकर लगा के वापस आउणा पओगा। इिस भेद नूं हमेशा लई हिरदे विच वसा लै कि कुदरत नूं जाणिआ

नहीं जा सकदा। भाव कि कुदरत दी विचार कही नहीं जा सकदी भाँवे सिधी शकती बारे होवे अते भाँवे विपरीत शकती बारे होवे। प्रभू वी बेअंत है अते उसदी कुदरत वी बेअंत है। जीव इिक ओसे मामूली किणके दी तर्हाँ है जो कि आपणे आप नूं इितनी विशाल शकती ते कुरबान वी नहीं कर सकदा ताँ ते जो वी उह कर रहिआ है, जो वी कंम तेरे जुंमे लगा है उही भला है।

(अंक १६)

असीं कुदरत अते कादर बारे चार अंकाँ दी विचार करदे आ रहे हाँ। इिह उस लड़ी दा आखरी पदा है। जिस तर्हाँ असीं पिछे विचार साँझी कीती है कि गुरबाणी दे विच दो थाँवाँ ते इिस तर्हाँ दीआँ सूचीआँ (Lists) दसीआँ गईआँ हन जिहदे विच नाकार आतमिक शकती (नैगेटिव ओनरजी) ते साकार आतमिक शकती (पोज़िटिव ओनरजी), दोवाँ दा ज़िकर कीता गिआ है। सुखमनी साहिब दे विच वी दोवें सूचीआँ आईआँ हन। जपु जी साहिब विच वी दो सूचीआँ आईआँ हन। जदों पोज़िटिव ओनरजी शुरू कीती है ताँ फुरमाइिआ ''असंख जप असंख भाउ।'' जदों नैगटिव ओनरजी दी लिसट शुरू कीती है ताँ फुरमाइिआ ''असंख मूरख अंध घोर।'' 'असंख' अखर दी असीं तरजमाँ (translation) करदे आ रहे हाँ कि 'असंख' दा मतलब है बेअंत, इिन्नफिनिट (Infinite)। असंख कोई अखर नहीं है, नंबर नहीं है। ताँ सवाल उ॒ठ जाओगा कि किथे कु जा के तुसीं कहोगे कि असंख हो गइिआ। पंजाबी भाशा विच हज़ार, दस हज़ार, लख, करोड़, अरब, खरब, संख ते असंख, इिह गिणती दे हिंदसे हन। गुरबाणी ने अखर ''असंख'' वरतिआ है ''असंख जप''। सो सवाल उ॒ठ जाओगा कि इिह कहि ते दिता है कि अणगिणत है पर तुसीं गिणती करदिआँ किस जग्हा ते जा के रुके सी जिथे पहुंचके कहोगे इिथों अगे चलणा 'असंख' है? हुण मुशकिल पैदा हो गई। तुसीं गिणती दी हद किस तर्हाँ पकी करोगे, किउंकि असंख जैसा कोई नंबर ही नहीं, फिर वी वरतिआ जा रिहा है। ज़ाहिर है कि इिस विच कोई

सुनेहा छुपिआ बैठा होइआ है। इह जिहड़ा मन बाँदर वाँग अंदर बैठा होइआ है इसने ते कोई ना कोई शरारत ज़रूर करनी है। इह हुजत कर दिंदा है कि मैनूं पहिलाँ इह समझाउ कि मैं किथों तक गिणदा जावाँ जिथे जाके असंख दा पता लग जाओगा। हुण जे जवाब इह दिता जाओ कि इथों बाअद असंख है ताँ उह झट सवाल कर देवेगा कि जी मैं इथों तक कहिना असंख फिर मैं शुरू कर दिआँगा असंख + १, असंख + २, असंख + ३, असंख + ४. मैं इन्नफिनटी किउं कहाँ, गिणती ते चलदी रही। जे हद (Boundary) आ गई है तों उस बउंडरी दे अगे इक कदम होर लैना, फिर दो कदम होर वधा लैना, फिर तिन्न कदम होर वधा लैनाँ, ताँ मैं इहनूं अणगिणत किस तरूाँ कहाँगा? गुरबाणी ने ओसे सोचण वाले दा पहिलाँ ही झगड़ा मुका दिता है। गुरबाणी ने कहिआ कि जदों तुसीं प्रमातमा दी किसे वी किरत नूं वेखोगे, विचारोगे, पहिचानोगे ताँ इनसान दी बणाई होई भाशा ही वरत सकोगे। इनसान ने इक साइंस पैदा कीती है जिस नूं असीं भाशा विगिआन कहिंदे हाँ। हर भाशा दे आपणे-आपणे अखर हन, आपणी-आपणी बोली है। हुण जिहड़ा हुजत करदा है कि अखर ते 'असंख' वरतिआ है, मैनूं दसो असंख कदों कहोगे ताँ गुरबाणी ने कहिआ कि प्रमातमा दे नाम नाल कोई वी अखर लगाउगे ताँ उह ग़लत है। भाशा उसदे किसे वी गुण नूं बिआन करन विच बिलकुल निपुंसिक है, इंपोटैंट (Impotent) है, असमरथ है। इक टुकड़ा सारे ब्रहमंड नूं समझण दी कोशिश कर रिहा है इस बारे बाणी विच इक इशारा आइआ है:

"पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
सगल परोई अपुनै सूति ॥" (पन्ना २८४)

पुतर कोलों पुछो कि तेरे पिउ दे पैदा होण दे हालत की सन ताँ उह ते पिउ वी नहीं दस सकदा, ताँ पुतर किस तरूाँ दसेगा? उह ते कोई जिहड़ा उस वेले सी, उह ते माँ दस सकदी है, उह ते दाई दस सकदी है, बचा किस तरूाँ दसेगा कि उसदे पिता दे जनम दी हालत की सी? इसतरूाँ जदों वी प्रमातमा दी कोई गल करन लगोगे, अते भाशा वगिआन दी मदद लउगे ताँ उह हर गल अधूरी साबत होओगी। उह शुरूआत दी गल झूठ हो गई। ओसे करके महातमा बुध नूं जदों वी सवाल कीता जाँदा सी कि तूं प्रमातमा देखिआ है कि नहीं ताँ उह चुप हो जाइआ करदा सी। इस करके उहदे बारे जिहड़े उस वकत दे धरम दे ठेकेदार सन, उन्नाँ ब्राहमणाँ ने रौला पा दिता कि बुध नूं ते रब दा पता ही नहीं। इह ते रब नूं मन्नदा ही नहीं, इह ते नासतक है, हालाँकि बुध वरगे आसतक दुनीआँ ते बहुत घट पैदा होओ हन। जिस तरीके दा गिआन उसनूं प्रापत होइआ
सी उस समें दे लीडराँ ने उहदी हंसी उड़ा दिती किउंकि उह अगों जवाब नहीं सी दिंदा। पर उह इस भेद नूं चंगी तरूाँ नाल जाणदा सी कि इस विशे उते जिस वी अखर विच गल कही जाओगी उह झूठ ही होणी है, इहदे नालों चुप ही चंगी है। प्रमातमा बारे जे कहीओ कि उह अणगिणत है ताँ गिणती विच आ गई, जे कहीओ उह सच है, ताँ झूठ नाल खड़ा हो गइआ अते जिहड़ा सच झूठ दे बराबर ते खड़ा है, जिस दिन झूठ मर जाओगा उस दिन उह सच वी मर जाओगा। जे तुसीं पहाड़ी नूं ख़तम करना होवे ताँ भावें घाटी भरनी शुरू कर दिउ अते भावें पहाड़ी तोड़नी शुरू कर दिउ, करना इको ही पवेगा पर पहाड़ी अते घाटी दोवें इकठे ही ग़ाइब होणगे। सो भाशा बिआन ते नहीं कर सकदी पर इह करना पैंदा है। इह सारी विचार पिछले अंक नाल अगले अंक दा सबंध वेखण लई कीती गई है। 'असंख' दी गल चली आ रही है, प्रमातमा नाल जुड़न दी कोशिश करन वालिआँ दी अते फेर माइआ नाल जुड़िआँ होइआ दा हवाला देके फिर सुनेहाँ दिता है कि:

"असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ जिनि ओहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाओ तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा ओक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥"

(अनगिणत ग्रहि, अते उहनाँ ते अनगिणत नाँवाँ वाले जीव आपणे आपणे ठिकाणिआँ ते हन, अते अनेकाँ ही ग्रहि मंडल हन मगर 'असंख' अखर कहिआ ते ज़रूर है पर इह कहिके आपणे सिर इक भार उठा लइिआ है, पर कहे बिना होर चारा भी नही है किउंकि अखराँ नाल ही उसदा नाम जपिआ जा सकदा है अते उसदी सिफतो-सलाह कीती जा सकदी है। अखराँ नाल ही गिआन हासल हो सकदा है अते उसदे गुण गाउण दा वसीला बणदा है। अखराँ नाल बोलण दी भाशा बणदी है जिस नाल इनसानी रिशते नाते जुड़दे हन। पर फिर वी अखराँ दी पकड़ विच नहीं आँउदा भाँवे इह वी उसे दी ही बखशी होई शकती है। इह सभ उसदा ही हुकम है अते उसदे हुकम मुताबिक ही सभ कुझ हुंदा है। इह जितनी वी काइिनात है उसदे नाम दी तराँ ही आपार है अते उसदे बिना होर कुझ वी नहीं है। इसे करके तेरी कुदरत दी विचार कीती ही नहीं जा सकदी किउकि तेरी कुदरत वी तेरी तराँ ही बेअंत है। तेरे तों ताँ इक वार वी कुरबान नही होइआ जा सकदा। तूं ही सदा रहिण वाला है अते जो वी तैनूं चंगा लगदा है उही कंम सही
है।)

"असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥"

अनगिणत ग्रहि, अते उहनाँ ते अनगिणत नाँवाँ वाले जीव आपणे आपणे ठिकाणिआँ ते हन, अते अनेकाँ ही ग्रहि मंडल हन मगर 'असंख' कहिआ ते ज़रूर है पर इिह कहिके आपणे सिर ते इिक गुनाह लै लइिआ है, आपणे सिर इिक भार उठा लइिआ है, मुसीबत उठा लै लई है किउंकि 'असंख' कहिणा वी ग़लत है, इिन्नफिनिट कहिणा वी ग़लत है। किउंकि अनगिणत दे कोल ही गिणती बैठी होई है। सो गुरबाणी भाशा नाल इिक तऱ्हाँ दी तसवीर खिचण दा उपराला कर रही है ताँकि सानूं कुझ चितावनी (idea) हो जाओ, नहीं ताँ कुझ बिआन कीता नहीं जा सकदा, समझाइिआ नहीं जा सकदा। इिसे करके जिथे वी शबद दे विच कहिआ गइिआ है कि नाम जपु, भगती कर, उसे वेले नाल याद दिलाइिआ गइिआ है कि किते भुलेखा ना पा लईं कि मैं कर रहिआ हाँ। उह जदों वी आओगा आपणे प्रसादि कर के आओगा तूं सिरफ आपणा तन मन दा बरतन साफ कर लै। इिह उहदी मरज़ी है कि तेरा बरतन उह भरे कि खाली रहिण देवे। सुआणी आपणी रसोई नूं साफ कर लवे, इिह ज़रूरी नहीं कि प्राहुणा घर आवेगा ही। गुरबाणी कहिंदी है कि हे गुरसिख प्रमातमा आवे ना आवे, गुरू आवे ना आवे, तूं आपणा घर ते साफ कर ताँ कि जदों उह आ जावे ताँ अंदर बिठाउण दी तेरे कोल जग्हा होवे। नाम जपणा सिरफ घर नूं साफ करना है, प्रमातमा नूं पाणा नहीं है। गुरबाणी ने कहिआ कि प्रमातमा नूं बिआन नहीं कीता जा सकदा पर इिक होर वी मजबूरी है, उह अगलीआँ तुकाँ विच दसदे हन:

"अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥"

अखराँ नाल ही उसदे नाम दा जाप हो सकदा है, अखराँ नाल ही उसदी सिफतो सालाह कीती जा सकदी है अखराँ नाल ही गिआन हासल कीता जाँदा है अते उसदे गुण गाओ जा सकदे हन, अखराँ नाल ही बाणी लिखी जाँ बोली जा सकदी है, अते अखराँ नाल ही प्रमातमाँ वलों बणाओ होओ खेल्ह दी विआखिआ कीती जा सकदी है। मजबूरी इिह है कि अखर वरते तों बिनाँ इिनसान नाल कोई सबंध ही नहीं जुड़दा, उस नाल कोई गल बात ही नहीं हो सकदी। सारे अखर इिनसान ने खुद ही बणाओ हन। ओसे करके झगड़ा पै गिआ, किसे ने कहि दिता ओम बड़ा वधीआ है, कोई कहिंदा वाहिगुरू बहुत वधीआ है, कोई कहिंदा सतिनाम बड़ा वधीआ है, कोई कहिंदा राम बड़ा वधीआ है, कोई कहिंदा गोबिंद बड़ा वधीआ है। जिन्नीआँ भाशावाँ बणीआँ उतने तऱ्हाँ दे अखर बण गओ पर अखर सिरफ इिशारा ही कर सकदे हन, असलीअत बिआन नहीं कर सकदे। इिह शबद 'अखर' संसकृत विचों आइिआ है। इिसदा मूल है अ+कशर, 'कशर' दा मतलब हुंदा है खुर जाणा अते अकशर तों भाव है जिहड़ा खुरे ना, जिहड़ा नाश ना होवे। अखर उहदे लई वरतिआ जा रिहा है जिहड़ा नाशवान नहीं है पर जिहड़ा अखर है उह खुद नाशवान है, जिहदे लई वरतिआ जा रिहा उह नाशवान नहीं है। ताँ ही इिह भाशा दी मजबूरी बण गई। गुरबाणी दा फुरमान है:

"बावन अछर लोक ै सभु कछु इिन ही माहि ॥ ओ अखर खिरि जाहिगे ओइि अखर इिन महि नाहि ॥" (पन्ना ३४०)

ब्रहम गिआनी इिह जाणदा होइिआ कि उहनूं इिह ग़लती करनी पै रही है आपणे सिर ते भार उठाँदा है। गुरबाणी विच इिसदा हवाला इिंज दिता है:

"कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥
रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥" (पन्ना १३६९)

दुनीआँ नूं उपदेश है कि प्रमातमा है, प्रमातमा पाइिआ जा सकदा है, इिस लई उस मारग ते चलो। हालाँकि इिह गल बिलकुल ग़लत है, किउंकि मारग उते चलणा प्रमातमा नूं पाणा नहीं है। चलणा सिरफ इिस तऱ्हाँ है जिस तऱ्हाँ कि कोई सवाणी आपणी रसोई साफ करके प्राहुणे दा इिंतज़ार कर रही है। उस अवसथा ते अवाज़ उठदी है:

"मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ बिलप करे चातृक की निआई ॥ तृखा न उतरै साँति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥" (पन्ना ९६)

"माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई ॥ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥१॥" (पन्ना ३६९)

असीं रोटी तों बिनाँ नहीं रहि सकदे, बचे बिनाँ, पतनी बिनाँ, पती बिनाँ, आदि नहीं रहि सकदे, पर इिह कदी वी नहीं होइिआ कि असीं हरि बिनाँ नहीं रहि सकदे। इिह अवाज़ उदों निकलदी है जदों घर ग्रहिसथी वाला जगिआसू इितना भाँडा साफ कर चुका होवे कि आप मुहारे इिह आवाज़ उठे:

"दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥ दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥ नाही त घर को बापु रिसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ सोइन कटोरी अंमृत भरी ॥ लै नामै हरि आगै धरी ॥२॥ ओकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥ नामे देखि नराइनु हसै ॥३॥ दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥ नामे हरि का दरसनु भइआ ॥४॥" (पन्ना ११६३)

उह दुध किसे गाँ दा नहीं है। इथे दुध पवितरता दी निशानी है, भाँडा इतना साफ हो चुका है कि सवाओ भगती दे होर कुझ बचिआ नहीं, इतनी पवितरता हो चुकी है, कोई होर विचार नहीं बचिआ, अते हुण तेरी किरपा दे प्रसादि दी ताँघ है। जिनाँ चिर तूं कबूल ना कर लओं, तूं प्रवान ना कर लओं, उतना चिर पता ही नहीं लगदा कि भगती पूरी हो चुकी है। सिरफ तूं ही दस सकदा है कि भाँडा साफ होइआ कि नहीं जिसदे विच दुध पाइआ जा सकदा है। गुरबाणीं अखराँ दे आसरे नाल सानूं सिधा परम धाम वल लै जा रही है।

"जिनि ओहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥
जिव फुरमाओ तिव तिव पाहि ॥"

पर इिह अखर जिसदे लई लिखे जा रहे हन उहदे ते बिलकुल नहीं लगदे। जिनाँ धरमाँ ने प्रमातमा नूं इक जज दी तरॉँ मंनिआँ है कि उह इनाम दिंदा है, खुशीआँ दिंदा है, सज़ा दिंदा है, ग़म दिंदा है, उह सारे उलझण विच फसे होओ हन। गुरबाणी ने कहिआ उह खुद निरलेप है। भाशा दा कोई शबद उस नाल नहीं लगाइआ जा सकदा। इिह वी उस दा ही हुकम है, अते सभ कुझ उसदी रज़ा करके ही प्रापत हुंदा है सानूं उस भेद दी पहिचाण होणी चाहीदी है।

"जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥"

इिह गल समझण जोग है कि मेरा नाम मेरे माँ बाप ने दइिआ सिंघ रखिआ हो सकदा है पर मेरे लागे किसे दा बचा विलक के मर जाओ ते मैं उहनूं चुका ही नाँ। इिह मेरी फितरित हो सकदी है। इिसतों ज़ाहिर हुंदा है कि मेरा करम मेरे नाम नाल संबंध नहीं रखदा। मेरा नाम शेर सिंघ हो सकदा है पर घर विच रात नूं खड़ाक होइआ है अते डर दे मारे बिसतर तों उठण दी हिंमत ही नहीं कीती। इिनसानाँ लई इिह मुमकिन हो सकदा है, पर प्रमातमा दा उही नाम है जिस तरॉँ दा उस दा करम है। इिसे करके उहदे इतने नाम बण गओ हन। उसदे सारे नाम रचना विचों आओ हन। किउंकि नाम ते रचना इिक है अते रचना सारे पासे है सो जिथे वी रचना है उथे ही उहदा नाम है। उसदे नाम बग़ैर सारी काइनात विच इिक वी कोना नहीं है। उह सरबविआपी है, उसदा नाम वी सरबविआपी है।

"कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा ओक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥"

इिस करके उसदी कुदरत दी विचार हो ही नहीं सकदी। कुदरत दे गिआन नूं घोटण दी कोई लोड़ नहीं। इिह गिआन ताँ सगों होर पैराँ दी बेड़ी बण जाओगा। भोलिआ छोड़ इन्हाँ गलाँ नूं, इिस अवसथा विच आ जिथे इिह कहि सकें कि जो तेरी मरज़ी है, उही मैंनूं चंगा लगदा है। मै नाशवान तेरे ते कुरबान वी नहीं हो सकदा किउंकि तूं सदा सदा लई काइिम हैं। जपु बाणी ने यातरा शुरू कीती सी, "किव सचिआरा होईओ किव कूड़ै तुटै पालि ॥" उस बुझारत नूं हल करन लई वार-वार सिख नूं सावधान कीता जा रिहा है, उहदे हुकम विच आ जा, तूं हमेशा सवाल ही करदा रहिनाँ हैं इिह, किउं, इिह किउं, तेरे मूंहों इिह निकलदा ही नही:

जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥"

(अंक २०)

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुन्नी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥
(जद सरीर मिटी नाल गंदा हो जाँदा है ताँ पाणी नाल धोतिआँ उसदी मिटी उतारी जाँदी है। जद गंदगी नाल कोई कपड़ा गंदा हो जाँदा है ताँ साबण लगाके उसनूं धो लइआ जाँदा है। पर जद इनसान दी मत पापाँ नाल भर जाए ताँ उह केवल नाम रूपी रंग दे नाल ही धोती जा सकदी है। पाप पुन्न किसे जीव दे कहिण करके ही नहीं हो जाँदा। इह ताँ उसदा बणाइआ होइआ नियम है कि जिसतराँ दे करमा दी चोण कोई जीव करदा है उसे मुताबिक ही उसनूं फल मिलदा है। जिस तराँ दा बीज है, उसे तराँ दा फल है, इह सभ उसदे हुकम दी खेड है अते सभ आवण जाण उसदे हुकम विच है।)

सभ तों पहिलाँ इह विचार करके समझणा है कि ओस अंक दा, पिछले अंक नाल की सबंध है। हुणे कहि रहे सी ''अखरी नामु अखरी सालाह' गल ताँ अखराँ दी कर रहे सी ते इथे नहाउण धोण दी गल किवें शुरू हो गई। देखो बाणी दे की-की भेद हन। उपरली निगाह नाल देखिआँ ताँ इवें लगदा है जिवें बिलकुल हवा विचों गल पकड़ लई है। पिछले अंक विच उस अकाल पुरख दी बाणी तों इक सुनेहा मिलिआ कि असंख अखर सुणके गुरसिख इस नूं किते पकड़ के ही ना बैठ जाओ, इस अखर दे कहिण नाल वी सिर ते बड़ा भार है किउंकि इह गल पूरी नहीं है, अधूरी है। पर इनसान दी भाशा दी मजबूरी है, उहनूं हमेशा अखराँ दा आसरा लैणा पैंदा है, सो गुरबाणी ने समझाइआ कि नामु दे अखर नूं पकड़, जिन्ना चिर उस दा भेद नहीं समझ सकेंगा उन्नाँ चिर उस दी कमाई नहीं कर सकेंगा। जेकर तूं उह कमाई नहीं करदा अते जो तूं अज कल कर रिहा हैं, जो अज परमातमा तक पहुंचण दीआँ प्रचलत रीताँ हन, जे तूं उहनाँ नूं ही पकड़ के बैठ जाणा है ताँ गलाँ-बाताँ दे नाल, भाशा दे विच फसे होए होण करके तैनूं गुरबाणी दा भेद समझ नहीं आउंणा। हुण याद करो कि बाणी ने सानूं सारिआँ तों पहिलाँ किहड़ा करम याद दिलाइआ सी। गुरबाणी ने इस धरती दे उ-ते परमातमा नूं पाउण दा पहिला करम दसिआ सी ''सोचै सोचि ना होवई''। असीं सोचि बारे विचार कीती सी कि इथे सोचि दा मतलब 'सुचिता' जाँ 'पवितरता' है। पर लोकाँ ने ब्रहम गिआनीआँ दे अखराँ नूं ना समझिआ अते तीरथाँ ते इशनान करने शुरू कर दिते। तो विदाँत दा परमातमा नूं पाउण दा जिहड़ा तरीका सी, उह सी पाणी जैसीआँ खूबीआँ आपणे अंदर पैदा करनीआँ, पर शबदाँ दी उलझण विच इह इशनान बणके रहि गइआ। इसे त्र्हाँ जद इनसान नूं इह सिखाउण दी कोशिश कीती गई कि चुप हो के अंदर धिआन लगाउ, उह बाहरों ही मोन वरत रखके बहि गए। गल समझ ना आई, जिन्नाँ ने किहा सी कि चुप होणा, उह मन दे अंदर शोर दी गल कर रहे सन, विचाराँ दे भटकण दी गल कर रहे सन ताँ उहनाँ ने कहिआ सी कि अंदर धिआन करना है। पहिलाँ आपणे मन दे विच अंदर जिहड़े विचार भजे फिरदे हन इहनाँ नूं रोकण दा अभिआस करना है। इस त्र्हाँ दुनीआँ उ-ते भगती करन दे परचलत चार तरीके दसे सन। अज सिख जगत विच वी तीरथ यातरा बहुत मशहूर हो गई है। असाँ गुरबाणी वलों बिलकुल ही मुख मोड़ लइआ है, सोचिआ ही नहीं कि असीं वी उस त्र्हाँ दी नकल मारन लग पए हाँ। सो गुरबाणी ने उस गल नूं याद दिलाइआ कि जिहड़े तरीके तैनूं पहिले दसे सन जेकर उहनाँ दी ही नकल मारनी है ताँ बाणी विच हर करम दे लई इक प्रीखिआ (test) रख दिती गई है, उसनूं नहीं भुलणा। उह प्रीखिआ असीं पिछे सुण आए हाँ कि जिहड़ा कंम परमातमा तक नहीं लै जा सकदा उस तों आपणे आप नूं बचाउण दी कोशिश कर इह गल आपणे आप नूं पुछ लिआ कर कि इहदे नाल उहदी अगे शोभा हो रही है कि दुनीआँ विच शोभा हो रही है, 'जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥' तूं आपणे मन नाल विचार ताँ कर लै, जे आप नूं नहीं समझ आउंदी ताँ गुरू कोलों पुछ लै कि इस करम दे नाल परमातमा दे नेड़े हो रिहा हाँ कि दूर हो रिहा हाँ। इथों इह अंक आपणा विचार शुरू करदा है:

''भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥''

अगर हर जीव ने उपर दसिआ टैसट वरतिआ हुंदा ताँ तीरथ इशनान कदी धरम दे नाल ना जुड़दा किउंकि सरीर दा नहाउणा सिरफ इसदी गंदगी नूं दूर कर सकदा है। पाणी विच डुबकी मारन दा संबंध इनसान दे सरीर दी सिरफ बाहरली सफाई दे नाल है। सरीर साफ रहे ताँ उस नूं रोग घट लगदे हन, तंदरुसत रहिंदा है। जिस वेले असीं आपणे पिंडे ते पाणी पाउंदे हाँ ताँ जिहड़े उहदे सूखम सुराख हन उह खुल्ल जाँदे हन, पसीना चंगा आउंदा है, अते सरीर तंदरुसत रहिंदा है। पाणी दा कंम सिरफ मिटी नूं धो देणा है, कालख नूं उतार देणा है। इस मिटी उतारन नूं तूं परमातमा दे नाल किस त्र्हाँ ला लइआ? ज़ाहिर है कि किसे ने इह कहि दिता है कि तीरथाँ दा इशनान करन नाल प्रमातमा दी प्रापती हो सकदी है। पर तीरथाँ ते इशनान करन जाईए ताँ उ-थे त्र्हाँ-त्र्हाँ दे खानदानी पाँडे मिल पैंदे हन। उह सभ तों पहिलाँ इह पुछदे हन कि तुसीं किहड़े इलाके दे वसनीक हो। जिस इलाके दे तुसीं हो उ-थों दा पाँडा आ जाँदा है। उह फिर तुहानूं सारे तुहाडे पुराणे बज़ुरगाँ दे नाम दसदे हन, किउंकि उहनाँ कोल जदी पुशती वही है। तुहाडे बज़ुरगाँ दा नाँ सुणाके फिर उह तुहाडे कोलों सारिआँ बज़ुरगाँ ने नाम दा दान मंग लैंदा है, सो तुहाडा ताँ इशनान भावें होवे ना होवे, तुहाडी जेब दा इशनान ज़रूर हो जाँदा है। जिहनाँ भुलेखिआँ विचों सानूं कढिआ गइआ सी, असीं फिर उथे ही पहुंच गए हाँ, मानो साडी मत ते परदा पै गइआ है। इसे करके गुरबाणी ने इशारा कीता सी:

"जिस नो आपि खुआओ करता
खुसि लओ चंगिआई ॥" (पन्ना ४१७)

भाव कि परमातमा ने जिस जीव नूं खुआर करना होवे, जिसनूं परेशान करना होवे ताँ उहदे ते कोई बिजली नहीं गिराँदा बलकि उहदे कोलों चंगी मत खोह लैंदा है। फिर उहनूं समझाउ वी कि इहि कंम माड़ा है ताँ उह कहिंदा तुहानूं किस तूाँ पता है। इहि सारी दुनीआँ जो कर रही है इहि सभ पागल ते नहीं हो सकदे। असाँ ओसीआँ ग़लत गलाँ ते ज़ोर दे दिता है कि साडे विचों इस चीज़ दी बिलकुल विचार ही उड गई है कि जिस चीज़ तों गुरू ने रोकिआ सी, असीं जाण-बुझ के उहदे विच किउं फसदे पओ हाँ। और कबीर जी ने इसे करके इशारा कीता सी:

"कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥
काहे की कुसलात हाथि दीपु कूओ परै ॥"
(पन्ना १३७६)

हर मन नूं इहि पता है कि इहि करम प्रभू दे करीब लैके नहीं जाओगा, फिर भी करन तों नहीं मुड़दा। पता है सारा, गुरबाणी ने ताँ चिला-चिला के सारा कुझ कहिआ होइआ है:

"फरीदा कूकेदिआ चाँगेदिआ मती देदिआ नित ॥
जो सैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित ॥" (
पन्ना १३७८)

हर ब्रहम गिआनी इस धरती ते आ के इनसान नूं चंगी अकल दे के गइआ है। कूक कूक के, चाँगराँ मार मार के सुनाउण दी कोशिश कीती गई है पर इहि सुणदे ही नहीं।
इहनाँ नूं सभ कुझ पता है, मानो आपणे हथ विच दीवा है, लालटैन फड़ी होई है, पर आप खूह विच डिगदा पइआ है। इहि किधर दी अकलमंदी है? लगदा है साडे कोलों इहि मत खिच लई गई है। सो सानूं गुरदेव ने फिर याद दिलाइआ अते कहिआ कि भोलिआ पाणी दी सुचता उ`ते, पवितरता उ`ते, बाहर दे लिबास उ`ते, पहिरावे आदि उ`ते, नाँ फस, इहनाँ करमाँ उते इतना ज़ोर न दे:

"जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आओ सो अंमृतु गुर पाही जीउ ॥ छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥" (पन्ना ५९८)

"मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईओ ओहु धोइ ॥"

सभ नूं पता है कि पाणी दे इशनान दा अंदरली सफाई नाल कोई संबंध नहीं है, फिर वी समाज ने इसते बहुत ज़ोर दे दिता है। इसेतूाँ पाणी कपड़ा धोण दे कंम आउंदा है। जे कपड़ा बहुता ही मैला हो जाओ ताँ साबण लगाके साफ कर लईदा है। इसतूाँ दी पाणी दी वरतों प्रमातमा दे दर नेड़े नहीं लैजा सकदी। पाणी दे गुण हासल करन दी लोड़ है।

"भरीओ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥:

तो इशारा इहि है कि जद मन पापाँ दी मैल नाल गंदा हो जाँदा है ताँ सिवाओ शबद दी कमाई दे उसनूं साफ करन दा होर कोई वसीला नहीं है। हे गुरसिख नाम तों बिनाँ मन दी मैल नहीं उतर सकदी, अते मन दी मैल उतारनी ही असली तीरथाँ दा इशनान है। गुरबाणी ने फैसला दिता है:

"वखरु नामु देखण कोई जाइ ॥
ना को चाखै ना को खाइ ॥" (पन्ना ६६१)

भाव कि सारिआँ नूं शौक ताँ है कि नामु दी दौलत प्रापत हो जावे पर अवल ताँ इस बारे कोई जाणदा नहीं, जो कोई जाणदा है उस नूं समझदा नहीं, अते जिहड़े समझदे वी हन उह इस भोजन नूं खाँदे ही नहीं, बस गलाँ करके छड दिंदे हन। जिवें कि सानूं किसे ने फारमूला दस दिता है कि शबद गाउणे, उहनाँ दा पाठ करना, उहनाँ दी कथा सुणनी इस नाल प्रभू प्रापती हो जाओगी मानो कि गुरबाणी दा नाम सिमरन इही है। सो हुण हर अभिआसी आपणे मन नूं पुछे कि उसनूं इहि नितनेम करदिआँ नूं कितनी देर हो गई है। की इतने समें विच उसदा कुझ संवरिआ है, उसदे अंदर कोई तबदीली आई है कि नहीं।

इक गुरसिख परिवार गुरदुआरे जाण लई तिआर होइआ। जिवें कि अकसर हुंदा है, नौजवान बचिआँ ने साथ देण तों इनकार कर दिता। ताँ माँ बाप ने बचिआँ नूं कहिआ कि जेकर गुरदवारे नाल नहीं जाणा ताँ सारे घर दी सफाई करनी पवेगी। बचिआँ ने इह शरत मनजूर कर लई। कुझ घंटिआँ बाअद जद माँ बाप गुरदवारे तों होके घर वापस पंहुचे ताँ देखिआ कि बचिआँ ने कोई कंम नहीं कीता अते उह आपणीआँ खेड्डाँ विच रुझे होओ हन। ताँ माँ ने बचिआँ नूं खूब डाँटिआ। अज कल दे बचे वी बहुत हुशिआर हन। उह सभ कुझ चुप करके सुणदे रहे अते फेर माँ कोलों पुछिआ कि माँ की अज गुरदवारे विच प्रबंधकाँ दी फिर लड़ाई होई है? माँ ने कहिआ नहीं। ताँ दूजा सवाल बचिआँ ने पुछिआ कि तूं हुणे गुरदुआरिउं हो के आईं हैं पर ग़ुसा ता अजे वी बहुत है ताँ गुरदुआरे जाण दा की फाइदा होइआ? उथे जो सुणिआ, की उह ग़ुसा वधाउण वाला सी? असीं ताँ ही तेरे नाल नहीं जाँदे। गुरदुआरे जा के वी की फाइदा? घर वापस आउंदिआँ ही गुसा ताँ उसेतूाँ ही चड्ढिआ होइआ हुंदा है। भावें इह गल बचिआँ वलों इक हुजत है पर है बड़ी सोचण वाली।

जेकर धारमिक करम नाल मन विच ज़रा वी निमरता नहीं आई, हंकार नहीं डुबिआ, लोभ नहीं डुबिआ, मोह नहीं डुबिआ, क्रोध नहीं घटिआ ताँ ओसा करम काहदे लई करना है। आपणे अंदर झाती मारन दी ज़रूरत है कि किहड़ा करम इहनाँ पंजाँ चोराँ विचों किसे वी इक नूं कंटरोल करन दे कंम आ रिहा है कि नहीं आ रिहा। जे नहीं आ रिहा ताँ जो वी कर रहे हो उहदे विच कोई ग़लती है। वेखण विच बिलकुल इसदे उलट नज़र आँउदा है। धारमिक आगूआँ दा हंकार वेखके दंग रहि जाईदा है। धरम दा परचार करन वाले इतने लोभ ग्रसत दिसदे हन कि अखाँ शरम नाल झुक जाँदीआँ हन। गुरबाणी ने इशारा कीता है कि भोलिआ जिहड़ी अंदर दी मैल है उसदी सफाई सिरफ नाम जपण दे नाल ही हो सकदी है। होर करम मन दी मैल नूं वधा ते भावें देण, घटा नहीं सकदे। तो इशारा इहि कर रहे हन भोलिआ तूं सुचता पकड़ के बहि गइआ हैं अते सुचता नूं तूं पाणी नाल जोड़ लइआ है अते हुण थाँ-थाँ दे उत्ते जा के टुबकीआँ लगाउंदा फिरदा हैं। जे इह गल सही हुंदी ताँ डडू ते मछी ताँ रहिंदे ही पाणी विच हन। गल नूं समझ कि तैनूं की इशारा कीता जा रहिआ है 'ओहु धोपै नावै कै रंगि'। सो नामु जपणा सिख, उहदी जुगती लभ। स्री गुरू ग्रंथ साहिब दे विच जो जुगती बैठी होई है उहनूं समझ।

"पुन्नी पापी आखणु नाहि ॥ करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥"

पुन्न अते पाप कोई दिमाग़ी गलाँ नहीं हन। तूं किस करम नूं पुन्न कहिंदा हैं अते किस करम नूं पाप कहिंदा हैं, इह अकल तैनूं किसने दिती है। तैनूं किस तूाँ पता है कि इह कंम कीता पुन्न है जदों बाणी फैसला दे रही है:

"अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥
मै किआ जानउ बाबा रे ॥" (पन्ना ८७०)

मैं कंम ताँ करदा पइआ हाँ पर मैनूं की पता इहदा फल की होओगा। जिवें कि इह सारीआँ विचाराँ आपणे आप ताँ कुझ भला करन लई ही दरज कीतीआँ जा रहीआ हन कि शाइद इस गुरबाणी विचार दा कोई चंगा फाइदा हो जावे पर इह कोई गारंटी नहीं है। हो सकदा है इस नाल कईआँ दा हिरदा दुखी हो जावे किउंकि उहनाँ दे विचाराँ नाल इह विचार मेल नहीं खाँदे। तुसीं किसे डुबदे नूं बचा ताँ लइआ अते सोचिआ कि तुसाँ आपणे आप बड़ा पुन्न कीता है, पर उह बाहर निकलदा ही छे कतल कर आइआ है। हुण किवें पता लगे कि उसनूं बचाउणा पुन्न सी कि पाप। गुरबाणी ने कहिआ कि इह फैसला इनसान दा नहीं है कि आह गल करनी चंगी है ते आह माड़ी है। इह तेरा कंम ही नहीं है। इह बहिस करना ही फजूल है, किउंकि इनसान सिरफ करम कर सकदा है। उसदे नतीजे नूं कंटरोल नहीं कर सकदा। उसदा नतीजा कुझ वी हो सकदा है। इथे हुण सवाल उठ जाओगा कि इस दा मतलब ताँ इह होइआ कि सारे ही चोरीआँ यारीआँ करदे रहो, कोई चिंता नहीं। जे सोचिआ जावे ताँ अज तक परमातमा ने कदी तुहाडे हथ नहीं फड़े कि चोरी ना कर। उसने कदी नहीं कहिआ कि इह पुन्न है जाँ उह पाप है। गुरबाणी समझा रही है कि इस भेद नूं समझ। इह पाप पुन्न दी गल नहीं है बलकि इह तेरी चोण दी गल है। इह तेरी चौइिस (Choice) ते निरभर है। हर जीव नूं चोण करन दी पूरी आज़ादी है (Freedom of choice)। चंगा करम कर तैनूं चंगा इनाम मिल जाओगा, माड़ा करम कर तैनूं माड़ा इनाम मिल जाओगा, गल ख़तम हो गई। तूं जो वी करना चाहुंदा हैं, कुदरत तैनूं रोकदी नहीं। इह सिरफ मानुखा सरीर नूं ही दात दिती गई है। गाँ कोल कई चोण दी आज़ादी नहीं है। तुसीं उहदे अगे अगर बकरा भुन्न के सुट दिओ ताँ उहने खाणा नहीं। इसेतूाँ शेर कोल तुसीं घाह नूं जिन्ना मरज़ी कुतर के उहदे अगे पा दिउ, उहने खाणा नहीं। पर कुदरत ने इनसान नूं इह आज़ादी दे दिती कि तूं भावें सबज़ीआँ खा लै ते भावें मास खा लै, इह तेरी आपणी चोण है। साडीआँ अंतड़ीआँ दी लंबाई इस तूाँ दी है कि जे घाह खा लईओ ताँ उह वी पच जाँदा है अते जे मास खा लईओ उह वी पच जाँदा है। जिस दिन तुसीं नाम दे जपण वाले पासे लग जाओगे ताँ आपणे आप ही पता लग जाओगा कि मास खाधिआँ बड़ी देर तक डकार आउंदे रहिंदे हन, सो नाम अभिआस विच मुशकल हुंदी है। शराब पीण नाल सरीर सुसत हो जाँदा है अते नाम अभिआस विच तकलीफ हुंदी है। तुसीं नाम अभिआस दा सवाद पा लओ ताँ यकीनन है कि तुहाडा लिबास बदलेगा, पहिरावा बदलेगा, सौणा जागणा बदलेगा, खाणा

बदलेगा, पीणा बदलेगा, सभ कुझ आपे ही बदलेगा। रात नूं शराब पीके सवेरे उठके वाहिगुरू कहिण लई जदों साह अंदर वल खिचिआ ताँ शराब दा डकार आओगा, हुण जाँ ताँ शराब पीणी बचा लओ ते जाँ वाहिगुरू दा जाप बचा लओ। रात नूं मास ज़िआदा खा लइआ, उह सवेर तक पचदा ही नहीं उसे दे डकार आउंदे रहिणे हन अते वाहिगुरू कहिआ वी नहीं जाणा। तंग कपड़ा पा लइआ ताँ पूरा साह ही नहीं निकलणा वाहिगुरू किवें कहोगे। जिहड़ा नाम जपण विच लग जाओगा उहदा सुभाउ बदल जाओगा। इह जादू हथ ते चलदा है करके वेख लउ। तो गुरदेव ने कहिआ कि हुण इह बहिस छड दे कि पुन्न की है ते पाप की है। इह ताँ तेरे अगे ज़िंदगी ने त्रहाँ-त्रहाँ दे रंग दे खिलौणे सुटे होओ हन, तूं जिहड़ा मरज़ी खिलौणा चुक। जिस त्रहाँ दा खिलौणा चुकेंगा, उसेत्रहाँ दा फल मिल जाओगा। किउंकि करम होर कुझ कर ही नहीं सकदा। असीं पिछे इह वेख आओ हाँ कि 'करमी आवै कपड़ा'। माड़े करम कीते हन ताँ अगला जीवन माड़ा होओगा, चंगे करम कीते हन ताँ अगला जीवन चंगा होओगा, बस इतना ही फरक है। पर जेकर जंमणा मरना चाहुंदा ही नहीं ते फेर 'नदरी मोख दुआर' उहदी नदर दा पातर बण। जे जीवन मरन दे चकर विचों निकलणा है ताँ उसदी नदर दा पातर बण।तूं उतनी देर उसदी नदर दा पातर बण नहीं सकदा जिन्ना चिर तूं नाम नहीं जपदा।

"आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥"

जे भगती नहीं कीती ताँ तूं कहेंगा मैं इतने पाठ कीते हन, लंगर करवाओ हन, इन्नीआँ जुतीआँ झाड़ीआँ हन, इतने भाँडे माँजे हन ताँ गुरबाणी दा फैसला है कि उह ताँ तूं समाज सेवा कीती है। इसदा भाव इह नहीं कि समाज सेवा नहीं करनी चाहीदी। इसदा भाव है कि अज तूं किसे दे कंम आइआ हैं, कल कोई तेरे कंम आ जाओगा। जिहो-जिहा करम कीता है तैनूं उहो जिहा इनाम मिलणा है। करम इक बीज वाँगूं है, बीज वल खिआल कर। जे नाम दा बीज बीजेंगा ताँ ही उसदी दरगह विचों ओसा फल मिलन दी संभावना है।

"मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥" (पन्ना ५६५)

जे उह बीज नहीं बोइआ ताँ सभ करमाँ दा फल इक होर नवाँ कपड़ा है। इह किसे इनसान दा बणाइआ कानूंन नहीं है, इह किसे होर दा लिखिआ नहीं है, इह उस दा हुकम है। उसदे हुकम विच ही सारे आ जा रहे हन।

(अंक २१)

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥ नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥
(जेकर कोई तीरथाँ ते जाके तपसिआ अते पुन्न दान करे वी ताँ उसनूं इस संसार कोलो थोड़ा जिहा सतिकार मिल सकदा है। इस नालो ताँ चंगा इह है कि गुरदेव दे शबद नूं सुणके उसनूं दिल वसाके उस मुताबिक मन नुं बदलिआ जावे जिस नाल इस सरीर दे अंदर वाले तीरथ दा इसनान हो जावे। इह सारे गुण ता तेरे (तूं) नाल जुड़न नाल ही परापत हुंदे हन, मै नाल जुड़ना ताँ कोई गुण हो ही नहीं सकदा, अते "तूं" नाल जुड़न वाला गुण पैदा कीते बिना भगती नही कीती जा सकदी। सारी बाणी दा गिआन उसे दी सिफतो सालाह है जिहड़ा कि सदा निहाल रहिंदा है, इस गिआन दी सही वरतों नाल "तूं" नाल जुड़ना आसान हो जाँदा है। बाकी होर सारा गिआन बेकार
है। जिवें कि इह सारा संसार किस वकत, किस रुते, किस वार, किस महीने, जाँ किस तराँ बणिआ वरगे सवाल फजूल हन। जेकर किसे वी पंडत जो कि वेदाँ दा गिआता है उसनूं पता हुंदा ताँ उह दस देंदा। जेकर उह मुलाँ जिन्ना ने कुरान वरगे ग्रंथ लिखे हन कुझ जाणदे हुंदे ताँ उह सभनूं दस देंदे। इहनाँ सारे सवालाँ दा सही जवाब कोई इनसान नहीं जाणदा। इसदा गिआन ताँ केवल जिसने इह सारा विधान बणाइआ है, उही जाणदा है। उसदे बारे ता शबदाँ विच कुझ वी संपूरन तरीके नाल किहा जा सकदा भाँवे इ संसार अनेकाँ ही इक तों वध अकलमंद जीव बैठे हन। उही सचा साहिब है जिसदा इह सभ कुझ बणाइआ

होइआ है। जिहड़ा वी जीव आपणे आप ते किसे तराँ दा हंकार करदा है (मैं नाल जुड़े होण दा गुण) उह उसदी दरगह विच कोई मुल नहीं रखदा।)

पिछले अंक विच महाराज ने इशारा कीता सी कि वेदाँत ने दुनीआँ नूं दसिआ सी कि पाणी कोलों कुझ सिखो। इस करके हिंदुसतान विच जितने वी मंदिर बणे सन उह अकसर वगदे पाणी दे किनारे ते बणाओ गओ सन। उस दे विच इह भेद सी कि उहनाँ ने पाणी दे तत (पंजाँ तताँ विचों मुढला तत) नूं प्रभू दी प्रापती दा साधन बणाइआ सी। पाणी दे सवभाव वल देखो, पाणी इक ओसी वसतू है जिहड़ी आपणी अवसथा बदलन दी कुआलिटी रखदी है। पाणी जंम जाओ ताँ बरफ बण जाँदा है, पहाड़ाँ उते बरफ इक पऊडर दी तराँ हुंदी है। भाव कि बरफ दा सरीर पथर वरगा वी हुंदा है जिसदी कोई सीमाँ है, पर उसे बरफ दा इक सरीर ओसा है जो मिटी दी खेह वरगा हो जाँदा है जिसदा कोई भार ही नहीं लगदा। जंमी होई बरफ इतनी सख़त हुंदी है कि भावें उस नाल किसे दा सिर फाड़ दिउ। जंमी होई बरफ नूं तुसीं छुरी दी तराँ इसतेमाल कर सकदे हो पर जदों उहदी अवसथा बदलदी है ताँ उह बिलकुल नरम हो जाँदी है। हुण उहदे विच उह सख़ती नहीं रहि जाँदी पर जेकर उस नूं पिघला दिता जाओ ते हुण उस दा उह रूप वी नहीं रहि जाँदा, उह पाणी बण जाँदी है। जेकर पाणी नूं १०० डिगरी तक गरम कर दिता जाओ ताँ उह भाफ बण जाँदी है। जिहड़ा उहदा पहिला सरीर सी हुण उह वी नहीं रहिंदा। ताँ उहनाँ रिशीआँ मुनीआँ ने इनसान नूं सिखाउण दी कोशिश कीती सी कि तूं पाणी वल वेख, जिवें-जिवें तूं उसदी भगती विच लगेगाँ तेरी चेतनता जो अजे ठोस है उह बदलणा शुरू करेगी। गुरबाणी विच ज़िकर आइआ है:

कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु ॥ ओसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु ॥१४६॥ कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइिआ पंथी कउ दुखु देइ ॥ ओसा तेरा दासु है जिउ धरनी महि खेह ॥१४७॥ कबीर खेह हूई तउ किआ भइिआ जउ उडि लागै अंग ॥ हरि जनु ओसा चाहीओ जिउ पानी सरबंग ॥१४८॥ कबीर पानी हूआ त किआ भइिआ सीरा ताता होइ ॥ हरि जनु ओसा चाहीओ जैसा हरि ही होइ ॥१४६॥ (पन्ना १३७२)

धरम दी यातरा दी बहुत ख़ूबसूरत तसवीर खिची गई है, पथर तों मिटी, मिटी तों पाणी, अते पाणी तों संमुदर विच शलाँग दीआँ अवसथाँवाँ विचों गुज़रना पैंदा है। आखर विच फैसला दे गओ 'हर जनु ओसा चाहीओ जैसा हरि ही होइ' भाव कि उस आखरी अवसथा दी मिसाल नहीं दिती जा सकदी। वेदाँत विचों रिशीआँ ने वी इही सुनेहा दिता सी कि पाणी दी जिस तराँ हालत बदलदी है इस तराँ तेरी हालत वी बदलणी चाहीदी है ताँ तूं परमातमा दे नेड़े होओंगा, किसे होर करम काँड करके नहीं पर इनसान ने पाणी विच नहाउणा धोणा ते सुचता ते ज़ोर दे दिता। कई थाँवाँ ते सुणन विच इह गल आई है कि स्री गुरू गोबिंद सिंघ महाराज ने पाणी ते बाणी नूं जोड़िआ है और असीं वी करम काँडाँ विच फसे होओ अखंड पाठ दे लागे पाणी रख दिंदे हाँ, जोताँ जगा दिंदे हाँ, नारीअल अते मउली दे धागिआँ वरगे होर कई तराँ दे मन मत करन लग पओ हाँ।

स्री गुरू गोबिंद सिंघ जी ने सानूं पाणी नाल कदी नहीं सी जोड़िआ। इह कदी हो ही नहीं सकदा किउंकि महाराज दी आपणी बाणी विचों आवाज़ आई सी 'जागत जोतु जपै निसि बासर, ओक बिना मन नेक न आनै'। सानूं जागत जोत नाल लगाइआ सी, पाणी नाल नहीं सी जोड़िआ। पर असाँ वी उही भुलेखा खाधा है जो वेदाँ नूं मन्नण वालिआँ ने खाधा सी। सो गुरबाणी ने उह भुलेखा कढिआ कि इस ढंग नाल ताँ पाणी ज़िआदा तों ज़िआदा सरीर दी सफाई कर सकदा है। हुण ओथे इक सवाल उठ जाँदा है कि की तीरथाँ दी यातरा अते होर करम काँड करन दा कुझ वी फाइदा नहीं हुंदा? ओसिआँ सवालाँ दे जवाब लई अगला अंक शुरू हो गइिआ:

"तीरथु तपु दइिआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥"

भाव कि इह सारे करम काँड करन नाल हर इक नूं बहुत ममूली जिहा दुनिआवी मान प्रापत हो सकदा है। अगर तूं तीरथ जाणा अते इशनान करना, उथे दान पुन्न करना आदि नूं तपसिआ समझ बैठा हैं ताँ याद रख इहनाँ करमाँ नाल ज़िआदा तों ज़िआदा इक तिल भर शुहरत मिल सकदी है। जिस तराँ इसलाम विच जदों कोई हज करके आउंदा है ताँ सारे आले-दुआले इकठे हो के उहनूं वधाई देण लई आउंदे
हन। उहनाँ दा विशवास है कि ज़िंदगी विच घट तों घट
इक वार हर मुसलमान नूं मके हज करन लई जाणा चाहीदा
है। बाणी इशारा करदी है इहो जिहे जिहड़े करम काँड हन इह समाज विच थोड्ही जिही शोभा दिलाँदे हन, इहनाँ नाल परमातमा दे दरशन नहीं हो जाणगे। इहदे नाल आतमिक उचाई नहीं आ जाणी। बाणी ने इशारा कीता है:

"जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ जैसे मेंडुक तैसे ओइि नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥" (पन्ना ४८४)

जेकर पाणी विच इशनान करन नाल जाँ सरोवराँ विच टुबकीआँ लगाउण दे नाल गल बण सकदी हुंदी ताँ डडू ताँ रहिंदा ही पाणी विच है, मछी ताँ हमेशा पाणी विच तरदी रहिंदी है। ताँ ते सारे डडू अते मछीआँ ब्रहम गिआनी हो जाणीआँ चाहीदीआँ सन। गुरबाणी विच सानूं चितावनी दिती गई है कि किते डडू ना बण जाइउ। इहि ताँ सिरफ ज़रा जिन्नी शोभा दा कंम है, असली कंम ताँ भगती दा सी जो अंदर दी सफाई करन दे कंम आँउदी है।

"सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥"

असीं इस तुकदी इहि विआखिआ समझदे हाँ कि जिहड़ा सुणदा है, सुण के फिर मन लैंदा है, उहदा कलिआण हो जाँदा है। असीं सारे संगत विच बैठके बाणी सुणदे आ रहे हाँ, और किउंकि गुरू दी गल कही जा रही हुंदी है इस करके उथे बिना किसे नुकताचीनी दे मन्न वी रहे हुंदे हाँ। फिर की कारन है कि इतनी उमर गुज़र जान दे बाद वी कोई आतमिक उचाई नहीं होई? इसदा कारन इहि है कि इहि तुक आम सुणन नाल ते आम मन्नण नाल कोई संबंध ही नहीं रखदी। इहि उह सुणना है जिहदे बारे असीं चार अंक पहिलाँ विचार चुके हाँ। इहि उस अंक वल इशारा हो रिहा है जिथे 'सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ' वाली गल हो रही सी। उह सुणना आउणा अभिआसी दी पहिली अवसथा है।

शबद अभिआस दी पहिली शरत है कि जिस अखर नूं जपु रिहा हैं, उहनूं आप आपणे कन्नाँ नाल सुण। जदों इस तराँ अभिआस करेंगा कि जो अखर तेरे मूंहों निकल रिहा है, अते तूं उहनूं इतनी तीबरता नाल सुण रहिआ हैं कि तेरा 'ववा' किथों निकलिआ है, 'हाहा' किथे बणिआ है, 'गगे' दी आवाज़ किथों बण रही है, 'रारा' किथे सी, 'ओ' दी मातरा किथे सी, आदि। जदों तेरा धिआन इतनाँ शबद दे नाल जुड़िआ रहेगा, ताँ इहि जपना हौली-हौली तेरे मन नूं इकागर कर देवेगा पर उह तेरी अजे पहिली मंज़ल है। जदों मन सही सुणन दे काबल हो जाँदा है ताँ हुण इसतों अगली सटेज (पड़ाउ) ते जाणा है। उस तों बाअद सटेज है मन्नै दी भाव जिथे 'मन नाँ' होवे। इहि इकागर होइआ मन गुरू दे चरनाँ विच भेट करना है। असली मथा टेकण दा भाव इही सी। जिस दिन इहि घटणा घट गई उथे ही है "मन्नै पावहि मोखु दुआरु ॥" उस दे दरशनाँ लई दसवाँ दुआर खुल जाँदा है, जदों मन वी ना होवे ताँ तीसरी अख खुलेगी। इहि है गुरबाणी दा सुणना अते मन्नणा। जिस दिन इहि हो गइआ उस दिन अंदर उसदा नज़ारा नज़र आओगा। उस घड़ी अंदर तीरथाँ दा असली इशनान होओगा। जिहड़ा बाहर इशनान करन दे चकराँ विच भजिआ फिरदा सी, हुण तेरे अंदर असली पवितरता नज़र आओगी। हुण तेरे अंदर वाले तीरथ दा दरवाज़ा खुल्ह गइआ है। उस तीरथ दा इशनान तेरी सुरती करेगी। अंदर दे तीरथ वल खिआल कर, बाहर दे तीरथाँ नूं छड दे, उह सिरफ दुनीआँ दी शोभा है, उहदे विच होर कुझ नहीं। जदों गुरबाणी ने सानूं कहिआ सी:

"गुर सतिगुर का जो सिखु अखाओ सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥ उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंमृत सरि नावै ॥ उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥ फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥ जो सासि गिरासि धिआओ मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥ जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥२॥" पन्ना ३०६)

असीं इसदे भावअरथ बहुत ही अजीब कर लओ
हन। इथे भलके तों भाव सवेरा नहीं है बलकि निताप्रती है, रोज़ाना है, हर रोज़ है। इसे तराँ इशनान तों भाव पाणी दा नहाणा नहीं बलकि अंतरीव इशनान है। अंमृत सरि तों भाव पंजाब दा शहिर अंमृतसर नहीं है किउंकि इहि सलोक चउथे महल कोलों आइआ है। उस वेले अंमृतसर अते उसदा सरोवर अजे पूरा ही नहीं सी होइआ। उसदी संपूरता पंजवें महल वेले होई है। इथे अंमृत सरि विच नहाण तों भाव नाम रूपी सरोवर विच सुरती दीआँ डुबकीआँ लगाणा है। जिहड़ा अंमृत दा सरोवर तेरे अंदर है उहदे विच इशनान करिआ कर ताँकि प्रमातमा दे नेड़े पहुंच सके पर जे अजे अंमृत अंदरों पैदा ही नहीं कीता ताँ इशनान किस तराँ होवेगा? सो पहिलाँ जिहबा नूं मधाणी दी तराँ इसतेमाल करना है:

"हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥
सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥१॥" (पन्ना ४७८)

जीभा दा इक अखर दा अभिआस करना मानों मधाणी दे गेड़े देणे हन। इसतराँ अराम नाल रिड़कदिआँ रिड़कदिआँ सहिज अवसथा ते चला जाओंगा अते जपना सिमरन विच बदल जाओगा। सिमरदिआँ सिमरदिआँ जद उस दा प्रसाद आइिआ ताँ धिआन दी अवसथा विच चला जाओंगा ते जे धिआँदिआँ धिआँदिआँ धिआँदिआँ उस दा प्रसाद आइिआ ते फिर समाधी लग जाओगी। उथे है 'अंतरगति तीरथि मलि नाउ', उह असली तीरथ इशनान है। पर इहि गल हुंदी नहीं। इहि किउं नहीं हुंदी उहदा अगों जवाब आ गइआ:

"सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
विणु गुण कीते भगति न होइ ॥"

इस तुक दी परचलत विआखिआ है कि हे परमातमा सारे गुण तेरे विच ही हन, मेरे विच ताँ कोई वी गुण नहीं। जेकर इस विआखिआ नूं सही मन लइआ जावे ताँ अगली तुक है "विणु गुण कीते भगति न होइ"। इसदा मतलब इह बण जाओगा कि मैं ताँ भगती कर ही नहीं सकदा किउंकि मेरे विच ताँ कोई गुण ही नहीं अते बिना गुण दे भगती हो नहीं सकदी। हुण अरथ दा अनरथ हो गइआ। सारी गुरमत जीव नूं भगती मारग वल परेर रही है। इसतों ज़ाहिर है कि इह विआकरण (Grammar) दे आधार ते कीती होई विआखिआ सही नहीं हो सकदी। दरअसल इथे 'गुण तेरे' तों भाव है जे 'तूं' नाल जुड़िआ जावे। 'तूं' नाल जुड़न दे विच गुण है ते 'मैं' नाल जुड़ना हंकार है। जीभा इक समें जाँ तूं कहि सकदी है जाँ 'मैं' कहि सकदी है, दोवें गलाँ इकिठीआँ नहीं कहि सकदी अते मन नूं 'मैं' कहिण दे विच ही सवाद है, उसनूं "मैं मैं" करन दी ही आदत है। जदों जीव 'मैं' नाल जुड़िआ होइआ है ताँ अंदर गुण नहीं पैदा हुंदे सगों हाउमें दा अवगुण पैदा हुंदा है। हंकार पैदा हो रिहा है ताँ 'गुण' किथों आउणगे। सो गुरबाणी कहि रही है कि जदों 'तूं' नाल 'तेरे नाल' जुड़िआ जावे ताँ ही गुण पैदा हो सकदे हन 'मैं' दे विच कोई गुण नहीं है, उहदे विच सिरफ हंकार ही है उह ताँ सगों माइआ विच होर डूंघा लै जाणगे। और याद रख तूं गुण पैदा नहीं कर पाउंदा किउंकि तूं 'तूं' नाल जुड़दा ही नहीं। 'मैं' नाल सारे अवगुण जुड़े होओ हन। 'सभ गुण तेरे' भाव गुण उदों पैदा हुंदा हन जदों तेरे नाल जुड़िआ जावे, जदों 'तूं' कहिआ जावे अते जिन्नाँ चिर 'मैं' कहेगा उन्नाँ चिर उहदे अंदर गुण नहीं आ सकदा। हुण इथे सवाल उठ जाओगा कि भाशा दी मजबूरी है कि "मैं" दा शबद ताँ वरतणा ही पैंदा है। ताँ जवाब आइआ कि इह हुजत है, इह बिलकुल सचाई नहीं है। जेकर इह याद रहे कि सभ कुझ हो रहिआ है कीता नहीं जा रहिआ ताँ भाशा आपे ही बदल जाओगी। उस हालत विच मूंह विचों "मैं रोटी खा रहिआ हाँ" नहीं सगों रोटी खाधी जा रही है निकलेगा, पाणी पीता जा रहिआ, गलाँ कीतीआँ जा रहीआँ हन, गलाँ सुणीआँ जा रहीआँ हन, आराम हो रहिआ है, आदि। ओसी मनोबिरती नाल "मैं" कहिणा ही भुल जाँदा है। सभ कुझ उह ही कर रहिआ है, सभ कुझ हो रहिआ है, कुझ वी कीता नहीं जा
सकदा। जिस वेले कहिआ 'मैं सुणदा पइिआ हाँ" ताँ आउगण विच फस गइिआ, 'मैं' लग गई, हंकार दा जनम हो
गइिआ। अधिआतमिकवाद दे इसतृाँ दे कई भेद साडे कोलों गवाच गओ हन। हंकार दी जड़ नूं हर वकत कटदे रहिणा है, इह पिछले दरवाज़े विच दी इसतृाँ आ जाँदा है कि इहदा पता वी नहीं लगदा। तो गुरबाणी ने इशारा कीता कि जितना चिर अंदर 'तूं' कहिण दा, 'तेरे' नाल जुड़न दा गुण पैदा नहीं हो जाँदा, उतना चिर भगती हो ही नहीं सकदी। उतना चिर हर करम प्रमातमा तों दूर लै जाओगा। ते जे भगती नहीं होई ताँ मन दी अवसथा नहीं बदलणी। मन पथर दी तृाँ इथे दा इथे बैठा रहेगा। ताँ फिर की कीता जाओ? अगली तुक विच इस सवाल दा जवाब है।

"सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥"

भाव कि सारी बाणी ही उस ब्रहम दे गिआन नाल भरी पई है। इस विच केवल उसे दी ही उसतत है। सारा गिआन उस दी उसतती है। उसदी उसतती इहदे विचों
लभ। इकला गिआन ना घोट। 'सुअसति' भाव सिफतो-सलाह इस दे विचों उसदी उसतती लभ ते उसतती कर। 'तूं' 'तूं' कहिणा सिख। जिस दिन 'तूं' 'तूं' कहिणा शुरू करेंगा ताँ तैनूं आपे ही पता लग जाओगा कि 'तूं' नाल जुड़िआ हैं कि जाँ अजे 'मैं' नाल ही जुड़िआ बैठा हैं। "तूं" नाल जुड़े दी निशानी है कि उसदे अंदर खेड़ा आ जाँदा है। अंदर बाहर इक तृाँ दी शाँती हो जाओगी, वरतीरे विच तबदीली आ जाओगी, सदा खेड़े विच रहिण लग पओगा, बोली बदल जाओगी, शबदाँ दी चोण बदल जाओगी। गुरबाणी दा फुरमान है:

"सबदौ ही भगत जापदे जिन् की बाणी सची होइ ॥"

(पन्ना ४२९)

भगत दी पहिचाण ही इह है कि बोली तों पता लग जाँदा है कि इह जीव परमातमा नाल जुड़िआ होइआ है कि दूर है। जिसदे चिहरे उते सदा उदासी है उह भाँवे कितनी वी माला किउं ना फेरदा होवे, उह प्रमातमा दे नेड़े कदी नहीं जा सकेगा। पर जीव भगती वल जुड़दा नहीं बलकि कुदरत दी विचार विच फस गइिआ है। उह इह पहिलाँ जानणा चाहुंदा है कि परमातमा किथों आइिआ है, धरती किथो आई है, इह पसारा कदों बणिआ सी अते किस तृाँ बणिआ सी। हर इक ने आपणे-आपणे विचार देणे शुरू कीते होओ हन। किसे ने किहा उहने दुनीआँ बनाउण विच छे दिन लगाओ ते सतवें दिन आराम कीता सी। डारवन नाम दे साँइंसदान ने आपणी लिखत विच सिधाँत (Theory) दिती ते साबत करन दी कोशिस कीती है सारा कुझ आपणे आप ही बणिआ है। मुकदी गल कि हर कोई गिआन इकिठा करना चाहुंदा है। इस कुदरत दे भेदाँ नूं समझणा चाहुंदा है। जेकर ओसा गिआन

इकठा कर वी लओ ताँ ज़िआदा तों ज़िआदा गलाँ करनीआँ सिख लईआँ अते बहिस करनी सिख लई, होर उसदा की लाभ हो सकदा है। अगर अज तुहानूं दस दिता जाओ कि इस तरीके नाल इतने वजे इह धरती बणाई गई सी, असमान बणिआ सी ताँ फिर इस जाणकारी दा की करोगे? जद इह दिमाग़ी खुजली दे सिवाओ होर कुझ वी नहीं है ताँ फिर इस पिछे किउं पिआ होइआ है, यकीन रख इह मिहनत सारी ही बेकार है:

"कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥"

जदों जीव इहनाँ चकराँ विच पओगा कि किस वेले, किस रुते, किस वार, किस महीने इह सारी काइनात बणाई गई ताँ फिर जीव तूं नाल नहीं जुड़ रहिआ बलकि 'मैं' नाल जुड़ रहिआ है। हालाँ कि हर जीव इह जाणदा है कि जिहनाँ ने इतने वडे वेद लिखे सन, जे उहनाँ नूं पता हुंदा ताँ वेदाँ विच लिख जाँदे।अगर इहनाँ सवालाँ दा जवाब लभिआ जा सकदा हुंदा ताँ जिहनाँ ने पुराण लिखे, जिहनाँ ने वेद लिखे ताँ उह लिख दिंदे। जिहनाँ ने कुरान इकठी करके इक पूरा ग्रंथ बणाइआ जे उहनाँ काज़ीआँ नूं पता हुंदा कि वखत की है ताँ की उह दस नहीं सी सकदे? ज़ाहिर है कि ओसे सवालाँ दा जवाब लभिआ ही नहीं जा सकदा। इह सवाल ही ग़लत हन किउंकि इह उही दस सकदा है जो चशमदीद गवाह होवे। जद इह सृसटी साजी गई ताँ उस वेले उथे कोई होर वेखण वाला नहीं सी जो इहना सवालाँ दे जवाब सही दे सके। इस बहिस नूं छडदे, इह 'तूं' नाल नहीं जोड़दी, इहदे नाल "मैं" वध रही है। इह सिरफ उहनूं ही पता है जिसने सारा कुझ बणाइआ है, और जे तूं जान वी लवें ताँ तेरा इस नाल कुझ भला नहीं
होणा। इह ओवें दिमाग़ दी खुजली है।

"किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥"

जदों तों काइनात बणी है कईआँ ने इह कोशिश कीती है, तुहाँ तुहाँ दे अंदाज़े कीते हन पर कोई कुझ नहीं कहि सकदा। दुनीआँ विच बड़े बड़े सिआणे आके चले गओ, वध तों वध सिआणपाँ रखण वाले वी इस उपराले विच नाकाम रहे
हन। प्रमातमा नूं जाणिआ नहीं जा सकदा, उसदी कुदरत दा अंदाज़ा नहीं लगाइआ जा सकदा।

वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

भाव कि उह जो सभ तों वडा है, जिसदा नाम सभ तों वडा है, इह धिआन रख जो वी है सभ कुझ उसदे हुकम विच हो रिहा है, कीता नहीं जा रिहा। अते जिहड़ा इह गल नहीं छडदा कि मैं ताँ उसदे भेदाँ दा पता करके छडणा है, उह इथे ताँ भाँवे थोड़ी जिही शोभा पा लवे पर उसदे दरबार विच प्रवानगी नहीं है, उत्थे मैं कहिण वाले नूं प्रवानगी नहीं है। उत्थे सिरफ तूं कहिण वाले नूं प्रवानगी है।

(अंक २२-२३)

असीं २१वीं पाउड़ी दे विच इिह विचार रहे साँ:
"किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥"

इिह इिशारा सी कि जिस चीज़ नूं कहिआ जा नहीं सकदा, जिस नूं बिआन कीता नहीं जा सकदा, जो इिनसान दी बणाई होई भाशा दे विच आ ही नहीं सकदा ताँ उह कोशिश ही किउं करनी। इिस दे नालों इिह चंगा है कि उस दे अगे सिर झुका दिता जाओ, (Surrender) कर दिता जाओ, आपणा बल हार दिता जाओ। गुरबाणी दा फुरमान है:

"बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥
जिनि माणस ते देवते कीओ करत न लागी वार ॥१॥"
(पन्ना ४६२)

बलिहारी (बलि+हारीरू भाव कि गुरदेव दे साहमणे ताँ आपणा बल सदा लई हार देणा है, किउंकि जिस दिन उह मिहराँ दे घर विच आइिआ उह इिनसान तों देवता बणा देवेगा। उहदे लई इिह कोई मुशकल गल नहीं, शरत इिह है कि उस दे दर ते आ के, इिह रोणा ते रो। प्रंतू रोणे ताँ इिह रोंदा हैं कि नौकरी ठीक नहीं लगी, कोल दौलत नहीं है, धीआँ पुतर सेवा करन वाले नहीं हन, आदि। जदों गलाँ ही इिहो जिहीआँ हन ताँ ज़ाहिर है कि देवता बणन दा अजे चाउ ही पैदा नहीं होइिआ। दिमाग़ी अंदाज़े लगाओ जा रहे हन कि उह बहुत वडा है पर इिसदा ताँ पता ही नहीं लग सकदा कि उह कितना कु वडा है। महाराज ने बाणी विच इिशारा कीता:

"सुणि वडा आखै सभु कोइि ॥
केवडु वडा डीठा होइि ॥" (पन्ना ६)

इिह ताँ किसे ने कहि दिता है अते सुण लइिआ गइिआ है कि उह बहुत वडा है। अगर सही रूप विच वडा कहिणा चाहुंदा हैं ताँ तैनूं उस नूं वडा कहिण दा उस दिन हक होओगा जिस दिन उसनूं खुद वेख लओगा। ओवें सुणी सुणाई नकल मारी जा रही है। उसदे दरशन करन दी अजे तक अंदर इिह चाउ ही पैदा नहीं होइिआ। अंदर इिह तड़प पैदा होवे कि तूं वी वेख के इिह कहि सकें कि उह बहुत वडा है। नकल मारन वालिआ लई गुरबाणी ने कहिआ है:

"जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥
वडा न होवै घाटि न जाइि ॥" (पन्ना ६)

अगर सारे ब्रहिमंड दे जीव इिकठे हो के इिक आवाज़ विच कहिण कि तूं बहुत वडा हैं, ताँ की उह कहिण करके वडा होइिआ है। जे सारे इिह कहिणा शुरू कर देण ताँ की उहनाँ दे कहिण नाल वडा हो जावेगा। जे उह वडा ना कहिण बलकि उह सारे मिल के कहिण लग पैण, तूं बहुत छोटा हैं, तूं कुझ वी नहीं ताँ की उह छोटा हो जाओगा? इिह बिलकुल नहीं हो सकदा। उस दी अनंतता दा इिह दिमाग़, इिह ज़ुबान कोई अंत नहीं पा सकदी किउंकि उसनूं जानण दे लई उहदे विच अभेद होणा
पैंदा है। पर जदों अभेद हो जाओ ताँ फिर कहिआ नहीं जा
सकदा। कहिण वाला ही मिट जाँदा है। इिथों अगला अंक शुरू हुंदा है। इिथे फिर याद दिलाइिआ जाँदा है कि इितनी भूमिका इिस करके बन्नी गई है ताँ पता लग जाओ कि किस तराँ इिहनाँ सारिआँ दी लड़ी बणी होई है। इिह किस तराँ इिक धागे विच परोओ होओ हन। इिकीवें अंक विच कहिआ है, इिह कहिआ नहीं जा सकदा। जिहड़े कहिंदे ने उह दुनीआँ दे विच भावें कोई शोभा लै लैण उस दी दरगाह दे विच शोभा नहीं पा सकदे। उह कहिआ किउं नहीं जा सकदा इिसदे जवाब विच अगले २ अंक हन:

"पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥ ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इिक वात ॥ सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इिकु धातु ॥ लेखा होइि त लिखीओ लेखै होइि विणासु ॥ नानक वडा आखीओ आपे जाणै आपु ॥ २२॥"
(इिस ब्रहिमंड विच अनेकाँ ग्रहि, अनेकाँ असमान, अते अनेकाँ पाताल हन। इिहनाँ दी संपूरन गिणती लभण वाले थक गओ हन। सारे ग्रंथाँ ने इिको ही गल कही है के जेकर ब्रहिमंड विच इिह गिणती कीती जा सकदी ताँ इिह जरूर लिख दिती जाँदी। इिसदे उलट लेखा करन वाले ही नास हो गओ हन पर इिह लेखा पूरा नहीं कर सके। उह कितना कू वडा है, बस उही जाणदा है।)

"सालाही सालाहि ओती सुरति न पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥ समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥"
(उसदे गीत गाण विच डुबे होओ जीव इतना वी नहीं समझदे कि नदीआँ नाले समुंदर विच डिग ताँ सकदे हन पर उसनूं जाण नहीं सकदे। भाव कि जीव वी प्रभू दा फिर हिसा ताँ बण सकदा है, पर उसनूं जाण नही सकदा। सो उह प्रमातमा इक समुंदर वाँग है, उस कोल पहाड़ा जेडे कीमती खजाने हन। जे कोई कीड़ी वी उसदी याद हमेशा लई आपणे दिल विच वसा लवे ताँ इक आम जीव उस कीड़ी तों वी नीवाँ गिणिआ जाओगा।)

गुरबाणी इतनी सादगी नाल कितनी वडी गुंझल नूं हल कर रही है। वेखण नूं इह बड़ी छोटी जिही गल लगदी है पर जदों गहिराई विच जाईओ ताँ मूंह तों सवाइ वाह वाह तोंं कुझ निकलदा ही नहीं। इशारे वल ज़रा धिआन करो कि उसनूं कहिआ किउं नहीं जा सकदा। दरिआ दा पाणी चल रहिआ
है। उस पाणी नूं समुंदर वल जाण दी खिच है, किउंकि उह समुंदर दी विशालता नूं मानणा चाहुंदा है, समुंदर नूं देखणा चाहुंदा है। समुंदर दे विचों उह आइिआ है, उह पहिचानणा चाहुंदा है कि मैं समुंदर दे विच पै के देखाँ कि इह कितना कु वडा है। हुण बिरती इकागर करके ते आपणे अंदर तसवीर पैदा करो कि इथे इक समुंदर दा किनारा है ते दरिआ दी उह बूंद किनारे ते पहुंच गई है। हुण उह समुंदर नूं देख रही
है। जितना चिर उह बाहर किनारे ते खड़ी होई है उतनी देर उहनूं समुंदर कितना वडा है बारे कोई जाणकारी नहीं हो सकदी। पर इतना कहि सकदी है कि इह समुंदर है। हुण जेकर जानण लई उस विच उह छाल मार देवे ताँ उस बूंद दा की बणेगा? उसदी कोई होंद ही नहीं रहि जाओगी। जितना चिर उह बाहर सी उतनी देर उसदी इक हद (Boundary)
है। जद तक हद है उतनाँ चिर उह आपणे आप नूं "है" कहि सकदी है। पर जे उह समुंदर विच छलाँग लगा देवे ताँ उह उसदा हिसा हो जाओगी। हुण बूंद दी बउंडरी ख़तम हो
जाओगी। हुण नाँ ते उह बाहर आ सकदी है अते नाँ ही समुंदर बारे कुझ कहि सकदी है। गुरबाणी दस रही है कि इही भेद है, जिहड़ा वी गिआनी, जिहड़ा वी तपसवी भगती करके उथों तक पहुंचदा है उह उस बूंद वरगा बण जाँदा है। जे उहदे मन विच इह चाउ पैदा हो जाओ कि मैं इसदा सवाद वेख लवाँ ताँ उहनूं छलाँग लगाउणी पैंदी है। जदों उह छलाँग लगाउंदा है ताँ उहदे विच ही समा जाँदा है। हुण वापस नहीं आ सकदा। जेकर वापस आ भी सके ताँ वी कुझ दस नहीं सकदा कि उह कितना वडा है। जदों समुंदर विच डिग गओ ताँ वी उह जाणिआ जा नहीं सकदा, इस भेद नूं समझण दी लोड़ है।

"पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥"

अज दा साइंसदान कोशिस कर रहिआ है कि उसनूं पता लग जाओ कि कितने ग्रहि, सितारे, अते ब्रहमंड हन। पर इतनी तरकी कर लैण दे बावजूद वी इह गिणती पूरी नहीं हो रही। गुरबाणी ने अज तों ५०० साल पहिलाँ इह कहि दिता कि हे जीव इस चकर विच ना पै। तुहाडी कोई खोज इह भेद नहीं पा सकेगी। जदों तों काइनात बणी है इनसान ने इह ज़िद नहीं छडी कि उसदी कुदरत दा बिलकुल पूरा हिसाब करके रहिणा है। पर हर वेद ने, हर ग्रंथ ने इक ही गल कही है कि सारी खोज दा निचोड़ इही निकलदा है कि इह बिआन ताँ ही कीता जा सकदा है जे कोई करन जोगा होवे। बिआन
करन वाले आओ ते कर के चले गओ, लेखे करदे करदे नाश हो गओ। उहनाँ ने पूरे जीवन बरबाद कर लओ पर लेखा नहीं कर सके। इह लेखा हो नहीं सकदा कि उह कितना कु वडा है। साडा वडा कहिणा वी किसे कंम नहीं है किउंकि उह वी उधारा गिआन है। खुद नूं ताँ कुझ पता ही नहीं। सानूं ताँ सिरफ उसदे नाम सिमरन विच लगणा चाहीदा सी, उस दी भगती विच लगणा चाहीदा सी। बजाइ इस दे कि असीं इस गिणती विच लग जाईओ, जिस कंम लई इनसानी सरीर मिलिआ है, उस कंम विच लगाउणा चाहीदा सी।

उस दी शोभा करदिआँ करदिआँ, उस दे गीत गाउंदिआँ गाउंदिआँ इनसान नूं अजे तक इतनी वी होश नहीं आई कि जे नदी कोशिश करे समुंदर दी थाह लैण दी ताँ उस विच डिग ताँ सकदी है, पर उसदा भेद नहीं हासल कर सकदी, इह हो नहीं सकदा। उसदा हिसा बण सकदी है, उह आनंद माण सकदी है जिस नूं ब्रहम गिआनी सत चित आनंद कहिंदे हन। उसदा सवाद लै सकदी है जिस नूं गुरबाणी विसमाद दी अवसथा कहिंदी है, समाधी दी अवसथा कहिंदी है। उस अवसथा ते जाइिआ ता जा सकदा हैं, पर उस नूं बिआन नहीं कीता जा सकदा। उह शकती, उह ओनरजी ओसी है कि सारा कुझ उसदा ही हिसा है, अते जिहड़ा इक हिसा है, इक पारट है उह सारे नूं जाण नहीं सकदा। हर इनसान प्रमातमा दा इक मामूली जिहा हिसा है, इह ताँ किसे गिणती विच ही
नहीं। इह सारी काइनात दे विच जिहड़े बड़े बड़े हिसे हन, उह वी सारे दे बराबर नहीं हो सकदे, पूरे नूं नहीं समझ सकदे। जिहड़ा इह कोशिश नहीं छडदा उह इक छोटी जिही कीड़ी दे बराबर वी नहीं रहि जाँदा, जिस कीड़ी दे हिरदे विच उसदा वासा हो गइिआ है, अते उह भगती अते सिमरन विच डुबी होई है। ब्रहम गिआनीआँ वाँगूं विचरन वाले कहिंदे हन कि उह इक

जिहड़ी छोटी जिहड़ी कीड़ी है ना, जेकर उह कीड़ी वी उस दे नाम नाल जुड़ जावे ताँ उह कीड़ी उस ब्रहमा नालों उची अवसथा रखदी है जिसने चार वेद लिखे हन। जेकर इिक कीड़ी दे मन विचों उह नहीं भुलदा नहीं है ताँ उह वी उस इिनसान नालों उतम है जिहड़ा कुदरत दी गिणती विच ही फसिआ होइिआ है।

इिथे सावधान रहिण दी बड़ी ज़रूरत है। उपर वाले विचार दा इिह भाव नहीं लै लैणा कि होर जूनाँ वी भगती कर सकदीआँ हन। इिसतों भाव इिह नहीं कढणा कि कीड़ी वी ब्रहम गिआन नूं प्रापत हो सकदी है। इिह सिरफ इिक अळंकार है, मिसाल वजों शबद वरते गओ हन। कीड़ी धरती ते नज़र आउण वाला सभ तों छोटा कीड़ा है। इिक तुछ हसती परमातमा दी भगती नाल कितनी महान गिणी जा सकदी है उसदी इिक तसवीर खिची जा रही है।

(अंक २४)

पिछे असीं विचार कीती है कि हे गुरसिख तेरे हिरदे विच इह गल घर कर जाणी चाहीदी है कि नदी समुंदर दे विच डिग ते सकदी है, समुंदर दा हिसा ते बण सकदी है, पर समुंदर दी गहिराई नूं, उह कितना वडा है, कितना गहिरा है, कितना छोटा है, उसदा कुझ अहिसास कर नहीं सकदी। इस गल नूं आपणे हिरदे विच वसा कि नदी उस विच सिरफ मर मिट ही सकदी है, होर कुझ नहीं कर सकदी। इसे तरृाँ ही हर ब्रहम गिआनी, हर जगियासू दा बिलकुल इही हाल हुंदा
है। जदों यातरा शुरू हुंदी है, उह इथों शुरू हुंदी है कि मैं जानणा चाहुंदा हाँ। उस समें "मैं" बड़ी वडी हुंदी है, मैं जानणा चाहुंदा हाँ। पर जदों उह शबद दी गहिराई विच जाणा शुरू करदा है, इस समुंदर दी गहिराई विच जाणा शुरू करदा है, ताँ सच जाणिओ जिवें-जिवें इसदी गहिराई विच जाँदा है, ताँ जानण वाला मरना शुरू हो जाँदा है, मिटणा शुरू हो जाँदा
है। उसदी उह 'मैं' मरनी शुरू हो जाँदी है। जितनाँ ज़िआदा उसदे बारे विचार करदा है, जितना होर उसदे बारे सोचदा है उह उतना ही होर वधदा जाँदा है। इस तरृाँ हौली-हौली सवाल करन वाला ही मर जाँदा है, पर जवाब नहीं आउंदा। उसदे विच मिट जाँदा है, उसदा हिसा बण जाँदा है, उस विच समा जाँदा है। इसे विचार दा होर खुलासा गुरबाणी अगले अंक विच करदी है:

"अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥ अंतु न जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥ अंत कारणि केते बिललाहि ॥ ता के अंत न पाओ जाहि ॥ ओहु अंतु न जाणै कोइ ॥ बहुता कहीओ बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ ओवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥"
(उसदीआँ सिफताँ दा कोई अंत नहीं है, उसदीआँ दाताँ बेअंत हन, उसदीआँ बणाईआँ होईआँ वेखण अते सुणन वालीआँ चीजाँ बेअंत हन, उसदे मन विच की है इसदा थाह नहीं पाइआ जा सकदा, बेअंत ही उसदे बणाओ आकार हन, अते उसदी काइनात दी कोई हद नही। इस हद नूं खोजण वाले वी बेअंत हन। इह बेअंतताई बारे कोई नही जाण सकदा किउकि जितना वी इनसान कहि सकदा है उह उसतों वी बहुत वडा है। उह साहिब वडा है अते उसदा असथान वी वडा है; सभ नावाँ तों उसदा नाम वडा है। उस जितना वडा बणके ही उसनूं जाणिआ जा सकदा है। उह आप ही आपणे आप नुं सही तौर ते जाणदा है अते साडे लई सभ दाताँ उस दी मिहर सदका आँउंदीआँ हन।)

जे सोचिआ जाओ ताँ गल ते इतने विच ही ख़तम हो जाँदी है, 'अंतु न सिफती कहणि न अंतु'। जेकर तुसीं उसदीआँ सिफताँ करनीआँ शुरू करो ताँ किथे जा के कहोगे कि हुण उहदीआँ सिफताँ पूरीआँ हो गईआँ हन। तुहाडे कोल की माप है, की हद है (Boundary) है जिथे पहुंचके इह कहि सको कि मैं प्रमातमा दे सारे गुण गिण लओ हन। जदों ब्रहमाँ नूं इह गल कही गई कि तूं हज़ाराँ सालाँ दी उमर दे विच उसदीआँ सिफताँ करदा रहिआ हैं, उसदी कुदरत नूं भालदा रहिआ है, तूं ते मरन वेले बहुत ही शाँत होओंगा। ताँ मरन वेले उसदे मूहों निकलिआ 'नेती, नेती' भाव मैं नहीं लिख सकिआ, मैं कुझ नहीं कर सकिआ। गुरबाणी विच इथों तक इशारा कीता गइआ है:

"नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥ मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥ भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥" (पन्ना १५)

भाव कि अगर हवा कलम बण जाओ, समुंदर दा पाणी सिआही बण जाओ, अते सारी धरती दा कागज़ इकठा कर लइिआ ताँ वी उसदी सिफत लिखी नहीं जा सकदी। आखिरकार, अगर कोई ज़िआदा तों ज़िआदा हिंमत करेगा वी ताँ उह केवल इस धरती उते जो नज़र आउंदा उसदी ही गल कर सकेगा। पर सिशसटी विच ताँ अनगिणत ब्रहमंड हन। जिहड़ा ग्रहि कदे वेखिआ ही नहीं उसदे बारे किस तरृाँ कुझ कहोगे? जिसदी होंद दा ही अहिसास नहीं, उसनूं किवें बिआन करोगे? गुरबाणी ने छोटी जिही मिसाल लै के समझाइिआ कि जिस तरृाँ इक मसताना मसती विच नचण लग पैंदा है इसेतरृाँ इक ब्रहम गिआनी कुदरत नूं वेखदा होइिआ विसमाद विच नचण लग पैंदा है, गाण लग पैंदा है, आप मुहारा हो जाँदा है। कीहदी कीहदी सिफत करोगे? तुसीं इक चीज़ नूं ही लै लउ:

आसा दी वार विच इशारा कीता गइिआ है:

'विसमादु नादु'। गल ओथों शुरू कीती है, तुसीं आपणे दिमाग़ नाल गिण के दसो कि जितनीआँ आवाज़ाँ तुसीं सुण सकदे हो, की तुसीं उहनाँ सारीआँ आवाज़ाँ दी गिणती कर सकदे हो? अजदा साइंसदान वी इह जाणदा है कि जिस तरृाँ हर इनसान दे अंगूठे दीआँ लाईनाँ दूजे नालों वखरीआँ हन इसेतरृाँ हर इनसान दी अवाज़ वी दूजे नालों अलग है। हर पंछी दी, हर जानवर दी, हर चीज़ दी, आवाज़ इक दूजे नाल नहीं मिलदी। इह इतनी हैरानी दी गल है कि तुसीं भावें किसे दा चिहरा न वेख सको, भावें

उह बोले वी न, दरवाज़े तों अजे तुहाडे घर दे अंदर आइिआ वी ना होवे, फिर वी तुसीं उहदे पैराँ दी आहट पहिचाणके कहि दिंदे हो फलाणा आ रिहा है। उसदे पैराँ दी आवाज़ वी विलखणी है। सो गुरबाणी ने इशारा कीता कि उसदीआँ बणाईआँ होईआँ तुसीं अवाज़ा ही नहीं गिण सकदे होर सारी काइनात दी गिणती किवें होवेगी? इसे करके इक समझदार इतनी जिही गल नूं सोचदिआँ ही विसमाद दी अवसथा विच चला जाँदा है, उह इस गिणती दे चकर विच ही नहीं पैंदा।

गुरबाणी बार-बार मिसालाँ दे के साडी मदद कर रही है कि किसे तरीके नाल हंकार नीवाँ हो सके। किसे दलील दे नाल, किसे मिसाल दे नाल सिर झुक सके। संगत विच मुछाँ नूं ताअ दे के नहीं बलकि अखाँ नीवीआँ करके आउण दी जाच आवे। संगत विच ताँ गुर शबद नाल जुड़न लई जाईदा है, उथे ते मन बहुत नीवाँ होणा चाहीदा है, नहीं ताँ इह सभ कुझ इक करम काँड बणके रहि जाओगा। इही इनसान दी हाउमें दी शिनी है कि उह कुदरत दे रंगाँ दीआँ गिणतीआँ करनो नहीं हटदा? इह इक सूची (List) बणाके पेश कीती गई है:

"अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥"

ओ गुरसिख इस गल नूं हिरदे विच वसा कि तूं जिस नाल जुड़न दी कोशिश कर रिहा हैं, जिसदे नाल पहिचाण पैदा करन दी कोशिश कर रिहा हैं, जिस दे नाल रिशता बणाउण दी कोशिश कर रिहा हैं, उह बेअंत है। उसदे साहमणे आपणी शकती नूं, आपणे बल नूं हारना पओगा। 'बलिहारी गुर आपणे' असीं इहदा मतलब कढ लइिआ है कि मैं उहदे तों बलिहार जाँदा हाँ। जिसनूं कदी वेखिआ ही नहीं उहदे तों बलिहार नहीं जाइिआ जा सकदा। छोटा जिहा बचा है, उहनूं गल नाल लगाइिआ गइिआ है, बड़ा पिआर आउंदा है माँ उस बचे तों वारे वारे जाँदी है, आपणे कोलों जो इतना महान होवे उसतों बलिहारी नहीं हो सकीदा। गुरबाणी कुझ होर कहि रही है, असाँ कुझ होर बणा दिता है। गुरदेव कहि रहे हन कि जे गुरू दे घर दर ते आइिआ हैं ताँ हमेशा लई बल नूं हार दे, सदा लई हंकार नूं तिलाँजली दे दे। उस प्रमातमा ने तैनूं मनुख जनम ते दे दिता है, सरीर ते दे दिता है, हुण तेरी यातरा अगे नूं चले। तूं ओथे ही न रुक जाओं। तूं करम इंदरीआँ दा सुआद लैंदा लैंदा ओसे चीज़ विच ही न गुआच जाओ। जे किते तेरे दिल विचों उह हाड़ा निकल पइिआ, अगर तेरे दिल विचों उह चाँगर निकल पई, रोणा निकल पइिआ ताँ उहदे वस सारा कुझ है, उह तेरी काँइिआ ही पलट देण दी शकती रखदा है।

उसदीआँ सिफताँ अते उहनाँ सिफताँ नूं कहिण वालिआँ दी कोई गिणती नहीं कीती जा सकदी, उसदीआँ करनीआँ अते दाताँ दी, वेखण वाले नज़ारे, अते सुणन वालीआँ आवाज़ाँ दा कोई अंत नहीं है। उसदे मन विच की विचार हन, उहनाँ नूं कोई नहीं जाण सकदा। जितना इसनूं गिणदा जाओंगा, इह होर वधदा जाओगा, इहदा अंत नहीं होणा। इहदी हद (Limit) ते तूं नहीं पहुंच सकेंगा। उह कितना वडा है, इह गल प्रमातमा खुद वी नहीं दस सकदा। किउंकि जे उह तुहानूं दसण लगे ताँ उसदी हद तक (Boundary ते) जाणा पओगा पर उहदी कोई हद है ही नहीं। उसदा कंम कदी पूरा हो ही नहीं सकदा। उह अज वी बणा रहिआ है, पाल रहिआ है अते नाश कर रहिआ है। इह खेल्ह कदी ख़तम होण वाला नहीं है।

अंतु न जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥
अंत कारणि केते बिललाहि ॥ ता के अंत न पाओ जाहि ॥
ओहु अंतु न जाणै कोइि ॥ बहुता कहीओ बहुता होइि ॥

उसदे बणाओ होओ जीव जंताँ दा अते उसदे फैलाउ दा वी कोई अंत नहीं है। जिहड़े जीव इस अंत नूं लभण विच गवाचे होओ हन उहनाँ दी वी कोई गिणती नहीं है। जद तों सृशटी बणी है, इनसान ने इह हार मन्नी ही नहीं कि उसदा अंत नहीं पाइिआ जा सकदा। सिरफ इक भगत ही इह गल मन्नदा है। आम जीव ताँ इही कहिंदा है कि जे अज नहीं ते कल तक ज़रूर भेद खुल्ह जाओगा, जे इस साल नहीं ताँ अगले साल सही, जे इस सदी विच नहीं ताँ अगली सदी विच सही, मूल की इनसान दा हंकार उसनूं आपणी हार सवीकार करन ही नहीं देंदा। गुरबाणी गुरसिख दे दिल दिमाग़ उते बार-बार चोट मार रही है अते कहि रही है कि तूं इस चकर विच न फस। इस भेद नूं कोई नहीं जाणदा अते नाँ ही जाण सकदा है।

"वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
ओवडु ऊचा होवै कोइि ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइि ॥"

प्रमातमा तों सभ कुझ नीवाँ है। गुरबाणी इशारा कर रही है कि जेकर तूं उस उचाई नूं वेखणा चाहुंदा हैं ताँ पहिले उहदे जिडा उ्चा हो। उस उचाई वल लै के जाँदा है उसदा नाँम। इस तुकदा तरजमाँ (translation) इह नहीं है कि उहदे नालों

उसदा नाम उ`चा है। इिह इिक बड़ी आम गल है कि अगर मैं चीज़ चुक के किसे उची जगह ते रख देवाँ ताँ उस चीज़ नूं वेखण लई हर इिकनूं पौड़ी ला के उस उची जगह तक जाणा पवेगा भाव उन्नाँ नूं उपर उठणा पओगा। ज़मीन दे तल ते बैठा होइिआ इिनसान उस चीज़ नूं नहीं वेख सकदा। इिसेत्ताँ जे जगिआसू दे मन विच चाउ पैदा हो गिआ है कि उह उस बुलंदी नूं जानणा चाहुंदा है ताँ फिर उस बुलंदी तक उपर उठणा पवेगा। उ`थे तक उपर जाण लई उसेदे उचे नाम दा आसरा लैणा पवेगा। जिवें-जिवें उहदे नाम दा आसरा लै के सुरती दीआँ पौड़ीआँ ते उपर चढ़ेंगा तिवें तिवें उहदे लागे पहुंचदा जाँओगा। जदों तूं उ`थे पहुंचिउं उहदी निशानी इिह है कि तूं होणा ही नहीं। तूं उहदा हिसा ही बण जाणा है। जिनाँ चिर तूं उथों तक नहीं पहुंचिआ, उन्नाँ चिर उहदी जाण-पहिचाण नहीं हो सकदी।

"जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥"

आखर ते गुरदेव फैसला देंदे हन कि किते इिह भुलेखा न पै जाओ कि तूं करन वाला हैं। इिह ना समझके बैठ जाँई कि मैं प्रमातमा नूं पाउण लई चलिआ हाँ। मैं भगत बणन लगा हाँ, मैं नाम जप रहिआ हाँ आदि किते तेरे मन विच इिह हंकार न आ जाओ। इिह है उसदी दात, इिह है उसदा प्रसाद पर तूं उस प्रसाद दे काबल बण। तूं आपणे तन-मन दे भाँडे नूं कूचा मार। इिहदे विच सफाई कर, उसदी किरपा हमेशा वस रही है। जे अजे तेरा भाँडा खाली है ताँ झाती मार किते भाँडा ऊंधा ते नहीं रखिआ होइिआ। जाँ भाँडे विच कुझ होर ते नहीं पइिआ होइिआ। इिक सूफी फकीर दे बारे गाथा है:

इिक सूफी फकीर रोज़ मसजिद विच जा के कहिआ करदा सी, "अलाह तूं कैसा मितर हैं। इिक मितर नूं इिक वाराँ बुलाईओ ते उह दस वाराँ घर आउण लई तिआर हुंदा है। तैनूं बुलाँदिआँ नूं मेरी सारी उमर गुज़र गई है पर तूं आउंदा ही नहीं।" इिक दिन अचानक अलाह साहमणे आ गइिआ। अलाह ने कहिआ कि दस तैनूं की चाहीदा है। फकीर हैरान हो गइिआ कि उह जिसनूं बुलाउंदा सी उही आ गिआ
है। फकीर ने कहिआ "मैनूं होर कुझ नहीं चाहीदा। मैं ते सिरफ थोड़ी देर लई तेरी सेवा करना चाहुंदा हाँ, तूं मेरे घर चल।" फकीर अगे-अगे हो तुरिआ, अलाह पिछे-पिछे तुरिआ आ रहिआ है। जिस वेले फकीर घर दे लागे पहुंचण लगा ते अलाह ने अवाज़ मारी "शेख जी घर वालिआँ नूं पता वी है किस नूं नाल लै के आ रहे हो; तेरे घर विच बहिण जोगी जग्ना वी है?" ताँ फकीर ने अलाह नूं कहिआ, "अछा आप ज़रा इिथे बाहर रुको, मैं घर दे अंदर जा के वेखदा हाँ" फकीर ने अजे घर दे दरवाज़े विच पैर ही रखिआ सी उथे हंकार बैठा दिस
पइिआ। सूफी ने हंकार अगे हथ जोड़के कहिआ कि "अज मेरे घर अलाह आइिआ है, इिह जग्ना थोड़ी देर लई खाली करदे।" हंकार ने जवाब दिता " की तेरी मत मारी गई है। तूं कैसा नमक हराम हैं। मेरा तेरा उमराँ दा साथ है। पता नहीं किहनूं फड़के लै आइिआ हैं। जे मैं न हुंदा ताँ दुनीआँ तैनूं कचा खा जाँदी।" फकीर हंकार दीआँ दलीलाँ सुण-सुण के कंब गइिआ ते दूजे पासे झाती मारी, ताँ उथे मोह बैठा होइिआ सी। फकीर ने उहदे अगे हथ जोड़े कि तूं ही थोड़ी जिही जग्ना छड दे। अगों मोह ने कहिआ "अगर मैं न हुंदा ते तूं परिवार नूं किस तन्नाँ पालदा।" जे करोध नूं किहा ते उह कहिण लगा जे मैं न हुंदा ते जो कमाई करदा सी उह किसे गुआँढी ने लुट जाइिआ करनी
सी। भाव कि फकीर उहनाँ पंजाँ (काम, क्रोध, मोह, लोभ, हंकार) दे नाल लड़दा रहिआ अते अलाह इिंतज़ार करके वापस चला गइिआ। अलाह ने फकीर नूं जाण लगिआँ कहिआ हुण जदों घर खाली होवेगा ताँ ही आवाज़ लगाईं। अलाह ते सदा आउण लई तिआर है, उह ते है ही ओथे। उह ते कदी किते गइिआ ही नहीं सी। लभण उसनूं जाईदा है जिहड़ा गुआचा होवे। ते जिहड़ा है ही इिथे उहनूं बुलाउणा किथे है, बस घर विच जग्ना ही नहीं है। भाँडा ही मूधा पइिआ है; बाणी दा फैसला है:

"कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइिक देदे तोटि नाही भंडार ॥
ऊंधै भाँडै कछु न समावै सीधै अंमृतु परै निहार ॥"

(पन्ना ५०४)

ऊंधे भाँडे दी निशानी है उहदा सैंटर उ`चा हो
जाँदा है जे भाँडा सिधा पइिआ होवे उहदा सैंटर नीवाँ हुंदा
है। इिनसान दे सैंटर उचा होण तों भाव है हाउमें दा जाग
जाणा। गुरबाणी इिशारा कर रही है कि जेकर तेरे सरीर रूपी भाँडे दा मूंह ही उलटा है ताँ तेरे हंकार दा अजे पला नीवाँ नहीं होइिआ है। उसदी किरपा दा मींह ते हमेशा वन्न रिहा है, सारिआँ लई वन्न रिहा है। उहनूं बुलाउण दी लोड़ नहीं, उह कदी गुआचिआ ही नहीं सी। इिस भुलेखे विच ना पइिआ करो कि उहदी क्रिपा होओगी ते फेर इिह कुझ होओगा। जिवें गुरबाणी दा मुखवाक है:

"जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी

सो दुखु कैसा पावै ॥'' (पन्ना ७४६)

इस तुक दी परचलत विआखिआ है: ''हे मेरे मालक प्रभू! जिस मनुख दे सिर उते तूं (हथ रखें) उस नूं कोई दुख नहीं विआपदा।'' सोचण दी गल है जिसनूं दुख आ रिहा है की उहदे सिर उते प्रमातमा दा हथ नहीं है? जिहड़ा हसपताल विच कैंसर नाल तड़प रहिआ है उसदा प्रमातमा किथे चला गइिआ है? गुरबाणी दा मतलब इिह कदी नहीं हो सकदा। सानूं गुरबाणी दीआँ गहिराईआँ विच जाण दी ज़रूरत है, इिकली विआकरन ब्रहम गिआन दा कंम पूरा नहीं कर सकदी। इिथे ''सिर ऊपरि'' तों इिशारा दसम दवार वल कीता गइिआ है, भाव जिसदे दसम दवार विचों उह प्रगट हो जाओ उह दुख सुख तों उपर उठ जाँदा है। सुख दुख दोंवे इिको जिहे हो जाँदे
हन। इिह इिक आतमिक उचाई दी गल हो रही है, आम सिर उते हथ रखे होओ वल इिशारा नहीं है। गुरबाणी कहि रही है जिसने आपणा दसम दवार खोल्ह लइिआ है जाँ जिस दे सिर उपर तूं प्रगट हो गइिआ हैं, हुण उसनूं सुख दुख नाल कोई मतलब नहीं रहि गइिआ।

सो गुरदेव सानूं इिशारा कर रहे हन कि भोलिआ, इिस गल नूं याद रख लै। नाम जपण लगिआँ, जाँ भगती करन लगिआँ तेरे मन विच इिह हंकार न आ जाओ कि तूं कर रिहा हैं। उसदी क्रिपा दी निशानी इिह है:

''किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥''
(पन्ना ४६६)

जिहड़ा उसदे शबद दी कमाई विच जुड़ गइिआ समझ लउ उस उते सही किरपा हो गई है। धिआन देण दी ज़रूरत है कि इिथे गाओ नहीं, सुणाओ नहीं, समझाओ शबद नहीं वरतिआ गइिआ। जदों कमाओ, उह क्रिपा दी निशानी है।

जपु जी (अंक २५)

पिछे असीं जपु बाणी दे २४ (Twenty Four) अंक दी विचार कीती सी जिस विच गुरबाणी ने सानूं इशारा कीता सी "जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥" भाव कि आपणी कुदरत बारे सिरफ उही जाणदा है। सो जीव दा बस इतना ही फरज़ है कि उह उसदी किरपा दा पातर बणन दी कोशिस करे। गुरबाणी दा जिहड़ा बुनिआदी (Basic) मुदा है, धुरा है, उस नूं इक इक लाइिन बार-बार दुहराउंदी है, इक इक अखर बार-बार याद दिवाउंदा है। स्री गुरू ग्रंथ साहिब दे सारे ही १४३० पंनिआँ विच इक ही सुनेहा है अते उह है कि जिस करके सरीर क जनम प्रापत कीता सी, उस वाअदे नूं याद कर अते शबद दी कमाई कर ताँ कि जनम-मरन दे चकर विचों हमेशा लई बाहर हो
जाँओं। जीव नूं माइिआ दे भोगाँ ने तमो गुण, रजो गुण, अते सतो गुण, ै गुणाँ दे विच जकड़ लइिआ है। उसनूं तुरीआ अवसथा दा कोई खिआल वी नहीं, गुरबाणी ने चौथा पद किसनूं कहिआ है, ै गुणाँ तों अतीत किवें होणा है, इिस दी किसे कोल विचार ही नहीं रहि गई। सिरफ गलाँ बाताँ नाल ताँ कोई वी कंम दी चीज़ प्रापत नहीं कीती जा सकदी, कुझ घालणा घालणी पैंदी है, कुझ मुशकत करनी पैंदी है। ताँ हुण सवाल उठ जाँदा है कि जे कुझ करम कीतिआँ परमातमा दे दरशन हो सकदे हन, ताँ ओसा किहड़ा कंम है? देखो किआ सवादी गल है; इिसदे जवाब विच गुरबाणी बिलकुल हैरान करन वाली गल कहिंदी है। गुरबाणी ने कहिआ दुनीआँ ते कोई ओसा करम ही नहीं है जिस नाल उस नूं लुभाइिआ जा सके; किउंकि जिस वी करम नाल उस नूं लुभाइिआ जा सकदा है, प्रमातमा उस करम दा ग़ुलाम बण गइिआ। इिस त्रा नाल ताँ उह किरिआ उची हो गई अते जिसदे लई करम कीता जा रहिआ है उह छोटा हो गइिआ। उह करम दा इिनाम बणके रहि गइिआ। जे इिह कहिआ जावे कि मैं भगती कीती ते मैनूं प्रभू मिल गइिआ ताँ इिहदा मतलब इिह होइिआ कि भगती प्रभू नूं लैण दी शकती रखदी है। पर गुरबाणी सानूं बार-बार याद दिलाउंदी है कि इिह गल सही नहीं है। जदों वी इिह होणा है उह है ताँ "नानक नदरी करमी दातु"। जगिआसू नूं इिह भुलेखा नहीं पैणा चाहीदा कि मैं मिहनत कर रहिआ हाँ ताँ मैनूं कोई फल मिल रहिआ है। भगती करनी जाँ नाम जपण दे सिरफ दो कंम हन, तन्न-मन रूपी भाँडे नूं साफ करना अते भाँडे नूं सिधा रखणा, भाव उस विच हाउमें ना पैदा होण देणी। ताँ उस दी मिहर हो सकदी है। पर इिह ज़रूरी वी नहीं कि जदों तुसीं कहो, ओसे वकत उह आ जावे। आवेगा ताँ आपणी मरज़ी नाल ही। ना आउणा चाहे ताँ भावें ना वी आवे:

"दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई ॥"
(पन्ना ६०४)

इिह उस दी मरज़ी है कि इिह दात उसने किसनूं देणी है, जगिआसू इिस विच बिलकुल कोई हुजत नहीं कर सकदा। दुकानदाराँ नाल असीं दलीलबाज़ी कर सकदे हाँ कि उ्थे इिस त्राँ दा माल मिलदा पइिआ है ताँ ओथे इिस त्राँ दा किउं नहीं मिलिआ, इिसत्राँ दा सौदा प्रमातमा नाल नहीं हो सकदा। सो गुरबाणी ने २४ अंक विच सानूं कहिआ सी ''नानक नदरी करमी दात''। उसदी नदर दा पातर जो बणेगा, केवल उस उते ही मिहर हो सकदी है। उ्थों दात मिल जाओ ताँ इिह भगती दी प्रवानगी है, मगर इिह नहीं कहिआ जा सकदा कि इिह मैं कुझ करके पाइिआ है। जिसने वी इिह कहि लइिआ कि मैं कीता है ताँ उसदा भाँडा हुण हाउमें नाल दुबारा भर गइिआ। गुरबाणी झूठा वाअदा नहीं कर सकदी भाँवे ओसी सचाई सुणके किसे दा दिल उ्खड़ जावे। सचाई इिह है कि भगती करना ज़रूरी है, पर जे फल दी आस पहिलाँ ही रख लई ताँ उह करम शुरू तों ही ग़लत हो गइिआ।

"जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥
तब लगु नाही चरन निवास ॥" (पन्ना ११६१)

गुरबाणी ने फैसला दे दिता, कि हे जगिआसू जेकर तेरे मन विच इिह है कि मैं सवरगाँ विच जाणा चाहुंदा हाँ अते इिस करके मैं बंदगी, भगती कर रहिआ हाँ ताँ तूं आपणा इिनाम पहिलाँ ही नीअत कर लइिआ है। अजे कमाई कोई कीती नहीं पर आस पहिलाँ ही रख लई है, इिस त्राँ प्रभू दे दरशन नहीं हो सकदे। सो जेकर इिह गल हो ही नहीं सकदी ताँ फिर जिहड़ी भगती है, उह काहदे लई करनी है?

"भाँडा धोइि बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥
दूधु करम फुनि सुरति समाइिणु होइि निरास जमावहु ॥१॥
जपहु त ओको नामा ॥
अवरि निराफल कामा ॥१॥" (पन्ना ७२८)

ਗੁਰਬਾਣੀ ने सानूं इशारा कीता कि जिहड़ा तैनूं करम करन लई कहिआ जा रहिआ है उह इस करके कहिआ जा रहिआ है कि इहदे नाल तेरा सरीर रूपी भाँडा साफ
होवेगा। जिवें-जिवें तूं नाम जपण विच खुभेंगा, जिहड़ीआँ मन दीआँ सारीआँ बिरतीआँ, शरूतीआँ, करम इंदरीआँ, गिआन इंदरीआँ, आदि अलग-अलग भजीआँ फिरदीआँ हन, उह इकठीआँ होणीआँ शुरू हो जाणगीआँ। अज किसे इंद्री नूं छोहण दा सवाद है, किसे नूं सुनण दा सवाद है, किसे नूं चखण दा सवाद है भाव कि अजे इह करम इंदरीआँ बाहर भजीआँ फिरदीआँ हन। जदों नाम नाल जुड़ेगा, इक शबद दे नाल जुड़ेगा, ताँ इह इंदरीआँ इकठीआँ होणीआँ शुरू हो गईआँ, ताँ मन इकागर होणा शुरू हो जाओगा। अजे मन मरिआ नहीं, सिरफ शाँत होइआ है, इकागर होइआ है; इह अभिआसी दी पहिली अवसथा है।

मन दा इकागर होण तों भाव है जिवें इक खास शीसे दे विचों दी सूरज दीआँ किरनाँ इकठीआँ करके इक कागज़ उते पाईओ ताँ कागज़ नूं अग लग जाँदी है। उह किरनाँ इतनीआँ इकठीआँ हो गईआँ हन कि उहनाँ दा इक बिंदू बण गइआ है अते उस विच इतनी गरमी पैदा हो जाँदी है कि उह कागज़ लई अग बण जाँदीआँ हन। इसे तर्हाँ साडीआँ गिआन इंदरीआँ, साडीआँ करम इंदरीआँ नाम नाल जुड़के हौली-हौली इकठीआँ होणीआँ शुरू हो जाँदीआँ हन। जदों इह इकठीआँ होके इक बिंदू बण जाँदीआँ हन ताँ हुण दूसरी मंज़ल लई तिआरी है, हुण उस मन नूं वी मारना है।

"मनु मारे धातु मरि जाइ ॥ बिनु मूओ कैसे हरि पाइ ॥ मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥"
(पन्ना १५६)

सो मन शबद नाल मरेगा, शबद दे नाल मन नूं जोड़िआ ताँ उहदे नाल भाँडा साफ हो रहिआ है। धिआन जोग है कि मन दे मरन तों गुरबाणी दा भाव है कि उसदी अवसथा इस तर्हाँ नाल बदल जाओ जिवें इक धातू दे मरन नाल बदलदी है। जिवें इक डाकटर लोहे नूं मारके उसदा कुशता बणाउदा है उसे तर्हाँ नाम अभिआसी शबद नाल जुड़के मन दी अवसथा बदलदा है। पर मन विच किते इह ना आ जाओ कि नाम अभिआसी उस करम दा करता है, इसदा खुलासा करन लई अगला अंक शुरू हुंदा है:

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नहीं वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥ जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥
(उसदी किरपा नूं बिआन नहीं कीता जा सकदा अते उस दाते विच किसे तराँ दा कोई सवारथी भाव नहीं है। अनेकाँ सुरबीर उस पासों मंगाँ मंगदे हन। अेसे विचार रखण नालिआँ दी कोई गिणती नही कीती जा सकदी भाव कि मंगण वाले वी अणगिनत हन। कई उसदीआँ दाताँ नूं वेकाराँ विच लगाके बरबाद कर बैठदे हन अते कई ताँ लैके मुकर ही जाँदे हन भाव उहना दे दिल विच उसदा कोई शुकराना नहीं हुंदा। अनेकाँ ही उसदीआँ दाताँ वलों अनजान (मूरख = मूरछत) हन। अनेक तराँ दुख अते सजावाँ वी हन पर उह वी उसदीआँ दाताँ ही हन। हर तराँ दा बंधन अते आज़ादी उसदे हुकम विच है अते हो कोई दूसरा इस बारे कुझ नहीं कहि सकदा। जेकर कोई कचा मानुख कुझ कहिण दा यतन वी करे ताँ उसनूं मूंह दी हार सहिणी पैंदी है। उह आप ही सभ कुझ जाणदा है आप ही सभ नूं देवणहार है इस तराँ दे विचार रखण वाले वी कई हन। उह जिहनाँ नूं आपणी सिफतो सालाह बखश देंदा है उह बादशाहाँ दे वी बादशाह वाँगूं हो जाँदे हन।)

"बहुता करमु लिखिआ ना जाइ"

हर जीव नूं सभ कुझ उसदी किरपा करके प्रापत हुंदा है। उसदी किरपा दा कोई अंत नही इस करके उसनूं बिआन वी नही कीता जा सकदा। जिहड़ा करम उस नूं पा सकदा है उहदा वी कोई बिआन कीता ही नहीं जा सकदा। सारी काइनात दे विच ओसे किसे करम दी होंद ही नहीं है जिहड़ा प्रभू नूं मजबूर कर सके कि इस अभिआसी नूं ते दरशन देणे ही पैणगे। असीं आपणे आम घराँ दी सफाई करदे हाँ, भाँडे माँज के रसोई विच संभाल दिंदे हाँ; पर इह ज़रूरी नहीं कि कोई प्राहुणा ज़रूर ही आवे। पर जे किते प्राहुणा आ ही जाओ ताँ घटो घट रसोई ताँ साफ है, घर ताँ साफ है। जे नहीं ताँ सारे दे सारे टबर नूं हफड़ा दफड़ी पै जाँदी है, बिसतरे चुको, भाँडे चुको, सफाईआँ करो आदि। आम प्राहुणा ते भाँवे किसे कोने ते बैठ जावे, पर प्रमातमा कदी ओसी हालत नूं प्रवान नहीं कर सकदा। इस करके गुरबाणी ने कहिआ कि प्रमातमा भाँवें आवे ना आवे, तूं घर दी सफाई कर ताँ कि जदों उह आवे, उसनूं भाँडा साफ मिले अते खाली मिले। खाली भाँडे विच ही उह आपणा प्रसाद पा सकेगा। पर जे घर ही भरिआ पइआ है, जाँ भाँडा ही मूधा पइआ है, ताँ फिर उह भावें आवे ना आवे, इस विच कोई फरक नहीं पैंदा। उहदा कोई फाइदा ताँ उठाइआ जा नहीं सकदा। उसदा आउणा किसे करम दा गुलाम नहीं है अते उसदी कृपा दी वी कोई हद नहीं है।

"वडा दाता तिलु न तमाइ ॥"

उसदे विच भोरा वी तमा नहीं है भावें उह सारी सृशटी दा दाता है। हर जीव विच त्रै गुण हन, तमो, रजो, अते सतो। इिह त्रै गुण जीव नूं माइिआ विच रखदे हन। जिहड़ा तमो दा गुण है उस दी विशेशता (Quality) है कि सिरफ आपणे बारे ही फिकर कीता जाओ। तमो गुण विच जीवन गुज़ारन वाला बड़ा ही खुदगरज़ हुंदा है। उसनूं आपणे खून्न दे रिशतिआँ दी वी चिंता नहीं हुंदी। उह किसे लई कोई कुरबानी नहीं कर सकदा। उसदी हर चाल विच आपणा ही कोई भला छुपिआ हुंदा है। जिहड़ा रजो गुण है उसदी विशेशता (Quality) है कि आपणे परीवार अते सबंधीआँ दी वी उतनी ही फिकर है, जितनी आपणी फिकर है। हुण धिआन केंदर (Focus) आपणे तों उतर गइिआ है अते निजी परिवार अते नेड़े दे सबंधीआँ अते मि'ाँ उ'ते आ गइिआ है। रजो गुण विचों सेवा भाव पैदा हुंदा है। समाज सेवक अकसर रजो गुणी हुंदे हन। सतो गुण विच आपणा फिकर वी बिलकुल नहीं। आपणे परिवार दा कुझ फिकर है पर उस फिकर नूं संसार दे फिकर तों कुरबान कीता जा सकदा है। उहनूं सारी काइिनात नाल संबंध हो गइिआ है, सारे संसार नाल संबंध हो गइिआ है। इिह तिन्ने ही हालताँ संसार नाल जोड़ी रखदीआँ हन, इिह करतार नाल नहीं जुड़न देंदीआँ। इिस धरती ते सिख धरम पहिला धरम है जिस ने कि नरक-सवरग तों अगे दी गल इितनी खुल्हके कीती है। बाकी जिन्ने धरम हन उह नरक ते सवरग दी गल करदे हन। ब्रहम दे नाल इिक हो जाण दी गल इितने सरल अते सपशट तरीके नाल इिकले सिख धरम कोल आई है। हर धरम इिही कहेगा कि चंगे करम करो, अते माड़े करम छड दिओ। उहदे नाल सवरग मिल जाओगा। पर उह इिह नहीं कहिंदे कि तुसीं जनम-मरन दे चकर विचों निकल जाउगे। इिसे करके बाणी ने फैसला दे दिता ''करमीं आवै कपड़ा'' भाव करम दे विच सिरफ इिको ताकत है कि इिक होर कपड़ा मिल जाँदा है, इिक नवाँ सरीर मिल जाँदा है। जे सतो गुण विच जीवन गुज़ारिआ है ताँ अगला जीवन चंगा गुज़र जाओगा, पर इिस लई जनम लैणा ज़रूरी है। गुरबाणी ने कहिआ कि गुरसिख ने रजो, तमो, अते सतो "ि्अ गुणाँ तों अतीत होणा है किउंकि साडी मंज़िल संसार विच चंगा जीवन पाउणा नहीं है। साडी मंज़िल करतार नाल अभेद होण दी है।

सो जेकर करतार दे कोल पहुंचणा है ताँ पहिलाँ ताँ इिह याद रखणा ज़रूरी है कि कोई 'करम' उहदे कोल लिजा नहीं सकदा। उहदे कोल उसदी मिहर लै के जाँदी है, उसदा प्रसाद लै के जाँदा है। किसे ज़माने विच पंजाब विच खास करके इिह गल सिखाई जाँदी सी जे कोई पुछे ''जी की कर रहे हो'' ताँ इिह नहीं कहिणा ''जी मैं बैठा आराम कर रहिआ हाँ'' इिसतृ्ा नाल मैं होर पकी हो जाँदी है। सो जवाब विच कहिणा है ''आराम हो रहिआ है''। कदी इिस तृ्ाँ सिधा नहीं सी कहिंदे, बलकि कहिणा ''रोटी खाधी जा रही है'', ''कथा कहाणी सुणी जा रही है''[''मैं'' कर नहीं रिहा "मैं" करता नहीं हाँ, "मैं" सुण नहीं रहिआ, भाव कि "मैं" नाल लगाउणी ही नहीं। हउमैं दा सिर बिलकुल शुरू तों ही कट के रखणा है। जीव करता नहीं बण सकदा। जिस दिन करता बण गइिआ उस दिन परमातमा तों दूर हो जाओगा। दुनीआँ दा कोई वी करम लै लउ, जो वी साहमणे आ रहिआ है, जिस दे नाल ''मैं'' लग जाओ उह उसे वेले गुनाह बण जाँदा है। गुरबाणी दा फुरमान है:

"हम अवगुणि भरे ओकु गुणु नाही
अंमृतु छाडि बिखै बिखु खाई ॥" (पन्ना १४०६)

इिहदा असाँ तरजमाँ (translation) कीता होइिआ है कि हे परमातमा मेरे विच ताँ बड़े ही अवगुण हन, मेरे विच ताँ कोई गुण ही नहीं, अते मैं अंमृत छड के विशे विकाराँ दी ज़हिर पी रहिआ हाँ। इिह विआखिआ करन वाले नूं भुल गइिआ है कि गुरबाणी ताँ ब्रहम गिआन है। जे ब्रहम गिआनी आपणे आप नूं इिह कहि सकदा है "हम", ताँ उह ब्रहम गिआनी किस तृ्ाँ रहिआ; अजे ताँ उसदी "मैं" बची होई है। इिथे इिहदा मतलब है जिथे वी 'मैं' लगी होई है उ'थे ही अवगुण है, चंगिआई हो ही नहीं सकदी। जिस वी करम नाल करता दा भाव जुड़ गइिआ ''मैं'', ''हम'', ''असीं'', उह हर चीज़ नूं अवगुणी कर देवेगा। इिस भाव ने हंकार दी जड़्ह होर गहिरी कर दिती है। उसदे विच ''ओकु गुण'', भाव उह जिहड़ा ''इिकु'' है, उहदे गुण नहीं आउंदे पओ। इिकु दा गुण ही पैदा नहीं हुंदा, इिकु दा चाओ ही पैदा नहीं हुंदा, इिकु दी याद ही नहीं आउंदी किउंकि मैं करन वाला जो बैठा हाँ। जाँ ते जिहबा 'मैं' कहेगी जाँ तूं कहेगी, दोवें इिकठे कहि नहीं सकदी अते जेकर 'मै' 'मै' कहिण दी आदत पै गई, ताँ फिर 'तूं' 'तूं' कहिणा भुल जाणा है। इिह भेद समझ लओ ताँ यातरा सुखाली हो जावेगी, इिह कोई औखी गल नहीं है। उस दे गुणाँ वल धिआन मारो ताँ पता लगदा है कि उह समदरशी है। उस दी मिहर दिन रात, २४ घंटे हर जगह हर उपर वरस रही है, सवाल है कि भाँडा साफ है कि नहीं, खाली है कि नहीं, मूंह सिधा है कि नहीं।

इिस तुक विच इिस गुण वल इिशारा कीता गइिआ है कि इिनसान दे हर करम विच ''तमा'' है, ''मैं'' जुड़ी होई है।

दूजे पासे प्रभू वरगा दाता अजे तक पैदा ही नहीं होइिआ पर उसदे किसे करम नाल 'मैं' नहीं लगी होई। उह इिह नहीं कहिंदा 'मैं' कीता। ''तिल ना तमाइि'' ओथे ज़ररे जिन्नी वी इिह कुआलिटी नहीं है कि दुनीआँ नूं आ के कहे कि देखो तुहानूं कितना कुझ दिता है। उहदी दात इितनी वडी है मगर उसनूं उसदे इिवज़ाने दे विच ज़रा जिन्नी वी धन्नवाद दी लोड़ नहीं किउंकि उस कोल तमा नहीं है। इिह जिहड़ी 'मैं' (''I'') है, इिह जिहड़ी हउमैं (ego) है, इिह जिहड़ी ''हंगता'' (अहंकार) है, इिस दे भेद नूं समझ लउ। जिस दिन उह भेद समझिआ गइिआ, उसे दिन हंकार काबू विच आ जाओगा, ते उहदे गुणाँ दा मन विच विचार पैदा होणा शुरू हो जावेगा। उस दे दानी होण दा इिह सवभाव समझो कि जदों उह दान करदा है ताँ तमा इिक तिल भर वी नहीं आउंदी, सो इिस तर्हाँ दान करना सिखण दी ज़रूरत है। पर सारे संसार विच इिह मुशकल है कि जीव उसदे गुण पैदा नहीं कर पाँदे अते होर होर कंमाँ विच जीवन उलझ जाँदा है।

"केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नहीं वीचारु ॥
केते खपि तुटहि वेकार ॥"

जितना उह बेअंत है, उस कोलों मंगण वाले वी उतनी ही बेअंत लैण दी आदत रखदे हन। पर उहनाँ अनगिणत मंगण वालिआँ विच इितनी विचार ही नहीं कि उह उहनाँ दाताँ नूं मंगदे हन जिहड़ीआँ उसने बिनाँ मंगिआ ही दितीआँ होईआँ हन। बार-बार गुरबाणी इिस नूं याद दिलाउंदी है:

"संपै कउ ईसरु धिआईओ ॥
संपै पुरबि लिखे की पाईओ ॥" (पन्ना ६३७)

जिस संपदा करके तूं इिथे मथा रगड़ रहिआ हैं इिह ग़लत है, इिह नहीं होणा भावें जिन्ने मरज़ी नक रगड़ लै किउंकि ''संपै पुरबि लिखे की पाईओ'' भाव कि संपदा जिन्नी तैनूं मिलणी है उह पहिलाँ ही दे दिती होई है। हुण इिथे आण के गिड़गड़ाउण दी कोई लोड़ नहीं है। इिथे सिरफ तैनूं इिक चीज़ नहीं दिती गई, उह जिहड़ी भगती दी इिक दात, शबद दी कमाई दी इिक दात है, उह जिन्ना चिर तूं नहीं मंगेगा, उहनाँ चिर नहीं प्रापत होओगी।

"पावउ दानु ढीठु होइि मागउ
मुखि लागै संत रेनारे ॥" (पन्ना ७३८)

इिस लई इिथे मंगता बणन दी लोड़ है, अते मंगता वी ओसा कि जिहड़ा ढीठ हो के खलो जाओ। बस तेरे दर तों जाणा ही नहीं। गुरबाणी ने कहिआ तूं ढीठ माइिआ दे विच फसण लई ना हो, बलकि तूं नाम दा दान लैण लई ढीठ हो।

"करता तू मेरा जजमानु ॥ इिक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु ॥१॥" (पन्ना १३२६)

इिह दान मंगके लै लै। हुण गल उलटी हो
गई। पंडत दा जजमान गाहक हुंदा है। ते जजमान पंडत नूं दान दिंदा है। देखो बाणी ने केहा अलंकार खिचिआ है। बाणी कहि रही है कि प्रमातमा जजमान है, 'करता तूं मेरा जजमानु' भाव तूं जजमान है ते मैं तेरा लैण वाला पंडत हाँ। पर पंडत ने जो दछणा मंगी है "इिक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु" उह सिरफ नाम दी ही मंगी है। गुरबाणी अलग अलग अखर इिसतेमाल कर रही है, उपर कहिआ सी इिथे आके भिखिआ मंग लै। हुण कहिआ है उस कोलों दान मंग
लै। जिवें वी मंग सकदा है मंग लै, इिही इिक चीज़ मंग, होर कोई चीज़ ना मंग। सो माइिआ नाल जुड़िआँ होइिआँ दी गुरबाणी ने कुझ गिणती कर दिती कि "केते खपि तुटहि वेकार" इिस तर्हाँ नाल कई होर मंगाँ मंगके जीवन विकाराँ विच बरबाद कर जाँदे हन। उह होर धन्न इिकठा कर रहे हन जिहदे नाल करम इिंदरीआँ विच विकार ही वधदे हन, मानसिक रोग ही वधदे हन।

"केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही खाहि ॥"

इिह माइिआ दे नाल जुड़े होइिआँ दी हालत
है। जिहड़े संसार नाल जुड़े होओ हन अते उहदे कोलों इिस तर्हाँ दीआँ दोलताँ दी मंग करदे हन, अरदासाँ करदे हन, उहनाँ दी वी कोई गिणती नहीं है। पर परमातमा दा इिक गुण समझण वाला है कि उह सभ कुझ देवेगा पर किसे चीज़ उपर उहदा नाम नहीं लिखिआ हुंदा। इिक तिल जिन्नी, इिक ज़रे जिन्नी वी उस नूं खवाहिश नहीं हुंदी कि कोई इिसदे बदले विच धन्नवाद करे। उस कोलों ही सभ कुझ प्रापत हुंदा है, पर लैण वाले इिस सचाई नूं भुला ही देंदे हन। उह इिस तों इिनकार ही कर देंदे हन कि सभ

कुझ उहनाँ नूं दात विच मिलिआ है। इस तूराँ दे अनेक ही मूरछत जीव हन जिहनाँ नूं प्रमातमा बिलकुल विसर चुका है।

"केतिआ दूख भूख सद मार ॥ ओहि भि दाति तेरी दातार ॥"

हुण इहि गल समझणी बड़ी औखी है अते जे समझ विच आ जावे ताँ कमाउणी बड़ी औखी है। जदों सानूं कोई खुशी मिलदी है ताँ इहि कहिआ जाँदा है कि प्रमातमा दी बड़ी किरपा होई है। जिन्ना वी खुशी वाला कंम हुंदा है, जिवें विआह शादीआँ, बचे दा होणा, पड़्हाई विच कामयाब होणा, बिज़नस दा कामयाब होणा आदि तों मतलब लइिआ जाँदा है कि बाबे दी बड़ी किरपा है। पर जिस दिन कंम बंद हो गइिआ, उस दिन किसदी किरपा हो रही है? की प्रमातमा दो तूराँ दे हन जाँ गुरू कुझ होर बण गइिआ है? जे तंदरुसत हाँ ताँ प्रमातमा है पर जे कैंसर दी बिमारी लग गई है ताँ उह किसने दिती है? साडा मन उस दी विशालता नूं कबूल करन लई तिआर नहीं हुंदा। प्रमातमा खुशीआँ ता वंड सकदा है पर दुखाँ लई असीं किसे होर नूं जुमेवार ठहिराणा चाहुंदे हाँ। साडी समझ मुताबिक प्रमातमा कठोर दिल नहीं हो सकदा, उह ते सदा दइिआलू है। गुरबाणी ने इशारा कीता कि हे जीव प्रमातमा नाल कोई वी इनसानी ज़ज़बा नहीं जोड़िआ जा सकदा। उह हर तूराँ नाल निरलेप है, निरअंजन है। जो वी उस पासों आ रहिआ है, इहि सभ उसदी बखशिस है। हुण सवाल उठ जाओगा कि सुख नूं ताँ दात मन लइिआ पर दुख नूं दात किस तूराँ मन्नीओ, इहि ताँ बहुत ज़बरदसती लगदी है। गुरबाणी विचों सुनेहाँ आइिआ कि जिहड़ा दुख है उही रोग दी दवाई बण जाँदा है।

"दुखु दारू सुखु रोगु भइिआ जा सुखु तामि न होई ॥"

(पन्ना ४६६)

"दीवा मेरा ओकु नामु दुखु विचि पाइिआ तेलु ॥
उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥१॥"

(पन्ना ३५८)

दुख दा इनसान दे सरीर दे नाल इस तूराँ दा संबंध है, जिस तूराँ कि तेल दे नाल दीवे दा संबंध है। दीवा चलाउण लई उस विच तेल पाउणा पैंदा है। जिस वेले दीवा जलना शुरू हो जाओ तों हुण धिआन नाल झाती मारो। जिवें जिवें बती जलदी जाओगी तेल सुकदा जाओगा। इसेतूराँ ही इहि जिहड़ा सरीर है, जितना चिर इनसानी सरीर विच दुखाँ दा तेल ना पै जाओ उहनाँ चिर नाम दा दीवा बलदा नहीं, ते जदों दीवा बलणा शुरू हो गइिआ ताँ दुख तेल वाँग आपे सड़ने शुरू हो जाणगे। सो जदों कुदरत सानूं जद दुख भेजदी है ताँ इहि याद दिवाउंदी है कि इस सरीर दा अंत आ रहिआ है, सो जिस कंम लई इहि जीवन मिलिआ सी की उह कंम पूरा हो गइिआ है जाँ अजे शुरू ही नहीं कीता? असीं शीशे विच आपणा चिहरा हर रज़ वेखदे हाँ। इक दिन अचानक सानूं वालाँ विच चिटा वाल नज़र आउंदा है, उह कुदरत दा पहिला सुनेहा हुंदा है। इहि कुदरत वलों पहिली चेतावनी हुंदी है। असीं उस नूं कबूल नहीं करदे अते जाँ ताँ उस बाल नूं ही पुट दंदे हाँ जा वालाँ नूं रंग लगाउण लग पैंदे हाँ । गुरदेव ने फुरमाइिआ:
"घरि घरि ओहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥
सदणहारा सिमरीओ नानक से दिह आवंनि ॥" (पन्ना १२)

भाव कुदरत हमेशा सभ नूं सुनेहा भेजदी रहिंदी है, कदी किसे रूप विच अते कदी किसे रूप विच। पर असीं उस सुनेहे नूं टाल-मटोल कर देदे हाँ। शुतरमुरग़ दी तूराँ सिर रेत विच रख लइिआ जाँदा है। रोज़ सवेरे उठ के वाल रंग लओ अते हुण बुढापा नज़र नहीं आउंदा। गुरबाणी ने गुरसिख नूं जगाइिआ अते फुरमाइिआ:

"जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईओ ॥
को रहै न भरीओ पाईओ ॥" (पन्ना ४६५)

बुढापे नूं परे परे करन नाल बुढापा टल नहीं सकदा। वाल रंगण नाल हुण ताँ बुढापा छुप जाओगा पर जिस दिन गोडिआँ तों उठिआ ना गइिआ, सोटी फड़नी पै गई उस दिन बुढापे तों किवें बचेंगा? जिस दिन अखाँ तों दिसणा बंद हो गइिआ, कन्नाँ तों सुनणा बंद हो गइिआ , दंद टुट गओ, अते जीभ दा सवाद कुझ ना रहिआ उस दिन की करेंगा? बुढापे दा आपणा इक लिबास है अते कई साल पहिलाँ ही तैनूं चेतावनी (Warning) दिती गई सी कि उह वेला आउण वाला है, उह दिन आउण वाला है। इस करके गुरबाणी इशारा कर रही है कि जदों कुदरत किसे तूराँ दी तकलीफ दिंदी है ताँ उहदे विच इक भेद हुंदा है, उह चेतावनी (Warning) भेज रही है। सुनेहा भेज रही है कि उठ, जे तैनूं कोई दुख लगा है, तन नूं लगा है जाँ मन नूं लगा है ताँ प्रमेशर कोलों बहुत दूर हो जाण दी निशानी हैं।

"कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥
परमेसर ते भुलिआँ विआपनि सभे रोग ॥" (पन्ना १३५)

जे कोई रोग आपणे आपनूं लग गइआ है जाँ परिवार विच आ गइआ है ताँ समझ लउ कि परमेशर तों दूरी हुंदी जा रही है। जिवें-जिवें प्रभू तों दूर हुंदा जावेंगा तिवें-तिवें रोग वधदे जाणगे। ते जदों दुख आउंदा है ताँ इह याद रहिणा चाहीदा है कि इह वी प्रमातमा दी दात है। उस ने याद दिलाई है ताँ कि किसे तराँ वी मैं आपणी जिंदगी वल धिआन कराँ कि मैं ेंअ गुणाँ दे विच फसिआ होइआ हाँ, सो मैं इथों किस तराँ निकलाँ।

"बंदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥
जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥
आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥
जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥"

ओसे बंधनाँ विचों आज़ादी उसदी मिहर सदका ही मिल सकदी है। इस विच होर किसे दी वी कोई सिफारश नहीं चल सकदी। सो उसदी नदरे करम दा पातर बणन दी ही कोशिश करनी चाहीदी है। इह उसदा अटल नियम है कि जीवन दी बेड़ी दो किनारिआँ दे विचकार चलदी है। कई लोकाँ दा सवाल है कि जे कोई परमातमा है ताँ इतनी दुनीआँ भुखी किउं मरदी पई है, इतने हसपताल रोगीआँ नाल किउं भरे पओ हन? उहनाँ नूं इह गल भुल जाँदी है कि जीवन इक खेलॣ है, इक रास लीलॢा है, इक डरामा है। असीं सारे फिलमाँ देखदे हाँ, टैलीविजन देखदे हाँ, अते कहाणीआँ पड्ढदे हाँ। हर कहाणी विच इक हीरो (Hero) हुंदा है, इक हीरोइन (Heroine) हुंदी है, इक विलेन (Villain) हुंदा है। विलेन, हीरो हीरोइन नूं मिलण नहीं दिंदा। जिस कहाणी विच विलेन ना होवे ते इकला हीरो होवे ताँ कहाणी चल ही नहीं सकदी।

गुरबाणी ने इशारा कीता है कि संसारक जीवन दो पहिलूआँ ते निरभर है पोजेटिव (Positive) अते नैगेटिव (Negative)। इसतों बिना जीवन दी कहाणी चल ही नहीं सकदी, इह उसदा बणाइआ होइआ खेलॣ है। इह उसदा हुकम है। इसदे विच कोई हुजत नहीं कर सकदा, जिहड़ा इस हुकम बारे हुजत करेगा, उह माइआ नाल जुड़िआ रहेगा। सुख दुख, दिन रात, मिलना विछड़ना, आदि दोवें इकठे रल के इस जीवन नूं चलाउंदे हन। हर इक नूं उसदीआँ आपणीआँ चोणाँ (Choices) मुताबिक फल मिलदा है। जिहड़ा इहनाँ असूलाँ तों मदहोश होइआ है (खाइक) उसनूं कुदरत सिधिआँ करन लई हौली-हौली मूंह ते चपेड़ाँ मारदी है। इनसान सुखाँ विच उसनूं बिलकुल विसार देंदा है, दुखाँ दी दात पाके उसनूं याद करन लग पैंदा है। इह खेलॣ आदि तों ही चलदा आ रहिआ है। जे कोई इस खेलॣ नाल आपणी मन मानी करदा है ताँ कुदरत उसनूं होर सखती नाल याद दिलाँउंदी है। उसदी सही किरपा दी निशानी ही इह है कि उह शबद दी कमाई नाल जोड़ दिंदा है। जिहड़ा उसदी किरपा, उसदी नदर दा पातर बण जाओगा उह उसदी सिफत सालाह विच जुड़ जाओगा ते जिहड़ा सिफत सालाह विच जुड़न वाला है, उही दुनीआँ उते असली धनाढ, अमीर, बादशाहाँ दा बादशाह कहिला सकदा है। दोवाँ तराँ दी तसवीर साहमणे रख दिती गई है। जे संसार नाल जुड़िआ होइआ हैं ताँ "ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥" इह कुझ होओगा। जेकर करतार नाल जुड़िआ होइआ होवेगा ताँ "नानक पातिसाही पातिसाहु ॥"

(अंक २६)

"जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
नानक पातिसाही पातिसाहु॥२५॥"

भाव कि हे प्रमातमा तूं जिसनूं आपणा प्रसाद दिंदा है अते जिस उते मिहरबान हुंदा है, उसनूं उह शबद दी कमाई नाल जोड़ देंदा है:

"किरपा करे जे आपणी ता
गुर का सबदु कमाहि ॥" (पन्ना ४६६)

ओसा जीव भावे सुख आ रहिआ है, दुख आ रहिआ है, कोई आ रहिआ है, कोई जा रहिआ है, कोई खा रहिआ है अते कोई पी रहिआ है, इह सभ प्रमातमा दा हुकम मन्नके शबद दी कमाई विच रुझिआ रहिंदा है। उसनूं इह समझ आ जाँदी है कि बड़े वडे भागाँ नाल मनुखी जनम मिलदा है। इस धरती ते आके जिहड़ा सरीर प्रभू भगती विच ना लगिआ होवे अते माइआ विच फस गइआ होवे, उह प्रमातमा दे दर परवान नहीं हो सकदा। उसदा जनम इस धरती उपर निरारथक हो जाँदा है। प्रभू ने सानूं

इह अमुल जीवन दिता है जिसदा सही तरीके नाल इसतेमाल करना सिखौणा ज़रूरी
है। हर जीव विचों कदे ना कदे इह आवाज़ आवेगी कि जीवन दा असली मकसद की है। रोज़ सवेरे उठना, कुझ खाणा, सारा दिन कंम करना, शाम नूं वापस घर आउणा, कुझ खाणा अते सौ जाणा। अगले दिन फिर उही कुझ दुहराणा। की इही जीवन है? जेकर इही जीवन है ताँ इनसानी सरीर विच अते जानवराँ, पशू, पंछीआँ दे सरीर विच की अंतर है? चाहे उह दो-पाइआ जानवर होवे अते भावें उह चौ-पाइआ जानवर होवे, चाहे उह रेंगन वाला कीड़ा होवे अते चाहे उह धरती ते तुरण वाला जानवर होवे, हर जानवर अते जीव इसेतूाँ ही ज़िंदगी जी रहिआ है। गुरू साहिबाँ दा कहिणा है कि जो मनुख आपणे इस जनम नूं इंज गवा दिंदे हन उह सभ तों वडे अगिआनी हन।

गहिराई नाल सोचण ते पता लगेगा कि जिसतूाँ दी आज़ादी इनसानी सरीर कोल है उह किसे वी होर सरीर कोल नहीं है। मिसाल वजों जेकर तुसीं गाँ दे अगे मास कटके सुट दिओ ताँ जेकर उह चाहवे वी ताँ उसनूं नहीं खा सकेगी, किउंकि उह सिरफ घाह ही खा सकदी है। जेकर शेर दे अगे घाह सुटो ताँ शेर उसनूं नहीं खावेगा, किउंकि उह घाह खा ही नहीं सकदा, उह सिरफ मास ही खा सकदा है। पर इनसानी देह कोल आज़ादी है कि उह जो वी दिल करे खा सकदी है। इसतों नतीजा इह निकलदा है कि इनसानी देह नूं ओसी आज़ादी कुदरत ने किसे खास कारन करके दिती है। ओसे कारन नूं समझण दी लोड़ है अते गुरबाणी उसदा भेद खोलदी है:

"गुर सेवा ते भगति कमाई ॥ तब इह मानस देही पाई ॥
इस देही कउ सिमरहि देव ॥ सो देही भजु हरि की सेव ॥"
(पन्ना ११५६)

भाव इह इनसानी सरीर इस करके मिलिआ है कि इस विच ही भगती दी कमाई कीती जा सकदी है, इसे विच ही सेवा दी कमाई कीती जा सकदी है। जेकर किसी मनुख नूं देवता बणा के सवरग विच बिठा दिता जावे ताँ उह मनुख हमेशा लई उथे रुक जाओगा, किउंकि देवते इको ही अवसथा विच रहिंदे हन, ना उह अगे जा सकदे हन अते ना ही उह पिछे मुड़ सकदे हन। उह किते वी आउंदे जाँदे नहीं। इसे करके देवी देवते वी इस सरीर लई प्रमातमा कोलों मंग करदे रहिंदे हन। इनसानी सरीर विच इह बहुत ही अनमोल दात बखशी होई है। भावे उसदीआँ सारीआँ ही दाताँ अनमोल हन, पर इनसानी सरीर दी प्रापती सभ तों वडी किरपा दी निशानी है किउंकि जनम-मरण दा चकर कटणा इस सरीर दी प्रापती तों बग़ैर नहीं हो सकदा। अगला अंक उसदीआँ अमुल दाताँ दा ज़िकर करदा है अते भेद खोलदा है कि उसदे नाम नूं आखण तों बगैर उस विच लिव नहीं लग सकदी।

अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीओ अमुल भंडार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥
अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ आखि आखि रहे लिव लाइ ॥ आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इंद ॥ आखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ ओते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥
(हर गुण अमुला है अते उहना गुणा दे वपारीओ वी अमुले
हन। उसदा भंडार वी अमुल है अते इस जीवन विच आउणा जाणा वी अमुल है। उस विच समाउण दा उपराला करन वाले, उसदे दरबार, उसनूं प्रवाण हो चुके, उसदीआँ बखशशाँ, उसदा हुकम सभ कुझ ही अमुला है भाव कि इस सृसटी विच किसे गल दा वी सही मुल नहीं मिथिआ जा सकदा। उसदा मुल पाउण दी जो उसदा नाम आखदे हन, उह जपदिआँ जपदिआँ उस विच ही समा जाँदे हन। उहना आखण वालिआँ नूं रिधीआँ सिधीआँ दा भेद मिल जाँदे हन, उहनाँ दा आखणा कईआँ नूं बुध जैसा बणा देंदा है, उहना नूं देवी देवतिआँ वाली सूझ प्रापत हो जाँदी है, कई आखण वाले रिशी मुनी हो जाँदे हन, कई उसनूं आख रहे हन अते आखदे आखदे इस जहान तों तुरदे जा रहे हन। जितने जीव अज तक उसने बणाओ हन अगर उह इतने होर बणा देवे ताँ वी उसनूं कुझ नहीं किहा जा सकदा। जो उसनूं चंगा लगदा है उसेतराँ ही हुंदा है। अगर उसदे बारे कोई ऊल जलूल विचार पेश करदा है ताँ उसनूं बहुत ही अनजान समझिआ जाँदा है।)

उसदी बणाई होई हर वसतू अनमोल है। इह बड़े धिआन नाल सोचण वाली गल है कि इनसान किसे वसतू दी कीमत किस अधार ते नीयत करदा है। जिहड़े विदिआरथी साइंस पढ़दे हन उन्हाँ सभनाँ नूं पता है कि जिहड़ा कोइला खानाँ विच पाइआ जाँदा है उह पिउर (Pure) कारबन है। जो हीरा खानाँ विच पाइआ जाँदा है उह हीरा वी कारबन है। जिवें असीं कोइला खानाँ विचों कढ के लिआउंदे हाँ, उसेतूाँ हीरा वी खानाँ विचों ही निकलदा है। असीं सारे जाणदे हाँ कि हीरे नूं असीं चंगा कहिंदे हाँ, पर कोइले नूं माड़ा कहिंदे हाँ। इह किवें फैसला कर लइआ गइआ है? जेकर साडे कोल कचा आटा पइआ होवे, ताँ असीं खा नहीं

सकदे। रोटी पकाउण लई कोइिला चाहीदा है। अगर कोई उस वेले बहुत सारे हीरे देण लई तिआर होवे ताँ साडे वासते हीरिआँ दा कोई मुल नहीं होवेगा। उस वेले साडे लई कोइिले बड़े अमुल होणगे किउंकि रोटी खाधे बगैर भुख नाल मौत वी हो सकदी है। इिसतों साबत हुंदा है कि हर वसतू दी कीमत समें मुताबिक बदलदी है, वैसे किसे वी वसतू दी कीमत नहीं पाई जा सकदी।

सो समें दी कोई कीमत नहीं दिती जा सकदी, उसदा सिरफ शुकराना ही कीता जा सकदा है। प्रमातमा ने किसे वसतू दा कोई वी मुल नहीं नीयत कीता। उस लई ताँ सभ कुझ बराबर
है। उस लई ना हीरा माड़ा है ते ना कोइिला। उसने ना हीरे दा, ना कोइिले दा, ना सोने दा अते ना चाँदी दा मुल नीयत कीता है। इिहनाँ दे मुल ताँ मनुख ने ही पाओ हन।

"अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीओ अमुल भंडार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइि अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥"

उसदे गुण अते उहनाँ गुणा दे अनेक ही वापाराँ दी कोई कीमत नहीं पाई जा सकदी। वपार करन वालिआँ अते उसदे खज़ानिआ दा कोई मुल नहीं पाइिआ जा सकदा। इिहनाँ गुणा दा वापार करन लई आउंदे जाँदे जीव वी अमोलक हन। अकाल पुरख नूं भाइि होओ अते उस विच अभेद होओ जीवाँ दी कोई कीमत नहीं पाई जा सकदी। उसदे कनूंन ते राज-दरबार अमोलक हन। उह तकड़ी अते वटा अमोलक है जिस नाल जीवाँ दे चंगे-मंदे कंमाँ नूं तोलदा है। उस दी बख़शिश अते बख़शिश दे निशान भी अमोलक हन। अकाल पुरख दी मिहर अते हुकम भी मुल तों परे हन।

गुरबाणी इिक अलमसत फकीर वाँगूं साडे लई शबदाँ दी इिक तसवीर खिच रही है ताँकि असीं उसदी आपार करनी नूं पहिचान सकीओ। असीं अपणी तुछ बुधी नाल उसदीआँ दाताँ दी कीमत नीयत करन लग जाँदे हाँ। सानूं इिह धिआन विच वी नहीं आउंदा कि उसदी बणाई होई हर वसतू अमुली है। हर वसतू दी सही कीमत उस समें पैंदी है जद उसदी सखत ज़रूरत होवे। खेताँ विच नंगे पैरी चलदिआँ अगर पैर विच कंडा चुभ जावे ताँ उस वेले पैर विचो कंडा कढण लई इिक होर कंडे दी लोड़ पैंदी है। उस वेले दूजे कंडे दी कीमत दा अहिसास हुंदा है, नहीं ताँ खेत विच पओ कंडे दी कीमत कोई की पाओगा? इिस अंक विच गुरदेव सानूं इिह अहिसास दिलाउण दी कोशिश कर रहे हन।

"अमुलो अमुलु आखिआ न जाइि ॥
आखि आखि रहे लिव लाइि॥"

भाव कि हर इिक जीव, जंत, अते वसतूआँ दा मुल कहिआ नहीं जा सकदा। केवल उसदा नाम ही कहिआ जा सकदा है। ओसे अनेक जीव हन जिहनाँ ने इिह भेद समझिआ अते उसदे नाम नूं आखदे आखदे उस विच लीन हो गओ, उहनाँ ने उस नाल लिव जोड़ लई। पर ओसे जीव वी अनगिणत हन जिहनाँ ने करम काँड नूं ही उसदा नाम आखणा बणा लइिआ:

"आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इिंद ॥ आखहि गोपी तै गोविंद ॥
आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥
आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥"

अनगिणत लोग वेदाँ दे पाठ नूं ही उसदे नाम दा आखणा मन बैठे, कई विआखिआवाँ नूं ही आखण विच रुझ गओ, कई बरमा अते इिंदर वरगे देवतिआँ दे गुण आखण लग पओ, कई क्रिशन अते उसदीआँ गोपीआँ दे गुण कहिण लग पओ, कई जोगीआँ, विशनूं, अते बुध वरगीआँ हसतीआँ दे गुण आखण लग पओ। इिसतुराँ नाल अनेका ही देवी, देवते, रिशि, अते मुनीवराँ दे गुण आखण विच गवाच गओ।

"केते आखहि आखणि पाहि ॥
केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥
ओते कीते होरि करेहि ॥
ता आखि न सकहि केई केइि ॥"

इिसतुराँ नाल अनगिणत ही जीव आपणी आपणी मरज़ी मुताबिक उसदी कुदरत दे गुण आखके इिस धरती तों चले गओ पर उसदा असली भेद ना पा सके। इितने सारे, इिहो जिहे होर जीव वी अगर इिहो जिहे गुण ही आखदे रहिण ताँ वी कोई सही गल

नहीं आख सकेगा। जो सही नाम आखण दी जुगती है, उह किसे विरले दे ही हथ आई है अते जिहनाँ नूं उह जुगती प्रापत हो गई, उह उस विच लिवलीन हो गओ।

जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥

जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥
ता लिखीओ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

इिह सारा खेलु वी उसेदी रज़ा मुताबिक ही हो रहिआ है। इिहनाँ विचाराँ तों इिह भाव नहीं लैणा कि जीव उसदे हुकम तों बाहर कुझ कर रहे हन। इिह माइिआ दा खेलु है, हर कोई आपणी हाउमें करके उसदे भेदाँ दा वरनन करन दी कोशिश करदा है पर उह इितना विशाल है कि सारे दे सारे इिस कंम विच असफल (fail) हो जाँदे हन। उह ही खुद जाणदा है कि उह कितना विशाल है, असीम है। अगर कोई इिस विचार नूं तोड़ मरोड़ के पेश करन दी कोशिश करदा वी है ताँ उह बहुत वडा अनजाण समझिआ जावेगा।

(अंक २७)

असीं जपु बाणी दी लड़ीवार विचार करदे होओ "सो दरु" दे अंक ते पहुंचे हाँ। सो दरु दा पदा गुरबाणी विच तिन्न थाँवाँ ते दरज होइआ है। इिह रागु आसा विच थोड्ने जिहे फरक नाल दुहराइिआ गइिआ है। जो रहिरास दा पाठ नितनेम नाल करदे हन, उह उसदे विच सो दरु दे अंक नूं पड्नदे हन। पहिला सवाल इिह उठ जाओगा कि इिह बाणी तिन्न वार दुहराई (Repeat) होई है, पहिलाँ जपु दे विच, फेर रहिरास दे विच, ते फेर आसा राग विच, इिह किउं? दूजी गल नोट करन वाली है कि जो रहिरास विच है अते आसा राग विच है, उह इिको जिही है। पर जिहड़ा पदा जपु बाणी विच है उस विच थोड्ना फरक है। जिस त्र्राँ जपु बाणी विच अंक शुरू हुंदा है ''सो दुरु केहा सो घरु केहा''; मगर रहिरास जिस दे उपर आसा महला १ लिखिआ होइिआ है, उथे इिह कहिआ गइिआ है, ''सो दुरु तेरा केहा सो घर केहा''। उथे अखर "तेरा" नाल लगा होइिआ है। जपु विच है "वाजे नाद अनेक असंखा", पर रहिरास विच है "वाजे तेरे नादु अनेक असंखा"। इिह सवाल कुदरती उठ पैंदा है कि हज़ूर ने अखर "तेरा" लगाके किस भेद वल इिशारा कीता है? गुरबाणी दे खोजीआँ दी जाणकारी लई इिह इिशारा है कि इिस अखर दे लगाउण नाल तुकदा भाव अरथ नहीं बदलिआ गइिआ। पर उथे किउंकि आसा राग विच दरज कीता गइिआ है इिस करके राग दे नाल ताल विच गाउण लई उसदे मातरे (meter) पूरे कीते गओ
हन। जिस तुक दे मातरे पूरे ना होण उसनूं गाउण लगिआँ आम गाइिक बेताला हो जाओगा। उस नूं गाउणा "सो दरु तेरा केहा सो घर केहा" इिसनूं ताल विच गाउणा आसान है। किउंकि उह राग दे थले दरज कीती गई सी, इिस करके उसदे मीटर दा वी खिआल रखिआ गइिआ है।

इिसनूं दुहराउण दा कारन है कि इिह सारीआँ तुकाँ इिक भगत दी मुढली हालत वल बड़ी खुबसूरती नाल इिशारा करदीआँ हन। जिसत्र्राँ नन्न्हा जिहा बचा हर नवीं वसतू नूं देखके हैरानी विच चला जाँदा है, इिसेत्र्राँ हर भगत प्रमातमाँ दी बणाई होई वसतू नूं वेखके विसमाद महिसूस करन लग पैंदा है। अजे उसदी देखण वाली सुरती-बिरती थोड़ी जिही ही बदलदी है, पर हर वसतू दा रूप बदल जाँदा है। जिथे पहिलाँ इिह देखदा सी: "कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥" उथे हुण नज़र आँउदा है "इिहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥" हर अभिआसी लई इिह इिक कसवटी बखशी गई है, जेकर गुरमति मारग उते चलदिआँ विसमाद दी अवसथा नहीं जाग रही ताँ कोई बहुत बुनिआदी भुल हो रही है। जेकर अभिआसी नूं सारिआँ विच उसदी झलक देखण दी रुची नहीं वध रही ताँ उह करम काँड विच फस चुका है। इिस करके इिन्नाँ तुकाँ वल ख़ास धिआन दिवाइिआ जा रिहा है। अगे चलके इिह गल होर वी सपशट हो जाओगी।

पुरातन समें विच जपु बाणी नूं अकसर गाइिआ नहीं सी जाँदा, पड्निआ ही जाँदा सी। जपु बाणी उपर कोई राग वी नहीं लिखिआ होइिआ। जदों असीं इिह यातरा शुरू कीती सी ताँ उदों विचारिआ सी कि सारी दी सारी बाणी अकाल पुरख दे वलों धुरों आइिआ सुनेहा है। जिहड़ा सुनेहा देण वाला होवे, जिसनूं असीं पैगंबर आखदे हाँ। जिहड़ा विचोला है, उहदा सुनेहे बारे कोई दाअवा नहीं हो सकदा। उह ताँ सुनेहा देण लई आइिआ है। कोई डाकीआ (postman) तुहानूं चिठी देण लगिआँ इिह नहीं कहिंदा कि इिह मैं दिती है। उसने चिठी पकड़ा के चले जाणा है। जिहड़ी गुरबाणी साडे तक पहुंची है इिस ते किसे दा वी इिसत्र्राँ दा दाअवा नहीं है, इिह धुरों आई है। इिस करके सभ तों पहिली बाणी विच ही इिह इिशारा कर दिता गइिआ है। इिस उते किसे महले दा ज़िकर नहीं कीता गइिआ अते ना ही इिस उते किसे राग दा ज़िकर
है। इिसनूं साडे तक पहुंचाण वालिआँ नूं असीं सतिकार वजों गुरू कहिंदे हाँ। उहनाँ ने आपणे आप नूं गुरू नहीं कहिआ अते ना ही कहिलाइिआ सी। इिह असीं कहिंदे हाँ कि गुरिआई अगे दिती गई है। पर गुर विअकतीआँ ने इिह नहीं कहिआ सी कि गुरिआई अगे जा रही है। उहनाँ सिरफ इितना ही कहिआ सी कि भाई इिह जिहड़ा प्रसाद धुरों आ रहिआ है, इिसनूं वंडण दी जिंमेवारी हुण तेरी है। इिह जो शबद दा भंडारा है, अंमृत भंडार है, नाम रूपी भंडार है, इिसनूं वंडण दा कंम विरासत विच अगली पीड्नी नूं सौपिआ गइिआ सी।

"जन नानक कउ हरि बखसिआ
हरि भगति भंडारा ॥" (पन्ना ४५०)
"भगति भंडार गुरि नानक कउ सउपे
फिरि लेखा मूलि न लइिआ ॥" (पन्ना ६१२)

इिसे करके बाणी ने इिशारा कीता है कि जदों इिह भंडार अकाल पुरख वलों गुरू नानक नूं सोंपिआ गइिआ ताँ फिर इिसनूं कितना अते किथे वंडिआ गइिआ है, किस त्र्राँ वंडिआ गइिआ है, उसदा हिसाब प्रमातमा ने पुछिआ ही नहीं। बाकी जितनी वी

दुनीआँ दी दौलत है उसदा हिसाब रखिआ जाँदा है, कितनी किसनूं दिती गई है। पर इहि इक ओसा भंडार है इहिदा कोई लेखा नहीं कि किथे वंडिआ गइिआ है। इस सारी विचार नाल हेठ लिखीआँ तुकाँ नाल बहुत गहिरा सबंध है। असीं पिछे जद २६वें अंक नूं समापत कीता सी उथे आखरी तुकाँ सन:

"जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥
ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥"

भाव कि जो गुरू कोलों सुणिआ उहनूं समझिआ नहीं, समझ ना होण करके उसनूं ग़लत दुहराइिआ जा रहिआ है। उसदी कमाई ग़लत होणी शुरू हो गई। बोल नूं विगाड़ दिता गइिआ। सुणिआँ ताँ सही कि नाम जपणा चाहीदा है पर इहि समझिआ नहीं कि किवें जपणा चाहीदा है। इथों तक अगिआनता ने घेरा पा लइिआ है कि कई विदवान इहि प्रचार करन लग पओ हन कि गुरबाणी विच नाम जपण उते ताँ बुहत ज़ोर है, पर इहि नहीं दसिआ गइिआ कि नामु जपण दी जुगती की होणी चाहीदी है। इस बाणी दी विचार समापत होण तक इसे ही बाणी विच नाम जपण दी छुपी होई जुगती खुल्हके साहमणे आवेगी। असाँ ताँ वाजे ढोलकीआ गल विच पा के कहिणा शुरू कर दिता होइिआ है "साथों भुखिआँ भगती ना होवै, इहि लै फड़ माला आपणी"। इहो जिहीआँ कई धारना (Tunes) पंजाब विच मशहूर हन। इहि धारना इहिनाँ तुकाँ नूं ग़लत समझण करके प्रचलत होई है:

"भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥" (पन्ना ६५६)

इसदा असली भाव है कि जो जीव हमेशा आपणे पेट दी भुख मिटाउण दे फिकर विच ही रहिंदा है, उह भगती मारग उते कदी नहीं चल सकदा। उसनूं भगती करन दा समान देण दी कोई लोड़ नहीं किउंकि उस लई ओसा समान (माला आदि) बिलकुल बेकार है। पर इसदी परचलत विआखिआ बण गई कि भगती करन तों पहिलाँ जीव दा ढिड भरिआ होणा चाहीदा है नहीं ताँ उह भगती नहीं कर सकदा। हालाँ कि गुरबाणी साफ हिदाइित करदी है:

"ओनी दुनीआ तोड़े बंधना अन्नु पाणी थोड़ा खाइिआ ॥"
(पन्ना ४६७)

भगती मारग दे यातरूआँ ने ताँ इहि सारे बंधन पहिलाँ ही तोड़े हुंदे हन। खाणा पीणा हुण सिरफ उतना ही है जिस नाल सरीर दी तंदरुसती काइिम रहे। ज़िआदा अन्न खाण वालिआँ नूं ताँ कई तराँ दीआँ सरीरक बिमारीआँ घेरके बैठ जाँदीआँ हन। पर असीं गुरबाणी दे सही इरादे दे विरुध ही चलण दी जिद कीती जापदी है।

इसनूं गुरबाणी ने कहिआ है कि जेकर किसे ने अखर दे असली भाव नूं नहीं समझिआ, अते उसदा रूप विगाड़ के कोई कंम शुरू कर लिआ है ताँ उह गावारा दा सरदार गिणिआ जावेगा। गवार उसनूं कहिआ जाँदा है जिहड़ा बिलकुल दिमाग़ी कंमाँ विच रुची ना रखदा होवे, जिहड़ा गिआन नूं बिलकुल नाँ समझदा होवे। उसने कुझ समझिआ ताँ है नहीं, उह अनजाण है, अनपड्ढ़ा, ना समझिआ होइिआ है; किउंकि गुरदेव दे कहिंदिआँ होइिआँ, आवाजाँ देंदिआँ होइिआँ, रौला पाउंदिआँ होइिआँ, फेर वी सही गल नूं सुणदा नहीं:

"फरीदा कूकेदिआ चाँगेदिआ मती देदिआ नित ॥
जो सैतानि वंञाइिआ से कित फेरहि चित ॥" (पन्ना १३७८)

हर ब्रहम गिआनी मात लोक विच आके उची उची आवाजाँ देके जीवाँ नूं समझाण दी कोशिश करदा है पर शैतान ने मन उते ओसा असर कर दिता है कि उहनाँ दा चित हुण वापस मुड़दा ही नहीं।

जेकर उह बोल, जिस तराँ गुरू दे कोलों आइिआ है, विगड़िआ नहीं अते उहदी समझ आ गई ताँ उस बोल दा आसरा लै के उह जीव कमाई दे विच जुड़ जावेगा। जिवें-जिवें उह कमाई विच अगे तुरेगा, तिवें तिवें उहदे लई कुदरत दे भेद खुलण लग पैणगे। उहदे साहमणे थोड़ा-थोड़ा चानणा होणा शुरू हो जावेगा। उसदे मन विच विसमाद दीआँ गलाँ आउणीआँ शुरू होणगीआँ। इथों अगला अंक शुरू हुंदा है:

सो दर केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते राग परी सिउ कहीअनि केते

गावणहारे ॥ गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥ गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥ गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥ गावनि रतन उपाओ तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥
(उह इक ना बिआन होण वाली अवसथा है जिस विच सभ नूं बणाउणा, पालणा, अते नाश करना दा अहिसास आ जाँदा है। तेरीआँ बणाईआँ होईआँ आवाजाँ दी ही कोई गिणती
नही। हवा,पाणी, अते अग दी आपणी ही आवाज़ है, धरम दी दुनीआँ दी वी आपणी ही सुर है। चितर गुपत जो लेखा लिखण वाले मन्ने गओ हन उहना दी वी आपणी ही आवाज है। मन्ने होओ देवते विसनूं, अते बरमा वी आपणी आपणी आवाज विच गा रहे हन। इंदर देवता वी होर देवतिआँ नाल रलके गा रिहा
है। सिध लोग वी समाधी दी आवशथा विच गा रहे हन। होर कई जती अते बहादुर लोग गा रहे हन। जुगाँ जुघा तों वेदाँ दे गिआता आपणे ढंग नाल गा रहे हन। मन्न नूं मोह लैण वालीआँ सुंदरीआँ मात लोक अते पाताल विच गा रहीआँ हन। तेरे बणाओ होओ अनमोल रतन अते तीरथ वी आपणी अनोखी आवाज रखदे हन। कई जोधे अते महाँ बली चाराँ ही दिशाँवाँ विच गा रहे हन। सारे खंड अते ब्रहिमंड जिहड़े कि उसे दे बणाओ होओ हन आपणी अलग आवाज विच गा रहे हन। जो भगत तेरे विच रस गओ हन उह तेरे हुकम मुताबिक गा रहे हन। होर अनेक प्रकार दे जीव जिहना दा सानूं खिआल वी नहीं है उसनूं गा रहे। उह आकाल पुरख सचा साहिब है अते उसदा नाम भी सचा है। उह जिसने इहि सारी रचना रची है जानिआ नहीं जा सकदा पर उह है अते सदा ही रहेगा। जिस तराँ उसनूं चंगा लगदा है उह उसे तराँ करके आपणी बनतर नूं वेख रिहा है। जो उसनूं चंगा लगेगा उह उंझ ही करेगा। उस उते होर कोई वी हुकम नही चला सकदा। इस करके उस पातशाहाँ दे पातशाह दी रजा विच रहिण विच ही भला है।)

"सो दरु केहा" सवालीआ फिकरा नहीं है। दूजी गल धिआन योग है कि इथे अखर समालणा आइिआ है, पालणा नहीं है, पैदा करना नहीं है, मारना नहीं है। समालण दी अवसथा तों भाव त्रिदे विच सारा कुझ शामिल है; पैदा करना, पालणा, अते नाश करना। इनसान जिस वेले वी भगती मारग ते थोड़ी दूर चलेगा ताँ विसमाद दी अवसथा विच चला जाओगा। अगे चलके खंडाँ दी विचार विसथार विच कराँगे। इथे इतनाँ ही समझणा काफी है कि अगर धरम खंड विच पैर रखिआ है ताँ गिआन खंड दे विचों गुज़रना बहुत ज़रूरी है। जो कमाई करनी है उसदी सारी जुगती दी समझ होणी चाहीदी है। धरम दे रसते ते किहड़ा कंम करना है, किस त्राँ करना है, अते किहड़ा नहीं करना, कुदरत की है, कुदरत दे विच कादर किथे छुपिआ होइिआ अते किस त्राँ प्रगट कीता जा सकदा है आदि सारे सवालाँ दे जवाब गुरदेव कोलों समझ लैणे चाहीदे हन। जेकर गुरमति दे रसते ते चलणा है ताँ धिआन रखणा, झूठ ताँ अधा हो सकदा है पर सच अधा नहीं हुंदा। सच जाँ पूरा हुंदा है जाँ नहीं हुंदा। असीं आपणे मन नूं तसली देण लई कहि लैंदे हाँ कि इस गल विच कुझ ते सचाई है। इहि धारमिक दुनीआँ विच बहुत वडा धोखा
है। असलीअत विच इहि कहिणा ज़िआदा सही है कि इस गल विच झूठ रलिआ होइिआ है। सच हमेशा पूरा ही हुंदा है, नहीं ताँ झूठ हुंदा है। गुरबाणी ने इशारा कीता कि जदों इस रसते ते चल पओंगा ताँ इहो जिहीआँ गलाँ आपणे आप अंदरों उठणीआँ शुरू हो जाणगीआँ। कोई उस (दरु) दरवाज़े नूं नहीं लभ रिहा किउंकि दरवाज़ा कोई है ही नहीं, कोई उस तखत नूं नहीं लभ रिहा जिथे बैठके उह दुनीआँ दी संभाल करदा है। कोई ओसी जग्हा है ही नहीं किउंकि उह सरबविआपी है। उह सभ जग्हा है इसे करके जदों गुरबाणी ने खंडाँ दी झाकी साडे साहमणे रखी ताँ कहिआ कि धरम खंड दे रसते ते जाणा ते गिआन खंड विचों दी निकलणा पवेगा। गिआन खंड विच जदों गल समझ लओंगा ताँ फिर सरम खंड विच बैठके अभिआस करना है। सरम खंड मिहनत दा खंड है, उथे घालणा घाली जाणी है। जिस वेले भगती पूरी हो जाओगी ताँ तेरी जिंमेवारी ख़तम हो जाओगी, तूं हुण बस भगती ते ही लगे रहिणा है। हुण अगे करम खंड है, उह उसदी किरपा दा खंड है। तेरी मिहनत कदों कबूल होणी है, कदों प्रवान होणी है, उह सिरफ उसनूं पता है। सभ भगत उथे जा के बैठ जाँदे हन।

"तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥"

उह आपणे आनंद विच बैठे हन। उहनाँ नूं इस चीज़ दा फिकर नहीं है कि मैनूं प्रवान कर लिआ कि नहीं कीता, कदों आओगा कदों नहीं आओगा, उह रौला नहीं पाउंदे, बस बैठे हन अते इंतज़ार हो रिहा है। इहि यातरा दी इक छोटी जिही झाकी है, इसदा विसथार अगे चलके आवेगा। इथे इतना ही काफी है कि जिसने गुरदेव दा बखशिआ होइिआ बोल नहीं विगाड़िआ अते सही बोल दे नाल कमाई करन लग पिआ है ताँ उस विच विसमादी तरंगाँ उठणीआँ शुरू हो जाणगीआँ। मूंहों वाह वाह ही निकलणा

शुरू हो जावेगा। जिस चीज़ वल वेखेगा, उहदे वल देखके मूंहों वाह निकल जावेगा। जिन्ना वल वेख के वाह वाह निकलदा है, ओसीआँ कुझ चीज़ाँ दी गिणती इस अंक विच कीती गई है।

"सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥"

उह जगह, उह असथान, उह अवसथा बहुत ही अनोखी होवेगी जिथे प्रमातमाँ दा हर रूप (पैदा करना, पालणा, नाश करना) साखशात दिखाई देवेगा। इह हैरानी विच विसमादमई अंदाज़िआँ दा प्रगटावा है। हुण इथों वाजिआँ दा मतलब आम तबले वाजे नहीं है। कुदरत विच आपणे आप उठ रहीआँ धुनाँ वल इशारा हो रहिआ है। सारी दुनीआँ विच हर चीज़ दी आवाज़ इक दूजे नालों अलग है। हर इनसान दी आवाज़ विलखणी है। इह जितनी भी काइनात बणी है, उस विच जीव अते निरजीव दोनों आवाज़ रखदे हन। उंगल लोहे नूं टकराउण ते जो आवाज़ करदी है उह लकड़ नूं टकराउण नालों अलग है। इसतरूाँ दे भेद वेखके आपे मूहों निकल जाँदा है कि वाह, नाद कितने तरूाँ दे हन। "वाजे नाद अनेक असंखाँ", असंखाँ दा मतलब है कोई गिणती नहीं है। असंख दा मतलब जिहड़ी गिणती हो ही नहीं सकदी। जितनीआँ आवाजाँ, उतनीआँ ही आवाजाँ कढण वाले हन। जिवें-जिवें इह वेखदा जाओंगा तिवें-तिवें तेरा मन विसमाद दीआँ गहिराईआँ विच डुबदा जाओगा।

"केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥"

संगीत दी दुनीआँ विच लगभग चार सौ ते चुरासी राग ते रागणीआँ मन्नीआँ गईआँ हन। इह तेराँ सुराँ दा खेलू है। जिन्नाँ नूं संगीत दा शौक है, उहनाँ दी जाणकारी लई इह दसदे हाँ कि भारत खंडे नाम दा इक वकील होइआ है। उस वकील ने हिंदुसतान दा सारिआँ तों मशहूर संगीत दा खज़ाना इकठा कीता है। उसदीआँ किताबाँ अज सारे भारत दे संगीत विदिआलिआँ विच पढ़ाईआँ जाँदीआँ हन। उहनाँ किताबाँ विच सैंकड़े ही राग अते रागनीआँ दरज हन। रिग वेद वी पुरातण संगीत दा भंडार मंनिआँ गइआ है। जो सुराँ कन्नाँ नूं सुण सकदीआँ हन, उहनाँ दी ते गिणती भावें हो वी जावे, पर जिहड़ीआँ सुराँ नूं कन्न सुण ही नहीं सकदे (Ultra Sound Waves) उहनाँ दी गिणती किंज होवेगी? समुंदर दे जानवर आपस विच आवाज़ नाल ही गल बात करदे हन पर साडे कन्न उहनाँ तरंगाँ (Sound Waves) नूं सुण ही नहीं सकदे। उहनाँ दी गिणती कौण करेगा "केते रागु परी सिउ कहिअनि"। इसतरूाँ दीआँ विचाराँ करदा करदा इहनाँ अखराँ विच खुभदा खुभदा मन शाँत हुंदा जाओगा। सवाल नहीं रहि जाणगे, इह विसमाद बणदा जाओगा।

"गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥"

इथे "गावहि" दा मतलब गाणा बजाणा नहीं
है। जदों हवा चलदी है ते इक अजीब आवाज़ निकलदी है। जदों पाणी कलकल करदा है ताँ इक अजीब आवाज़ करदा है। जपदिआँ जपदिआँ इक ओसी अवसथा आउंदी है कि जदों इक बचा रोंदा माँ नूं सुणाई दिंदा है ताँ उथे जिहड़ा भगत बैठा है उहनूं उसे बचे दी आवाज़ विचों वाहिगुरू सुणाई दे रिहा है। इसे करके बाणी ने इशारा कीता सी:

"रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥
परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥" (पन्ना ४७३)

दुनीआँ नूं ते कोई हसदा नज़र आउंदा है पर इक भगत नूं उही हसदा नजर आउंदा है, अते कोई रोंदा है ताँ इक भगत नूं प्रमातमा याद आ जाँदा है, जाँ कोई चुप करके बैठा वेखिआ है, ताँ वी उही याद आ जाँदा है। जिन्ना दी कमाई सफल होणी शुरू हो गई, उहनाँ बारे गुरबाणी ने साडे साहमणे मिसालाँ रखीआँ हन। गुरबाणी उस नादु दी गलू कर रही है जिस वेले अग तेज़ी नाल जलदी है, जदों अग भड़क पवे ताँ उस वेले उसदी आवाज़ सुणाई दिंदी है। अग दी धुख धुख हुंदी होवे ताँ अलग आवाज़ हुंदी है, कोइले दी भड़कण दी ते लकड़ दी तिड़कण दी आवाज़ अलग हुंदी है। पता चल जाँदा है, इह कोले भखे पओ हन, पता चल जाँदा है इह लकड़ी दी अग बल रही है। इथे उस अगनी दी आवाज़ नूं गाणा कहिआ है। इसेतरूाँ चितर अते गुपत दो देवते मन्ने गओ हन जो जीव दे करमाँ दा हिसाब रखदे हन। इसदा भाव इह नहीं कि गुरबाणी देवी देवतिआँ नूं मन्नदी है अते इहनाँ सभ देवी देवतिआँ दी गवाही दे रही है। भाँवे देवते असलीयत विच हन अते भाँवे इह कलपत हन, इस नाल गुरबाणी नूं कोई सबंध नहीं। इह ताँ प्रचलत विशवाशाँ दी मिसाल लैके समझाइआ जा रहिआ है कि कुदरत दा इह सारा निज़ाम सुणके भगत होर गहिरे विसमाद विच डुबदा जाँदा है। चितर गुपत वरगे देवते जो हर जीव दे कंमाँ दा हिसाब लिखदे सुणीदे हन, उह वी आपणी खास आवाज़ नाल उसदी उसतत विच रुझे जापदे हन।

"गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले॥
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे॥"

इथे गाउण वजाउण दी जिहड़ी गल्ल हो रही है कि इसदा मतलब इह नहीं कि इंदर देवते दा कोई सरीर है जिसने गाउणा है। इथे इशारा है कि वेदाँत ने इंदर देवते नूं मींह दा देवता कहिआ है। सो जदों मींह वरदा है ताँ उसदी आवाज़ आउंदी है, मींह पथर ते पवे उसदी आवाज़ होर है, मींह लकड़ ते पवे उसदी आवाज़ होर है, मींह गलास ते पवे जाँ मिटी ते पवे उसदी आवाज़ होर है। इहनाँ अलग अलग आवाजाँ नूं इंदर दा अते उसदे दरबारीआँ दा गाउणा कहिआ है। सिध उसनूं कहिंदे हन जिसने किसे चीज़ नूं सिध कर लिआ है, काबू कर लिआ है। साधू संताँ दीआँ रिधीआँ सिधीआँ वी उसदी उसतति दा गीत लगदा है।

"गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥
गावनि रतन उपाओ तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥"
जत-धारी, दानी, अते संतोखी पुरशाँ दीआँ आवाजाँ विच वी उसे दे ही गुण गाओ जा रहे हन अते ताकतवर सूरमे उसदीआँ वडिआईआँ कर रहे हन। पंडित ते महाँरिखी वेदाँ समेत उसदी उसतति गा रहे हन। मनुख दे मन नूं मोह लैण वालीआँ सुंदर इस'ीआँ, जो सुरग, मात-लोक ते पाताल विच (भाव, हर थाँ) हन, उहनाँ दी आवाज़ विच वी तेरे ही गुणा दी झलक है। तेरे पैदा कीते होओ रतन अठाहठ तीरथाँ समेत तैनूं गा रहे हन। वडे बल वाले जोधे ते सूरमे तेरी सिफत कर रहे हन। चौहाँ ही खाणीआँ दे जीअ जंत तैनूं गा रहे हन। सारी सृशटी, सृशटी दे सारे खंड अते चकर, जो तूं पैदा कर के टिका रखे हन, तैनूं गाउंदे हन।

इहनाँ तुकाँ दी रवानगी वेखके ही मन गद गद हो जाँदा है ताँ जिहड़ा इनसान इस अवसथा नूं छोंहदा है उसदी हालत ताँ बिआन ही नहीं कीती जा सकदी। हर पासिउं उसे दी धुनी सुणाई दे रही है, अते जितना ज़िआदा सुणाई देंदा है उतना होर जीव मसती विच डुबदा जाँदा है। अज भावें जितना भी जीअ चाहे असीं सुवरग दीआँ जाँ नरक दीआँ गलाँ करीओ, उस अवसथा विच कोई वी बहिस नहीं बचदी, बस विसमाद ही विसमाद बचदा है। हौली-हौली जीव इस अवसथा ते पहुंच जावेगा:

सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥

जीव लई इह अवसथा तेरे ही प्रसादि करके प्रापत हुंदी है, इह प्रसादि तेरे भगताँ नूं ताँ ही मिलदा है किउंकि इह ही तैंनूं भाँउदा है। इसतगृाँ दी बणाई होई तेरी कुदरत इतनी बेअंत है कि उसदा विचार करना ताँ इक पासे रहि गइआ, उह सारी दी सारी किसे जीव दे धिआन विच आ ही नहीं सकदी।

इक धिआन जोग गल है कि इथे 'नानकु' दे कके नूं औंकड़ है। सारे स्री गुरू ग्रंथ साहिब विच नानक "अखर" लग पग ५१२७ (इकवंजा सौ सताई) वाराँ वखरे वखरे रूपाँ विच आइिआ है, उस विचों ५३१ वार नानकु दे अखर विच "कके" हेठ औंकड़ है। तो इह सवाल उठ सकदा है कि जिस थाँ ते नानक दे कके नूं औंकड़ है उथे की इशारा कीता जा रहिआ है? धिआन नाल विचारन ते पता लगदा है कि जिथे वी 'नानकु' दे कके नूं औकड़ है, उथे जिहड़े वी गुरू विअकती दे मूंहों इह तुक आ रही है, उसदे सरीर वल इशारा कीता जा रिहा है। जेकर कके नूं औकड़ नहीं है ताँ उह परम जोती वल इशारा है जिहड़ी कि गुरू विअकती विच प्रगट हो चुकी है। तो इथे कहि रहे हन कि जिहड़ा सरीरक रूप विच सुणिआ जा सकदा है उह ते विचारिआ जा सकदा है, पर जिहड़ी आवाज़ इह सरीर सुण ही नहीं सकदा, जाण ही नहीं सकदा, उसनूं किस तगृाँ कहिआ जावे? जो इहनाँ करम इंद्रीआँ नाल पहिचाणिआँ ही नहीं जा सकदा, उहनाँ बारे मैं की विचार दे सकदा हाँ? किउंकि सरीर वल इशारा हो रिहा है, इस करके कके थले औकड़ दे दिता
है। "नानकु किआ विचारे" इथे उह जोत नहीं कहि रही, इथे नानक दा पहिला सरीर कहि रिहा है।

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइिआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई

करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

''सो दरु केहा'' जैसी विसमाद दी घाटी दी यातरा करदा होइआ जीव इस अवसथा ते पहुंच जाँदा है जिथे हुण इहो जिहे सवाल नहीं रहि जाँदे। हुण सारे पासे उही सुणाई देंदा है, सारी रचना विच उसे दी ही गूंज है जिहड़ा है भी, पर की है इहि जानण तों बहुत परे है। इहि सारी रचना उसे दी ही बणाई होई है अते उह इस खेलू नूं आपे ही आपणी मरज़ी मुताबिक चला रहिआ है। सभ उसदे हुकम दे गुलाम हन पर उस उते किसे दा हुकम नहीं चल सकदा। ताँ ते उस पातशाहाँ दे पातशाह दे हुकम दी रज़ा विच रहिणा ही जीवन दा मनोरथ होणा चाहीदा है। भगती करन वाले दे अंदर जिहड़ा सवाल करन वाला मन बैठा होइआ है, उह चुप हो जाँदा है। जिहड़ा उसदे पिछे असली जानण बैठा होइआ है, उह जाग पैंदा है अते उस जाणकार नूं पुछण दी लोड़ नहीं हुंदी। उह कुदरत दे हर नज़ारे नूं सिधा देखण दे काबल हो जाँदा है। अज हर नज़ारा आपणी आपणी जाणकारी (Memory) मुताबिक दिखाई देंदा है, पर उस समें आपणी जानकारी बचदी ही नहीं अते सभ कुझ अंदरली अख नाल वेखिआ जा रहिआ है। इहि अवसथा बड़ी बेमुली है, इसदी विचार सौखी नहीं।

इस अंक दे विच नानक अखर दो वार आइिआ
है। इक वार अखर दे नीचे औंकड़ है। दूजी वार अखर नीचे औंकड़ है नहीं। जदों दूसरी वार नानक अखर आइिआ है उसदा भाव नानक जोत है, जो शबद रूप हो चुकी है। हुण इसदा सरीर नाल कोई संबंध नहीं है। जिथे सरीर दी यातरा शुरू हुंदी है उथे जेकर बोल विगाड़ नूं छड दओगा ताँ नाम दा जाप करदिआँ इहि सारे सवालाँ (तूं किस तूहाँ दा है? किवे बणिआ है? किथों आइिआ है?) दी थाँ ते विसमाद रहि जावेगा। जे रज़ा दे विच रहि के भगती करदा चला गइिआ ताँ परम अवसथा मिल जाओगी।

(अंक २८-२६)

जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥

सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

इहि २७वें अंक दी आखरी पंगती है। इहि पैरागराफ शुरू होइआ सी 'सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥' इहि विसमाद दी अवसथा है जिथे पहुंचदे ही सारे सवाल ख़तम हो जाँदे हन। जदों कोई बहुत वधीआ आवाज़ कन्नाँ नूं सुणाई देवे, जाँ सुहावणा दृश अखाँ नूं दिखाई देवे ताँ उस वेले आप मुहारे मूंहों वाह ही निकल जाँदा है, होर कोई शबद कोल नहीं हुंदा। तुसीं अकसर संगीत दीआँ जाँ कवीआँ दीआँ मंडलीआँ विच बैठे होवोगे। जद कोई कवी चंगा विचार कहे जाँ कोई संगीतकार चंगी उसतादी धुन सुणाओ ताँ आप मुहारे मूंहों 'बई वाह' निकल जाँदा है। जे पुछिआ जाओ कि इस 'बई वाह' दा खुलासा (Define) कर कि इहि है की ताँ उसदे लई दसणा मुशकिल हो जाँदा है। कोई वी बिआन नहीं कर सकदा कि मूंहों वाह ही किउं निकलदी है। इसे तराँ ब्रहम गिआनी जदों प्रमातमा वल देखदे हन ते जे उहनाँ नूं पुछीओ कि तुसीं की वेख रहे हो ते इहि ही कहि सकदे हन 'बई वाह'। बाणी ने इशारा कीता है:

"तूहै है वाहु तेरी रजाइ ॥ जो किछु करहि सोई परु होइबा अवरु न करणा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥" (पन्ना १३२९)

भाव कि इहि ते देख लिआ है कि तूं हैं पर जे कोई पुछे कि तूं की है ते फिर दसिआ नहीं जा सकदा। बस मूंहों वाह ही निकलदा है। इहि विसमाद दी अवसथा है। उस विसमाद विच सवाल ख़तम हो जाँदे हन। फिर इक ही नज़र आउंदा है। सारे पासे तेरी ही गूंज है 'गावै पवण पाणी बैसंतर', हवा चलदी पई है। हवा दी शाँ शाँ दे विचों तेरी ही आवाज़ आ रही है। उह ही उंकार दी धुन है। उह ही ओम दी धुन है। उह ही गोबिंद दी धुन है। पंछीआँ दी चलचलाहट दे विचों, पाणी दी कलकलाहट दे विचों, इनसानाँ दे रौले गौले विचों, बचिआँ दे रोण तों, औरताँ दे हसण तों, प्रेमीआँ दे प्रेम विचों, सिरफ इक ही अवाज़ आ रही है, सारे पासे ओंकार ही है। पर उह किसे करम करके मजबूर नहीं है। मताँ कोई आपणे मन नाल भुलेखा पा लवे कि इहि करम कीता जाँ आह साधना कीती, जाँ इहि भगती कीती, ओस करके उह धुन सुणाई दे गई है, इहि ताँ उसदे प्रसादि करके ही है। भाँडा खाली हो गइआ, भाँडा साफ हो गइआ है। इस दा मतलब इहि नहीं है कि भाँडा भर गइआ है। भाँडा भरेगा उदों ही जिस दिन प्रसादि आओगा। जगियासू सिरफ इहि ही कर सकदा है कि भाँडे दी सफाई करदा रहे। भाँडे नूं खाली करदा रहे। खाली करके उह उसदी इंतज़ार विच बैठ जाँदा है।

"जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥"

जगियासू इहि नहीं कहि सकदा लै कि मेरा भाँडा वेख हुण साफ है, इहि ताँ हुकम हो गइआ। इहि दुबारा भगती दा हंकार हो गइआ। इहि ताँ साधन दा हंकार बण गइआ। साधनाँ दे हंकार दी जड़्ह नूं कटण लई आखिर विच इशारा कीता:

"सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७

जो सही रूप विच भगत है उह उसदी रज़ा विच बैठा है। जे आवें ताँ वी ठीक है ना आवें ताँ वी ठीक है। इहि उसदी रज़ा है। आउ, इक छोटी जिही मिसाल लैके इसनूं समझण दी कोशिश करीओ। इहि आम देखण विच आइआ है कि जिस वेले बदल वाई हुंदी है, ताँ मछली उस नूं देखके बड़ी ख़ुश हुंदी है। चातृक वी बदल नूं देख के बड़ा ख़ुश हो रिहा है। मोर वी बदल नूं देख के बड़ा ख़ुश हो रिहा है। पर इहनाँ तिन्नाँ दे देखण विच अते ख़ुश होण विच बड़ा फरक है। मछली ख़ुश होई है कि मींह वर्‍हेगा। उस नूं आस है बदल होइआ है हुण पाणी आओगा। पर जेकर मछली नूं पाणी किसे छपड़ विचों जाँ चिकड़ विचों मिल जावे ते उहनूं बदल नाल फिर कोई मतलब नहीं, उहनूं पाणी नाल मतलब सी। दरिआ चों मिल जाओ, समुंदर चों मिल जाओ, नाली चों मिल जाओ, उसनूं कोई फरक नहीं है। उसनूं ते पाणी चाहीदा है, उह भावें किसे थाँ तों मिल जाओ। जिहड़ा चातृक है उह वी देख रिहा है। उस नूं वी बरसात दी आस है। किउंकि उस नूं पिआस लगी होई है। जदों बरसात हुंदी है ताँ उह मूंह उपर वल करदा है, उसदी पिआस ताँ ही मिटदी है। उस बरसात दी बूंद उहदे हलक दे विच सिधी चली जाँदी है अते उसदी पिआस मिट जाँदी है। इस करके जिस वेले बदल आइआ है, उह मूंह उपर करके पीऊ पीऊ दी अवाज़ करदा रहेगा। जिन्नाँ चिर उहदे हलक विच बूंद नहीं डिगी उन्नाँ चिर उहदी पिआस नहीं मिटेगी। पर जेकर उसनूं तुसीं कहो कि ओथे मूंह करके किउं ओवें रौला पा रिहा हैं, जा किसे होर थाँ जा के पाणी पी लै ताँ उह इहि कर नहीं सकदा। मोर ने देखिआ बदल छाओ हन ताँ उह नचण लग पिआ है। पाणी वर्‍ह जाओ ताँ वी कोई नहीं, ना वर्‍ह जाओ ताँ वी कोई नहीं है। उह बदल वेख के ही ख़ुश है। गुर दरबार विच वी तिन्न तराँ दे जीव आउंदे हन। इस तराँ गुरसिख दीआँ इहि तिन्न अवसथावाँ हन। कई इस करके आउंदे हन कि उहनाँ दी कोई खवाहिश पूरी हो जाओ। जे उहनाँ नूं इहि कहि दिता जाओ कि इथे इहि खुवाइिश पूरी नहीं होणी है, पर किसे कबर ते जा के दीवा जगा दे, उथे पूरी हो जाओगी ते उह कहिणगे

असीं उथे ही चलदे
हाँ। इह मछली दा सवभाव है जिसनूं असथान नाल कोई संबंध नहीं, की मिलदा पिआ है उस नाल संबंध है। मतलब पूरा होइिआ है कि नहीं उहदे नाल संबंध है। ओसे वी गुरसिख ओथे आउंदे हन जिहड़े कहिंदे हन कि इक मंग है, इक पिआस ते है, पर पूरी हो जाओ तेरे दर तों, जाँ ना पूरी हो जाओ, मैं दर छड के नहीं जाणा। मैं आउणा इथे ही है, रहिणा इथे ही है, बहिणा इथे ही है, अरदास तेरे अगे ही करनी है, रोणा तेरे ही साहमने बैठके है। तूं पूरी कर भावें ना कर, मैं दर नहीं
छडणा। इह चातृक दी अवसथा है। पर कुझ ओसे गुरसिख वी आउंदे हन कि तेरे दर ते आओ हाँ तेरे कोल बैठे हाँ, ना तेरे कोलों कुझ मंगणा है, ना तेरे कोलों कुझ लैणा है। तूं अगे ही बहुत कुझ दिता होइिआ है। मैं दरशन करके ही निहाल हाँ। बस, मेरी कोई मंग नहीं। मेरी औकात तों, मेरी लोड़ तों, मेरी मंग (demand) तों ज़िआदा पहिलाँ ही तूं बहुत कुझ दिता होइिआ है। ओथे आ के होर हुण मंगणा कुझ नहीं सिरफ दरशन ही करने हन। इह मोर दी अवसथा है। सो आपणे मन वल झाती मारणी है कि असीं इथे किहड़ी अवसथा लै के आँउदे हाँ। किउंकि बाणी ने इशारा कीता है कि जे रज़ा विच रहिणा नहीं आइिआ ताँ विसमाद दी अवसथा प्रापत नहीं होओगी।

हुण सवाल उठ जाओगा कि इह नवाँ साधन किउं, इसदी की ज़रूरत है। उस ज़माने विच योग मत दा इतना ज़ोर सी कि पहिली पातशाही दे आपणे ही बचे महाराज दी गल सुणन लई तिआर नहीं सन। ते फिर इसदे विच हरज वी की है? असीं योग मत दे पिछे किउं ना चले जाईओ? गुरबाणी ने समझाइिआ कि योग मत दे पिछे जाण जाँ ना जाण दा सवाल नहीं। योग मत जो गोरख नाथ ने शुरू कीता सी उह ते रिहा ही नहीं। जिस तरृाँ वेदाँ दे विचों जो हिंदुइिज़म (Hinduism) पैदा होइिआ सी उह ना रिहा, जिस तरृाँ मुहंमद कोलों जो इसलाम पैदा होइिआ सी उह ना रिहा, ओसे तरृाँ जिहड़ा योग मत गोरख नाथ कोलों पैदा होइिआ सी उह वी विगड़ गइिआ। योग मत किस तरृाँ विगड़ गइिआ, उसदा खुलासा अगले अंक विच कीता गइिआ है।

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइिआ जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु ओको वेसु ॥२८॥
(संतोख रूपी मुंदराँ, लजिआ रूपी झोली, धिआन रूपी सरीर ते सवाह, समें तों आज़ादी दी गोदड़ी, भोगाँ तों निरलेप सरीर , धिआन लगाउण दी जुगती रूपी हथ विच सोटा, सभ नूं इको जिहा वेखण वाली संसथा दा मैंबर, अते आपणे मन उते पूरन काबू रखण वाला सही जोगी कहिला सकदा है। ओसा जोगी सिरफ उस प्रमातमा नूं नमसकार करदा है जो सदा है, बेदाग़ है, धुन रूप है, अते जुगाँ जुगाँतरृाँ तों इको जिहा ही है।)

योगीआँ दी इक आम निशानी सी कि उह कन्न फाड़ के उसदे विच इक वडा सारा मुंदा पा लैंदे सन। कन्न विच इक खास थाँ ते इक खास जुगती नाल शेक करन विच इक भेद सी। योगीआँ ने कन्न ताँ फाड़ने शुरू कर दिते पर उहनाँ नूं जो गोरख नाथ ने गल समझाई सी उह चली गई। उह गल की सी? जिस वेले मन उतेजना विच आउंदा है, तलखी विच हुंदा है, ग़ुसे विच हुंदा है ताँ उसनूं थोड़ा ठंडा करन दा गोरख नाथ ने इक तरीका लभिआ सी। उह सी कि साडे कन्न (Ear Lobe) दे लागे इक ग्रंथी है, इक गंढ है। उस गंढ दी मालिश करन नाल मन नूं इक खास तरृाँ नाल आराम मिलदा है। अंदर तलखी आई है ताँ उसने कन्न नूं हौली हौली मलना शुरू कर देणा। बजाओ उस तलखी दे उते कारवाई (Act) करन दे, बजाओ उस ग़ुसे (Anger) नूं बाहर कढण दे उह बस मालश करनी शुरू कर दिआ करदा सी। उस नूं इस भेद दा पता सी कि इथे इक ग्रंथी है, सो जे मालिश करके उस ग्रंथी दी गंढ खुल्ह जाओ ताँ मन शाँत हो जाओगा, संतुशट हो जाओगा। उह तरीका ते जोगीआँ नूं भुल गइिआ पर उहनाँ ने हर नवें जगिआसू दा कन्न फाड़ना शुरू कर दिता। गुरबाणी ने किहा कि उह योग दे भेद सन।
गुरू चला गइिआ, गुरू दे जाण तों बाअद भेद ख़तम हो
गइिआ। मुंदा निशानी सी Contentment दी, संतुशट होण
दी। संतुशट होण दा मतलब की है? असीं पहिलाँ समझ आओ हाँ कि उसदी रज़ा विच रहिणा ज़रूरी है। जो जीव रज़ा विच राज़ी नहीं, उह संतुशट हो ही नहीं सकदा। जिसदे मन विच किंतू आ गइिआ, सवाल आ गइिआ कि मेरे नाल इस तरृाँ किउं हुंदा पिआ है फिर इह संतुशटी नहीं है। जिस मन विच किंतू नहीं है उहदी अवसथा वल गुरबाणी इशारा करदी है:

"रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥
परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥" (पन्ना ४७३)

भाव जे किसे नूं हसदा वेखदा है ताँ वी उहदी याद आ गई, जे कोई रोंदा पिआ है ताँ उहदे वल वेख के वी उसदी याद आ गई कि उह ही रोंदा पिआ है, जे कोई चुप करके बैठा है ताँ उहदी याद आ गई कि उह ही चुप करके बैठा
है। बस हर थाँ ते उह ही नज़र आ रिहा है, जो हो रिहा है सो वाह वाह, जो कर रिहा है सो वाह वाह, जो करेंगा सो वाह वाह। फिर शिकाइित किथे रहि जाओगी? योग मत ने वी उसे संतुशटी वल इशारा कीता सी जिस वल गुरमत ने कीता

है। गोरख नाथ ने मन नूं शाँत करन लई इक ख़ास विधी दा प्रयोग करके आपणे चेलिआँ नूं समझाइआ सी पर योगीआँ ने इह गल समझी नहीं अते उह विगड़के इक करम काँड बणके रहि गइआ अते उहनाँ ने कन्न ही पाड़ने शुरू कर दिते।

इसेतराँ गोरख नाथ आपणे सरीर नूं सिरफ इक कपड़े नाल ढकदा सी। उसदे लई झोली बन्नणा उसदे दर दी शरम (लजा) दी निशानी सी। योगी नूं झोली पवाई जाँदी सी ते याद दिलाइआ जाँदा सी कि इह तेरी लजा है, तैनूं ढकिआ जा रिहा है किउंकि उसदे साहमणे ताँ तूं नंगा हैं ही। तैनूं इह सदा याद रहे कि उस कोलों कुझ वी छुपिआ होइआ नहीं, बस दुनीआँ कोलों ही परदा है इस करके उसदे दर ते हमेशाँ नजर नीवी रहे। कदी वी हंकार सिर नाँ चुके। इह सरीर तैनूं इक प्रसादि विच मिलिआ है, इक तोहफा मिलिआ है। इह जिथों आइआ है उसदी तैनूं सदा याद रहे। जिसनूं इह याद नहीं है उहदे कोल शरम नहीं हो सकदी, उहनूं लजा नहीं आओगी। उह जदों वी कदे धरम दे रसते ते चलेगा ते उह मुछाँ नूं ताअ दे के चलदा होवेगा, आकड़ के चलदा होवेगा कि मेरे ताकत नूं वेख लओ, मेरी अकल नूं वेख लओ, मेरे गिआन (Knowledge) नूं देख लओ। उह हर थाँ ते दिखावा करेगा कि मैनूं हर गल दा पता है किउंकि उसदी "मैं" बहुत वडी हो जाँदी है। गोरख नाथ ने आपणे चेलिआँ नूं इह इशारा कीता सी कि इसनूं झोली नहीं समझणा, इसनूं कपड़ा नहीं समझणा, इह शरम है, लाज है, मानव सरीर ते परदा पाइआ गइआ है। पर इह गल किसे नूं वी याद न रही अते झोली सिरफ पहिरावा बणके रहि गई।
जोग मत धिआन दा मारग है। गोरख नाथ दी धिआन लगाउण दी विधी सी कि हर इक अंग दा इक इक मुसाम उसदे धिआन नाल भरिआ होणा चाहीदा है। धिआन बाहर नूं न भजे मानो कि हर मुसाम उसदे धिआन विच डुबिआ रहे। सिरफ धूणी लगा के बहि जाण नाल धिआन नहीं जुड़ सकदा। उस धिआन विच डुबे होओ मानुख दी हाउमें सड़के सुआह हो
जाओगी। पर जोगीआँ नूं सुआह ही याद रहि गई अते उसदा अंतरीव इशारा भुल गइआ सो जोग मत विच इह इक रसम बणके रहि गई। उहनाँ ने लकड़ाँ दी सुआह ही सारे सरीर नूं मलणी शुरू कर दिती। जोगी लोग इसनूं बिभूती लगाणा आखदे हन। इस रसम दा बजाओ फाइदा होण दे उलटा नुकसान होणा शुरू हो गइआ। सुआह ने सरीर दे सारे मुसाम बंद कर दिते जिस नाल पसीना आउणा बंद हो गइआ अते सरीर बिमार होणा शुरू हो गइआ।

"खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥"

खिंथा तो भाव है गोदड़ी अते कालु तों भाव है वकत (समाँ)। गोदड़ी कुझ वसतू कोल रखण लई हुंदी है। कुदरत ने इस धरती ते रहिण लई हर सरीर नूं कुझ मिथिआ होइआ समाँ दिता है। जिस तराँ गोदड़ी सीमत है इसे तराँ जीवन सीमत है। सो जोग मत लई गोदड़ी सीमत जीवन दी निशानी
सी। इस जीवन विच रहिंदे होओ समें दी पकड़ तों दूर निकल जाण लई उपराला करन दी कोशिश सी। पर इह वी इक रसम ही बणके रहि गई।

कुआरी काइआ दा मतलब इह नहीं जिसने विआह नहीं
कीता। इह रिवाज जोग मत विच सिरफ गोरख नाथ दे गृसती ना होण करके चल पिआ हालाँ कि इस बारे गोरख नाथ ने कोई चरचा नहीं कीती। उह ताँ करम इंदरीआँ नूं वस करन दी भाल विच सी। जोग विच हर गिआन इंदरी अते हर करम इंदरी नूं इक वल जोड़न लई साधन लभे गओ सन। इसे करके ताँ जिसने आपणे विचों पंजे दे पंजे चोर नथ लओ होण उसनूं नाथ किहा जाँदा सी। भाव कि उसने पंजे चोराँ नूं नथ पा लई है, इस करके उह नाथ है। सिध तों भाव है जिसने इंदरीआँ नूं सिध कर लिआ है, संजम (Control) विच कर लिआ है। हुण इह बाहर वल नहीं जाँदीआँ।

इह सभ कुझ बिना किसे जुगती दे नहीं पाइआ जा
सकदा। मन इक अड़ीअल घोड़े दी तराँ है। इसनूं वस करन लई कई उपराले करने पैंदे हन, कदी पिआर नाल अते कदी सखती नाल। जोगीआँ दा आपणे हथ विच इक डंडा रखणा इसे दी निशानी सी। डंडा उस जुगती दी निशानी है जिस नाल बाहर नूं भजे होओ मन नूं वापिस लिआउणा है। जिस तराँ कबीर जी ने किहा है:

"चलु रे बैकुंठ तुझहि ले तारउ ॥
हिचहि त प्रेम कै चाबुक मारउ ॥२॥" (पन्ना ३२९)

भाव सवरग दे रसते ते चलण लगे हाँ पर जे मन अड़िआ ते उहनूं पिआर दे नाल चाबुक मारीं पर गुसे ना होईं। जे गुसे विच आ गइआ ते फिर कंम उलटा हो गइआ। इसनूं उस पासे पिआर दे नाल तोरना है पर चाबुक मार के, उहनूं रिआइत नहीं देणी, इह नहीं कहिणा कि कोई गल नहीं है चल चार दिन ते भगती कीती अज पंजवें दिन छुटी कर लै। नहीं पंजवाँ दिन लाउणा ज़रूर है पर ज़रा पिआर दे नाल गुसे नाल नहीं। इह जुगती ही उह डंडा सी जिस तरीके नाल मन ते control रखणा है। पर उह

डंडा बस रात बराते जानवराँ तों बचण दा साधन बणके ही रहि गइिआ।

जोग मत दा सारिआँ तों जिहड़ा उचा कुनबा (फिरका) सी उसदा नाँ सी आई पंथ। आई पंथी उसनूं किहा सी जिहड़ा सगल जमाती हो गइिआ है। जिहदे विच हुण भेद भाव नहीं रहि गइिआ, जिसनूं सारा जगत ही इिको जिहा लगण लग पइिआ है। सारिआँ लई उह है, उहदे लई सारे हन। अज असीं दुनीआँ नूं इिह कहाणी ताँ ज़रूर सुणाउंदे हाँ कि जद गुरू नानक देव जी ने मात लोक तों चलाणा कीता ताँ हिंदूआँ ते मुसलमानाँ विच झगड़ा पै गइिआ। मुसलमान कहिण साडा पीर है ते उह हिंदू कहिण साडा पीर है। इिस करके गुरू नानक देव जी सभ दे साँझे सन। पर असीं खुद सगल जमाती बणन लई तिआर नहीं होओ बलकि उलटे तूाँ तूाँ दीआँ वंडाँ पाके बैठ गओ हाँ। आई पंथी उसदी निशानी सी जो सारिआँ विच कोई फरक नहीं सी समझदा। पर जोगीआँ ने इिह गल बिलकुल भुला लई किउंकि सगल जमाती सिरफ उह हो सकदा है जिसने इिस मन नूं जित लइिआ है। इिह नहीं समझणा कि गुरबाणी कहि रही है कि जे तूं दुनीआँ नूं जितणा है ताँ आपणे मन नूं जित
लै। इिसदा दुनीआँ जितण नाल कोई संबंध नहीं है। इिस तों भाव है कि जिसदा मन जितिआ गइिआ है उसनूं होर कुझ करन दी लोड़ नहीं है। सारा कुझ इिसे विच ही आ जावेगा।
जिसने आपणा मन जित लइिआ है उह सगल जमाती बण जाओगा। जिहड़ा सगल जमाती है उसने हुण जितणा किसनूं है? जदों सारा जग आपणा हो गइिआ है, जिसदा कोई दुशमन ही नहीं रिहा, हर कोई आपणा हो गइिआ है उसनूं की जितण हारन नाल मतलब रहि जाओगा? बस मन नूं जित लै फिर जिहड़ी जग नूं जितण वाली गल है उह सारी ख़तम हो जाँदी है, किउंकि सारे आपणे हो गओ। इिस अवसथा तक पहुंचाउण दा तरीका सी 'आदेसु तिसे आदेसु', उस इिक नाल जुड़ना, उस इिक दी भगती करनी जो कि:

"आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु ओको वेसु।"

योग मत दा वी इिहो इिशारा सी जो कि सिख मत नूं दिता गइिआ है:

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

गोरख नाथ ने उसनूं इिस तूाँ किहा सी जो आदि तों है, जो रंग तों बिना है, अनादि (अनहद नाद) जिहड़ा soundless sound है, जिसदा हत नहीं हो सकदा, जिहड़ा ख़तम नहीं हो सकदा, जिसदा हर युग दे विच इिको वेस रिहा है, दुनीआँ ने भेस बदले हन पर उह नहीं बदलिआ, योग मत उस नाल जुड़िआ होइिआ सी। पर बाद विच योग मत उस तों दूर चला गइिआ। इिस करके गुरसिख नूं फिर याद दिलाइिआ गइिआ कि सारीआँ ही धरम टोलीआँ करम काँढाँ विच फसके रहि गईआँ हन अते उसदी रज़ा विच रहिणा भुल चुकीआँ
हन।

भुगति गिआनु दइिआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ संजोगु विजोगु दुइि कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु ओको वेसु ॥२९॥
(जिस जोगी दे अंदर अनहद नाद सुनाई दे गइिआ है, उह उस गिआन दा चूरमा दइिआ वस होके सभ विच वंडदा है। जिसने आप आपणिआँ इिंदरिआँ नूं नथ पा लई है अते होरना नूं उस बारे प्रेरदा है उस लई सभ रिधीआँ सिधीआँ (करामाताँ) बाहर दा (माड़िआ) सवाद बण जाँदीआँ हन। उस लई जीवन दो पहिलूआँ (मिलना ते विछड़ना) विच हो रही इिक खेलु है जिस विच आपणे कीते फैसलिआँ मुताबिक फल मिलदा है। उह सिरफ उस प्रमातमा नूं नमसकार करदा है जो सदा है, बेदाग़ है, धुन रूप है, अते जुगाँ जुगाँतूाँ तो इिको जिहा ही
है।)

इिस पदे विच वी गुरबाणी जोग मत की सी, अते की बणके रहि गइिआ, उसदा खुलासा कर रही है। इिस विच कोई जोगीआँ दी नुकता चीनी नहीं कीती जा रही। जोग मत विच जो भेद सिरफ रसमाँ बणके रहि गओ उह भेद फिर खोहले जा रहे हन। "भुगति गिआनु" तों भुगति दा मतलब है चूरमा, खाणा, लंगर,। जोगी लोग आटा भुन्न के उसदा चूरमा बणा के रखिआ करदे सन ते नवें चेलिआँ नूं प्रसाद वजों दिआ करदे सन।
पर इिस तूाँ दा चूरमा ताँ किसे दा कुझ वी नहीं सवार
सकदा। कई योगीआँ ने होर बड़े तमाशे करने शुरू कर

दिते।
उहनाँ ने नशिआँ दे चूरमे बनाउणे शुरू कर लओ अते मशहूर कीता कि इिहना नाल धिआन लग जाँदा है जो कि सरा सर झूठ है। जोग मत विच इिहो जिहे प्रसाद दी कोई जगाह नहीं सी। जोगीआँ लई इिह हिदाइित सी कि जो वी जगिआसू मन विच जोग धारन

दी इछा नाल आवे उसनूं पहिलाँ पिआर नाल बिठाके पूरा गिआन देणा चाहीदा है। इिह गिआन वी उह जोगी ही देवे जो आप परम अवसथा नूं प्रापत कर चुका है, जिसदे अंदर अनहद नाद गूंज पइिआ है। ओसे जोगी अंदर ही दूजिआँ लई ओसी दइिआ हो सकदी है। जिहड़ा जोगी अजे खुद साधना कर रिहा है पर किसे प्रापती ते नहीं पहुंचिआ उस विच दइिआ दी जगह हाउमें वी बैठी हो सकदी है। इिसे करके गुरबाणी इिशारा कर रही है जिसनूं अंदरों (घटि घटि) अनहद दी गूंज (वाजहि नाद) सुणाई दे रही है उही गिआन रूपी प्रसाद (भुगति गिआनु) दइिआ रूप होके जगिआसूआँ विच वंडे (भंडारणि)। गुरमत ने वी गुरसिख नूं इिही लंगर चलाउण लई किहा सी पर असाँ वी होर तरृाँ दे लंगर मशहूर कर दिते हन। गुरबाणी ने फरमाइिआ है:

“लंगरु चलै गुर सबदि हरि
तोटि न आवी खटीओ ॥” (पन्ना ९६७)

गुरसिख लई वी लंगर बैठ के शबद दी कमाई करन नूं किहा सी। पर साडा लंगर होर ही बण गइिआ। गुरबाणी विच रोटीआँ खवाउण नूं किसे जगह लंगर नहीं किहा। जो सरीर दा भोजन है उसदी जीवन नूं बिलकुल अलग तरृाँ दी लोड़ है। इिसनूं भगती नाल नहीं मिलाइिआ जा सकदा। भगताँ दे भोजन बारे गुरबाणी दा इिशारा है:

“हरि नामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाइिओ हम कउ तृपति भई ॥” (५९३)

इिस तों भाव इिह नहीं कि भगत रोटी पाणी छड बैठदा
है। इिह खाणा ताँ सिरफ सरीर दा भोग है। पर आतमा दा असली भोजन उसदा नाम है। इिही विचार जोगीआँ नूं समझाइिआ गइिआ सी कि गुरू कोल बैठ के गिआन हासिल करके कमाई करनी है, इिसनूं लंगर किहा गइिआ सी। उस लंगर नूं वंडण दे लई दइिआवान हिरदा चाहीदा है। जिस हिरदे विच दइिआ नहीं उथे धरम पैदा ही नहीं हो
सकदा। गुरबाणी दे महाँवाक मुताबिक “धौलु धरमु दइिआ का पूतु ॥” भाव दइिआ माँ है, धरम उसदा पुतर है। इिसे करके जिसनूं वी इिह चूरमा गुरू दे देवे उह वंडदा है। उह चुप नहीं रहि सकदा, उह आपणे कोल रख नहीं सकदा। इिह धुर दरगाहों आइिआ है, जिस तरृाँ आइिआ है, उसे तरृाँ ही वंडिआ जाँदा है। पर जोगी इिह सभ कुझ भुल गओ। उहनाँ नूं अनहद नाद नाल कोई मतलब ही ना रहि गइिआ बलकि उहनाँ ने सिंगी वजाउणी शुरू कर दिती। आपणे मंदराँ विच नाद वजाउणा शुरू कर दिता। संख लै लिआ जाँ डंगराँ दे सिंग दी सिंगी बणा लई। जोगीआँ वाँगू ही सिख जगत विचों अनहद नाद सुणन दा चाउ उड गइिआ लगदा है। उहदे लई वाजे तबले नहीं चाहीदे। असाँ वाजे तबले दा शोर इितना पा लइिआ है कि साडा अनहद नाद सुणन दा शोक ही ख़तम हो गइिआ है, उसदी तलाश ही बंद हो गई है।

“आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥”

इिस तुक दी परचलित विआखिआ हेठ लिखे तरृाँ कीती गई है:

“तेरा नाथ आप अकाल पुरख होवे, जिस दे वस विच सारी सृशटी है, (ताँ कूड़ दी कंध तेरे अंदरों टुट के परमातमा नालों तेरी विथ मिट सकदी है। जोग साधनाँ दी राहीं प्रापत होईआँ रिधीआँ विअरथ हन, इिह) रिधीआँ ते सिधीआँ (ताँ) किसे होर पासे खड़न वाले सुआद हन।”

पहिले ते इिस विआखिआ विच इिह मन लइिआ गइिआ लगदा है कि जोग मत ते नुकता चीनी कीती जा रही
है। दूजे इिंज लगदा है कि पहिली तुक जोगी बारे ते दूजी तुक प्रमातमा बारे, फेर तीजी तुक दा अधा हिसा जोगी बारे ते अधा हिसा प्रमातमा बारे मन्नके मतलब कढण दी कोशिश कीती जा रही है। इिसतरृाँ दी विचारधारा किसे वी पहिलू तों सही नहीं
लगदी। इिक ब्रहम गिआनी दा सवभाव हो ही नहीं सकदा कि उह दूजे दीआँ कमीआँ वेखे अते उहनाँ ते नुकता चीनी करे। जिवें पहिले इिशारा कीता गइिआ है गोरख नाथ दा जोग मत ही बिआन कीता जा रिहा है जो कि उस समें तक बिलकुल रूप बदल चुका सी। दूजे गुरबाणी इिस तरीके नाल मज़मून इिके ही पैरागराफ विच नहीं बदल सकदी। दरअसल इिह सारा पदा जोग मत दे असली रूप नूं ही बिआन कर रिहा है। “आपि नाथु नाथी सभ जा की” विच प्रमातमा वल इिशारा नहीं कीता जा रिहा बलकि जोग मत बारे ही दसिआ जा रिहा है कि जो जोगी आप नाथ बण चुका है अते बाकी सारिआँ नूं नाथ बणन दा चूरमा वंड रिहा है उस लई रिधीआँ सिधीआँ कुझ मुल नहीं रखदीआँ किउंकि उह माइिआ दा (अवरा) सवाद (साद) है। पर जोगी लोग इिस बुनिआदी धुरे नूं छड गओ अते जितना योग मत सी गोरख तों बाद करामाताँ विच फस गइिआ। गोरखनाथ ने वी आपणे चेलिआँ नूं इिह किहा सी कि इिस रसते ते चलदिआँ होइिआँ रिधिआँ सिधीआँ रसते विच आउणगीआँ, इिहनाँ तों बचिओ। इिह दूजे सवाद ने, इिहनाँ दे विच नहीं फसणा।

"संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥"

इिह तुक वी उस जोगी दी अवसथा बिआन कर रही है जो कि सही रूप विच नाथ बण चुका है। उसनूं गिआन हो जाँदा है कि इिह जो कुझ हो रिहा है उसदे हुकम विच हो रिहा है। उह सारिआँ तो वडा नाथ है अते उसने हर चीज़ नूं नथिआ होइिआ है। नक विच नकेल पा के उसने वागडोर आपणे हथ विच रखी होई है। इिस करके जो वी आले दुआले तमाशा हो रिहा है सभ ओही कर रिहा है। इिसनूं आपणा समझणा इिह अवरा साद
है। जीवन दा खेल्ह दो दिशावाँ विचकार चल रिहा है, विछड़ण विच ते मिलण विच। जे विछड़िआ नहीं ते मिलिआ नहीं जा सकदा, जे मिलिआ नहीं ते विछड़िआ नहीं जा सकदा। जे रात नहीं ते दिन नहीं है जे हंसी नहीं है ते ख़ुशी नहीं है, सुख नहीं है ताँ दुख वी नहीं है। इिह उसदी लीला है। इिस राज़ नूं जिसने समझ लिआ है, ओसा जोगी सिरफ उस प्रमातमा नूं नमसकार करदा है जो सदा है, बेदाग़ है, धुन रूप है, अते जुगाँ जुगाँत्राँ तो इिको जिहा ही है।

(अंक ३०-३१)

पंजाब दी धरती उते जोग मत कई सदीआँ तों बहुत परबल रिहा है। जोगी लोग तृाँ तृाँ दीआँ करामाताँ दिखाके जनता नूं आपणे वल खिचदे रहिंदे सन। कई जोगीआँ नूं नाथ जी कहिके वी बुलाइिआ जाँदा सी। ''नाथ'' दा मतलब है उह विअकती जिसने आपणीआँ करम इंदरीआँ नूं नथ लइिआ है, कंटरोल विच कर लइिआ है, मानो इिक तृाँ नाल उहनाँ दे नक विच नथ पा लई है। जोगीआँ दे गुरू गोरख नाथ दा आपणे चेलिआँ लई सुनेहाँ ताँ इिही सी, पर इिह गल ना हो सकी बलकि जोग मत रिधीआँ सिधीआँ दा इिक तमाशा जिहा बणके रहि
गइिआ। बहुत सारे विद्वानाँ ने जपु बाणी दे २८, २९, ३०, अते ३१ पदे जोग मत नाल जोड़ दिते हन। जपु बाणी दे अठाईवें अते उनतीवें पदे (इिहना नूं पउड़ीआँ कहिणा मन मत है) विच जोग मत बारे विचार कीती गई सी। अगले दो पदे जोग मत दी विचार नहीं दस रहे। अठाईवें अते उनतीवें पदे विच जोग मत वलों प्रचलत रिधीआँ सिधीआँ नूं "अवरा साद" दसिआ गइिआ सी। इिह इिक ओसा घटीआ रस (सवाद) है जो परम अवसथा तक पुजण दी थाँ जगिआसू नूं रसते विच ही पकड़ के बिठा दिंदा है। परम पुरख दी घाटी वल यातरा पकी करन लई गुरबाणी अगले पदे विच जगिआसू दी अगवाई करदी नजर आउंदी है जिस विच सिरफ इिक नाल ही जुड़न लई प्रेरिआ जा रिहा है।

"ओका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥
इिकु संसारी इिकु भंडारी इिकु लाओ दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता ओहु विडाणु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु ओको वेसु ॥३०॥"
(इिह माइिआ उस प्रमातमा ने इिक अनोखे ढंग नाल बणाई
है। जो माइिआ दे जाल विच नहीं फसे (चेले) उही उसदी दरगाह विच परवाण होओ हन। उही माइिआ नूं बनाउण वाला है, उही माइिआ नूं पालण वाला है, अते उही माइिआ नूं नाश करन वाला है। उसदी जुगती दा अचंभा इिह है कि उह ताँ सारी माइिआ नूं वेखदा है, पर माइिआ जाँ माइिआ दे प्रभाव विच फसिआ उसनूं नहीं वेख सकदा। ताँ ते उसनूं नमसकार ही कीता जा सकदा है जो कि सदा है, बेदाग़ है, धुन रूप है, अते जुगाँ जुगाँतृाँ तो इिको जिहा ही है।)

इिसदा पाठ अकसर इिस तृाँ कीता जाँदा है:

''ओका माई जुगत विआई तिन्न चेले परवाण''।

इिस दा तरजमाँ (Translation) अकसर इिंझ कीता जाँदा है:

''(लोकाँ विच इिह ख़िआल आम प्रचलत है कि) इिकली माइिआ (किसे) जुगती नाल प्रसूत होई ते परतख तौर 'ते उस दे तिन्न पुतर जंम पओ। उहनाँ विचों इिक (ब्रहमा) घरबारी बण गइिआ (भाव, जीव-जंताँ नूं पैदा करन लग पिआ), इिक (विशनूं) भंडारे दा मालक बण गइिआ (भाव, जीवाँ नूं रिज़क अपड़ाण दा कंम करन लगा), अते इिक (शिव) कचहिरी लाउंदा है (भाव, जीवाँ नूं संघारदा है)।''

गुरबाणी दी अधिआतमिकवाद दी कसवटी ते इिह तरजमाँ पूरा नहीं उतरदा। ब्रहमा बारे बाणी दा फैसला है:

''सनक सनंद अंतु नहीं पाइिआ ॥
बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइिआ ॥१॥'' (पन्ना ४७८)

भाव ब्रहमा दीआँ दो पीढ़ीआँ (ब्रहमाँ अते उसदे दोवें पुतर सनक ते सनंद) उसदी बणाई होई कुदरत दी विचार करदे होओ थक गओ, पर उसदा अंत ना पा सके। बलकि ब्रहमा ने इिस तृाँ दी विचार वेदाँ विच करके आपणा जनम ही गवा लइिआ किउंकि उह परम अवसथा नूं प्रापत ना कर
सकिआ। जिसने आपणा जनम गवा लइिआ उसनूं प्रमातमा वलों ओसी डिऊटी (Duty) लगी किवें मन्नी जा सकदी है? दूजे, जेकर इिस तुक दे विच तिन्ना दी गिणती है ताँ बाणी दी तुक बजाओ ''इिकु संसारी इिकु भंडारी इिकु लाओ दीबाणु'' दी थाँ ते इिक

संसारी दूजा भंडारी तीजा लाओ दीबाण किउं नहीं है? जेकर इिह तिन्न दी गिणती है ताँ तिन्न दी गिणती लिखी किउं नहीं? विचार करन तों पता लगेगा कि इिथे तिन्न दी गिणती है ही नहीं। गुरबाणी विच जिथे तिन्न दी गिणती कीती गई है उथे तते नूं बिहारी पा के कीती है जिवें:

"तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार ॥१॥"(पन्ना ३४६)
"तीन भवन निहकेवल गिआनु ॥" (पन्ना ४१४)

जे इिसनूं धिआन नाल देखीओ ताँ पता लगदा है कि इिथे नन्ने नूं वी सिहारी है, तते नूं वी सिहारी है। असाँ नन्ने दी सिहारी नूं बिलकुल गूंगा कर दिता है, हालाँकि इिसदा पाठ सी "तिन्नि"। हुण इिसदी विआखिआ साफ हो जावेगी। प्रमातमा ने सारी माइिआ, सारी रचना (Creation) इिक ओसे टैकनीक दे नाल, ओसी जुगती दे नाल तिआर कीती है जिसदे बारे होर कोई जाण नहीं सकदा। उस माइिआ दे विचों उसनूं उह ही परवान होओ हन जिहड़े उसदे चेले बण गओ। जिहड़े चेले बणन दी हिंमत कर सके उह परवान हो गओ। फेर उहनाँ दी की अवसथा है? बाणी दा फुरमान है:

"पंच परवाणु, पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगह मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु ओकु धिआनु ॥"

जिहड़े इिक नाल जुड़ गओ, जो पंजा करम इिंद्रीआँ नूं, पंजाँ गिआन इिंदरीआँ नूं, दसाँ ही शरूतीआँ नूं इिकठिआ करके इिक ईशवर दे नाल अभेद हो गओ ;

"ओतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीओ होइि इिकीस ॥"

जो उस नाल मिल गओ उह परवान हो गओ ।

माइिआ नूं बणाउंदा वी उह आप है, माइिआ नूं पालदा वी उह आप है, अते माइिआ नूं नाश वी उह आप ही करदा है। जितनी वार 'इिक' लिखिआ है उतनी वारी ही उसदे 'कके' नूं underline कीता है, हगिहलगिहट कीता है भाव कि कके दे थले बार-बार औंकड़ पाइिआ है। गुरबाणी इिस तरृाँ इिशारा कर रही है कि इिसदे वल धिआन दिउ। उही है पैदा करन वाला, उही है पालण वाला अते उही है इिस नूं नाश करन वाला। बाणी बार बार कहि रही है कि:

"तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जी
तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥"
"आपे सृसटि उपाईअनु आपे फुनि गोई ॥
"तुधु आपे सिसटि सिरजीआ आपे फुनि गोई ॥"
(पन्ना ६५३-६५४)

गोई तों भाव है नाश करना। पहिलाँ आपे ही सारी सृशटी साजी है ते फेर जदों वकत आओगा आप ही नाश कर देवेगा। "ओका माई जुगति विआई" उह जुगति किहड़ी है जिस वल इिशारा कीता गइिआ है? उसदा जवाब है "ओहु वेखै ओना नदरि न आवै"

अज तक दुनिआँ दे उते जितने वी रचनहार (Creator) देखदे हाँ, उहनाँ दी रचना (Creation) रचनहारे नालों अलग हुंदी है। जिवें कि बुतकार ने बुत बणाओ, बुतकार आपणे घर बैठा है ते बुत उसदा किसे होर घर विक के चला गइिआ है। चि"कार (Painter) चि" (Painting) बणा लवे ताँ उसदी चि" किसे घर विच लगी होई है ते उह आपणे घर विच बैठा होइिआ है। पर कुदरत (माइिआ) इिक ओसी रचना है कि रचनहार इिसदे विच छुपिआ बैठा है, बाकीआँ दी तरृाँ अलग नहीं है। बाणी दा फुरमान है:

"आपीनै्ह आपु साजिओ आपीनै्ह रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीओ करि आसणु डिठो चाउ ॥" (पन्ना ४६३)

"करि आसणु" भाव आपे माइिआ बणा के उस विच बैठ के देख रिहा है (डिठो), और फिर खुश हो रिहा है। उहदे

दरबार विच कोई गल ग़लत नहीं अते ना ही उहदे दरबार विच कोई गल अणहोणी है इस करके उह सदा ही चाउ दी अवसथा विच है, सति, चितु, आनंद दी मौज विच है।

सो जुगति की है? "ओहु वेखै ओना नदरि न आवै" उह सारिआँ नूं देख रिहा है पर उह किसे नूं नहीं दिसदा। जिहड़े चेले परवान होओ हन उही उसदा आनंद माण सकदे हन, जिहड़े परवान नहीं, उह उसनूं वेख वी नहीं सकदे। इस विच 'ओहु' प्रमातमाँ वल इशारा करदा है अते 'ओना' माइिआ विच डुबिआँ वल इशारा है। उह माइिआ नूं देखदा है, माइिआ विच फसे इनसानाँ नूं देखदा है, माइिआ विच फसी सारी काइिनात नूं देखदा है। पर माइिआ विचों जिहड़ा निकल के परवान होइिआ उही उसदी झलक नूं देख सकदा है, दूजे नूं इिह प्रसादि प्रापत नहीं। बस इिही है उस दी जुगति।

जिस दिन इिह गल समझ विच बैठ गई, उस दिन आपणे आप ही ''आदेस तिसै आदेस'' मूंहो निकलना शुरू हो जाओगा। उस समें होर कुझ कीता ही नहीं जा सकदा। आपणे आप मूंहों उसदी उसतति शुरू हो जाओगी। उसदे दरबार विच आप महारे मूहों निकल जावेगा "आदेस", प्रनाम, नमसकार, तूं ही तूं, आदि। हुण धिआन दिउ, इिहना दो पदिआँ दा योग मत नाल कोई संबंध नहीं है। इिह ताँ निरोल (Pure) गुरमति है। योग मत बारे पहिले दो अंक हन, हालाँकि चारे इिकठे हन। पर भेद नूं समझाउण लई योग मत दी गल दस के गुरमत इिशारा कर रही है कि निकल जाओ बाहर इिहनाँ रिधीआँ सिधीआँ विचों, अते बाकी फिकर छडके उस दे नाल जुड़ जाउ। होर सभ कुझ मंगणा छड दिओ किउंकि बाकी सभ कुझ उसने आपे ही दे दिता होइिआ है। अगलीआँ लाइिनाँ इिही इिशारा कर रहीआँ हन:

''आसणु लोइि लोइि भंडार ॥ जो किछु पाइिआ सु ओका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु ओको वेसु ॥३१॥''
(सारे ब्रहमंडाँ विच उसदा वासा है 'आसणु लोइि लोइि', अते हर थाँ उसे दे ही ख़ज़ाने (भंडार) हन। जितनाँ कुझ वी सारे ब्रहमंडाँ नूं पालण लई चाहीदा है उह सारे दा सारा इिको वार ही दे दिता गइिआ है। इिह उस मालिक (सिरजणहारु) दी रज़ा है जिस नाल सभ कुझ आपणे आप ही हो रिहा है किउंकि उह मालिक आप सचा है इस करके उसदी हर करनी वी सची है। ताँ ते उसनूं नमसकार ही कीता जा सकदा है जो कि सदा है, बेदाग़ है, धुन रूप है, अते जुगाँ जुगाँतरूाँ तों इिको जिहा है।)

हर जीव इिक चिंता विच फसिआ होइिआ दिसदा है कि किते उस पास जीवन गुज़ारन लई दौलत दी कमी ना हो जावे। सो जदों उसनूं मौका लगदा है ताँ उह प्रमातमा कोलों इिही मंग करदा है कि होर दौलत दे। गुरबाणी इिशारा कर रही कि इिह गल बणनी नहीं किउंकि उसदा अटल फैसला है कि जितनी वी काइिनात है उस नूं पालण दा इिंतजाम उसने सारा इिको वेले ही कर दिता है। जितने वी ब्रहमंड (Galaxies) हन, जितनीआँ पातालाँ आगासाँ विच धरतीआँ हन, उह सारीआँ उसे दीआँ बणाईआँ होईआँ हन अते सारिआँ दे पालण दा खाजा इिको वार ही दे दिता गइिआ है। असीं नौकरीआँ करदे हाँ, ताँ हर हफते जाँ महीने मगरों सानूं तनखाह मिल जाँदी है भाव कि जितने दिन कंम कीता उतने दिन दे पैसे मिल गओ अते अगे पैसे लैण लई कंम होर करना पैंदा है। पर प्रमातमा दा कानूंन इिह नहीं है। सारीआँ धरतीआँ दे उते जितने जीव हन, जिस तरूाँ दी वी जीवंत रूप (Life form) है, अते जितनी देर वी उसने जीऊंदे रहिणा है उह सारे दा सारा इिंतजाम इिको वार ही कर दिता है। सो इिह ना घटेगा ते ना इिह वधेगा। सो बार बार आके होर मंगण दा कोई फाइिदा ही नहीं। जो वी इिस सरीर दीआँ सारी उमर दीआँ लोड़ाँ हन, उह सभ कुझ इिके वाराँ भाँडे विच पा दिता गइिआ है। हुण बार बार गुर दरबार विच आ के इिह भाडाँ खड़काउण दा कोई लाभ नहीं होओगा। इिस भाँडे विच इिह जो कमी रहि गई लगदी है उह सिरफ लोभ करके लगदी है नहीं ताँ इिसदीआँ ज़रूरताँ मुताबिक सभ कुझ बिनाँ मंगिआँ ही मिल रिहा है। इिह उस सचे दी सची करनी दी निशानी है।

सानूं ते अजे तक इिही फरक ही नहीं पता लगा कि सची ते झूठी कार हुंदी की है। अधिआतमिकवाद दी दुनीआँ विच जिस वी कंम दे नाल "मैं" जुड़ जावे, उह ग़लत हो गइिआ। कंम सही होवे भावें ना होवे इिसदा सवाल ही नहीं है। जेकर किसे वी कंम नाल "मैं" जुड़ गई ताँ उह कंम ग़लत हो गइिआ, उह कंम गुनाह बण गइिआ। इिस भेद विच सभनूं इिक आम अड़चन पैंदी है, जिस बारे नौजवान बचे बचीआँ इिह सवाल खड़ा करदे हन कि भाशा दे विच कहिणा पैंदा है, मैं पढ़ रिहा हाँ, मैं रोटी खा रिहा हाँ, मैं कंम कर रिहा हाँ। इिस करके अकसर उन्हाँ बचिआँ नूं राओ दिती जाँदी है कि जदों कोई पुछे कि की करदे हो ताँ इिह नहीं कहिणा कि मैं कर रिहा हाँ। उदों इिह कहिणा कि इिह कंम हो रिहा है; जिवें रोटी खाधी जा रही है, विचार वटाँदरा हो रिहा है आदि। मैं विचार कर रिहा हाँ, इिह नहीं कहिणा। जे मैं विचार कर रिहा हाँ ताँ फेर अंदरों "मैं" बैठी बोल रही है ताँ विचार काहदी रहि गई, फिर ते हंकार बण गइिआ।

''करि करि वेखै सिरजणहारु।''

करता दा भाउ सिरफ उसे नाल ही लग सकदा है। इनसान नाल नहीं लग सकदा। जदों वी जीव नाल करता लग जाओगा ताँ उह कंम झूठा हो जावेगा। इसे करके अज तक किसे थाँ ते तुसीं बोरड लगा नहीं वेखिआ होवेगा कि इह वसतू प्रमातमा दी बणाई होई है। इतनी काइनात बणाके वी उसने किसे जगह नहीं लिखिआ है कि मैं धरती बणाई है, जाँ मैं इनसान बणाओ हन। उह याद वी नहीं करवाउंदा कि असीं उसदा शुकराना करीओ। असीं भावें शुकराना करीओ जाँ ना करीओ, उह सानूं बचिआँ दी तृाँ पाली जा रिहा है। इसे करके गुरबाणी इशारा करदी है कि

''नानक सचे की साची कार'' ॥

उह सच इस करके है किउंकि उसदे नाल ''मै'' (आई) नहीं लगी होई। इतनाँ कुझ होण दे बावजूद वी उहदे नाल ''मैं'' नहीं लगी होई। ओर साडे कोल कुझ ना हुंदिआँ होइआँ वी साडी ''मैं'' दी कोई हद नहीं। मेरा कीरतन सुण लउ, मेरी आवाज़ सुण लउ, मेरा गिआन देख लउ, मेरा राग देख लउ; बस मेरा, मेरा करदिआँ-करदिआँ, हौली-हौली, तूं, तूं तों इतने दूर चले गओ हाँ कि हुण जो गुरबाणी ने इशारा कीता है, उह पहिचानिआँ ही नहीं जाँदा। इह गुरमति दा निचोड़ कढके साडे साहमणे रखिआ है। जिस दिन इह गल सानूं समझ आ गई ''जो किछु पाइआ सो ओका वार'' ताँ फेर बार बार आके लंमीआँ लंमीआँ अरदासाँ नहीं कराँगे; किउंकि इथों आके जिन्नी वार मंगागे बस नक रगड़के चले जावाँगे, पर लभणा कुझ नहीं। जिस वसतू नूं मंगण दी लोड़ है उह ते मंगदा
नहीं। उसने इक ही चीज़ आपणे कोल रखी है बाकी कुझ वी नहीं छुपाइआ।
''दातै दाति रखी हथि अपणै
जिसु भावै तिसु देई ॥'' (पन्ना ६०४)

अते इह दात उह बिनाँ मंगिआ नहीं दिंदा, इह गल नूं मन विच बन्नृ लिउ। जिस दिन तक दिलों इह अरदास ना उठी:

''निमख ओक हरि नामु देइ
मेरा मनु तनु सीतलु होइ ॥'' (पन्ना ४५)

इक ज़रा, इक किनका नाम दात दी झोली विच पा दे, उतना चिर उह इह प्रसाद नहीं देवेगा। और इस नूं इस तरीके नाल मंग:

''पावउ दानु ढीठु होइ मागउ
मुखि लागै संत रेनारे ॥'' (पन्ना ७३८)

जे तूं किसे गल दी जिद करनी है ताँ इक कंम लई ढीठ हो जा, बस बाकी मंगाँ छड दे। पर असाँ ज़िद ही पुठी कीती है कि इह छड के दूजे नूं फड़ लइिआ है। उस अवसथा वल हजूर बार-बार इशारा करके कहि रहे हन। इह उसदे कंम हन, इह सचे कंम हन, ताँ ते उसनूं नमसकार ही कीता जा सकदा है जो कि सदा है, बेदाग़ है, धुन रूप है, अते जुगाँ जुगाँतृाँ तों इको जिहा ही है।

(अंक ३२-३३)

असीं जपु बाणी दे इक बहुत अहिम पड़ाउ ते पहुंच गओ हाँ जिस नूं कि खास धिआन नाल देखण दी, सोचण दी, विचारन दी ज़रूरत है। किउंकि इस पड़ाउ दे विच गुरमति दा जो गृहसत मारग विच रहिके परम हसती नूं पाउण दा तरीका है उस दी झलकी दिती गई है, इशारा कीता गइिआ है। किउंकि जिहड़े असीं पिछले अंक विचारे सन, उहनाँ दे विच जोग मत दे बारे दसिआ गइिआ सी कि गोरख नाथ दा जोग मत की सी, अते उह की बण के रहि गइिआ। जदों उस ने मुंदराँ दीआँ गलाँ कीतीआँ सन, उह कन्नाँ दीआँ मुंदराँ बण के रहि गईआँ। जो दुनीआँ नूं गोरख नाथ सिखा रहिआ सी उह भुल गइिआ। महाराज ने उस वल इशारा कीता सी। गोरख नाथ दे जोग मत दा कन्नाँ नूं पाड़न नाल कोई संबंध ही नहीं सी। जोग मत दी शुरूआत संतुशटी भाव कन्नटैंटमैंट (Contentment) तों हुंदी सी, "मुंदा संतोखु"। असीं जोग मत नूं विचारदे होओ पिछे इह वी देखिआ सी कि जो प्रमातमा दी बणाई होई सारी काइिनात है, उसनूं पालण पोसण दे लई हर जीव दे लई उसने सारा कुझ इको वार ही दे दिता है। उह साडे वागूं हर महीने दी तनखाह नहीं दिंदा।

सारीआँ ही सृशटीआँ जाँ गैलैकसीज़ (Galaxies) उते जिसत्ह्राँ दी वी जीव इसतरी नूं पालणा दा इंतज़ाम चाहीदा है, उह सारा इको वाराँ कर दिता गइिआ है। गुरबाणी इशारा कर रही है कि जिहड़ा जीवत रहिण (Survival) दा फिकर है इह ताँ बिलकुल ही बेकार है। इह चिंता करन दे नाल कोई फरक नहीं पैणा। जितना मिलणा सी उतना ही मिलेगा उस तों घट नहीं होणा, वध नहीं होणा। नक रगड़न दा अते अरदासाँ करन दा कुझ फाइिदा ही नहीं होणा। इह उसदा अटल हुकम है।

गुरबाणी ने इक होर वी विचार कीता सी कि झूठे दे हर कंम दे नाल "मैं" लगी हुंदी है। सचे दे किसे कंम दे नाल "मैं" नहीं लगी होई। इतनी काइिनात बणाई है पर प्रमातमा ने किसे जगा नोटिस बोरड लिखके नहीं लगाइिआ कि धरती मैं बणाई है जाँ इह बंदा "मैं" बणाइिआ है। जिथे "मैं" नाल लग गई उथे हर कंम झूठ हो जावेगा। ताँ फेर इस "मैं" नूं काबू (control) करन दा की तरीका है? इसनूं किस त्ह्राँ बंन्ह्हिआ जा सकदा है? जिहड़ा इह मैं-मैं कहिण दा सवाद पै गइिआ है, इसनूं किस त्ह्राँ तोड़िआ जावे, इसदे जवाब वजों अगला अंक शुरू हो गइिआ। जपु बाणी दा कोई अंक दूजे नालों अलग नहीं है। इक लाइिन दूजे नालों अलग नहीं है। बिलकुल मोतीआँ दी माला दी त्ह्राँ परोओ होओ हन। ज़रा थोड़ा जिहा धिआन नाल गहिराई विच जाणा पैंदा है। इस "मैं" नूं तोड़न दा इको तरीका है। उपर गल कर चुके हाँ "नानकु सचे की साची कारु।" सो इको फरज़ बचिआ है अते उह है "आदेस तिसे आदेस"। पर असीं ते रोज़ शुकराना करदे हाँ, रोज़ अरदासा करदे हाँ, रोज़ गुरदुआरे, मंदर, मसजिद, जाँ चरच जाँदे हाँ। की इह सभ कुझ करना उसनूं आदेस करना नहीं है? गुरबाणी कहि रही है कि नहीं, उह सभ करम काँड है। उस नूं आदेस करन दा तरीका गुरबाणी मुताबिक कुझ होर है। उह तरीका, उह विधी, उह जुगती जो है उसदे समझाउण दी खातर अगला पदा आइिआ अते फुरमाइिआ:

"इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि ओकु नामु जगदीस ॥ ओतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीओ होइि इकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥
नानक नदरी पाईओ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥"

(प्रभू दा नाम इंज जपणा है मानो कि इक जीभ लखाँ करोड़ाँ विच बदल गई है अते उह लखाँ करोड़ाँ जीभा लखाँ करोड़ाँ वार उसदे नाम नूं जप रहीआँ हन भाव जपण दी गिणती दा कोई हिसाब ही ना रहि जावे। इसत्ह्राँ जपु दे रसते दी यातरा करदे रहिण विच ही उसदे दरबार विच इज़्ज़त मिलदी
है। उसदा नाद उहनाँ नूं सुनाई देंदा है जिहनाँ अंदर कीड़ी जिन्नी वी हउमें नहीं बच जाँदी। इह यातरा इक इक पउड़ी करके चढ्ढन वाली है। इस यातरा विच सारीआँ करम इंदरीआँ अते गिआन इंदरीआँ मिलके उस नाल इक हो जाँदीआँ हन। पर उसदी प्रापती उसदी किरपा नाल ही हो सकदी है, इसतों इिलावा सभ कुझ माइिआ दा जाल है अते फालतू झूठीआँ गपाँ ही हन।)

प्रभू नूं आदेस करन दी जुगती है उसदे शबद नूं जपणा, जीभा नाल दुध रिड़कण वाली मधाणी वागूं गेड़े
देणे। गुरबाणी ने साडे लई इह भेद खोल्हिआ सी। इह साडी बदनसीबी है कि असीं उस नूं छड के किसे होर पासे वल लग गओ हाँ। 'लख लख गेड़ा आखीअहि' भाव उसदे अखर नूं लै के गेड़े देणे हन, अते उसदी गिणती नहीं करनी, हिसाब नहीं रखणा कि "मैं" अधा घंटा बैठ के नाम जपु लइिआ है जाँ "मैं" दो घंटे बहि के नाम जपु लइिआ है। ओसे करके पहिलाँ ही इशारा कर

दिता। ''इक दू जीभो लख होहि'', इक दी थाँ दो जुबानाँ हो जाण, दो दी थाँ लख हो जाइि, लख दे अगे फेर लख हो जाण, ''लख होवे लख वीस।'' भाव कि गिणती है ही
नहीं। इतने लख जुबानाँ होण दे बावजूद वी उहनाँ नूं लख लख गेड़े देणे हन। इथे किसे नंबर नाल संबंध ही नहीं है। संबंध इिह है कि नाम दे अखर नूं लै के, इक शबद नूं लैके उसदी कमाई करनी है। मन नूं भजण दी आदत है, इिह हर समाँ तबदीली मंगदा है, इिस लई हर वकत कोई नवीं गल चाहीदी है। सो जेकर तुसीं मन नूं बहुते शबदाँ नाल जोड़ोगे ताँ फेर इिह होर ज़िआदा भजेगा। जिस तराँ इक अखर तों दूजे अखर ते जा रहे हाँ, इक वाक तों दूजे वाक ते जा रहे हाँ ताँ इिसनूं होर शकती मिल रही है, तबदीली मिल रही है। जिनाँ चिर तबदीली मिलदी जाओगी, उनाँ चिर इिसनूं खाणा पीणा मिलदा
जाओगा। फिर भावें तुसीं कितना भी इिसनूं टिकाउण दी कोशिश करो इिह बेलगाम घोड़े दी तराँ होर दौड़ेगा। इिस करके इिसनूं तबदीली दा खाजा नहीं पाउणा। सगों इको अखर नाल लगा के गेड़े देणे शुरू कर देणे हन। इक अखर तों इलावा दूसरा अखर इिसनूं देणा ही नहीं किउंकि दूसरे अखर नूं मिलदिआँ ही इिह मन उसदी विआखिआ वल चला जावेगा, इिह उसदे सुआद वल चला जावेगा। इिसनूं उसे वेले बाहर भजण दा दरवाज़ा मिल जाणा है। इिह जिस मन नूं ''मैं'' ''मैं'' करन दी आदत पई होई है, अगर ओस नूं बन्नणा है ताँ जो इिस दा खाणा है, जिहड़ा इिसदा सुआद है, उस दी जड़ ही कटणी पवेगी। उह जड़ किस तराँ कटी जाओगी? इिस मन नूं इक अखर नूं गेड़े देणे सिखाउणे पैणगे। इतने गेड़े दिओ कि इिह मन भजण जोगा रहे ही ना, उह थकके चुप ही कर जावे, बैठ ही जाओ, टिकाउ विच आ जाओ। फिर इिस दीआँ सारीआँ करम इंदरीआँ, सारीआँ गिआन इंदरीआँ, अते सारीआँ शरूतीआँ इक थाँ ते हो जाणगीआँ। गुरसिख दी अधिआतमिक यातरा जपण तों शुरू हुंदी है।

जपण नाल की होओगा? ''ओत राहि पति'' इिस तुक नूं असीं जलदी विच इकठा पड़ जाँदे हाँ इिस करके मतलब साफ नहीं हुंदा। उस दे दरबार विच सनमान, सतिकार, इजत, जाँ पत बच जाणदा इिही इक तरीका है। ग्रहिसत मारग विच रहि के सही भगती करन दा इिही तरीका है। इिह इक इक कदम करके हौली-हौली चड़ाई करन वाली गल है। इको दम शलाँग नहीं लगणी। हौली-हौली पौड़ीआँ चड़ीआँ जाणगीआँ, भाव सुरती उचाई वल चलणी शुरू हो जाओगी है। पर उपर नूं चड़ना औखा हुंदा है, थल्ले डिगणा सौखा हुंदा है। इिसे करके मन सुआरथाँ वल ही भजदा है। इिसे करके ही माड़ी गल्ल दा जलदी असर हुंदा है, किउंकि उह चड़ाई नहीं है उह उतरना है। सो इक अखर नूं लैके गेड़े देणे शुरू कर अते इक इक पाउड़ी चड़के आपणी सुरती नूं उपर उठाउणा है। इिस योजना (system) विच हिंमत नहीं हारनी, धीरज रखणा है, अते जाप चालू रखणा है।

'होइि इकीस' तों भाव है ईशवर नाल इक हो जाणदी समरथा आ जाणी। जद जपदिआँ जपदिआँ मन टिकाओ विच चला जाओगा अते सारीआँ करम इंदरीआँ अते गिआन इंदरीआँ शाँत होके सहिज अवसथा विच पहुंच जाणगीआँ, ताँ मानो उह प्रभू पती नाल इक मिक हो जाण दे काबल हो जाणगीआँ। पर इिस आतमिक उचाई दी प्रापती लई कीड़ी वाँगू सभ तों निमाणा सुभाअ बनाउणा पओगा। उसदे वरगा छोटा ज़मीन दे तल दे नाल लगा होइिआ सुभाअ होवे भाव कि हउमें लेस मातर वी न बचे।

''सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥''

जेकर आकाशबाणी सुणनी है ताँ निमाणे कीड़िआँ वरगा सवभाव बनाउणा पवेगा पर जद तक मन बिखरिआ होइिआ है, इिह हंकार छडेगा नहीं। इिस करके पहिलाँ जप करके इिस मन नूं वस विच करना है ते फेर उसदा नाद सुणन लई हाउमें नूं गालणा है। इिसतों अगे दी यातरा भाव उसदी प्रापती, उसदे साखशात दरशन सिरफ उसदी किरपा सदका ही हो सकदे हन। इथे गुरबाणी इक बहुत गहिरा भेद खोहल रही है। दसिआ जा रिहा है कि जपणा सिरफ मन दी सफाई कर सकदा है, करम इंदरीआँ नूं शाँत कर सकदा है ताँ कि उसदा नाद सुणाई दे जावे पर उसनूं मिला नहीं सकदा। दुनीआँ दी कोई जुगती उसनूं खिचके लिआ नहीं सकदी। उह किसे जुगती दा गुलाम नहीं है। भगती सिरफ तिआरी करवाँउदी है कि जेकर उह आउणा चाहे ताँ उस लई मन तन्न सही रूप विच तिआर होण। घर साफ होणा चाहीदा है ताँकि अगर महिमान आ जावे ताँ उसदे बैठण लई जगह साफ होवे। महिमान घर आवेगा ही सही, इिसदी कोई गरंटी नहीं। इिस करके गुरबाणी ने इशारा कर दिता कि जदों वी प्रापती होणी है, उह आपणे करके नहीं है, बलकि उसदी नदर करके, उसदी बख़शीश करके, उसदी मिहर करके है। उसदी मिहर नूं नहीं भुलणा। जिन्ना चिर उसदी मिहर दिमाग़ विच होवेगी उनाँ चिर जीभा विचों तूं-तूं-तूं-तूं निकलेगा। जिस दिन मिहर भुली उसे दिन मैं-मैं-मैं-मैं बण जाणी है। इिस ''मैं'' तों बचणा है अते जिहड़े नहीं बचदे उह बाहर दे करम करदे रहि जाँदे हन, अंदरों कुझ प्रापत नहीं हुंदा।

''कूड़ी कूड़ै ठीस'' जिहड़े झूठ वाले हन उनाँ दे पले कुझ पैंदा नहीं अते उहनाँ दा बाहरला करम दिखावा रहि जाँदा है। इिसे करके उह झूठीआँ गपाँ मारन जोगे रहि जाँदे हन कि देखो जी असीं इतने सालाँ तों इिह नितनेम करदे आ रहे हाँ पर जे उहनाँ नूं पुछिआ जावे कि पंजाँ चोराँ विचों किहड़ा चोर पकड़ लिआ जे, काम घटिआ है, क्रोध घटिआ है, लोभ घटिआ है, मोह घटिआ है, हंकार घटिआ है, ताँ उहनाँ पास कोई जवाब नहीं हुंदा। उलटे हंकार अते क्रोध वधिआ ही दिखाई देंदा है। जिस वी जुगती नाल काम, क्रोध, लोभ, मोह, हंकार वस विच आउंदे हन, उही जुगती मुबारक है किउंकि परम शकती नाल जुड़न दा इिही

तरीका है। इस विचार दा विसथार गुरबाणी अगले पदे विच बिआन करदी जापदी है।

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥
नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

(उस नाम नूं आखण नाल ताँ उस नाल जुड़न दी संभावना है, पर मोन वरत धारन नाल उस नाल जुड़ना नहीं हो सकदा। मंगता बणके जाँ दाता बणके उस नाल नहीं जुड़िआ जा सकदा। लंबी उमर जी के जाँ जलदी मरके उस नाल नहीं जुड़िआ जा सकदा। राजनीतक ताकताँ नाल उस नाल नहीं जुड़िआ जा सकदा, उह ताँ सगों मन दे अंदर होर शोर मचा देंदीआँ हन। आपणी सुरती नूं कुदरत दी विचार अते उस बारे इकिठा कीते गिआन नाल उस नाल नहीं जुड़िआ जा
सकदा। किसे वी तरीके नाल संसार नूं छडके उस नाल नहीं जुड़िआ जा सकदा। किउंकि उस नाल जुड़न दी शकती सिरफ उसदे आपणे पास ही है जिस दीआँ निगाहाँ विच कोई उचा नीवाँ नहीं है)

इन्हाँ तुकाँ नूं ज़रा धिआन नाल वेखो। सारे ही पदे विच सिरफ इक थाँ ते नन्नाँ नहीं है, बाकी सभ थाँ ते नन्नाँ है। ''आखणि'' अते ''जोरु'' दे विचकार नन्नाँ नहीं है, बाकी सभनाँ दे विचकार नन्ना आवेगा। जोरु तों भाव इथे शकती नहीं है। उपर किहा गइिआ है ''लख लख गेड़ा आखीअहि''। आखण लई किउं किहा जा रिहा है, गेड़े देण नूं किउं किहा जा रिहा है? उसदा जवाब है कि आखण विच (नाम जपण विच) इह शकती है कि उह प्रमातमा नाल जुड़न लई तिआर कर
देवेगी। होर जितने वी करम काँड हन, उहनाँ विच उसदे नाल जोड़न दी शकती है ही नहीं। मिसाल वजों चुप रहिण नाल, भाव मोन वरत धारन नाल, बाहरों ताँ चुप हो जावेगा, पर अंदरों मन नूं चुप कराउण दा कोई तरीका नहीं। मन नूं चुप करन लई सालाँ भर दी साधना वी कची पै जाँदी है। जिहड़ा जंगलाँ नूं भजण दा लोकाँ ने इरादा बणाइिआ सी, उह इही संजम (discipline) पैदा करन लई सी कि मन नूं किसे तर्हाँ नाल चुप कराइिआ जावे। पर इह कामयाबी किसे विरले नूं ही हुंदी है अते अंदर इक शोर चलदा ही रहिंदा है। गुरबाणी ने किहा कि बाहर जाण दी कोई लोड़ नहीं, बस उसदे नाम नूं आखणा शुरू करदे। उसदे नाल मन हौली-हौली टिक जाओगा। उसनूं जिहड़ा भजण दा सुआद है, उह दूर हो जाओगा। इकिला मंगता बणन नाल जाँ दानी बणन नाल वी उह गल बणनी
नहीं। पहिलाँ शबद दी कमाई करनी पओगी। पहिलाँ सरीर रूपी भाँडे दी सफाई करनी पओगी। जद तक उसदा प्रसादि तेरे भाँडे तक नहीं आइिआ ताँ समझ लईं कि भाँडा अजे पूरा साफ नहीं है। कितना वडा दानी किउं ना होवे, इह गल बणदी
नहीं। राज शकती सिवाओ मन दे विच होर शोर मचाण दे होर कुझ नहीं कर सकदी। बाहर दी ताकत अंदर होर शोर पैदा करदी है उह मन नूं चुप नहीं करा सकदी। जेकर इकिली कथा ही कर लई, सुण लई अते विचार ही घोटी गओ ताँ वी मंन टिकाउ विच नहीं आवेगा भावें ओसीआँ गलाँ विच सवाद बहुत है। इथे इशारा कीता है कि खेड्ड नूं बदलणा है, खिडौणे नहीं बदलणे। खेड्ड कहि रही है कि इह सभ करम इंदरीआँ दा
भोग है ते करम इंदरीआँ नूं इहनाँ भोगाँ तों उपर लिजाणा
है। सरीरक भाँडे नूं साफ करना है अते फेर उसदी इंतजार करनी है। जोड़न दी शकती किसे इनसान दे कोल नहीं है, इह विधी किसे कोल वी नहीं है। उह शकती सिरफ उस दे कोल है।

''जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ नानक उतमु नीचु न कोइ''

उसदीआँ निगाहाँ विच सभ इको जिहे हन। भगती करन वाला भावें कोई वी किउं ना होवे, उसनूं कोई फरक नहीं पैंदा। तूं सिख बण के भगती कर, तूं हिंदू बण के भगती कर, तूं मुसलमान बण के भगती कर, उस नूं कोई फरक नहीं पैंदा। तूं किसे रसते राहीं आ, उथे ही बहि के गलाँ ना करी जा। उठ के कुझ कर, जदों करन लग पओगा, तूं इक कदम चुकेंगा, उह तेरी वल दस कदम चुकेगा।

(अंक ३४)

राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥ तिन के नाम अनेक अनंत ॥ करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई ओथै पाइ ॥ नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥
(रात अते दिन, वार अते रुताँ, हवा, पाणी, अगनी, अते मिटी आदि दा खेल रचाके, प्रमातमा ने इक धरती धरम साल दे रूप विच सजा दिती है। उस धरमसाल विच कई तराँ दे अते कई नावाँ दे जीव जंतू पैदा कर दिते हन। जिवें कोई जीव करम कमाउंदा है उंझ ही उसदा सचे दरबार विच मुल पै जाँदा
है। उसदे दरबार विच सिरमोर जीव आतमा ही परवाण हुंदीआँ हन किउकि उह उसदी किरपा दीआँ पा" बण चुकीआँ हन। सिरमोर कउण है अते कउण नहीं इसदा फैसला वी उसे पास है अते उसदे दरबार पहुंचके ही इसदा भेद खुलदा है)।

जपु जी साहिब दे तेतीवें अंक विच इशारा कीता गइआ सी प्रमातमा नाल जुड़न लई इक ग्रहिसती लई इको ही साधन है, बाकी सभ करम काँड हन अते उह माइआ नाल ही सबंध बणाउंदे हन। "आखणि जोरु चुपै नह जोरु" दी विचार करदिआँ इशारा कीता गइआ सी कि इस अंक विच सिरफ 'आखणि' तों बाद 'नह' नहीं है बाकी हर करम दे नाल 'नह' लगा होइआ है। इहि साफ ज़ाहिर करदा है कि गुरबाणी प्राणी नूं सिधे अते साफ शबदाँ विच जपण वल परेर रही है। थोड़ी जिही विचार करन नाल ही इहि गल समझ विच आ जाँदी है कि इसदा की कारन है। प्रमातमाँ दी सारी सृशटी विच सिरफ इनसान दा सरीर ही ओसा है जिस विच चोण (Choice) करन दी शकती अते जीभा नूं खाणे तों इलावा वरतण दी शकती बख़्शी है। बाकी सारीआँ ख़ूबीआँ हर सरीर विच हन, इहि दो ख़ूबीआँ सिरफ इनसानी जिसम विच ही हन। इहि खास शकतीआँ ही जनम मरन दे चकर विचों बाहर कढण दा कंम कर सकदीआँ हन, बशरते इनसान इहनाँ ख़ूबीआँ नूं सही तरीके नाल वरतणा जाणदा होवे। होर किसे जानवर, पशू, पंछी, कीड़े मकौड़े, अते परिंदे आदि लई इहि मुमकिन नहीं है कि उह आपणे जीवन विच जनम-मरन दे चकर नूं कट सके। इस करके गुरबाणी ने इनसान लई इहनाँ शकतीआँ दा सही प्रयोग करन वाला भेद खोल्हिआ अते दसिआ कि जितना चिर जीव जीभा नाल शबद दी कमाई करन दा फैसला नहीं करदा, उतना चिर उसदे प्रमातमा नाल जुड़न दा कोई वसीला नहीं बण सकदा।

ज़ाहिर है कि शबद दी कमाई इक चोण (Choice) है, इहि किसे उपर थोपी नहीं जा सकदी। हर जीव दा आपणी मरज़ी नाल कीता होइआ फैसला ही निभ सकदा है, इस करके गुरबाणी हुकम नहीं करदी बलकि दलीलाँ नाल प्रेरन दी कोशिश करदी है। गुरबाणी दा साफ इशारा है कि सतो गुण दीआँ सारीआँ ख़ूबीआँ वी इनसान नूं इक जानवर दी जिंदगी तों उपर नहीं उठाँदीआँ। सुणन विच इहि गल बड़ी कौड़ी लगदी है, पर जेकर गहिराई नाल सोचिआ जावे ताँ आपणे आपनूं ही हैरानी हुंदी है कि इहि कितनी वडी सचाई है। मिसाल वजों इक घोड़ा कदी चोरी नहीं करदा, किसे नाल कोई हेरा फेरी नहीं करदा, कदी झूठ नहीं बोलदा, किसे होर दी इमानत विच खिआनत नहीं करदा, दिन रात जान मारके मिहनत करदा है। इक कुता मालिक नाल कदी दग़ा नहीं करदा, हमेशा वफादार रहिंदा है भावें मालिक किसेतृ्ाँ दा वी सलूक किउं ना करे। असीं इहो जिहीआँ अनेक मिसालाँ तों वेख सकदे हाँ कि होर धरम जिहड़े गुण इनसान नूं पैदा करन दा उपदेश देंदे हन, उह सारे गुण कुदरत दे होर जीवाँ विच पहिले ही मिलदे हन। पर उह गुण किसे जानवर नूं प्रमातमा नाल अभेद होण विच कंम नहीं आउंदे। इहि सारे गुण त्रै गुणा विच शामिल हन अते परम जोती " गुणाँ तों अतीत है। इस करके इनसान नूं वी उह करना पवेगा जो उसनूं " गुणाँ तों अतीत होण विच सहाइक होवे। इस करके गुरबाणी ने उह भेद खोहलणा शुरू कीता है। पिछले अंक विच इहि कहिआ सी कि शबद दा जपणा परम जोती नाल जुड़न दा इक साधन है। सो बाकी करम काँड वलों हटके इस पासे मिहनत शुरू कर किउंकि इथों धरम दी यातरा शुरू हुंदी है। इस विचार नूं लैके अगला अंक शुरू कीता गइआ है:

"राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥"

भाव कि प्रमातमा ने रात अते दिन, रुताँ अते मौसम, हवा, पाणी, अग, अते पातालाँ दा खेलु रचके उस विच धरती इक धरमसाला रूप विच रख दिती है। पुराणे ज़माने विच जदों घड़ीआँ दा बहुता रिवाज़ नहीं सी पइिआ ताँ समें नूं रुताँ अते चंद दे उतार चढ़ाव मुताबिक मिणिआँ जाँदा सी। गुरबाणी दा फुरमान है:

"विसुओ चसिआ घड़ीआ पहरा
थिती वारी माहु होआ ॥" (पन्ना १२)

इस तुक विच सारे अखर पुरातन ज़माने विच समें नूं मिणन (Measure) जाँ माप करन लई दरसाओ गओ हन। समें नूं मिणन लई अखाँ दे झपकण नूं सारिआँ तों छोटा समाँ मंनिआँ गइिआ सी। प्रोफैसर साहिब सिंघ ने पुरातन समें दी हेठ लिखी वंड आपणे सटीक विच दरज कीती है।
अख दे १५ फोर (अख दा १५ वार झपकणा) = १ विसा।
१५ विसुओ = १ चसा। ३० चसे = १ पल।
६० पल = १ घड़ी। साढे ७ घड़ीआँ (७ १/२) = १ पहर।
८ पहर = १ दिन रात। १५ थिताँ;
७ वार; १२ महीने, छे रुताँ।

गुरबाणी इशारा कर रही है कि समें दी चाल विच धरती सिरफ रहिण दी जगह ही नहीं। केवल रहिण दी जगह नूं ताँ सराओ कहिआ जाँदा है। इिह धरती जानवराँ लई ताँ सराँ हो सकदी है पर इिनसान लई इिह धरम साल है। इिनसानी सरीर नूं इथे धरम दी खेड्ह खेड्हण लई भेजिआ गइिआ
है। धरम दी खेड्ह ही उसनूं वापस परम जोती नाल इिक मिक करवा सकदी है, बाकी सभ तर्हाँ दीआँ खेड्हाँ उसनूं मोह माइिआ दे बंधन विच जकड़ के बैठ जाणगीआँ। इिसे करके गुरबाणी हलूणा दिंदी है:

"ओ सरीरा मेरिआ इिसु जग महि आइि कै
किआ तुधु करम कमाइिआ ॥" (पन्ना ६२२)

इिह सवाल हर रोज़ हर जीव नूं आपणे आप नूं पुछणा चाहीदा है। इिह सवाल ना पुछण करके ही इिनसान नूं आपणे जीवन दा असली निशाना भुल गइिआ है अते उह दुनीआँ दे मेले विच इिक अनजाण बचे दी तर्हाँ गुंम हो गइिआ है। धरम दी खेड्ह खेड्हण दी जगह इिंद्रीआँ दे चसकिआँ नूं पूरा करन विच रुझ गइिआ है।

"पवण पाणी अगनी पाताल ॥"

इिस तुक दे अखराँ दी तरतीब धिआन जोग
है। अधिआतमिकवाद दे दृशटीकोन तों इिह सृशटी पंज (५) तताँ तो बणी है। इिहनाँ पंज तताँ दे नाम हन, हवा, पाणी, अग, मिटी, अते आकाश। शाइिद अज दी साँइिंस दा विदिआरथी इिह सुणके हैरान होवे किउंकि उसने ताँ १०० तों वी ज़िआदा तत वेखे हन। पर साँइिंस दे सारे तत सृशटी नूं बणाउण विच कंम नहीं आ सकदे। जदों वी किसे पदारथ दी खोज कीती जावे ताँ उसदे मूल तत पंज ही नज़र आउंदे
हन। जिवें लोहा साँइिंस दा इिक तत है पर इिसनूं काइिनात साजण विच नहीं वरतिआ जा सकदा पर इिस दीआँ काइिनात विच होर चीज़ाँ बणाईआँ जा सकदीआँ हन। पर हवा तों बगैर जीवन चल ही नहीं सकदा। इिस करके गुरबाणी ने इिशारा कीता सी:

"साचे ते पवना भइिआ पवनै ते जलु होइि ॥
जल ते तृभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइि ॥" (पन्ना १९)

भाव कि उस परम शकती तों पहिले हवा बणी है अते हवा तों पाणी बणिआँ है। इिहनाँ दोवाँ मुढले तताँ दी मदद नाल बाकी सारी सृशटी बणी है। जपु बाणी दी इिह तुक उहनाँ मुढले तताँ वल इिशारा करदी है अते तत उसे तरतीब (Sequence) विच हन जिस तरतीब विच इिहनाँ दी उतपती मन्नी गई है।

"तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥"

पहिलाँ मुढले चार तताँ वल इिशारा करके पंजवें तत मिटी वल इिशारा करदे हन अते फुरमाँदे हन कि मिटी दा तत

धरमसाल बणाउण लई वरतिआ गइआ है। इसे करके इस सरीर नूं वी इक मंदर मंनिआँ गइआ है। गुरमति ने बाहरदे किसे असथान दा नाम गुरदुआरा नहीं सी मंनिआँ। संगत नाल जुड़न दी जगह नूं धरमसाल ही कहिआ जाँदा सी। गुरदुआरा सरीर दे अंदर है, बाहर नहीं। गुरबाणी इस बारे खुलासा करदी है:

"हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीओ दसवा गुपतु रखाइआ ॥ गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥" (पन्ना ९२२)

इह सरीर मानों इक मिटी दी गुफा है, इस विच हवा आवाज़ पैदा करदी है। इस गुफा विचों सरीरक शकती ९ दरवाज़िआँ, जो कि जीव नूं दिसदे हन (दो अखाँ, दो कन्न, दो नासाँ, इक मूंह, दो सरीर दी मल कढण लई रसते) विचों बाहर जाँदी है। जो गुरू दे दुआर तक भावना रखके पुज जाँदे हन उहनाँ नूं दसम दुआर दे दरशन हो जाँदे हन।

"गुरि दिखलाई मोरी ॥ जितु मिरग पड़त है चोरी ॥
मूंदि लीओ दरवाजे ॥ बाजीअले अनहद बाजे ॥" (पन्ना ६५६)

भाव कि गुरदेव ने इह साफ दिखा दिता किन्हाँ मोरीआँ राहीं असली धन (भगती) चोरी होई जा रहिआ है। जिस समें उह सारे दिसदे दरवाज़े बंद कर लओ ताँ परम शकती दी असळी आवाज़ सुणाई देण लग पई।

पंजाबी भाशा विच "दुआर" तों भाव है दहिलीज़, घर अते दुनीआँ विचकार दी हद (Boundary)। गुरबाणी साफ कहि रही है कि जदों सुरती बहार दे संसार नालों टुटके अंदरली दुनीआँ विच प्रवेश करन लई तिआर हुंदी है ताँ उस हद नूं गुरू दा दुआर जाँ दहिलीज़ कहिआ गइआ है। बाहर दी हर बिलडिंग इस धरती दी धरमसाल उते इक छोटी धरमसाल ही समझणी चाहीदी है। पर साडी भाशा बदलके गुरबाणी दे शबदाँ दा रूप ही बदलदी जा रही है।

"तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥"

इस धरम साल विच अनेक प्रकार दे जीव बड़ी रहसमई जुगती नाल बणाओ गओ हन। जिवें अनेक प्रकार दे जीव जंतू हन इसे तराँ अनेक प्रकार दे उहनाँ दे नाँव हन। गुरबाणी दुबारा याद दिला रही है कि कादर दी कुदरत असीम है, अते धरम साला विच रहिंदे होओ जीव नूं इह फिकर विच नहीं पैणा चाहीदा कि कुदरत कितनी कु वडी है। जेकर इस पासे चल पइआ ताँ कुदरत दे पसारे विच गवाच जावेंगा अते कादर दे नेड़े होण दा मौका हथों ही गवा बैठेंगा। इह बड़ी हैरानी दी गल है कि इतनी वारी याद दिवाउण दे बावजूद वी गुरसिख कुदरत दी विचार करन विच ही फसिआ पइआ है। इतिहास नूं खोजण दी इतनी खिच है कि गुरबाणी दी कसवटी ही भुल जाँदी
है। इस कसवटी तों बगैर कई झूठीआँ कहाणीआँ सिख गुरू विअकतीआँ नाल इतने पके तरीके नाल जुड़ गईआँ हन कि हुण कोशिश करन ते वी नहीं उतर दीआँ। दसम दुआर नूं कुदरत विचों लभण दी कोशिश जारी है। इह याद ही नहीं रहिआ कि दसम दुआरा खुलणा रूहानी अवसथा नूं बिआन करदा है, जिसमानी किरिआ नूं नहीं। पर कुदरत नाल जुड़े होओ जीव प्रमातमा नूं वी इक जीव ही समझके बैठ गओ हन। उह कहिंदे हन कि असीं प्रमातमा दा सरगुन रूप वेखणा चाहुंदे हाँ, निरगुन नहीं। इह धिआन विच ही नहीं है कि जे प्रमातमा दा सरगुन रूप वेखणा चाहुंदे हो ताँ आपणे आले दुआले झाती मारो। जो कुझ वी दिस रहिआ है इह उसदा सरगुन सरूप ही है। इस विचों निरगुन सरूप नूं प्रगट करना है, सरगुन सरूप विच आपणे आप नूं गवाउणा नहीं है। इस करके गुरबाणी बार बार इस गल नूं दुहराउंदी है कि कुदरत दी विचार तों दूर हो अते कादर नूं आपणे अंदर प्रगट करन दे उपराले नाल जुड़।

"करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥"

उस सचे दे सचे दरबार विच आपणे आपणे करमाँ मुताबिक विचार हुंदी है। इहनाँ तुकाँ दा भाव असाँ बहुत अजीब लइआ है। "करम" अखर दा मतलब किसमत जाँ भागय (Destiny) लगा लैंदे हाँ। पर "करम" अखर दी इह विआखिआ उपर चल रही विचारधारा नाल बिलकुल ही नहीं रलदी। इथे मज़मून चल रहिआ है कि धरमसाला विच रहिंदिआँ होइआँ धरम दी खेड खेलणी सिखणी है। उह कंम चुणना है जिहड़ा प्रमातमा दे कोल लैके आवे। पर हर जीव दी चोण (Choice) वखरी वखरी होवेगी। इस चोण लई शबद वरतिआ है करम, ओकशन (Action)। करम करना भाव ओकशन करना, कोई कंम करना। सो इथे

भाव है कि किहड़ा कंम उस तक पहुंचा सकदा है अते किहड़ा नहीं इसदी पहिचान उसदे दरबार विच ही हो सकेगी।

इिह धिआन जोग गल है कि "करम" अखर दो वार वरतिआ गइिआ है अते दोवाँ दा भाव इिको ही नहीं है। पहिला अखर इिनसान दे कंम दी चोण लई है अते दूजा अखर प्रमातमा दी मिहर लई है। भाव कि इिस विचार नूं कोई सज़ा नहीं समझ लैणा। उह हमेशा मिहराँ दे घर विच है। उस लई जीव दा कोई वी करम माड़ा जाँ चंगा नहीं है। उह निरलेप है, सारीआँ चोणाँ (Choices) उसे दीआँ बणाईआँ होईआँ हन। जो वी चुणेगा, उसदे हुकम विच ही चुणेगा, पर हर चोण नाल उसदे नतीजे पहिलाँ ही नीयत कीते होइि हन। सो नतीजे दाँ सबंध जीव दी आपणी कीती चोण नाल है, प्रमातमा नाल
नहीं। जेकर किसे चोण दा नतीजा पसंद नहीं आइिआ ताँ हर जीव अगली वार आपणी चोण बदल सकदा है। सही चोण करन दी जाच सिखाउण लई ही सारा स्री गुरू ग्रंथ हौंद विच आइिआ है।

इिथे ताँ हर धरम इिही कहिंदा है कि मेरा मारग दूजे धरमाँ नालों ज़िआदा सही है। यातरी नूं इिह फैसला आप ही करना पवेगा कि उह परम शकती दे नेड़े जा रहिआ है कि दूर जा रहिआ है। गुरबाणी ने सानूं इिसदी पहिचान दस दिती है।जिस करम नाल काम, क्रोध, लोभ, मोह, अते हंकार घटदे हन उह सही मारग है, नहीं ताँ जीवन अजाईं जा रहिआ है।

"तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥"

उसदी दरगह विच जो उतम पुरश प्रवान हो गओ हन, उह उसदी किरपा दे पा" बण जाण दी निशानी है। इिह समझण वाली गल है कि कोई जीव आपणे आप नहीं कहि सकदा कि उह आपणे किसे करम (ओकशन) करके सफल होइिआ है। जेकर इिह विचार मन विच आ गइिआ ताँ सारी ही मिहनत बेकार हो जावेगी किउंकि हाउमें ने फिर सिर चुक लइिआ है। हर करम दी चोण नाल इिह याद रहिणा चाहीदा है कि उह चंगी चोण करवा रहिआ है, जीव कोल ताँ ओसी कोई हिंमत ही नहीं है। प्रवानगी उसदे नदरि-करम दी निशानी
है। उही असली रूप विच करता है, असीं सभ उसदे नमित मातर हाँ। भगती करन वालिआँ दी हाउमें बड़ी सूखशम हो जाइिआ करदी है। इिह बड़ी भारी अड़चन है अते हर अभिआसी नूं इिस मुशकल दा साहमणा करना पैंदा है। इिस करके गुरबाणी जिथे वी कुझ करन लई कहिंदी है, उथे नाल
ही याद दिवाउंदी है कि करते दे भाव वलों होशिआर रहिणा
है। नाम अभिआस करदिआँ मन विच इिह विचार नहीं उठण देणा कि मैं भगती कर रहिआ हाँ। जद वी ओसा विचार आवे ताँ आपणे आप नूं याद दिलाउणा है कि जीव करता नहीं हो सकदा। सिरफ प्रभू ही सभ कुझ करदा है। जीव सिरफ उस कठ पुतली दी त्रृाँ है जिसदी वाग डोर किसे होर दे हथ विच
है। कई वार आपणा ही मन शरारत करदा है अते भुलेखा पाउंदा है कि पूरन प्रापती हो गई है। इिस बारे गुरबाणी ने इिहनाँ तुकाँ विच सावधान कीता है:

"सेवा थोरी मागनु बहुता ॥
महलु न पावै कहतो पहुता ॥" (पन्ना ७३८)

भाव कि घालणा ताँ कोई घाली नहीं पर आपणे अंदर बहुत वडे इिनाम दी चाह रखी होई है। हुण ओसी खवाहिश पूरी ताँ हो ही नहीं सकदी, पर जीव आपणे आपनूं अते दुनीआँ नूं धोखा देण लई रौला पा देंदा है कि उसने सभ कुझ प्रापत कर लइिआ है, हालाँ कि उसनूं कुझ वी नहीं मिलिआ हुंदा। उह दुनीआँ नूं कहिंदा कि उह आपणी मंजिल ते पहुंच गइिआ है हालाँ कि उसनूं मंजिल दा दरवाज़ा वी नहीं मिलिआ हुंदा। इिह सभ कुझ आपणा ही मन दिन दिहाड़े खवाब लैंदा होइिआ करदा है। इिस करके हर जगिआसू नूं गुरबाणी खबरदार करदी है कि हर प्रापती उसदी किरपा दी निशानी है, किसे करम दी चोण करके नहीं है।

"कच पकाई ओथै पाइि ॥ नानक गइिआ जापै जाइि ॥३४॥"

भगती करन नाल कोई कितना पक गइिआ है अते कितना कचा रहि गइिआ है, इिसदा फैसला वी उही कर सकदा है। इिथे बैठा होइिआ जीव केवल अंदाज़े ही लगा सकदा
है। उथे जाके ही पूरी त्रृाँ निबेड़ा हो सकदा है कि कौण कचा है अते कौण पका। इिथे दुबारा चेतावनी (warning) दिती जा रही है कि इिनसान भावें कितनी वी घालणा किउं ना घाल चुका होवे, उह इिह नहीं कहि सकदा कि उसदा कंम पूरा हो गइिआ है। कारज पूरे होण दी निशानी ही इिक है, जेकर ब्रहम गिआन दी अवसथा मिल गई है ताँ ही कारज़ पूरा है नहीं ताँ अधूरा है। प्रमातमा दे दरशन तों बग़ैर होर सभ प्रापतीआँ कचीआँ
हन। उस अवसथा दी पहिचान जाँ पूरन गुरदेव कोल है जाँ परम शकती कोल है।

(अंक ३५)

साहिब दी बाणी दा जिहड़ा असली मकसद है, जिहड़े अगले चार अंक आ रहे हन, उहनाँ विच इक तरुाँ नाल सारा निचोड़ कढ के साडे साहमणे रख दिता गइिआ है। गुरबाणी ने आतमिक तरकी दीआँ अवसथावाँ दा ज़िकर कीता है कि जिहड़ा इस रसते ते चल पओगा उहनाँ नूं चार अवसथाँवाँ (stages) विचों गुजरनाँ पओगा। उहनाँ चार अवसथाँवाँ नूं चार खंड कहिआ है। खंड तों भाव इिलाके नहीं हन, इिह वंडीआँ नहीं बणीआँ होईआँ। प्रचलत विआखिआँवाँ विच तुसीं पड्होगे कि इिह चार जगुा हन किउंकि खंड दा विआकरन (grammar) दे पहिलू तों मतलब हुंदा है वंडी होई जगुा। दरअसल गुरबाणी चार अवसथावाँ जाँ सटेजाँ दस रही है। जिस तरुाँ कि चौथे महल कोलों जदों चार अवसथावाँ जाँ सटेजाँ दा ज़िकर आइिआ ताँ उथे इिहनाँ नूं चार लावाँ कहिआ गइिआ है। गुरबाणी विच लाँव असल रूप विच इिक चकर (Circle) नहीं है, भाँवें असाँ इिसनूं इिक तरुाँ नाल फेरा ही मन लइिआ है। चकर ताँ ज़रूर लगदा है पर जद चकर पूरा हुंदा है ताँ जीव पहिले तल तों उपर उठके दूसरे तल उते पहुंच जाँदा है। जिन्ना घराँ विच चकरदार पौड़ीआँ लगीआँ होईआँ हन, उह जाणदे हन कि पौड़ीआँ चड्हदे समें उह चकर ताँ लगा रहे हन पर हर पूरा फेरा उहनाँ नूं उपरली मंजिल ते लै जा रहिआ है। सो लाँव तों भाव सी आतमिक चड्हाई। इिसे तरुाँ जद पंजवें महल कोलों चार अवसथावाँ जाँ सटेजाँ दा सुनेहाँ आइिआ ताँ उस समें इिहनाँ नूं चार पदे कहिआ गइिआ सी। "मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई" कोई इिक पुतर दी आपणे पिता नूं लिखी होई चिठी नहीं है। इिह इिक मनघड़ंत कहाणी इिहनाँ पदिआँ नाल जोड़ दिती गई है।

इिह धुर की बाणी है जिस विच नाम अभिआसी दी आतमिक यातरा दे पड़ाव दरसाओ गओ हन। उह वी जगिआसू दीआँ चार सटेजाँ हन, अवसथावाँ हन। जपु बाणी विच इिह चार खंड कहे गओ हन। जे जगिआसू भगती मारग उ˜ते चल पवे ताँ इिह चार अवसथावाँ हर जगिआसू दे रसते विच आउणगीआँ।

असीं इिसतों पहिलाँ विचार कर चुके हाँ कि इिह धरती इिक धरमसाल है। हर जीव इिथे धरम दी खेड्ड खेड्डण लई भेजिआ गइिआ है। हर जीव नूं इिह आज़ादी है कि उह धरम दी खेड्ड खेड्डे जाँ माइिआ दा आनंद माणे। जिसने धरम दी खेड्ड खेड्डण दा इिरादा पका कर लइिआ है, उसदी अगवाई लई अगले अंक खुलासा कर रहे हन:

"धरम खंड का ओहो धरमु ॥ गिआन खंड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इिंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥"
(धरम खंड दी विचार तो बाद गिआन खंड दीआँ निशानीआँ दसीआँ जाँदीआँ हन। गिआन खंड विच जीव जाणकारी हासल करदा है कि हवा, पाणी, अते अगनी दा कोई अंत नही है। उसदे बणाओ होओ कई क्रिशन अते शिवजी हन। उसने अनगिणनत बरमा वरगे साजे हन। धरतीआँ, परबताँ, अते धू तारिआँ दा कोई अंत नहीं। कई चंदरमा अते कई गेलैकसीआँ बणीआँ होईआँ हन। अनेकाँ बुध, जोगी, अते देवतिआँ वरगे जीव हन। अनगिणत देवतिआँ अते राखशश मनो बिरतीआँ वाले हन, अनेका रिसी मुनी हन, अनेका ही तराँ दे सागराँ विच अनेका तराँ दे रतन पदारथ हन। अनेक तराँ दीआँ खाणीआँ अते अनेक तरह दीआँ बोलीआँ हन, अनेकाँ ही राजे अते बादशाह हन। अनगिनत तराँ दे धिआन लगाउण वाले अते सेवक हन। भाव की किसे वी बणतर दा अंत नहीं पाइिआँ जा सकदा।)

पहिला धरम अखर औंकड़ तों बिनाँ है पर दूसरे धरम अखर दे थले औंकड़ है। सो दोनाँ अखराँ दा मतलब इिको नहीं हो सकदा, सो इिस करके इिहनूं धिआन नाल विचारना
है। पहिले दा मतलब है धरम (Spirituality) दे रसते उ˜ते चलिआ होइिआ जीव। दूसरा अखर है कि धरम दे रसते उ˜ते चले होओ दी की निशानी (Characteristics) है। उसदी मानसकि अवसथा की है, उसदी बनावट की है। इिस करके धरम दे दूसरे अखर दे 'मंमे' थले औंकड़ दिता है कि इिहनूं समझ लैणा कि दोनाँ दा इिको मतलब नहीं है। इिशारा कर रहे हन कि धरम खंड दा ओहो धरम है जिहड़ा इिसतों पहिले अंक (अंक ३४) विच बिआन कर दिता गइिआ है। पहिलीआँ तुकाँ सन ''राती रुती थिती वार .... नानक गइिआ जापै जाइि" इिह है धरम खंड दा धरम। जदों धरम दे रसते ते इिनसान चलदा है ताँ उहदी पहिली अवसथा इिह बणदी है कि उह उसदी सारी काइिनात नूं समझण लग पैंदा है कि इिह उसदा बणाइिआ होइिआ खेलु है। और उस दा यकीन बण जाँदा है कि जो वी उहनूं मन्नजूर है उही मुल वाला है; जिहड़ा दुनीआँ नूं मन्नजूर है उहदा कोई मुल नहीं। धरम दे राह ते चलण वाले नूं इिस चीज़ दा यकीन हो जाँदा है कि सचा की ते झूठा की, कचा की ते पका की, ठीक उह है जिहड़ा उहनूं प्रवान होवे। जिसनूं दुनीआँ इिथे कचा पका कहे उहदा मुल धरम दे रसते ते चले इिनसान लई कुझ नहीं रहि जाँदा। इिह उहदे जीवन विच पहिला इिनकलाब आउंदा है।

उहदी पहिली अवसथा इिह बणदी है कि उह दुनीआँ दी कही होई गल दी प्रवाह नहीं करदा। उह इिह सोचदा है कि उ˜थे की बणेगा। उह आपणे हर इिक करम नूं प्रमातमा दीआँ निगाहाँ नाल देखण दी कोशिश करदा है। उसदा आपणा सवभाव, आपणा ठाठ-बाठ, आपणी रहिणी बहिणी अते कहिणी जो वी है उह परम शकती दी तकड़ी नाल तोलण दी कोशिश करदा है। इिसे करके गुरबाणी ने कहिआ सी:

"भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइिआ ॥" (पन्ना १४५)

जिहड़ा जीव संसार नाल जुड़िआ है उहने हर गल इिह सोचके करनी है कि लोक की कहिणगे, समाज की कहेगा, दुनीआँ की कहेगी। संसार दे विच रहिण वाला जीव संसार नाल पूरी तरृाँ जुड़िआ होइिआ है। जिहड़ी आतमा परमातमा नाल जुड़ी होई है उहने सोचना है कि उह की कहेगा; उहनूं दुनीआँ की कहिंदी है उस नाल कोई फरक ही नहीं है। इिस करके भगत हमेशा वखरे ही लगदे हन; संसारीआँ वलों उहनाँ नूं कुराहीआँ कहिआ जाँदा है, गालाँ कढीआँ जाँदीआँ हन, पागल कहिआ जाँदा है। दुनीआँ विच जिहड़े वी तरृाँ-तरृाँ दे उहनाँ नूं ख़िताब मिलदे हन, उहना दी उह परवाह ही नहीं करदे।

"भगता की चाल निराली ॥
चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥

लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा ॥
खंनिअहु तिखी वालहु निकी ओतु मारगि जाणा ॥
गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥
कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥"
(पन्ना ६१८-६१६)

भगत पहिचाण चुके हन कि इह मारग कठिन
है। इस मारग उते चलके लोभ, मोह, हंकार, क्रोध आदि सभ नूं ही छडणा है, कुदरत विचों कादर नूं लभणा है। इह धरम खंड विच पैर रखण वाले दीआँ निशानीआँ हन। जदों धरम दे रसते ते चलदा है ताँ पहिलाँ इह सोझी आउंदी है कि उस दा बणाइआ है जो वी है सही है। भगत उहदे कोलों सदा इक मंग ही मंगदा है कि मैनूं आपणा नाम देदे अते मैनूं नाम जपण दी हिंमत देदे ताँ कि तेरे नाम दे नाल जुड़ जावाँ।

"गिआन खंड का आखहु करमु ॥"

जदों जीव धरम दे रसते ते चले ताँ उस लई गिआन खंड दे विचों दी गुज़रनाँ ज़रूरी है। गुरमति दे आगमन तों पहिलाँ भारत विच परम जोत नाल मिलण दे दो मारग (system) सन; गिआन मारग अते भगती मारग। गिआन मारग दी जुगती सी कि शबद दी खोज करदिआँ करदिआँ शबद विच ही समा जाणा है। निरोल गिआन मारग विच हाउमें इतनी तीबर हो सकदी है पके फल दी तरूाँ डाली नालों आपे ही झड़ जाँदी है। निरोल भगती मारग दी जुगती सी कि हाउमें शुरू विच ही गुरू दी भेट कर दिउ अते जो दसिआ जा रहिआ है उसनूं बिनाँ किसे हुज़त दे करी जाउ। इहनाँ दोवाँ ही रसतिआँ उते चलण लई इक गृहसती दे रसते विच बहुत औकड़ाँ
हन। पहिली गल इह है कि दोवें मारग सनिआस चाहुंदे हन, ग्रहिसत विच रहिके दोवें ही नहीं निभाओ जा सकदे। दूजे निरोल गिआन वाला इतना हाउमें विच उलझ जाँदा है कि कोई विरला ही उसतों छुटकारा पा सकदा है। निरोल भगती मारग जीव नूं अंध विशवासी बणा दिंदा है अते उह करम काँडी बणके रहि जाँदा है। इहनाँ सारीआँ मुशकलाँ नूं धिआन विच रखदे होओ गुरमति ने दोवें मारग इकठे कर दिते हन। इसे करके गुरमति दे मारग उते चलण वालिआँ नूं गुरसिख कहिआ गइआ है। इक गुरू दा सिख हमेशा ही विदिआरथी (Disciple) दे रूप विच रहिंदा है, उह कदे उसताद नहीं बणदा। जो हमेशाँ ही सिख है उसदी हउमें दी जड़्ह ही कटी जाँदी है किउंकि उस कोल किसे नूं सिखाउण लई कुझ है ही नहीं। उह खुद अजे विदिआरथी है। जेकर इतना भेद ही
जीव दे हिरदे विच वस जावे ताँ धरम दी खेड्ह बड़ी आसान हो जावे। पर साडी अगिआनता इतनी गहिरी हो गई है कि असीं गुरू दे सिख कहिलाउंदे होओ वी हाउमें दे शिकार बणे रहिंदे हाँ, मानों सानूं गुरसिख शबद दी परीभाशा ही याद नहीं रही।

सो गुरमति ने कहिआ कि गुरसिख नाँ ते इतना गिआन विच फसे कि हंकार तों छुटकारा पाउणा मुशकिल हो जावे अते नाँ ही इतना अंध विशवासी होवे कि जो करम कर रहिआ है उसदे बारे कोई गिआन ही ना होवे। गुरसिख जो वी करे पहिलाँ गुरदेव कोलों पुछके अते पूरी तरूाँ समझके मारग अपणाओ।

"सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥
डिठै मुकति न होवई
जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥" (पन्ना ५६४)
"पड़िओ नाही भेदु बुझिओ पावणा ॥" (पन्ना १४८)

"समझै सूझै पड़ि पड़ि बूझै
अंति निरंतरि साचा ॥" (पन्ना ६३०)
"बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥
इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥"
(पंन्ना ६३५)

गुरबाणी अंध विशवास दा पुरज़ोर शबदाँ विच खंडन करदी है। गुरसिख लई इह बहुत ज़रूरी है कि उसनूं आपणे हर करम बारे पूरा गिआन होवे कि उह की कर रहिआ है अते किउं कर रहिआ है। इक गुरसिख लई किसे वी सवाल दा जवाब "इह मेरे गुरू दा हुकम है" काफी नहीं हो सकदा। उसनूं गुरबाणी विचों खोज करनी पवेगी कि किहड़ा करम उसनूं प्रभू दे नेड़े लै जा

रहिआ है अते किहड़ा नहीं। इस करके धरम दी यातरा उते अगे वधण लई गिआन खंड विचों लंघणा ज़रूरी है। सो गुरबाणी हुण गिआन खंड दी प्रीभाशा दसण लगी है।

"केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥"

गिआन खंड दे विच पता लगदा है कि जीव ताँ इक धरती नाल इसतृाँ जुड़के बैठ गइिआ है मानों इहि ही सभ कुझ है, इथे दी हवा ही काफी है, इसे दा पाणी ही काफी है; पर हुण उसनूं गुरबाणी दी खोज तों जागरती मिलदी है कि धरतीआँ ताँ अनेकाँ ही हन, इहनाँ दी ते कोई गिणती ही
नहीं। जदों असीं चुल्हा (stove) बालदे हाँ ताँ उह अग कुझ होर है, जिहड़ी बिजली दीआँ ताराँ विचों आउंदी है, उह अग कुझ होर है, जिहड़ी साडे खाणे नूं हज़म करन लई अग साडे अंदर लगी होई है, उह कुझ होर है। सो इहि सारीआँ अलग-अलग तृाँ दीआँ अगाँ हन। खाली इहि ही इक ग्रहि नहीं है, इकला इहि ही इक ब्रहमंड (Galaxy) नहीं है बलकि इसतृाँ दे अनेकाँ ही ग्रहि अते ब्रहमंड हन, तृाँ-तृाँ दीआँ हवावाँ हन, तृाँ-तृाँ दे पाणी हन। कई तृाँ दा जीवन है अते कई तृाँ दे जीव हन। अज दी साँइंस इहि मन्नदी है कि इहि ज़रूरी नहीं कि किसे होर ग्रहि उते जीवन वी साडे वरगी हवा पाणी ते अधारत होवे। उस जीवन दा आधार कुझ होर वी हो सकदा
है। गुरबाणी ने इहि विचार साडे लई पहिलाँ ही दरज कर दिता है। प्रभू ने कई तृाँ दी जीवनी साज़ी है जो साडी जाणकारी तों बहुत दूर है। 'कान' ते 'महेश' कृशन ते शिवजी दे नाम हन। इसतृाँ दे देवते कोई इक ही नहीं हन। अज वी
कृशन वरगीआँ आतमावाँ इस धरती ते तुरदीआँ फिरदीआँ हन। इहि अलग गल है कि उहनाँ नूं वेखण लई अज दा जीव तिआर नहीं है। अज वी इस धरती उते बहुत ब्रहम गिआनी हन। असीं ताँ इक ब्रहमा बारे सोचदे सी, जिस वेले गिआन दीआँ अखाँ खुल्हीआँ ताँ पता लगा कि कई ब्रहमा हन किउंकि कई तृाँ दीआँ जीवनीआँ जीउण वाले कई तृाँ दे जीव हन।

"केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥"

"केते" अखर नूं समझणा है कि पङ्गन लगिआ किहड़े पासे लगाउणा है। "केतीआ करम भूमी मेर केते" बाद रुकण दी ज़रूरत है, दूजा "केते" "धू उपदेस" दे नाल है। इहनाँ नूं इकठे पङ्गन नाल भाव अरथ साफ नहीं हुंदा। सो इहि "केते" किथे-किथे लगाउणा है इहनाँ दी विधी नूं पाठ करदिआँ ठीक तृाँ समझणा है। पाठकाँ दी जाणकारी लई इहनाँ तुकाँ विच कामा (,) लगाके सपशट कीता गइिआ है कि इहनाँ तुकाँ दा सही उचारन किवें करना है।

केतीआ करम भूमी मेर केते, केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते, केते मंडल देस ॥
केते सिध बुध नाथ केते, केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते, केते रतन समुंद ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी, केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते, नानक अंतु न अंतु ॥३५॥"

अनेकाँ धरतीआँ हन, अनेकाँ 'मेर' वरगे बहुत वडे परबत हन, जिस तृाँ दा उपदेश 'धरू" भगत नूं प्रापत हो होइिआ सी, उसे तृाँ दे उपदेश करन वाले कई हन। "धरू" दा मतलब है जो सदा सथिर है, जो डोलदा नहीं, इक जग्हा रहिंदा है। इसे करके धरती दे उतर वल जो तारा है उस दा नाउं ही "धरू" तारा रख दिता गइिआ है। धरती ते बैठिआँ इउं लगदा है जिवें उह हिलदा ही नहीं, भाव उह मन दी अवसथा, उह तन्न दी अवसथा, उह आतमा दी अवसथा जिहड़ी कदे वी ना डोले। उहनाँ अवसथावाँ दा ज़िकर करन वाले, समझाउण वाले, पालणा करन वाले इक नहीं अनेकाँ हन, अणगिणत हन, जिहनाँ दी गिणती नहीं कीती जा सकदी। ओसे जीव सानूं नज़र ना आउण जाँ सानूं ना मिलण ताँ इहि सिरफ साडे मन दी अवसथा नूं बिआन करदा है। जिवें कि बाणी फरमा रही है कि इस तृाँ दीआँ कई धरतीआँ, इस तृाँ दे कई परबत, इस तृाँ दे अडोल रहिण वाले भगत, 'धरू' वरगे उपदेश सुणन वाले, देण वाले, अते समझण वाले अनेकाँ हन।
जदों गिआन दी खोज विच बंदा जाँदा है ताँ उदों इहि समझ पैण लगदी कि मैं ताँ इक दो नूं ही सभ कुझ समझ के बैठ गइिआ सी। जिवें-जिवें इहि गिआन वधदा है, जिवें-जिवें अवसथा उच्ची हुंदी है ताँ इनसान नूं पता लगदा है कि उह कितना तुछ है। इस गिआन खंड विच इनसान दी अवसथा बदलनी शुरू हो जाँदी है। जिवें जिवें गुरबाणी राही जाणकारी वधदी है तिवें तिवें उसदी हाउमें घट होणी शुरू हो जाँदी है। इहि सारी जाणकारी देण दा इको ही मकसद है कि जीव नूं आपणे नाचीज़ होण दा अहिसास करवाइिआ जा सके। इहि गिआन खंड गिआन मारग वरगा नहीं है। इहि कुदरत बारे बड़ी थोड़ी जिही जाणकारी है। इस जाणकारी

नाल अंदर बैठे शरारती मन नूं थोड़ा चुप कराउण दा उपराला है, उसदी उतसुकता दी थोड़ी जिही तसली करवाई जा रही है।

"केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥"

"सूर" दा मतलब है सूरज, इंदर देवता जिस नूं पाणी दा देवता कहिआ गइआ है। अज वी साइंसदान इह मन्नदा है कि साडी धरती दे चंद सूरज वरगे अनेकाँ चंद सूरज हन। इह साडे सूरज नालों कई सौ गुणा वडे हन। धरतीआँ अनेकाँ हन, इहनाँ नूं बणाइआ अलग-अलग तरीके नाल गइआ है। इह सारीआँ तुकाँ इक तराँ नाल सवालीआ तुकाँ लगदीआँ हन पर हर सवाल दे विच ही जवाब छुपिआ बैठा
है। किन्नीआँ धरतीआँ हन, किन्ने सूरज हन, कितने आकाश पाताल हन। उहदे विच नाल ही कहिआ गइआ है कि इह गिणे नहीं जा सकदे, अणगिणत (Unlimited) हन। अज तों पंज सौ साल पहिलाँ इह गलाँ कहीआँ गईआँ हन। साइंस ने जदों दी आसमान विच दूरबीन (telescope) भेजी है, उह अज
कहि रहे हन कि उह अजे तक किसे किनारे नूं वेख ही नहीं
सके। इक भगत इस चकर विच पैंदा ही नहीं। उह कहिंदा है तूं बेअंत है, "मैं" तेरी बेअंतता देख के ही इस चकर विच नहीं आउंदा।

"केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥"

रिधीआँ सिधीआँ प्रापत करन वाले, महातमा बुध जैसी अवसथा प्रापत करन वाले, नाथ जिसने आपणीआँ करम इंद्रीआँ अते गिआन इंद्रीआँ नूं नथिआ होवे, उह अणगिणत हन। अनेक वेसाँ वाले अनेक देवी देवते हन।

"केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥"

धिआन जोग गल है कि इथे पाप अते पुन्न दोवें इकठे रखे हन। देव भाव देवता साकारआतमिक शकती (Positive energy) है, दानव भाव राखश नाकारआतमिक शकती (Negative energy) है। हुण मुशकल इह हुंदी है कि जिहड़े प्रचलत विआखिआ करन वाले हन उहनाँ ने देवतिआँ दे सिर ते चकर लगाइआ हुंदा है ते जिहड़ा दानव है उहदी दाड़्ही कट के तिलक लगाओ हुंदे हन। भोलिउ इथे सरीराँ दी गल नहीं हो रही, सगों मनोबृती दी गल हो रही है। इनसान दोनों अवसथावाँ विच हो सकदा है, देव दी अवसथा विच ते दानव दी अवसथा विच। कई रिशी मुनी हन, कई समुंदराँ दे विचों रतन कढण वाले हन। गुरबाणी वेदाँत वाले मिथिहासिक चौदाँ रतनाँ नूं पकड़के नहीं बैठी होई। रतन दा मतलब है 'कीमती चीज़', किसे लई हर पथर कीमती है अते किसे लई हीरा वी कीमती नहीं है। सो गुरबाणी इस वाद विवाद विच नहीं पैंदी, उह इतनाँ ही इशारा करदी है कि अनमोल चीज़ाँ वी अनेकाँ हन, अणगिणत हन।

"केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥"

इस धरती उते चार तराँ दी पैदाइश (खाणीआँ) दिखाई दिंदी है; अंडिआँ विचों, ज़ेर विचों, मिटी विचों अते आपणे आप पसीने विचों। इसेतराँ उहनाँ दीआँ चार किसमाँ दीआँ बोलीआँ मन लईआँ हन। पर सारी काइनात विच अनेकाँ प्रकार दीआँ खाणीआँ हन अते अनेकाँ प्रकार दीआँ उहनाँ दीआँ बाणीआँ हन। राजिआँ अते महाँराजिआँ, जिहड़े कि उनाँ ते राज करन वाले हन, दी वी कोई गिणती नहीं।

"केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ३५॥"

जिहनाँ दीआँ सुरतीआँ लग गईआँ हन, जिहनाँ दे मन विच टिकाओ आ गइआ है, उहनाँ दी कोई गिणती
नहीं। सेवकाँ दी कोई गिणती नहीं, भाव कि किसे वी चीज़ दा कोई अंत नहीं। उह बेअंत है अते उसदी कुदरत वी बेअंत है। इह आवसथा जीव दी धरम दे रसते ते चलण लई खोज विचों निकलदी है। जिवें-जिवें उह खोज वधदी है ताँ उस दी इह हालत बणदी जाँदी है कि उह होर तों होर ज़िआदा विसमाद विच, अचंभे विच, हैरानी विच डुबदा जाँदा है। आलौकिक नज़ारे वेखदा-वेखदा समझदा-समझदा, भगती दे विच, विसमाद विच तुरिआ जाँदा है।

(अंक ३६)

"गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी रूपु ॥
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥"
(गिआन दी पकड़ बहुत ही तीबर अते शकतीशाली है किउंकि इस विच बहुत ही रस अते अनंद भरिआ होइआ है। कमाई करन वाली अवसथा दी निशानी इह है कि इस विच कमाई करन वाले दा रूप (सवभाव) बदल जाँदा है। इस अवसथा विच बहुत अनोखे तराँ दी घाड़त घड़ी जाँदी है। इस अवसथा नूं गलाँ बाताँ नाल नही कहिआ जा सकदा किउंकि इह असली कमाई कमाउण नाल सबंध रखदी है। जो वी इस अवसथा विच वी गलाँ बाताँ विच फसिआ रहेगा उसनूं पिछों पछताणा पवेगा। इथे सुरती, अकल, मन, अते बुधी नूं कमाई नाल घड़िआ जाँदा है। मानो इथे सारीआँ रिधीआँ सिधीआँ तों वी उपर उठ जाईदा है।)

धरम दे रसते उ`ते चलदिआँ होइआँ गिआन खंड विच प्रवेश कीता ताँ गल समझ विच आई कि असली गल ताँ कुझ होर ही है। मैं ताँ आपणे घर, आपणे परिवार, आपणे मितर, आपणे समाज आदि छोटे जिहे दाइरे नाल दिल लगा के बैठ गइआ हाँ पर इह ताँ अनंत दा खेल है। इह ताँ अनंत (Unlimited) दी लीला है अते जेकर मैं उस अनंत दी किरपा दा पातर बणना चाहुंदा हाँ ताँ मैं छोटे जिहे दाइरे विच चुप करके नहीं बैठ सकदा। जिवें जिवें गिआन खंड दी यातरा करदा होइआ कुदरत दे भेद समझ विच आउण लगे ताँ इक होर बड़ा वडा खतरा पैदा हो गइआ। उस गिआन विचों इतना सवाद आउण लग पइआ कि उथे ही रुक गइआ। जिहड़ा गिआन दे रसते विच ठहिर जाओ उह वध तों वध प्रचारक बण सकदा है, लिखारी बण सकदा है, किताबाँ लिखके शोहरत अते पैसे कमा सकदा है, प्रोफैसर बण सकदा है, वडीआँ वडीआँ डिगरीआँ हासल कर सकदा है पर अधिआतमिक खेतर विच होर कुझ नहीं पा सकदा, किउंकि हथ पले सिरफ जाणकारी ही रहि जाँदी है। गलाँ करन दा ही सवाद रहि जाँदा है, गिआन ही पका हुंदा जाँदा है पर होर कोई कंम नहीं बणदा। इस खतरे बारे सावधान करन लई अगला अंक शुरू होइआ है:

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥

भाव कि गिआन खंड विच जो जाणकारी हासल हुंदी है उसदी पकड़ बहुत तीबर है, किउंकि गिआन दी प्रापती विच बहुत सवाद है। जीव दी इक बड़ी पुराणी आदत है कि उसनूं जद वी कोई नवीं जाणकारी हासिल हुंदी है ताँ उह उस जाणकारी नूं होर जीवाँ नूं दसके बड़ा खुश हुंदा है। ओसा करन नाल उसनूं दुनीआँ विचों बहुत सनमान मिलदा है जिस करके उसदे स्वैअभिमान विच होर वी वाधा हो जाँदा है। जितना वी उह नवीं जाणकारी नूं फैलाँदा है, उतनी ही हउमें वधदी जाँदी है अते उह इसदा आनंद मानण विच ही गवाच जाँदा है। गिआन खंड विच जो सवाद है उह ओसा है मानो सभ रागाँ, तमाशिआँ ते कौतकाँ दा सुआद प्रापत हो गइआ होवे। जेकर जीव इस सवाद नूं ही मानण विच रुझिआ रहे ताँ इसतों अगे आतमिक तरकी रुक जाँदी है। जिहड़ा जगिआसू इस खतरे तों बच निकलेगा
उह हासिल कीती होई जाणकारी नूं आपणे निजी जीवन विच असलीअत विच बदलण दे उपराले करन दी कोशिश करेगा। दिमाग़ी जाणकारी मुताबिक जीवन नूं ढालण लई कुछ घालणा, मिहनत, मुशकत, करनी पैंदी है इसे करके इस अवसथा नूं गुरबाणी ने सरम खंड कहिआ है।

"सरम खंड की बाणी रूपु ॥"

गिआन खंड विचों विचरदिआँ होइआँ जेकर मन विच जगिआसा जाँ तड़प पैदा हो जाओ कि इस जानकारी नूं असलीअत विच वेखिआ जावे (Actual Experience), ताँ जगिआसू तीसरे खंड विच कदम रखदा है, उस खंड दा नाम गुरबाणी ने 'सरम खंड' रखिआ है। उ`थे हुण असली रूप विच भगती होवेगी। उ`थे हुण सही रूप विच, जो करम किसे होर सरीर विच नहीं कीता जा सकदा, जिहबा दा इसतेमाल होवेगा।

"रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ ॥" (पन्ना १३६२)

"कंठे माला जिहवा रामु ॥
सहंस नामु लै लै करउ सलामु ॥" (पन्ना ४७९)

सो इथे करम इंदरीआँ नूं वस (control) विच लिआउण दा कंम है और उस दी निशानी दसदे हन कि जिहड़ा इस भगती दे रसते उ`ते चलेगा उसदा रूप भाव उसदी चाल ढाल, गल बात, रहिणी बहिणी, खाणा पीणा, सभ कुझ बदलणा शुरू हो जाओगा। हुण उहनूं कुझ कहिण दी लोड़ नहीं, किसे सिखिआ दी लोड़ नहीं, उसदा बैठणा उठणा दसेगा कि इहि हुण उस रसते दे उ`ते तुरिआ होइआ है। उहदी हर गल, पहिरावा, जागणा, सौणा हर करम बदल जाओगा। उसदा रूप (Projection) बदल जाणा ही सरम खंड दे यातरी दी निशानी है किउंकि उह शबद दी कमाई नाल आपणे अंदर दा रूप बदल रिहा है, तबदीली कर रिहा है। इथे सुरत, मन, मत, अते बुध घड़ी जा रही है। इहि भेद बहुत बरीक है, सिरफ शबद दे जाप करन नाल इहि सभ कुझ किवें हो रहिआ है? साडे कोलों इहि भेद गवाच जाण करके ही असीं बहुते भटके हाँ; साडी इस भटकणा दा अखाउती संताँ, साधाँ, अते बाबिआँ ने बहुत लाभ उठाइआ है। जद जाप सही ना कर सकण नाल कोई आतमिक झड़ाई ना होई ताँ साडा विशवास ही उ`ड गइआ अते असीं फेर करम काँडी बणके रहि गओ। आओ इस मारग दी गहिराई नूं समझण दा यतन करीओ।

जपु बाणी विच सभ तों पहिली करम इंदरी चुणी गई है "कन्न"। इसदे विच ही भेद छुपिआ बैठा है। गुरबाणी विच सही सुणन उते चार अंक शुरू विच ही किउं रख दिते गओ हन अते भगताँ नूं इस नाल किउं जोड़िआ गइआ है? भेद इहि है कि इकली करम इंदरी (जीभा) नूं कंम लगा देण नाल कुझ नहीं हो सकदा; उह तोता रटनी है। इस करम इंदरी दे नाल गिआन इंदरी (सुणना, सुरती, होश) नूं जोड़ना है, भाव कि जो जीभा नाल कहिआ जा रहिआ है, उसनूं ही पूरन होश नाल सुणना है। जिस अखर दा जाप हो रहिआ है उसदी हर लग-मातर बारे पूरन होश होणी चाहीदी है कि सरीर दे किहड़े हिसे विचों उसदी आवाज़ बणके बाहर निकल रही है। इहि जाप करन दा सभ तों गहिरा भेद है। जिस घड़ी गिआन इंदरी अते करम इंदरी दा इस तर्hाँ दा जोड़ हो गइआ उस घड़ी मन बिलकुल ठहिर जाओगा, टिकाउ विच चला जाओगा। जाप करन समें जितना चिर मन विच होर विचार उठ रहे हन इसतों ज़ाहिर है कि अभिआसी जाप वाले अखर नूं पूरी तर्hाँ नहीं सुण रहिआ। इहि दोवें गलाँ इकठीआँ हो ही नहीं सकदीआँ, भाव जाँ ते मन कुछ सोच सकदा है जाँ कुझ सुण सकदा है। जिथे सही सुणना है उथे कोई होर विचार नहीं आ सकदा; जिथे विचार है उथे सही सुणना नहीं हो रहिआ। सो मन दी इस बहुत पुराणी आदत नूं तोड़न लई इसनूं इक अखर दे जाप नाल जोड़ना ज़रूरी है। ज़ाहिर है कि इस लई किसे जंगल दी ज़रूरत ही नहीं; घर गृसत विच रहिके वी इहि मिहनत कीती जा सकदी है। सो जाप करदिआँ होइआँ मन नूं बार बार पिआर नाल जाप वाला अखर सुणन लई वापिस लैके आउणा है।

"चलु रे बैकुंठ तुझहि ले तारउ ॥
हिचहि त प्रेम कै चाबुक मारउ ॥" (पन्ना ३२९)

मन अड़ीअल खोते दी तर्hाँ है, बहुत पुराणा सुभाउ है, टिकणा इस लई बहुत औखा है। इस करके इस नाल नाराज़ नहीं होणा, आपणे आप नाल खिझणा नही, बस पिआर नाल वापिस बुलाके फिर शबद नाल जोड़ देणा है। मन दी इहि ज़िद पिआर अते धीरज नाल ही तोड़ी जा सकदी है, किसे ज़ोर जाँ झगड़े नाल नहीं। इहो है नाम अभिआस, इहो है सरम खंड दी यातरा। जद मन शबद दी कमाई करके टिकण लग जाँदा है ताँ उह आपणे अंदर उठ रहे क्रोध नूं देखण दे काबिल हो जाँदा है। अज किसे मामूली जिही घटना करके जद साडे विच गुसा पैदा हुंदा है ताँ उस वेले पता ही नहीं चलदा अते असीं उतावले हो जाँदे हाँ। उस क्रोध दी उतेजना करके असीं ग़लत फैसला कर बैठदे हाँ। जद गुसा उतर जाँदा है ताँ पछतावा हुंदा है। जिथे अज छोटी जिही कामयाबी कारन साडे विच हंकार पैदा हो जाँदा है, छोटी जिही चीज़ नूं देख के साडे विच लोभ आ जाँदा है, छोटी जिही किसे ने शोहरत कीती जाँ किसे दा भला कीता होइआ साडे विच मोह पैदा कर दिंदा है। इहो चकर सारी उमर चलदा रहिंदा है। पर जिसदा मन इकागर हो जाँदा है, हुण उह चीज़ाँ बदलणीआँ शुरू हो जाणगीआँ। हुण उह मोह (attachment) घटणा शुरू हो जावेगी। उह करम (action) करन तों पहिलाँ गुसे तों जाणू हो जाँदा है अते ग़लत फैसला करन तों बच जाँदा है। इस गल नूं बड़ा धिआन नाल समझ लउ। जिस वेले इस मिहनत (सरम) दे रसते ते चलोगे, नाम दे सिमरन दी जाच आ जाओगी, ताँ आपणा ही मन संजम (discipline) विच आउणा शुरू हो जाओगा। हुण उह पहिली वाँग फैसले नहीं करेगा। जेकर इसतर्hाँ नहीं हो रहिआ ताँ इसदा मतलब इहि है कि अजे मन ठहिरिआ नहीं है, अते जेकर मन ठहिरिआ नहीं है ताँ होर सही शबद अभिआस करन दी लोड़ है।

घड़न तों भाव ही इहि है। हुण हुकम रजाई चलण दी गल नेड़े आउणी शुरू हो जावेगी। जिहड़ी मत घड़ी जा रही है, उस नाल बुधी बदल गई। हुण आपणे मन दे टिकाओ नूं, सुरती नूं, आपणी अकल नूं, आपणे विचाराँ नूं, कुट-कुट के सिधिआँ कर देणा है। जिवें इक सुनिआर गहिणिआँ नूं पोलीआँ पोलीआँ चोटाँ मारके सही सूरत विच लिआउंदा है, इसे तर्hाँ आपणे मन नूं जाप दीआँ चोटाँ नाल घड़ना है। ओसी मिहनत करन वाले दा जिहड़ा बाहर वाला आउरा (Aura, Projection Energy) है, उसदा रूप

बदलदा जाँदा है। इस यातरा विच अंदर छुपे सारे चोराँ दा सही रूप दिखाई देण लगदा है, काम किथों उठदा है, क्रोध दा सही रूप की है, लोभ किवें जागिआ है, मोह दी पकड़ किसत्राँ दी है, हंकार नूं दीरघ रोग किउं कहिआ गइआ है, इह सभ कुझ आपणे अंदरों दिखाई देण लग पैंदा है। जद इहना दा सही रूप पता लग जाँदा है ताँ हुण इहनाँ तों छुटकारा पाउणा वी आसान हो जाँदा है। अगर फैसला करन तों पहिलाँ पूरी होश होवे कि इह करम लोभ अधीन होके कीता जा रहिआ है ताँ उह कंम करना बड़ा ही मुशकल हो जावेगा। जीव ओसे फैसले तों आपे ही मूंह मोड़ लवेगा। अज जीव अचेत है, इसे करके उहनूं फल मिलण ते पता लगदा है कि बीज क्रोध जाँ लोभ जाँ हंकार आदि दे असर हेठ बीजिआ सी। हुण जिवें जिवें चेतनता वधेगी, तिवें तिवें अंदर वाला हर इक चोर काबू विच आउणा शुरू हो जाओगा। इसनूं गुरबाणी ने पाणी दे बहाव दे उलट तैरना कहिआ है। इसनूं हर भगत जनु ने अउघट घाटी दा चड्हाउ दसिआ है। इह इतना आसान कंम वी नहीं है, नहीं ताँ इस धरती उते लखाँ कबीर जी वरगे ब्रहम गिआनी हुंदे। पर इसतों ज़िआदा आसान होर कोई साधन वी नहीं है। आतमिक यातरा दी कामयाबी दा इको ही प्रीखिआ (test) है; की पंजाँ चोराँ ते काबू (control) वध रहिआ है कि नहीं?

"पंच मनाओ पंच रुसाओ ॥ पंच वसाओ पंच गवाओ ॥१॥
इन् बिधि नगरु वुठा मेरे भाई ॥
दुरतु गइआ गुरि गिआनु दृड़ाई ॥" (पन्ना ४३०)

सतु, संतोख, दइआ, निमरता, अते धीरज नूं मनाके आपणे अंदर वसा लैणा अते काम, क्रोध, लोभ, मोह, हंकार नूं अंदरों कढण दी मिहनत नूं सरम खंड दी यातरा कहिआ गइआ है। इस मिहनत दा सभ तों मुढला धुरा है उह शबद अभिआस जिहड़ा मन नूं बाहर भजण तों रोकण दी शकती रखदा है। धिआन रहे कि इह मन इकागर करन दे कई साधना विचों इक साधन है, प्रभू प्रापती दा नहीं। कई अभिआसी जोश विच आके ओसी गल मूहों कढ बैठदे हन अते फिर हर त्राँ दा बहिस मुबासा उठ पैंदा है। मन दी इकागरता सही पंचाँ नूं अंदर वसाउण विच सहाइक हुंदी है अते गलत पंचाँ नूं अंदरों कढण विच मदद करदी है। आतमिक जीवन दा यातरी इसतों इलावा होर कुझ करन दी समरथा ही नहीं रखदा। अगले खंडाँ विच इह भेद होर विसथार नाल खोहले जाणगे।

तिथै घाड़ति घड़ीओ बहुतु अनूपु ॥

सरम खंड विच जो घड़िआ जाओगा उसदा रूप बहुत ही अनोखा होओगा। सरम खंड दा यातरी बाहरों ताँ दुजिआँ वरगा ही लगदा है पर अंदरों उह बिलकुल ही कुझ होर बण जाँदा है; इसे लई उसनूं गुरबाणी ने "बहुतु अनूप" कहिआ है। उस जगिआसू दे अंदर की चल रहिआ है उसनूं बाहरों वेखण वाला बिलकुल नहीं समझ सकदा। अगर उह अभिआसी किसे नाल ओसी हालत साँझी वी करनी चाहे ताँ नहीं कर सकेगा किउंकि बाहर दी दुनीआँ दा यातरी उसनूं समझ ही नहीं सकदा। इस विच किसे दा वी कोई दोश नहीं है। भाँवे कोई कितना वडा गिआनवान वी किउं ना होवे, जिसने सरम खंड दी यातरा नहीं कीती उह इस अवसथा नूं नहीं समझ सकदा। जदों इक साँइंसदान इक फुल वल देखदा है, उसदी खुशबू नूं माणदा है ताँ उह फुल नूं तोड़के आपणी प्रयोगशाला विच लै जाँदा है। उसदी पती पती तोड़के, डालीआँ नूं कटके, कई होर रसाइनाँ नाल उसदी खोज करदा है। अंत विच उह फुल विचों अतर फुलेल कढण विच कामयाब हो जाँदा है। पर इस सारी घालणा विच फुल की है उह बिलकुल ही गवाच जाँदा है। उस साँइंसदान नूं इह भुलेखा पै सकदा है कि उह फुल नूं जाणदा है, पर उह सचाई तों बहुत दूर है। होर दुनीआँ वी इस भुलेखे विच पैण करके साँइंसदान नूं फुल दा माहिर समझके कई त्राँ दे खिताब दे सकदी है, पर उह साँइंसदान फुल दे हिसिआँ बारे कुझ जाणकारी ताँ रखदा है, पर उह फुल नूं पूरी त्राँ नहीं जाणदा। फुल नूं सही रूप विच जानण लई फुल ही बणना पवेगा, अते उस लई साँइंसदान नूं मरना पवेगा। जद तक साँइंसदान है, फुल नहीं हो सकदा। सरम खंड विच साँइंसदान मरन दा अभिआस करदा है ताँ कि सही फुल नूं जाण सके। इस करके उसदी अंदरली हालत "बहुतु अनूपु" हो जाँदी है।

"ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥"

जदों मत घड़ी जा रही हुंदी है उदों आले-दुआले वाले समाज नूं इह गल चंगी नहीं लगदी किउंकि जो वी हो रहिआ है उह सभ कुझ अंदर हो रहिआ है। उस करके अभिआसी दा बाहर वालिआँ नाल वरतारा बदल रहिआ हुंदा है, पर उह इस बारे कुझ कहि नहीं सकदा। उह जो वी कहेगा, दूजिआँ नूं बिलकुल गप लगेगी। समाज कुझ होर डरामा चाहुंदा है पर गुरबाणी सानूं कुझ होर इशारे कर रही है। सो जदों तुसीं सुरती दे मारग ते चलणा शुरू करोगे अते सरम खंड विच बैठोगे ताँ तुहाडा सुभाअ बदलणा शुरू हो जावेगा। जद सुभाअ बदलेगा ताँ जिहड़ी दुनीआ तुहानूं पहिलाँ जाणदी है, उहनूं इह पसंद नहीं आउणा। उह समाज दुबारा आपणे वल खिचण दी कोशिश करेगा। तुहाडा खाणा-पीणा बदल जावेगा, तुहाडा पहिरावा बदल जावेगा, बोली बदल जावेगी, दुनीआँ टिचराँ करेगी, मज़ाक करेगी। जे उस नूं नहीं बरदाशत कर सकोगे ताँ डोल जाउगे। इस गल्ह नूं पहिलाँ समझ लउ।

इसे करके ओस पासे वल बहुती दुनीआ नहीं चलदी। गुरबाणी ने पहिलाँ ही चेतावनी (warning) दे दिती है।

"भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ ॥" (पन्ना १४५)
"भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥" (पन्ना ९१८)

इस पासे जे चलणा है ताँ इह इसदी कीमत देणी पवेगी। सारा सोचण दा तरीका जो समाज कोलों सिखिआ होइआ है, जो यूनीवरसिटीआँ विचों पड़्हिआ होइआ है, जो माँ-बाप कोलों सुणिआ होइआ है, जो इतिहासिक किताबाँ पड़्हीआँ होईआँ हन, उह सारीआँ बेकार हो जाणगीआँ। इक नवीं जीवन दी लहिर चलेगी। पर उहदे विच इक आपणा ही आनंद होवेगा। बाहरों चोट वजेगी पर अंदरों चैन होवेगा। हुण इकले बैठण विच तकलीफ नहीं लगेगी। हुण इकला बैठण नूं जी करेगा। इस बारे कुझ कहि वी नहीं सकेंगा, अते जे कहिण दी कोशिश कीती ताँ होर तराँ दे अजीबो ग़रीब झगड़े अते बहिसाँ छिड़ पैणगीआँ। कुझ फाइदा होण दी थाँ पछतावा लगेगा कि इस नालों ताँ चुप रहिणा ही सही सी।

अज जेकर घर दे अंदर वड़दिआँ सभ तों पहिलाँ टैलीफोन पकड़ लईदा है, उधरों टैलीवीजन चला देईदा है, नाल हीं कंपिऊटर चालू करीदा है, अख़बार जाँ कोई रसाला हथ लईदा है, इह सभ कुझ बदल जावेगा। हुण शाम नूं घर आओ अते घर वड़दिआँ ही बती बंद कर दिती जाओगी, फिर आपणे जाप दे कमरे विच जाण नूं जीअ करेगा; टैलीफोन नूं उतारके रख देण नूं जी करेगा, अख़बाराँ उसे तराँ ही पईआँ रहिणगीआँ। उही खबराँ हन, उहदे विच की नवीं गल आई है, कोई मर गइआ, कोई जी पइआ, होर उथे की दसिआ जा रिहा है? दुनीआ कहेगी इहनूं की हो गइआ है? इसनूं किसे डाकटर कोल लै चलो, किसे मनोविगिआनी (psychologist) नूं दिखाउ, इहदा दिमाग़ ख़राब हो गइआ है।

"वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बाँह ॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥१॥" (पन्ना १२७९)

जिहड़ा वी इनसान समाज दे बणे होओ कनूंनाँ दे उलटे पासे चलण लग पओ, उहनूं दुनीआँ पागल कहिंदी है। मिसाल दे तौर ते तुसीं किसे अफरीकन कसबे विच जाउ जिथे कि उन्हाँ ने कदे कपड़ा पाइआ ही नहीं। तुसीं कपड़े पा के उथे चले जाउगे ताँ उह तुहानूं पागल कहिणगे, तुसाँ उन्हाँ नूं पागल लगणा है। पर तुसाँ कहिणा है कि इह हबशी पागल हन जो नंगे-भजे फिरदे हन। मन लओ जे उह तुहानूं समझा देण कि असीं ओस करके कपड़े नहीं पाउंदे अते हुण तुसीं इही विचार लै के लौस ओंजलिस (Los Angeles) शहिर विच आ के उस तराँ रहिणा शुरू करोगे ताँ तुहानूं इथों वालिआँ ने पागल करार दे देणा है। हुण इथों वाले कहिणगे कि इह पागल है जो कपड़े नहीं पाउंदा। पागल ते अकलमंद दी निशानी समाज ने रखी होई है। जिहड़ा समाज दे मुताबिक चल रिहा है उह अकलमंद है, पर जिहड़ा समाज मुताबिक नहीं चल रिहा उह पागल है। पर भगत ताँ समाज दे मुताबिक चल ही नहीं सकदा। भगत ते पागल मंनिआ जाओगा ही। जेकर पागल कहिलाण विच शरम आउंदी है ताँ फिर भगती मारग दी गल तुसीं मन ही नहीं सकदे। इह फैसला आपणे मन नाल पहिलाँ ही करना पैंदा है।

दुनीआँ विच उसेतराँ ही रहिणा है, खाणा-पीणा, सौणा बहिणा, सरीर दी संभाल करनी, सफाई रखणी, आपणे मन दी सफाई रखणी, तन दी सफाई रखणी, दुनीआँ नाल मिलणा गिलणा, उह सभ ठीक है। पर आप जिहड़ी गल गुरदेव ने सानूं करन तों रोकिआ है, उह नहीं करनी। जिहड़े करदे हन, जे उह पुछण ताँ गल दस देणी, जे ना समझण ताँ चुप कर जाणा है। झगड़ा नहीं करना अते नुकता चीनी नहीं करनी। उन्हाँ दी आपणी जीवन यातरा है। तुसीं आपणी जीवन यातरा ते पके रहिणा है। सरम खंड विच बैठके मिहनत करनी है, भगती करनी है, उथे मत नूं बदलणा है। इस ढंग दे नाल बजाओ गुरमति तों दूर जाण दे गुरमति कोल आइआ जा सके। अज असीं जिनाँ वी किरिआ करम कर रहे हाँ उह सारा ही गुरमति तों उलट कर रहे हाँ। जदों किसे करम काँड दी किरिआ वल देख के पुछिआ जावे कि इह किउं करदे हो ताँ अकसर जवाब मिलदा है कि इह गुरदेव दा हुकम है इस करके इसनूं गुरमरियादा कहिआ जाँदा है। असलीयत इह है कि ओसी कोई मरियादा किसे वी गुरू साहिबान ने नहीं नीयत कीती, इह किसे संसथा दे लीडराँ ने, किसे जथेबंदी दे मोढीआँ ने, जाँ किसे आप मुहारे संत महातमा ने कहि दिता है। गुरदेव साहिबाँन ने ओसी किसे मरियादा उते आपणी मोहर नहीं लगाई। सो इह आपणे मन नाल फैसला करना है कि गल गुरू दी मन्नणी है, कि जाँ समाज जाँ किसे जथेबंदी दी मन्नणी है। जे जथेबंदी दी मन्नणी है ताँ इहदे नाल तुसीं दुनीआँ विच ताँ भावे कामयाब हो जाउ, इथों दी शोभा ताँ भावे मिल जाओ पर गुरदेव कोलों वी पिआर मिल जाओ, इह मुशकिल है। इह चोण (choice) करनी पवेगी। दुनीआँ दे विच विचरदिआँ होइआ समाज जाँ जथेबंदी दा उह कनूंन नहीं पकड़ना, जिहड़ा कि गुरबाणी विच प्रवान नहीं होइआ।

"तिथै घड़ीओ सुरति मति मनि बुधि ॥
तिथै घड़ीओ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥"

जिस तराँ गिआन खंड बारे चेतावनी (warning) दिती गई सी कि इकला गिआन विच ही ना बैठा रहीं। गिआन खंड विच बैठके गलाँ करनीआँ ते गलाँ सुणनीआँ उस विच बड़ा सुआद है, इह वी इक परकार दी शकती है अते बड़ी ताकतवार शकती है। इकला गलाँ ही ना करदा रहीं, कमाई करीं। सरम खंड विच पैर रखीं। हुण जद सरम खंड विच पैर रखेंगा ताँ मत, मन, अते सुरती घड़ी जाओगी। जिवें-जिवें सूरती हलकी होके उपर नूं उठेगी, तेरे आले-दुआले कुझ झलकीआँ होणगीआँ। शकती (energy) आपणा रंग दिखाओगी, किसे ज़माने विच सिधाँ जोगीआँ ने इस घटना दा बड़ा फाइदा उठाइआ सी। उन्नाँ झलकीआँ नूं वेख के मन दे विच दा उबाला आओगा कि "मैं" इह दुनीआँ नूं दसाँ, इह दिखावाँ, इह गल कराँ। जिस दिन इह सुआद पै गइआ, उसे दिन बरेक लग जावेगी। होर आतमिक चड़्हाई बंद हो जावेगी। इस लई ओसी मनो-बिरती नूं वी इसे खंड विच घड़िआ जाँदा है।

उन्नाँ सिधीआँ नूं पकड़ के ते दुनीआँ नाल तमाशा नहीं शुरू कर लैणा। आपे बाबे बण के नहीं बहि जाणा। इह सभ तों वडी औखी घाटी है जदों कि शकती आले-दुआले होवे ते साहमणे कोई दुखीआ नज़र आ जाओ। उह आ के तरला पावे कि मेरे बचे दी बीमारी दूर नहीं हुंदी, ज़रा तुसीं कोई अरदास कर दिउ। उसे वेले मन विच चाअ आ जाँदा है कि भला कमा लवाँ। ओसा करन नाल दुनीआँ विच वाह-वाह हो गई कि फलाणे संत जी आओ सन उहनाँ ने जिसनूं डाकटराँ ने जवाब दे दिता उसनूं ठीक कर दिता है। इह सारीआँ गलाँ मुमकिन हन। पर भगत दा इह कंम नहीं, उह जिहड़ा दुखीआ है उस नूं वीं नाम वाले पासे लगा दिंदा है। उसदी आपणी भगती दा सदका दुख दूर होवे ताँ ही ठीक है। उह इह नहीं कहिंदा कि मेरे कोल इक शकती आ गई है जिस नाल मैं तैनूं ठीक कर देंदा हाँ। जिहड़े ओसा करदे हन उह गुरमति तों बहुत दूर हो गओ हन। सो इह चितावनी है कि मन दे रिधीआँ सिधीआँ वल बहाउ नूं वी रोक पाण दा अभिआस इसे खंड विच कीता जाणा है। अभिआसी सरम खंड विच इतना कुझ ही कर सकदा है, इथे उसदा कंम ख़तम हो जाओगा। पहिले तिन्न खंडाँ दी यातरा जीव दी जुमेवारी ते निरभर है। इस तों अगे जो वी होओगा उह केवल प्रमातमा दी रज़ा ते निरभर है।

(अंक ३७)

करम खंड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ता के रूप न कथने जाहि ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइि ॥
सच खंडि वसै निरंकारु ॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥
(किरपा दे खंड विच जीव प्रभू नाल जुड़ जाँदा है। उस अवसथा विच होर कुझ वी नही बचदा। उथे जोधे अते बली ही पुजदे हन जिहनाँ अंदर रामईआ प्रगट हो जाँदा है। उथे नर अते मादा शकतीआँ इिक हो जाँदीआँ हन जिसदा कि रूप शबदाँ तों दूर निकल जाँदा है। जिनाँ अंदर रमईआ प्रगट हो जाँदा है उह जनम मरन दे बंधन तों आजाद हो जाँदे हन। उथे अनेक तराँ दे भगत वसदे हन जो कि उस सचे नूं आपणे अंदर वेख वेखके सदा अनंदमई रहिंदे हन। उह सरबविआपी सदा सच दी अवसथा विच रहिंदा है। उह आपणी किरपालू नदर विच सदा ही निहाल है। इिह सारे अकाश, पाताल, अते गेलैकसीआँ उसेदीआँ हन जिन्ना दा कि कोई अंत ही नही। उसने कई प्रकार दे आकार बणाओ हन जिहड़े कि उसेदे हुकम विच विचर रहे हन। उह सभनूं देखदा है अते आपणी लीला नूं देख देखके खुश हुंदा है। उसदा बिआन करना लोहे दे चने चबाउण वाँगू कठिन है)

पिछले अंक विच गुरबाणी ने जगिआसू लई सरम खंड दी यातरा बारे जाणू करवाइिआ सी। सरम खंड दे विच टिक के सुरत, मत, मन, अते बुधी नूं गिआन दे हथौड़े मार-मार के घड़िआ गइिआ है। जो गिआन खंड विचों समझिआ, उसदे नाल मिहनत करदा-करदा, भगती करदा-करदा, नाम जपुदा-जपुदा इिक अवसथा तक पहुंच गइिआ जिथे उसदी किरपा दे पातर बण जाईदा है। उस अवसथा नूं गुरबाणी विच "करम खंड" कहिआ गइिआ है।

"करम खंड की बाणी जोरु ॥"

करम खंड दी निशानी (भाशा) है "जोरु"। कई विदवाना ने जोरु तों भाव शकती लइिआ है। इिसदा ज़ोरु दा मतलब शकती वी हो सकदा है अते जोरु दा मतलब जुड़ना वी हो सकदा है। इिसे करके 'रारे' थले औकड़ दे दिता है। इिशारा कीता है कि इिस अखर नूं गहिराई नाल विचारना है। प्रभू दी किरपा नाल, करम नाल, उस दी करामत नाल, अते मिहर दा सदका जीव उस नाल जुड़ गइिआ है, उह जीव उसदी मिहर दा पातर बण गइिआ है। प्रभू ने उसनूं आपणे आप नाल जोड़ लइिआ है। उस अवसथा (stage) ते कई त्राँ दीआँ शकतीआँ दी प्रापती वी है। भावें कई विचारकाँ ने ज़ोर दा मतलब शकती कीता है, ताकत कीता है, पर "जोरु" दा मतलब इिथे जुड़ना जिआदा सही लगदा है। भाव उस नाल जुड़ना किसे दे कुझ करने करके नहीं होइिआ। उह तेरी भगती करके नहीं होवेगा, तेरी मुशकत करके नहीं होवेगा, उह उसदे करम करके होओगा। उस दी मिहर करके होओगा, उस दी करामत करके होओगा, उस दे प्रसादि करके होओगा। उस दे नाल जुड़ सकणा इिनसान दी करनी नहीं है। इिस भेद तों हुशिआर हो जाउ। इिह कहिणा कि किसे ने भगती कीती ते प्रमातमा नूं पा लइिआ गुरमति दे मुताबिक सही नहीं है। इितना ही कहिआ जा सकदा है कि किसे ने भगती कीती सी अते प्रमातमा ने उस दी मिहनत प्रवान कर लई। असलीअत इिह है उस ने भगती कीती ते प्रमातमा ने उस नूं बखश दिता। उस ने भगती करके प्रमातमा नूं बुला लइिआ जाँ आपणे वस कर लइिआ, इिह गल ग़लत है। उह ना किसे दे वस हुंदा है अते ना ही कीता जा सकदा है। ओसा दाहवा करना अतकथनी है, हंकार दा दूसरा रूप है। ओस करके गुरबाणी ने इिसनूं चौथी मंजल कहिआ है। तिन्न मंजलाँ ते पैर पुटणे जीव दी जुंमेवारी है, धरम-खंड विच चलण दा इिरादा कीता है, गिआन खंड विच बैठ के कुदरत दा अते कादर दा भेद समझिआ है, सरम खंड विच बैठ के मन-बुधी नूं घड़के मनमति दा कूड़ा करकट बाहर कढण दी मुशकत ते घालणा घाली है। इिसतों अगे जगिआसू हुण होर कुझ नहीं कर सकदा। जिस तराँ इिक किसान धरती विच बीज पाउण तों बाद सिवाओ बैठ के इिंतज़ार करन दे होर कुझ नहीं कर सकदा, इिसेतराँ जगिआसू सरम खंड विच इिंतज़ार ही कर सकदा है। इिथों तक कि कोई आस वी नहीं कर सकदा, कुझ कहि वी नहीं सकदा। गुरबाणी विच इिस बारे सानूं बड़ी ही गहिरी विचार दिती गई है:

"किआ उठि उठि देखहु बपुड़ें इिसु मेघै हथि किछु नाहि ॥
जिनि ओहु मेघु पठाइिआ तिसु राखहु मन माँहि ॥"

(पन्ना १२८०)

इक किसान खेत विच बीज बीजके घर आ गइिआ है। सवेरे उठके वेखिआ कि बदल होओ पओ हन। बाहर निकल के बदलाँ वल वेख रहिआ है कि किसे थाँ काला है अते किसे थाँ चिटा है। उसदी आस प्रबल हुंदी जा रही है कि अज मींह ज़रूर पवेगा जिस नाल फसल चंगी उगेगी। पर गुरबाणी उस किसान नूं अवाज़ देके जगाउंदी है कि ओ भोले जीव तूं बार बार उठ के इन्नाँ बदलाँ नूं की वेखदा पइिआँ है। इस बदल दे वस विच कोई चीज़ नहीं है। सगों जिसने इह बदल पैदा कीता है उसदी याद विच बैठके इंतज़ार कर। इह ज़रूरी नहीं कि बदल आइिआ है ताँ मींह ज़रूर ही व्रेगा, उह सुका वी जा सकदा है। सो तूं बदल वल वेख के खुश ना हो, बलकि जिस ने इह मींह बणाओ हन, जिस ने बदल बणाओ हन, उस नूं अंदर घर बैठ के याद कर। जदों बीज उगणा होवेगा, आपे ही उग पओगा। सारे बीज उगदे नहीं हुंदे, कुझ चिड़ीआँ काँ खा जाँदे हन, कोई बीज सड़ जाँदा है, कोई ज़मीन विच रहि जाँदा है अते कोई बीज उस दी किरपा नाल अंकुर के बाहर आ जाँदा है। इह मिहनत दा फल है जो कि उस दी किरपा ते ही छडणा पवेगा। इही गल इथे करम खंड विच कही गई है कि करम खंड विच उदों पहुंचिआ मंनिआ जाओगा जदों उस दे नाल जोड़ लइिआ जाओगा।

"तिथै होरु न कोई होरु ॥"

उस आवसथा विच जीव दे अंदर कुझ वी नहीं बचदा। उसदे अंदर सिवाओ उस जोती दे प्रकाश दे होर कुझ वी नहीं है। इह बहुत ही बरीक गल है, इसनूं लफज़ा विच बन्नणा बड़ा औखा है। इसदा ताँ अहिसास ही कीता जा सकदा है। जेकर इह कहिआ जावे कि जगिआसू अते प्रमातमा दोवें जुड़ गओ हन ताँ इह दा मतलब इह बण गइिआ कि कदी दो हन पर जुड़े होओ हन। पर इह झूठ है किउंकि दूजा ते कदी सी ही नहीं, उह ते इक प्रछाँई मा" सी। जेकर इह कहिआ जाओ कि जगिआसू प्रमातमा दे अंदर चला गइिआ है ताँ इसनूं जुड़ना नहीं कहिआ जा सकदा किउंकि अंदर जाण वाले दी अहिसास करन वाली शकती अजे बची होई है। इह वी गल ठीक नहीं हो सकदी। इस करके गुरबाणी संकेत कर रही है कि उस मंज़िल ते कुझ हुंदा ही नहीं, इक ही है, बस प्रमातमा ही है। इतनी गल नूं पहिचानण वाला वी कोई नहीं हुंदा। इह वी शकती ख़तम हो जाँदी है। उथे निरोल शकती दा अहिसास है। उथे पिउर निरोल होंद (Pure Existence) है।

समझो इस गल्ल नूं। जे तुसीं इह कहि रहे हो कि प्रमातमा है, ताँ जदों तुसीं इह कहि रहे हो ताँ उस वेले तुसीं वी हो। अते जद तक इतना कहिण वाला वी बचिआ होइिआ है ताँ इहदा मतलब इह समझो कि फिर अजे उस नाल जुड़े नहीं। दूजे हथ जेकर तुसीं नहीं हो ताँ तुसीं इह वी नहीं कहि सकदे कि प्रमातमा है। इह कहिण वाला किथे है? उह किथे गइिआ? उह हमेशा लई चुप हो गइिआ। हुण जीव विच ओसीआँ शकतीआँ आ सकदीआँ हन कि उह सारिआँ नालों अनोखा ही लगेगा। इह आतमिक शकतीआँ वी जगिआसू लई इक त्रहाँ दा इमितिहान बण जाँदीआँ हन। जेकर जीव इहनाँ आतमिक शकतीआँ वल खिचिआ जावे अते इहनाँ दी जाइिज़ जाँ नाजाइिज़ वरतों विच लग जावे ताँ उथे ही बरेक लग जाँदी है; होर आतमिक झड़ाई होणी नामुमकिन हो जाँदी है। इसे करके गुरबाणी ने ओसीआँ रिधीआँ सिधीआँ नूं "अवरा साद" कहिआ है अते याद दिलाइिआ है कि इह माइिआ दा जगिआसू नूं पिछाँह खिचण लई आखरी हमला है। जो जीव इस भरम विच नाँ फसे उस लई परम अवसथा दी प्रापती मुमकिन हो जाँदी है।

"तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥"

उह शकतीआँ शकतीशाली योधिआँ वरगीआँ हन, महाँ बलीआँ वरगीआँ हन, सूरमिआँ वरगीआँ हन। इह आतमिक शकतीआँ दीआँ गलाँ हो रहीआँ हन। इह उह योधे नहीं हन जिहड़े आपणे सिर दी बाज़ी ला दिंदे हन। इह शकती कृपान दी शकती नहीं है। इह निरोल भगती दी शकती दी गल हो रही है। इसे करके अगली तुक विच उसदा खुलासा कीता गइिआ है कि उस जीव अंदर 'रामु' दी जोत प्रगट हो चुकी है। इ्थे 'ममे' थले औकड़ दे के इशारा कीता गइिआ है कि रामु दा भाव धिआन नाल समझणा है। इथों भुलेखा नहीं खाणा किउंकि बाणी विच राम अखर दो त्रहाँ नाल आइिआ है। इक थाँ ते आइिआ है:

"रामु गइिओ रावनु गइिओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नहीं सुपने जिउ संसारु ॥" (पन्ना १४२९)
"रोवै रामु निकाला भइिआ ॥
सीता लखमणु विछुड़ि गइिआ ॥" (पन्ना ९५३)

इहनाँ तुकाँ विच जिहड़ा राम वरतिआ गइिआ है उथे राजे दशरथ दे पुतर वल इशारा है, उसदे सरीर वल इशारा है।

"राम राम बोलि राम राम ॥
तिआगहु मन के सगल काम ॥" (पन्ना ११८२)
"राम राम राम जापि रमत राम सहाई ॥" (पन्ना १२२६)

इहनाँ तुकाँ विच उस राम दा ज़िकर है जिहड़ा
सारी सृशटी विच रमिआ होइआ है, उस परमातमा वल इशारा है। जद उस राम नाल जुड़ गइआ ताँ हुण शकती आ गई है। हुण प्रभू जीव दे अंदरों प्रगट हो गइआ है। जद इह घटना घटदी है ताँ उसदी होर निशानी अगे दसी जा रही है:
"तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥"

जिथे रमिआ होइआ प्रगट हो जाँदा है उत्थे नर (Masculine Energy) अते मादा (Feminine Energy) दा कोई भेद नहीं बचदा। इथे वी बहुत सावधान होण दी ज़रूरत है, इथे सीता तों भाव राम चंदर दी पतनी नहीं
है। उह सीता ताँ सरीर सी अते उसदी खूबसूरती शबदाँ विच दरसाई जा सकदी है। इह किते भुलेखा ना रहि जाओ। इथे उस आवसथा वल इशारा हो रहिआ है जिथे दोवे शकतीआँ,
नर अते मादा, इक हो जाँदीआँ हन; उहनाँ विच कोई भेद
नहीं रहिंदा किउंकि परम शकती ना नर है अते नाँ ही मादा
है। उह दोवें ही नहीं है जाँ दोवाँ दा इतना संपूरन संगम है उसदी कोई महिमा कही ही नहीं जा सकदी। उह आवसथा इसत्रीआँ दे सभ भेदाँ तो उपर (Transcendent) है। उह Male तों वी अते Female तों वी दोनाँ तों परे है। इसे करके Male energy (सीतो) दा ज़िकर करके नाल ही Female energy (सीता) दा ज़िकर कीता है।

"ता के रूप न कथने जाहि ॥"

सरम खंड दी निशानी दसी गई कि उथे रूप बदलदा है, पर करम खंड दी अवसथा दा रूप (Aura) बिआन ही नहीं कीता जा सकदा। ओसा किउं? इह अवसथा बिआन किउं नहीं कीती जा सकदी? उह इस करके है कि हुण सथूल अते भौतिक सरीराँ नाल कोई वासता ही नहीं रहिआ, इथे जगिआसू उसदे नाल जुड़ गइआ है। उस परम शकती ने प्रवान कर लइआ है, हुण उहदा रूप नहीं दसिआ जा सकदा। उसदा खुलासा अगली तुक करदी है।

"ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥"

"ना ओहि मरहि" ना मरन तों इथे किसे सरीर वल इशारा नहीं है कि कोई सरीर अमर हो जाँदा है। उह जो इक है, उह जिहड़ा सदा रहिण वाला है, जगिआसू उहदे नाल
इक हो गइआ है। हुण जीवन मरन दा चकर ही नहीं
बचिआ। ठगउली माइआ तों आज़ादी प्रापत हो गई है। उसदी किरपा दा पातर बणके जीवन दी बाज़ी जिती गई है। हिरदे विच रमईआ दा सदीवी वासा हो गइआ है। उस हिरदे विच हुण कुझ वी होर नहीं बचिआ, ना आशा है, ना निराशा है, ना सुख है, ना दुख है; बस ओही है, दूजा होर कोई है ही नहीं।

"तिथै भगत वसहि के लोअ ॥"

जो इस आवसथा नूं प्रापत कर लैंदे हन उही असली भगत हन, उही भगत कहिलाण दे सही हकदार हन। 'के लोअ' दा मतलब है कईआँ तरफ़ाँ दे, कई खंडा अते ब्रहिमंडा विच विचरन वाले। इह बड़ा ही सवादला इशारा है, कई ब्रहिमंड हन जिन्हाँ विच उसदे भगत हन। इह ज़रूरी नहीं कि उहनाँ दे सरीर वी साडे वरगे ही होण। अज दा साँइंसदान इह समझके बैठा होइआ है जिथे पाणी नहीं उथे जीवन प्रफुलत हो ही नहीं सकदा। पर गुरबाणी इशारा कर रही है कि जीवनीआँ कई प्रकार दीआँ हो सकदीआँ हन अते उहनाँ सारीआँ जीवनीआँ दा करता वी उही इक शकती है। उस शकती विच अभेद होण दी तड़प हर ब्रहिमंड दे जगिआसूआँ नूं है किउंकि:

"करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥"

जदों उह हमेशा लई मन विच आ के बैठ जाँदा है ताँ हुण असली आनंद दा सवाद प्रापत हुंदा है। उहनाँ नूं इह खुशी नहीं है कि

बाहर की हो रहिआ है, हुण सदीवी ख़ुशी दी प्रापती है। जिहड़ी बाहरली ख़ुशी है उह ताँ थोड़ी देर रहिंदी है फिर ख़तम हो जाँदी है। बाहर दी ख़ुशी दा जिथे मिलना होवेगा उऱ्थे विछोड़ा वी ज़रूर होओगा, जिथे हसणा होवेगा उऱ्थे रोणा वी होवेगा। इह सदीवी ख़ुशी वल इशारा है जिहड़ी दुबिधा (Duality) तों हमेशा लई आज़ाद है। उथे दो किनारे वी नहीं हन अते इक किनारा वी नहीं है; किसे बंधन दा नामो निशान नहीं है; बस हर पासे असीम खुला पन है। इस मंज़िल नूं शबदाँ विच दसणा बहुत ही मुशकिल है।

"सच खंडि वसै निरंकारु ॥"

जो इस यातरा दी आखरी अवसथा है उसनूं गुरबाणी ने 'सच खंडि' कहिआ है। इस अवसथा नूं बाकी सारीआँ घाटीआँ नालों अलग कीता गइिआ है। इस विच बहुत गहिरा भेद है। धिआन नाल विचारो कि सरम खंड छतीवाँ अंक है। «घड़ीओ सुरा सिधा की सुधि" उते छतीवाँ अंक पूरा हो जाँदा है। सैतीवाँ अंक शुरू होइिआ है; «खंड की बाणी जोरु" तों अते करम खंड दी विचार «अनंदु सचा मनि सोइि" ते समापत हो जाँदी है। इथों तक करम खंड दा बिआन है। पर इथे करम खंड दा खुलासा दे के नवाँ अंक नहीं पाइिआ गइिआ। धरम खंड तों करम खंड तक वारी वारी अंकाँ दी गिणती आ रही सी। पर करम खंड अते इसतों अगले खंड विच अंक नहीं दिता गइिआ बलकि उसनूं नाल ही शुरू कर दिता गइिआ है। दूजी गल धिआन जोग है कि आखरी सटेज़ दे अखर दे जोड़ (Spellings) वी बदल दिते गओ हन, उसदे डडे नूं सिहारी लगा दिती गई है। विआकरण (grammar) दे गिआता भाँवे इसदा कुझ वी भावअरथ कढण पर अधिआतमिक जगिआसू लई इह भेदाँ भरे इशारे हन। इह दो निशानीआँ दे के गुरबाणी ने इशारा कीता है कि सच खंड कोई खंडाँ वरगा खंड नहीं है। जिहड़े विदवान इस चीज़ दी ज़िद करदे हन कि गुरबाणी ने पंज खंड दसे हन, इह उन्हाँ दे गिआन दे लई विचार साँझी कीती जा रही है। गुरबाणी विच चार ही खंड हन, सच खंड कोई जगह नहीं है, मंज़िल नहीं है। जे सच वी इक खंड है, इक जग्हा है, ताँ प्रमातमा वी इक थाँ ते हो गइिआ, इक जग्हा ते सीमत हो गइिआ पर प्रमातमा इक ओसी शकती है जो सरब विआपी है, उह किसे इक थाँ ते नहीं रहिंदा। उह ते इथे वी है, उथे वी है, अंदर वी है, बाहर वी है, उपर वी है, थल्हे है। ओसे करके ्निरंकारु" दी गल करदिआँ होइिआँ शबदाँ नूं बदल दिता गइिआ है अते दो निशानीआँ दितीआँ गईआँ हन, इक ते उहदे विच अंक नहीं है, अते दूसरा उहदे अखर जोड़ (spelling) अलग हन।

इशारा कीता गइिआ है कि उसदे विच अभेद हो जाण वाली घटना आखरी है। दरअसल इसनूं इक अवसथा कहिणा वी सही नहीं है। इनसान दी भाशा विच कोई ओसा शबद नहीं है जो इसनूं बिआन कर सके। इह भाशा दी बेवसी है इस करके अधूरे शबद वरतने पै रहे हन। जाण बुझके ग़लत बिआनी करनी पैंदी है। सच दी असली प्रापती इक ओसी अवसथा है जिथे हर थाँ ते सच दी ही झलक आउंदी है; उह निरंकारु दे नाल अभेद होण दी झाकी है। उथे हुण न कोई शबद रहि गइिआ, ना उथे शबद देण वाला गुरू रहि गइिआ, ना जिस प्रमातमा दा शबद सी उह रहि गइिआ। सिरफ दरशन ही दरशन रहि गओ, रौशनी ही रौशनी रहि गई, होर कुझ वी नहीं। हुण जिहड़ा इह कहि सकदा सी कि मैनूं दरशन हो रहे हन उह वी नहीं रहि गइिआ। कोई कुझ दसण वाला है ही नहीं। प्रमातमा दे बारे प्रमातमा ही जाणदा है।

"करि करि वेखै नदरि निहाल ॥

उस ने इक खेल्ह रचाइिआ होइिआ है, इक नाटक (drama) चलाइिआ होइिआ है, इक लील्हा रचाई होई है। उह खेड्हदा पइिआ है अते उस खेड्ह नूं खेड्ह के हमेशा दे लई खुश रहिंदा है, सुखी रहिंदा है, निहाल रहिंदा है। हर बचा इह जाणदा है कि खेल्ह दा मकसद बस आनंद ही हुंदा है, होर कुझ नहीं। इक बचा सारा दिन समुंदर दे किनारे ते रेत दा किला बणाउंदा रहिंदा है। जेकर उसनूं पुछिआ जावे कि उह की कर रहिआ है ताँ उह खुशी विच जवाब देंदा है कि उह खेल्ह रहिआ है। फिर शाम नूं घर जाण लगिआँ उसे ही ख़ुशी नाल लत मारके उस किले नूं तोड़ देंदा है। किला बणाउंदिआँ जाँ ढाउंदिआँ होइिआँ उस बचे दी ख़ुशी विच कोई फरक नहीं पैंदा। इह सदीवी आनंद दी निशानी है जो इक भगत नूं उस परम शकती नाल इक होण ते प्रापत हुंदी है। इह सारा उस दा खेल्ह है, उस दी निगाह है। उह हमेशा खुश रहिण वाला है।

"तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥"

'खंड मंडल वरभंड' कितनीआँ धरतीआँ हन, कितनीआँ गेलैकसीआँ (Galaxies) आकाश हन कितने पाताल हन इहना दी कोई गिणती नहीं कीती जा सकदी। उस अवसथा नूं प्रापत होओ भगत नूं किसे दूरबीन नाल वेखण दी लोड़ नहीं रहि जाँदी। उह अभेद हो चुका है, इस करके उसने पहिलाँ ही पहिचाण लइिआ है कि इस सारा पसारा अनंत दी खेल्ह वाला है। इसनूं जानणा ताँ इक पासे रहिआ, इसदा अंदाज़ा वी नहीं लगाइिआ जा सकदा। इसनूं कहिण दी कोशिश करन वाला नाकाम

होके रहेगा।

"तिथै लोअ लोअ आकार ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥"

उ`थे तृाँ-तृाँ दे आकार हन। कोई इक तृाँ दा आकार नहीं है। उस ने दुनीआ दीआँ सारीआँ गैलैकसीआँ, सारी किरीओशन बणाई है। "लोअ" दा मतलब है इक इकली गैलैकसी। जिस तृाँ असीं मिलकी वे (Milky Way) गलैकसी विच रहिंदे हाँ, इस तृाँ दीआँ कई होर गैळैकसीआँ हन। गुरबाणी ने जपु दे शुरू विच जिथों गल शुरू कीती सी "हुकम रजाई चलणा" उथे वापस लै आँदा है। इह गल पहिलाँ साँझी कीती जा चुकी है कि साइंस नूं इह ज़िद छड देणी चाहीदी है कि इह सिरफ पाणी अते हवा उते निरभर जीवनीआँ ही साजीआँ गईआँ हन। जेकर साडा गुरबाणी उ`ते यकीन है, ताँ इह धुर की बाणी दस रही है कि आकार इक तृाँ दे नहीं हन। इह सारा निज़ाम उस दे हुकम दे मुताबक चल रहिआ है।

"वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥"

उह सारा कुझ वेख रहिआ है अते वेख वेखके विगस रहिआ है, खुश हो रहिआ है। जिस तृाँ इक बचा आपणी खेडृ नूं बणा के, वेख के, ढाह के, फिर बणा के खुश हुंदा है; इसे तृाँ उह परम शकती वी खुश है। खेडृ दा मतलब ही खुशी है। खेडृ विच गमीं नहीं हुंदी। बणाउण विच वी उ`तनी खुशी है अते तोड़न विच वी उ`तनी खुशी है, सजाउण विच वी उ`तनी खुशी है, नाश करन विच वी उ`तनी खुशी है। 'सार' तों भाव है लोहा। जिस तृाँ पंजाबी कहावत है कि लोहे दे दाणे नूं चबाउणा नामुमकिन है। जिस तृाँ लोहे नूं दंद थले रख के चबाणा औखा हुंदा है इसे तृाँ ही प्रमातमा दी किसे गल नूं कहिणा औखा हुंदा है। इह सिरफ इशारे कीते जा रहे हन। इह सिरफ निशानीआँ दसीआँ जा रहीआँ हन। कोई इह ना समझ के बहि जाओ कि प्रमातमा नूं बिआन कर दिता है। इह प्रमातमा दी विआखिआ नहीं है। इह कोई वी इनसान कर ही नहीं सकदा, कोई जीभा नहीं कर सकदी, कोई बोली नहीं कर सकदी। जिहड़े इस चीज़ दा दाअवा करदे हन, उह भुलेखे विच बैठे होओ हन अते गुरमति उह भुलेखा कढ रही है। इसे करके इशारा कीता गइिआ सी। सैंतीवें अंक दे विच गलाँ दो अवसथावाँ दीआँ कीतीआँ हन पर अंक इक ही रहिण दिता है, अलग नहीं कीता किउंकि उह इको गल है। उह सारिआँ ते लागू हुंदी है। उह खंड नहीं है। करम खंड दे विच ते सच खंड दे विच अंक है नहीं, फरक (difference) नहीं पाइिआ। इह दो निशानीआँ दस रहीआँ हन कि इह गल कुझ होर है। धरम खंड वाली, गिआन खंड वाली, सरम खंड वाली इह गल नहीं है। सच खंड वाली गल कुझ होर है। उह प्रमातमा दा सरब विआपी होणा है।

इसेतृाँ इस अवसथा नूं बिआन करन दी कोशिश करीओ ताँ हो ही नहीं सकदी। इस गल नूं अखराँ विच बंन्हिआ नहीं जा सकदा, लफज़ाँ विच बंन्हिआ नहीं जा सकदा। इह अवसथावाँ सिरफ महिसूस कीतीआँ जा सकदीआँ हन। सो इह जितने पड़ाउ (stage) हन, इहनाँ दीआँ बारीकीआँ ताँ ही समझ आउणगीआँ जेकर आप कमाई कीती जावे। जितना चिर आप कमाई नहीं कराँगे उहनाँ चिर इन्हाँ दे असली रूप दा पता नहीं लगेगा। इनसान इथे धरम कमाउण लई आइिआ है, उस कमाई वल लगणा उसदी आपणी मरज़ी मुताबिक है। जद उह इस यातरा वल कदम चुकदा है ताँ उसदे गिआन दा दाइिरा वडा हुंदा जाँदा है, जगिआसा पैदा हुंदी है। गिआन खंड विच उह समझण दी कोशिश करदा है। जिस वेले गल समझ आ जाँदी है ताँ उसदी हैरानी होर वी वध जाँदी है कि इह ताँ मसला ही कुझ होर है। जदों उहनूं इह समझ आउंदी है ताँ उह सरम खंड विच चला जाँदा है, फिर मिहनत करन विच लग जाँदा है। अते जे किते उसदी कृपा हो जाओ ताँ उहदी मिहनत प्रवान हो जाँदी है ताँ फिर उह करम खंड विच चला जाँदा है (अंक ३८)

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भाँडा भाउ अंमृतु तितु ढालि ॥ घड़ीओ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥ (संजम "करम इंदरीआँ ते काबू" रूपी सुनिआर दी दुकान उते धीरज दे हथोड़े नाल गुर गिआन दीआँ चोटाँ मन नूं घड़दीआँ हन। प्रभू दे भै दी अगनी अंदर जलदी होवे ताँकि भावना रूपी भाँडे विच सचे शबद दी कमाई नाल अंदर अंमृत पैदा कीता जावे। जिहना उते उसदी किपा दी नदर हो जाँदी है उही ओसा कंम कर पाँदे हन अते उसदी नदरे-करम दा सदका सदा लई निहाल हो जाँदे हन।)

अज असीं जपु बाणी दी साँझी यातरा दे आखरी पड़ाउ ते खड़े हाँ। गुरदेव दीआँ असीसाँ, मिहराँ, बखशिशाँ सदका इह प्रसादि उहदे भंडारिआँ विचों साडे तक पहुंचिआ है। उसदा धन्नवाद करन लई शबद नहीं हन, उसदे अगे तरला ही पाइिआ जा सकदा है। न जाणे किन्ना करमाँ करके, किस करके उह इह दाताँ बखशदा है। उस दीआँ उह ही जाणे।

"अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥
मै किआ जानउ बाबा रे ॥१॥" (पन्ना ८७०)

असीं आपणे आप ताँ चंगा ही करन दी कोशिश करदे हाँ। पर सानूं कोई पता नहीं कि कीते होओ करम दा फल की निकलेगा। किसे संत पुरख नाल कोई जवान विअकती विचार कर रहिआ सी अते उहने मुसकरा के कहिआ कि जी जो उह फलाणे संत हन उह बहुत ही चंगे हन। उसदी इहि गल सुणके उह बज़ुरग संत वी मुसकरा पओ अते पुछण लगे कि पुतर उहनाँ दे मुकाबले विच माड़ा कौण-कौण है? उस जवान ने जवाब दिता कि जी "मैं" ते किसे नूं वी माड़ा नहीं किहा। बज़ुरग ने कहिआ कि पुतर तैनूं गल समझ नहीं आई। जिन्ना चिर कोई माड़ा न होवे उनाँ चिर किसे नूं चंगा कहिआ जा ही नहीं सकदा। माड़ा ते चंगा दोवें इकिठे वसदे हन। जद तुसीं किसे दी उसतति कर रहे हो ताँ उहदे विच निंदा छुपी बैठी है, वैसे उह तुहानूं नज़र नहीं आउंदी। जदों तुसीं इहि कहिआ है कि गुरमति चंगी है, ताँ तुहाडे कोलों मनमत आपणे आप ही माड़ी कही गई, भावें तुसीं इहि लफज़ वरतिआ है जाँ कि नहीं वरतिआ। किउंकि गुरमति चंगी किसे मुकाबले विच ही हो सकदी है, उस तराँ नहीं। असीं आपणे आप कहिंदे हाँ कि असीं किहड़ी गल माड़ी कीती है? कदी किसे दा दिल दुखाइिआ ही नहीं। कहिंदे हाँ नाँ? इनसान आपणे आप हमेशा चंगा कहिंदा है, सारिआँ दी तारीफ करीदी है। तो गुरमति समझाँउदी है:

"उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है
किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥" (पन्ना २१९)

तेरी उसतति दे विच किसे दी निंदा छुपी बैठी है भावें तैनूं नज़र आवे न आवे। लफज़ भावें वरतिआ जाँ नहीं वरतिआ है। इहनाँ भेदाँ नूं समझणा है। उह भेद सानूं जपु बाणी सिखा रही है। उस दे अज असीं आखरी पड़ाउ ते बैठे हाँ। किउंकि गुरदेव ने गल शुरू कीती सी कि जिस नूं तूं पाउणा चाहुंदा हैं उस लई मारग जपु तों शुरू हुंदा है। सिरफ गलाँ करके कुझ वी नहीं पाइिआ जा सकदा।

"मतु जाण सहि गली पाइिआ ॥" (पन्ना २४)

बिनाँ कुझ घालणा घालण दे कुझ वी प्रापती नहीं हो सकदी। सो गुरबाणी ने सानूं सारी यातरा जपण तों शुरू करवाई। जपण लई इस करके कहिआ है कि जिहड़े उस वेले दीआँ प्रचलत जुगतीआँ सन उहनाँ विच कई खतरे अते तरुटीआँ सन। गुरबाणी ने सानूं जो प्रचलत रसतिआँ विच अड़चनाँ सन, दसीआँ। फिर गुरबाणी कुदरत अते कादर दे भेदाँ दा खुलासा करदी होई सानूं खंडाँ तक लै के आ गई अते उथे समझाइिआ कि धरम खंड विच पैर रख। इहि धरती धरम साल है। गिआन खंड विच बैठ के समझ कि की, किवें, अते किउं कुझ करना है। सरम खंड विच बैठ के मिहनत कर ताँ कि तूं उसदी मिहर दा पातर बण सकें अते करम खंड विच तेरी प्रवानगी हो सके। इथों तक असीं पहुंचे साँ। पर हुण सवाल इहि है कि जपु करना किस तराँ है? सिख जगत दे कई विदवान ताँ इहि समझके बैठ गओ हन कि गुरबाणी ने नामु जपण लई ताँ कहिआ है, पर नाम जपणा सिखाइिआ नहीं। ओ भोलिओ गुरदेव ने ताँ कई वार अलग अलग थाँवाँ ते अलग अलग तरीकिआँ नाल इशारा कीता है पर जे असीं सुणना ही नहीं चाहुंदे, समझणा ही नहीं चाहुंदे ताँ फिर की कीता जावे?

"कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक ॥ अंधे ओक न लागई जिउ बाँसु बजाईओ फूक ॥" (पन्ना १३७२)

"फरीदा कूकेदिआ चाँगेदिआ मती देदिआ नित ॥
जो सैतानि वंञाइिआ से कित फेरहि चित ॥" (पन्ना १३७८)

ब्रहम गिआनी ताँ चाँगराँ मार-मार के, कूक-कूक के दुनीआँ नूं कहिंदे हन कि सुण लओ, समझ लओ। साडीआँ ज़िंदगीआँ वल वेखो, असाँ कीता, तुसीं वी कर सकदे हो। पर असीं ताँ किसे डेरे दे संत दी गल मन्नणी है, गुरबाणी दी नहीं। गुरबाणी शबद दे जाप करन दी विधी दसण लगी है।

"जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥"

गुर शबद दी कमाई शुरू करन तों पहिलाँ उस लई उचित तिआरी करनी ज़रूरी है। जतु तो भाव है संजम, जीवन दा

इक संजम (discipline), करम इंदरीआँ दी योग वरतों; पाहारा तों भाव है इक दुकान, जाँ इक बरतन, जाँ इक भाँडा। आम जत दा मतलब लाइिआ जाँदा है ब्रहमचारी
होणा। गुरबाणी विच सिरफ काम इंदरी बारे ही ज़िकर नहीं है, इह सानूं भुलेखा पाइिआ गइिआ है। जतु दा मतलब है इक गहिरा संजम (discipline), । जे तुसीं आपणे लई शाम दा समाँ रखिआ है, जाँ दुपहिर दा समाँ रखिआ है, जाँ सवेर दा समाँ रखिआ है, ताँ उसते पके रहिणा है। भगती करन लई किसे इक समें दा कोई बंधन नहीं। कोई इक नीयत समाँ नहीं, कोई रुत नहीं, सिरफ इक संजम (discipline), है कि जो रख लओगे उहनूं हुण निभाणा है। जो वी समाँ नीयत कर लइिआ है ताँ हुण इह नहीं कि अज ताँ कर लइिआ है पर कल किसे कंम करके छड देणा है। इह है 'जत', जेकर सवेरे उ ठ के करना है ते फिर रोज़ करना है, सते दिन करना है, और १२ महीने करना है। फिर इह नहीं कि "मैं" कदे छुटी (vacations) कर लवाँ। आपणे आप कानूंन नहीं बनाउणे। इक संजम (discipline), रख लउ, इक विधी शुरू कर लउ। इह तेरी खुशी है, किउंकि आखरी मंज़िल ते है:

"जो सासि गिरासि धिआओ मेरा हरि हरि
सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥" (पन्ना ३०६)

"बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥" (पन्ना ३०६)

पहुंचणा ताँ उत्थे है जिथे 'जो सासि गिरासि धिआओ मेरा हरि हरि' वाली आवसथा प्रापत हो जावे। शुरू जिथों मरज़ी कर लउ, पर साडी मंजिल उह है। ते जदों इस रसते ते चलणा है ताँ पहिली शरत ते इह है अते दूसरी है 'धीरज'। जिहड़ा किसान खेती विच बीज, बीज के ते रोज़ सवेरे जा के उसनूं पुट के वेखे कि कुझ बणिआ जाँ नहीं, उस बीज नूं कदी फल नहीं लगदा। बीज पा के ते उहनूं भुल जाणा है। हिंमत रखणी है, यकीन रखणा है, भरोसा रखणा है, रोज़ डोलना नहीं, कि इतिने साल हो गओ हन, अजे वी कुझ नहीं होइिआ। किउंकि सानूं पता ही नहीं कि साडे संसकाराँ दी मैल कितनी कू गहिरी है।

"जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥ खन्नली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥ गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥ नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥१॥" (पन्ना ६५१)

पता नहीं कितने कु जनमाँ दी मैल चड़ी होई है। उह हर इक दी अलग-अलग है। हर इक दी यातरा आपणी आपणी है। जेकर भाई लहिणा जी नूं ६ सालाँ दे विच गिआन होइिआ ताँ बाबा अमरदास जी नूं १२ सालाँ दे विच गिआन होइिआ। सो किसे दी यातरा कितनी है, इसदा किसे नूं वी कोई पता नहीं। इस करके धीरज दे नाल इस मारग ते पैर रखणा है। गुरबाणी सुनिआरे दे धीरज वल इशारा करदी है। पंजाब विच कहावत बणी होई है: 'सो सुनार दी ते इक लुहार दी'। सुनिआरा जलदी नहीं कर सकदा, उसने बहुत हौली हौली सट मारके गहिणे नूं घड़ना है। लुहार वरगा सवभाव नहीं चाहीदा कि इके वाराँ सट मारी ते कंम हो गइिआ। नहीं; सुनिआरे वरगा धीरज चाहीदा है जिहड़ा हौली-हौली पिआर दे नाल गहिणे घड़दा है।

"अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥"

अहरणि उस लोहे नूं कहिंदे ने जिसदे उते लोहा गरम करके रखिआ जाँदा है। जद गरम लोहे ते सट पैंदी है ताँ अहरणि नूं वी उह सट सहिणी पैंदी है। गरम लोहा ताँ सट खा के आपणी रूप रेखा बदल जाँदा है पर जिहड़ा थले वाला लोहा है उह नहीं बदलदा; उह सटाँ खाई जाँदा है अते उहनाँ नूं सहारी जाँदा है। इसेत्र्हाँ आपणी अकल, आपणी मत जो कि संसकाराँ करके बहुत पुराणी होई होई है इसनूं गिआन दीआँ चोटाँ नाल घड़ना है, इसनूं तोड़ना नहीं है, बलकि इसदा सवभाव बदलणा है। इह असीं सरम खंड विच सिख आओ हाँ "तिथै घड़ीओ सुरति मति मनि बुधि"। जिवें जिवें इस मत ते चोट पैणी है तिवें तिवें इस मत ने घड़िआ जाणा है। जेकर असीं इह गिआन दीआँ चोटाँ खाण तों इनकार कर दईओ ताँ जीवन विच कोई इनकलाब नहीं आ सकदा। जदों असीं गुरबाणी दी विचार करदे हाँ ताँ असीं झट इतिहास वल भजदे हाँ। सिख जगत विच अज जिन्ना वी बहिस मुबासा हो रहिआ है उह सिरफ ओसे गल करके हो रहिआ है कि गुरबाणी कुझ कहि रही है इतिहास कुझ कहि रहिआ है अते सानूं इतिहास गुरबाणी नालों ज़िआदा चंगा लगदा है। कहाणी सुणके सवाद आउंदा है किउंकि उसदे विच दिलचसपी लई झूठ मिलाइिआ हुंदा है। पर गुरबाणी निरोल सचाई है। गुरबाणी दा इथे सुनेहा सिरफ इह है कि गुरबाणी दी सचाई दी चोट खाके वेखो। गुरू दे अखर दी चोट खाके वेखो। फेर वेखो ज़िंदगी विच की इनकलाब आउंदा है, की तबदीली आउंदी है। मत नूं घड़ना है, इहदे ते चोटाँ पैणीआँ हन। इह कोई पता नहीं कि जिस वेले चोट वजी है उस वेले तक कितनी उमर गुज़र चुकी है। जद शबद दी चोट वज गई ताँ उहनूं सहिणा है। उथों उठ के भजणा नहीं कि इह किस त्र्हाँ हो सकदा है, इहदा मतलब कि मेरी अज तक दी सारी उमर बेकार चली गई? ओ भोलिआ शुकर कर। इतिने थोड़े जिहे सालाँ विच ही होश आ गई है, किते जनम ते नहीं लंघ गओ। जे सुनेहे दी समझ आ गई है ते शुकराना कर कि हे गुरदेव तेरी किरपा है, नहीं ताँ इह गल समझण लई पता नहीं होर कितने जनम लग जाँदे। मरण तों पहिलाँ-पहिलाँ ही होश आ गई है। 'वेद' दा मतलब चार वेद नहीं हन। वेद दा मतलब है गिआन। जदो गिआन

खंड विच बैठे सी, जिथे कादर ते करते दा खेड्ड वेखिआ सी उह मत नूं घड़दा हा उह दसदा है कि जो तूं कर रहिआ हैं उह सही है कि नहीं। गिआन खंड विच बैठण दा मतलब इही सी कि सही गल समझो, गुरू कोलों पुछके चलो कि जो करन लई कहि रहे हो, उह मैं किस तर्हाँ करना है। जिन्नाँ जथेदाराँ ने इहि मोहर लगा दिती है कि सवेरे २ वजे उ्ठ के ही भगती करनी चाहीदी है, उहनाँ नूं पुछो कि गुरबाणी विच इहि किथे लिखिआ है? जदों गुरबाणी साफ कहि रही है कि नाम अभिआस दा वकत नाल संबंध नहीं बलकि इसदा 'सासि गिरासि' नाल संबंध है; इसदा उ्ठण बैठण नाल संबंध है, इहि ते 'अरधु उरधि' दा अभिआस है। जेकर शबद नूं सासि गिरासि नाल जोड़ना है ताँ फिर सवेर अते शाम नाल कोई मतलब ही नहीं है। इहि सभ मरयादा असीं आपे बणा लईआँ हन, आपे ही गुरू दी गल तों उलट चल पओ हाँ। इहि ते बिलकुल उस मकड़ी दे जाले वाली गल हो गई जो आपे ही जाला बुणके आपे ही उहदे विच फस जाँदी है, अते फिर निकलिआ नहीं जाँदा। असाँ जिस जाले नूं आपे ही बुणिआ है, उस जाले नूं तोड़ना पवेगा। उह गिआन खंड दा कंम है। गिआन उस नूं चोट मारेगा, अकल नूं कहेगा कि सिधी हो, इहि की कर रही हैं। बाकी करम काँड नूं छडके शबद अभिआस नाल जुड़। गिआन दी जिस वेले अकल नूं चोट वजे ताँ उसनूं बरदाशत कर। जेकर गुरदेव दे गिआन दी चोट बरदाशत नहीं कर सकदा ताँ तूं गुरू दे दसे होओ रसते ते चल ही नहीं सकदा। इहि तेरी मरज़ी है कि तूं माइिआ विच घुंमणा है कि इसतों बाहर निकलना है। अगर तूं इस माइिआ दा सवाद अजे होर लैणा है, करम इंदरीआँ दा भोग होर भोगणा है, ताँ गुरू नूं शिकाइित न कर कि उहने दसिआ ही नहीं। मज़े दी गल इहि है कि जदों महाराज आप सरीर विच अजे इस धरती ते सन उदों वी इही हाल सी। लखमी दास अते स्री चंद, गुरू नानक देव जी कोलों उह प्रसादि नहीं लै सके जिहड़ा भाई लहिणा लै गइिआ। चौथे महिल दा वडा पुतर पृथीचंद उसेतर्हाँ दा ही रहि गइिआ। उह वी स्री गुरू राम दास जी दी ही अंश सी, घर विच गंगा चलदी पई सी, पर पिआसा ही मर
गइिआ। इहि बहुत वडी बदनसीबी है कि जदों पास ही इतना वडा अंमृत दा दरिआओ बहि होवे ते फिर भी पिआसे रहि जाओ। साडे कोल वी इहि इतना वडा ब्रहम गिआन दा गहिरा समुंदर है पर असीं इसदी इक बूंद वी मूंह नूं लाउण लई तिआर नहीं हाँ। असीं बाणी पड्हके कहाणी नूं समझण दी थाँ कहाणी पड्हके बाणी नूं समझणा शुरू कर दिता है।

"भउ खला अगनि तप ताउ ॥"

जपु करन दी सही जुगती दा सारा भेद इस तुक विच छुपिआ बैठा है। पिछे इक सुनिआर दे धीरज नाल गहिणे घड़ण दी गल हो चुकी है। उस पास इक धौकणी हुंदी है जिहदे नाल उह अग दी भठी बालदा है। उह धौकणी जानवर दी खल दे दो टुकड़िआँ तों बणाई जाँदी है। उहनाँ दो टुकड़िआँ दे इक पासे ताँ लकड़ दीआँ मुठीआँ (हैंडल) लगीआँ हुंदीआँ हन अते दूजा पासा इक नली नाल बंनिआँ हुंदा है। जद सुनिआर दोनाँ मुठीआँ नूं फड़के खोलदा है ताँ धौकणी विच हवा भर जाँदी है अते जद मुठीआँ नूं दबाँदा है ताँ नली राही ज़ोर नाल हवा बाहर निकलदी है। उस तेज़ हवा करके कोलिआँ दी अग बलदी रहिंदी है। गुरबाणी इशारा कर रही है कि हर इनसान दा सरीर इक धौकणी है। जदों साह अंदर वल खिचिआ जाँदा है ताँ फेफड़िआँ विच हवा भर जाँदी है जदों साह बाहर वल निकलदा हैं ताँ हवा निकल जाँदी है। इस किरिआ नूं नाम दी अग बालण दे लई वरतना है। इस सरीर दी खल दी मदद नाल "अगनि तप ताउ" शबद दी अगनी बालणी है। इसनूं ही गुरबाणी ने अरधु-उरधि दा अभिआस अते सासि-गिरास दा अभिआस कहिआ है। इसे जुगती नाल "बहिंदिआँ-उठदिआँ हरि नाम धिआवै" वाली घटना वापर सकदी है। जदों साह अंदर नूं जावे ताँ नाल ही अखर अंदर नूं जावे; जदों साह बाहर नूं आवहि ताँ अखर वी नाल बाहर नूं आवहि। इहि किरिआ हमेशा कीती जा सकदी है। सौणा, उठणा, बैठणा, जागणा, कंम करना, रसोई बनाउणी, कार चलाउणी हर थाँ ते इहि कंम हो सकदा है। गुरदेव ने सानूं जपण लई चौ-अखरा शबद दिता है भाव उहदे विच चार अखर हन। जपण लई दो अखरा ओम, राम, तिन्न अखरा गोबिंद, अलाह, ओमैन, आदि, ढाई अखरा सोहं आदि कई अखर हन। हर इक दे आपणे-आपणे जपण दे अखर हन। अलग-अलग भाशावाँ दे विच कुल ३०० अखर इस तर्हाँ दे हन जिहड़े दुनीआँ जपण दे लई इसतेमाल करदी है। इहि ज़रा समझ लओ, ठीक लगे ते घर लै जाइओ न ठीक लगे ताँ इथे रहिण दिओ। इहि कोई किसे संत डंम कोलों नहीं आइिआ किसे गुरू डंम कोलों नहीं आइिआ। गुरबाणी दे विचों जो गुरदेव ने दास नूं भेजिआ है, उह तुहाडे नाल साँझा कीता जा रहिआ है। सो जद साह अंदर नूं जाओगा ताँ उस नाल "वाहि" अंदर नूं जाओगा, जद साह बाहर नूं आओगा ताँ उस नाल "गुरू" बाहर नूं आओगा। इहि इक चकर (Circle) बण जाओगा। इसनूं बाणी ने कहिआ है:

"हरि हरि अखर दुइ इहि माला ॥ जपत जपत भओ दीन दइिआला ॥१॥ करउ बेनती सतिगुर अपुनी ॥ करि किरपा राखहु सरणाई मो कउ देहु हरे हरि जपनी ॥" (पन्ना ३७८)

इस शबद दी माला बनाउणी है, इक सरकल बनाउणा है। इथों साडी यातरा शुरू हुंदी है। तुसीं सवाल कर सकदे हो कि जो असीं ढोलकी छैणे नाल करदे हाँ सतिनाम, सतिनाम, सतिनाम जी, वाहिगुरू वाहिगुरू, वाहिगुरू जी, की उह ठीक नहीं? ठीक जुगती उही कही जा सकदी है जो सुरती नूं प्रभू चरनाँ विच जुड़न विच सहाइक होवे। गुरबाणी कहि रही है कि सरीर नूं धौकणी दी तर्हाँ वरतणा है। जदों असीं कोई धुनी लगाँदे हाँ ताँ उह कन्न दा सवाद ते बणदी है, उहदा आतमक रस नहीं बणदा।

उह कन्न दे विच वजदीआँ सुराँ योग निंद्रत (hyptonize) करदीआँ हन, किउंकि ताल चल रहिआ है; थोड्ही देर वासते कन्न रस करके साडा सरीर हलका हो जाँदा है। गुरबाणी ने कहिआ है कि इिह भगती नहीं है। भगती दा साह नाल संबंध है। जिन्नाँ चिर पवन दे नाल शबद नहीं जुड़िआ उतना चिर सुरती उपर नहीं उठ सकेगी। इिसे करके गुरदेव ने इशारा कीता सी:

"पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ॥
सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥" (पन्ना ९४३)

बाणी नूं खोजण ते सारा भेद खुल गइिआ। गुरदेव ने कहिआ सी कि जिस शबद नूं धुनि रूप विच पवन दे नाल मिला के जपिआ जाँदा है, उह शबद ही गुरू रूप है। इिस नाल सुरती प्रभू दे चरना नाल जुड़ जाँदी है। जे किसे ने वाहिगुरू नहीं कहिणा ताँ किसे होर अखर नूं पकड़ लओ, बशरति उह अखर प्रभू दी याद दिला रहिआ होवे, किसे होर देवी देवते दी
नहीं। उस अखर नूं साह नाल जोड़ लउ अते जाप शुरू कर
दिउ। दूजा इिसदा भेद असीं पिछे खोल्ह आओ हाँ कि जिसनूं जपणा है उसे नूं ही सुणना है। संपूरन धिआन उसे अखर उ्ते ही रखणा है। जेकर धिआन बाहर वल गइिआ है ताँ उसनूं पिआर नाल फिर वापस लिआके शबद नाल जोड़ देणा है। हुण सवाल इिह है कि इिह अभिआस रोज़ाना घटो घट कितना चिर होणा चाहीदा है? उसदे जवाब विच गुरबाणी दा इशारा है 'अगनि तप ताउ' भाव इिह घटो घट उतनाँ चिर करना है जितना चिर के सरीर दे विचों गरमी जैसी शकती पैदा होणी शुरू न हो जावे। अभिआसी जनाँ दी जाणकारी लई इशारा कीता जाँदा है कि बैठण लई औसतन (Average) कोई पौणा घंटा चाहीदा है। तुसीं देखोगे कि तुहाडे सरीर दे अंदर गरमी पैदा होणी शुरू हो जाओगी, तुहानूं थोड़ा-थोड़ा पसीना आउणा शुरू हो जाओगा। जिथे शबद दा अभिआस हो रहिआ है, उथे नाल ही जितने सरीर दे अंदर दे अंग हन उन्नाँ दी वरजिश वी हो रही है। उहनाँ अंगाँ दी, जिन्नाँ नूं बिमारी ज़िआदा लगदी है फेफड़िआँ नूं, गुरदिआँ आदि नूं, सवेरे शाम दो वार मालिश हो जाँदी है।

"भाँडा भाउ अंमृतु तितु ढालि ॥"

इिह अभिआस भावना दे नाल उतनी देर करी जाणा है जितना चिर अंदरों अंमृत दी बूंद प्रगट नाँ होवे। बख़शीआँ होईआँ जीवनीआँ दा तजुरबा है कि जिथे 'रारे' दी आवाज़ बणदी है उ्थे इिक ग्रंथी है, गंढ है। उस ग्रंथी दी जिहबा नाल लगातार मालिश दे कारन उह हौली-हौली ज़िंदा होणी शुरू हो जाँदी है। जिस दिन उह ग्रंथी खुल्हदी है, उस दिन पहिली वार इिस जिहबा विचों इिक अनोखा सवाद आउंदा है। गुरबाणी दा इशारा है:

"जीभ रसाइिणि चूनड़ी रती लाल लवाइि ॥
अंदरु मुसकि झकोलिआ कीमति कही न जाइि ॥"
(पन्ना १०९१)

जीभा दे उस रस दा, उस मिठेपन दा पता ही नहीं लगदा कि इिह रस किथों आइिआ है। पता ही नहीं लगदा कि अज मूंह मिठा किउं हो गइिआ है, कि अज खुशबूआँ किथों आ रहीआँ हन। बस जीभा सवाद नाल आपणे आपनूं चुंघदी ही रहि जाँदी है। सुरती दी उह मसती शबदाँ तों बाहर है किउंकि उह अंमृत दी बूंद दी पहिली झलक है।

"घड़ीओ सबदु सची टकसाल ॥"

गुरमति विच असली टकसाल इिह है, शबद दी कमाई नाल मत, मन, बुधी दा इिसत्ऱाँ नाल घड़ना कि अंदरो अंमृत पैदा हो जावे। जिहड़ीआँ असाँ टकसालाँ बणा लईआँ हन, उह साडी मरज़ी है; पर उह गुरू दी टकसाल नहीं। गुरू दी इिको टकसाल है जिहड़ी सचे शबद नाल बणदी है।
"जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥"

अहंकार दी जड्ह नूं गुरबाणी नाल नाल ही कटदी जाँदी है। जिथे वी किसे प्रापती दा ज़िकर आइिआ है, उथे नाल ही अभिआसी नूं प्रभू दी नदरि-करम दी याद दिलाई गई है। इिस यातरा (कार) उते उही चलणगे जिहनाँ उते उसदी मिहर दी नज़र पै जाओ। इिह उसदी किरपा है कि इिस यातरा दा चाउ वी उठे; नहीं ताँ दुनीआँ सुण के चली जाओगी। इिह उही जाणदा है कि किसदे हिरदे दी धरती विच इिह अखर बीज बनणगे। सिरफ विआखिआ सुनण नाल ताँ कुझ नहीं बणना। इिह ते करना पओगा, इिस दी कमाई कमाउणी पओगी, अते जेकर उहदी नदरि-करम दा पातर बण जाओ ताँ फेर वाकओ ही निहाल होइिआ जा सकदा है।

(सलोक)

सलोकु ॥ पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥
(पवण गुरु है, पाणी पिता है, अते धरती बहुत ही महान माँ है। दिन अते रात इक खिडाउण वालिआँ वाँगू सारे जगत नूं खिडा रिहा है। चंगे मंदे करम दी पहिचाण केवल उसदी दरगह विच ही हो सकदी है। उसदा किसे दे नेड़े जाँ दूर होणा उसदी करामत (मिहर) उते निरभर है। जो वी नाम दी कमाई दी घालणा कर चुके हन उहनाँ ने आपणे मथे दी कालख कट लई है। इस करके उहना दे उसदी दरगह विच मूंह चानण मई हो जाँदे हन अते उहना दे पाओ पूरनिआँ ते चलके होर कई इस जनम मरन दे बंधन तों अज़ाद हो जाँदे हन।)

जपु बाणी दी शुरूआत विच वी सलोक सी अते इस दी समापती वी सलोक नाल ही कीती गई है। हर सलोक आपणे आप विच संपूरन हुंदा है। गुरबाणी विच जिथे वी सलोकाँ नूं इक लड़ी विच परोइआ गइआ है, उह फैसला स्री गुरू ग्रंथ साहिब दी बीड़ बन्नूण वेले कीता गइआ है। जिवें कि नौवें महल दे सलोकाँ दी तरतीब करन वाले दसम पिता जी हन अते बाकी सलोकाँ दी तरतीब करन वाले पंजवें महल हन। उहनाँ सलोकाँ नूं गहिराई नाल विचारन ते पता लगदा है कि उस तरतीब दे पिछे वी बहुत सारे भेद छुपे होओ हन। इस सलोक विच गुरमति मुताबिक पिछे होई सारी विचार दा दोबारा संखेप (summary) विच निचोड़ दरसाइआ गइआ है। इस करके हर अखर भेदाँ भरिआ है; इसे करके ही सानूं इहनाँ अखराँ दी गहिराई नूं समझण दी जरूरत है।

"पवणु गुरू"

पवणु दे "णाणे" हेठ औंकड़ देके इशारा कीता जा रहिआ है कि इस अखर नूं समझण विच जलदी नहीं करनी। उपरों वेखण विच इह सिधी जिही गल लगदी है कि हवा नूं गुरू कहिआ गइिआ है। पर ओसा किउं अते इसदा असली भावअरथ की है, उह सिरफ विचारन ते ही पता लग सकदा है। गुरमति विच किसे सरीर नूं गुरू नहीं मंनिआँ गइिआ किउंकि हर जीव दे जीवन दी अगवाई शबद करदा है। उह शबद भावें किसे लिखत विचों आइिआ होवे अते भाँवे किते सुणिआँ होवे, इस नाल कोई फरक नहीं पैंदा। इसे करके गुरबाणी शबद नूं ही गुरू मन्नदी है, उह शबद किवें प्रापत होइिआ है उस उते कोई ज़ोर नहीं है। जदों वी किसे शबद दे सोमे उते ज़ोर दिता गइिआ है, उस विचों डेरे, गुरूडंम, संतडंम, टकसालाँ, मंजीआँ, आदि दा बहुत खिलारा पइिआ है। इस खिलारे करके शबद दा असली सुनेहाँ ताँ बिलकुल ही अलोप हो जाँदा है अते होर झगड़े खड़े हो जाँदे हन। इस करके हर गुरसिख नूं इह दृड़ करवा दिता गइिआ है कि केवल शबद नूं ही गुरू मन्नणा है। पर शबद साँझा (communicate) करन लई हवा दी ज़रूरत है। साइंस पड़े होओ इस सचाई नूं चंगी तरुाँ जाणदे हन कि नाद शकती (Sound energy) दे चलण दे लई हवा दा माधिअम (medium) चाहीदा है। बिलकुल शूनय (Vacuum) विच आवाज़ चल ही नहीं सकदी, उस लई कोई न कोई medium ज़रूर होणा चाहीदा है। इसे करके जदों विगिआनकाँ ने खोज कीती कि जिहड़ी बदलाँ दी गड़गड़ाहट साडे तक पहुंच जाँदी है, इह किसतरुाँ पहुंच जाँदी है ताँ उहनाँ ने लभिआ कि उपर बिलकुल शूनय नहीं है। उत्थे ईथर (Ether) नाम दा माधिअम है जिस विचों दी चलदी होई बदलाँ दी गड़गड़ाहट साडे तक पहुंच जाँदी है। सो शबद लई हवा दा होणा बहुत ज़रूरी है, जाँ इवें कहि लउ कि शबद पवण दे घोड़े उपर बैठके साडे तक पुजदा है।
पवण सारी जीवनी दा मूल तत है अते पवण साडे जीवन दा आधार है। जेकर साडे कोल पवण न होवे ताँ असीं जिंदे नहीं रहि सकदे। गुरबाणी दा फुरमान है:

"साचे ते पवना भइिआ पवनै ते जलु होइि ॥
जल ते तृभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइि ॥(पन्ना १९)

गुरबाणी मुताबिक सभ तों पहिली होंद विच आउण वाला तत पवण ही है अते इस धरती ते इस तत दी सभ तों ज़िआदा अनुपात है। जिवें भौतिक जीवन लई हवा ज़रूरी है तिवें ही अधिआतमिक जीवन लई शबद गुरू ज़रूरी है। सो शलोक दे विच जिहड़ा गुरबाणी ने इशारा कीता है 'पवणु गुरू' उह इस करके गुरू है कि उहदे उपर असवार होके शबद साडे कोल आ रहिआ है।

"पाणी पिता"

कुदरत दे नियम मुताबिक दूसरे नंबर दा तत पाणी है। उपर लिखीआँ तुकाँ दस रहीआँ हन कि पवन विचों ही पाणी बणिआ अते उस पाणी तों सारे जगत दी रचना होई।

"पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइि ॥" (पन्ना ४७२)
भाव कि सभ तों पहिला जीव (Life Form) पाणी ही है अते इसे जीव तों बाकी सारे जीव प्रफुलत होओ हन। सारिआँ तों पहिलाँ धरती दे उत्ते जिउंदा होइिआ तत पाणी ही आइिआ है किउंकि पाणी ने ही हर तरुाँ दे जीवन दा सहारा बणना है। जिवें समाज विच पालण पोशण दी सामगरी मुहईआ करनी दुनिआवी पिता दा कंम है, इसे तरुाँ जीवन दी प्रवरिश दा आधार पाणी उते है। इस करके पाणी पिता है किउंकि उह जीवन नूं पालण दा फरज़ पूरा कर रहिआ है।

"माता धरति महतु"

धरती माँ है किउंकि हर तरुाँ दी पैदाइिश धरती विचों आउंदी है। जिस जीव दा जनम धरती विचों नहीं होइिआ है (मानुख, जानवर, पंछी आदि) उसदी पालणा दा सारा समान पाणी पिता दे सहियोग नाल धरती माँ पैदा करदी है। दुनिआवी माँ वी दुनिआवी पिता दे सहियोग नाल जीव नूं जनम दिंदी है अते फिर दुनिआवी पिता दे सहियोग नाल ही उस जीव दी प्रवरिश करदी है। पर दुनिआवी माँ दे मुकाबले विच धरती माँ बहुत ही महान माँ है। किउंकि इह किसे ज़ुलम अते बेइिनसाफी दा कदे रोस नहीं करदी, फिर वी फल देंदी ही रहिंदी है। दुनिआवी माँ फिर वी रोस करेगी। धी/पुतर नलाइिक निकले ताँ दुनिआवी माँ ताँ रोस करदी है पर धरती माँ कदे वी रोस नहीं करदी। धरती माँ बीज नूं अंदर छुपाके उस नूं पालदी है, पर इसदा कोई किसे ते अहिसान नहीं जताँउंदी, कोई किसे कोलों इसदे बदले विच मुल नहीं मंगदी, अते किसे तरुाँ दी बेइिनसाफी दी किसे अगे शकाइित नहीं करदी। इथे ही बस नहीं अगर उसदा पालिआ होइिआ कोई जीव ओटम बंब नाल उसदी बिलकुल तबाही वी कर देवे ताँ उह इह ज़ुलम वी सहिके बिनाँ किसे शिकवे दे बरबाद हो जाओगी। धरती माँ हर हालत विच आपणे पाले होओ नूं आपणी छाती नाल लगाई रखदी है अते उसदे खातमे तों बाद फिर उसदे तताँ नूं आपणी गोद विच छुपा लैंदी है। उह मोह वस होके वरलाप नहीं करदी; जनम भी देंदी है, पालदी वी है, अते नाश होंण ते फिर छाती नाल लाउंदी है पर खुद निरलेप रहिंदी है। इह धरती माँ दीआँ अनोखीआँ महानताँवाँ हन। इसे करके ही गुरबाणी ने कहिआ 'माता धरति महतु'।

"दिवसु राति दुइ दाई दाइआ"

"दिवसु राति" दी प्रचलत विआखिआ दिन ते रात कीती जा रही है पर गुरबाणी दी गहिराई कुछ होर इशारा कर रही है। इथे इक दूजे दे विरोधी शकतीआँ (Positive ते Negative) वल इशारा कीता जा रहिआ है जिवें कि गिआन और अगिआन। दिन गिआन वल इशारा कर रहिआ है अते रात अगिआन वल इशारा कर रही है।

"खेलै सगल जगतु"

हुण उपरलीआँ सारीआँ तुकाँ दा भेद खुल रहिआ है कि गुरबाणी ने ओसे शबदाँ नाल इह तसवीर किउं बणाई है। इथे सारे ही ब्रहमंड दी रचना नूं थोड़े जिहे शबदाँ विच बड़ी खूबसूरती नाल बिआन कर दिता गइआ है। सारा ही जगत पवण अते पाणी दे खेलु (Interaction) विचों उपजिआ है जिवें जीव माँ-बाप दे संजोग नाल पैदा हुंदे हन। इस जगत दी चाल दो विरोधी किनारिआँ दे विचकार बधी गई है। इहनाँ विरोधी किनारिआँ (रात दिन, सुख दुख, खुशी गम, गिआन अगिआन, उचा नीवाँ आदि) विच ही सारे संसार दी कहाणी लिखी गई है। जीवन दी कहाणी इहनाँ दोवाँ किनारिआँ तों बगैर चल ही नहीं सकदी। जद दुख विच इनसान शकाइत करदा है ताँ उह इह भुल चुका हुंदा है कि इसतों पहिलाँ कदे सुख वी सी अते इसतों बाद फिर कदी सुख दी प्रापती होवेगी। नाँ हमेशा सुख रहि सकदा है अते नाँ हमेशा दुख रहि सकदा है। इह ताँ इस जीवन दे खेलु दे दो पहिलू हन। इहनाँ दोंवाँ पहिलूआँ तों कोई वी आज़ाद नहीं है, सारा जगत इको ही बंधन विच है।

जिस तरृाँ असीं पहिलाँ विचार कीती सी कि किसे नूं कहि देणा कि तुसीं बहुत चंगे हो ताँ इतना कहिण दे विच ही कोई बुरा बण चुका है? तुसीं भावें उहदे वल इशारा (identify) कीता है भावें नहीं। हुण इथे सवाल उठ जाओगा कि फिर बचिआँ नूं हला-शेरी देके उतसाहत (encourage) किस तरृाँ करीओ। अकसर बचिआँ नूं कहीदा है कि तूं बड़ा चंगा हैं, बड़ा हुशिआर हैं आदि अते इसतरृाँ नाल उह होर जोश विच आके ज़िआदा मिहनत करदा है। गुरमति ने सिखाइिआ है कि इह ही गल माड़ी है। तुसीं बचे नूं उतसाहत करन दी आड़ विच उसदा हंकार वधा दिता है। बचे नूं उतसाहत करन दा इह तरीका सही नहीं है कि तूं बड़ा चंगा है, तूं बड़ा चंगा है। बचे नूं हला-शेरी देण दा तरीका है कि उसनूं पुछो कि की उह आपणी मिहनत दे फल तों खुश है कि नहीं। की अगर होर ज़िआदा मिहनत करे ताँ की उसदा फल होर वडा होवेगा कि नहीं। अगर ते उह कुदरत दा दिता होइआ दिमाग़ सारा वरत रहिआ है, अगर उह आपणी हिंमत मुताबिक पहिलाँ ही मिहनत कर रहिआ है ताँ इसतों ज़िआदा होर कुझ हो ही नहीं सकदा। अगर उसनूं तुसीं दिखा सकदे हो कि जिहड़ा समाँ उसने आपणे असली कंम नूं छडके होर कंमाँ विच गवाइिआ है ताँ उसनूं आपणा समाँ सही इसतेमाल करन दी जाच सिखाउ। इस लई बचे नूं आपणे अंदर झाती मारन दी आदत शुरू तों ही पैणी शुरू हो जाओगी। जो शकतीआँ उसनूं प्रभू ने दितीआँ हन उह सारीआँ वरतन लई उसनूं अंदर ही वेखणा पवेगा। उहनूं आपणे अंदर झाती मारन दी जाच बचपन तों ही सिखाणी पवेगी। अगर बचिआँ नूं दूजिआँ दी रीस करन ते मजबूर करोगे ताँ बचा विगड़ जाओगा अते उहदा हंकार वध जाओगा। गुरबाणी ने कहिआ है कि कदी किसे दी रीस नहीं करनी किउंकि सभ इको खेलु दे खिडारी हन।

"ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥
सदा साहिब कै रंगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥१॥
बाबा मूरखु हा नावै बलि जाउ ॥
तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥१॥ रहाउ ॥
मूरखु सिआणा ओकु है ओक जोति दुइ नाउ ॥
मूरखा सिरि मूरखु है जि मन्ने नाही नाउ ॥२॥" (पन्ना १०१५)

इस करके बचे नूं चंगा मंदा कहिणा नहीं सिखाउणा। इह जीवन दा डरामा है, हर इक नूं आपणा आपणा हिसा (part) अदा करन लई दिता गइिआ है, प्रभू दी निगाह विच कोई पारट इक दूजे नालों उचा नींवाँ नहीं है। जीवन दी यातरा प्रमातमा दे बणाओ होओ खेड्ड मुताबक चल रही है। इह डरामा दो पहिलूआँ दे आसरे ते चलदा है, पोज़ेटिव ते नैगेटिव विच। इक ही पहिलू विच रहिआँ इह खेलु चल ही नहीं सकदा। जेकर तूं इस खेलु विचों निकलणा चाहुंदा हैं, जे तैनूं सत-चित आनंद दी ज़रूरत है, ताँ माइिआ दे नाल जुड़के इस धरती ते रहि के तूं इह कंम नहीं कर सकदा।

"हरि जनु ओसा चाहीओ जैसा हरि ही होइ ॥" (पन्ना १३७२)

फिर ते जो परम शकती दा सवभाव है, उसनूं आपणे अंदर लिआउणा पओगा। इह आपणे मन नाल फैसला कर करके

ताँ उहदे वरगा बणना पओगा।

"ओवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥(पन्ना ५)

जे उहनूं जानणा है ताँ उहदे जिडा उच्चा उठणा पओगा। जे तूं इतना उचा नहीं उठ सकदा ताँ इिह यातरा इसेतराँ ही चलदी रहेगी, चंगा ते माड़ा, सुख ते दुख सभ साथ चलणगे। दुनीआँ ते कोई ओसा इनसान नहीं है जिहदा सारा जीवन जाँ सुख विच बीत जाओ जाँ दुख विच बीत जाओ। दोवें दुख-सुख देखणे पैंदे हन। अते जेकर सुख दुख तों उपर उठणा चाहुंदा हैं ताँ की करना पओगा, उसदा जवाब अगे आ रहिआ है:
"चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥"

इस गल नूं समझ लओ, चंगिआई/बुरिआई की है इिह फैसला किसे जीव दे हथ नहीं है। बुरिआई की है इिह तुसीं फैसला नहीं कर सकदे। इिह सारे फैसले उस परम शकती दे हथ विच हन, असीं उहनाँ बारे कुझ नहीं जाण सकदे।

"अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥
मै किआ जानउ बाबा रे ॥" (पन्ना ८७०)

इथे सवाल उठ जाओगा कि की किसे डुबदे नूं बचाउणा इक चंगा करम नहीं है? गुरबाणी इशारा कर रही है कि इिह असाँ किस आधार उते बणा लइआ है कि ओसा करना चंगा करम है जाँ माड़ा, सानूं की पता है इस करम दाँ अंत की निकलेगा। मिसाल वजों अज किसे डुबदे नूं बचा लइआ अते आपणे आप सोचिआ इिह बड़ा चंगा कंम कीता है। इक जान बचाई गई सी पर उसने बाहर निकलदिआँ ही दस कतल कर दिते। जेकर हुण कोई आके पुछे कि की इिह वाकिआ ही भला कंम कीता सी ताँ किवें महिसूस होवेगा अते की कहाँगे? 'अपने करम की गति मै किआ जानउ', असीं कौण हुंदे हाँ इिह गल कहिण नूं कि आह कंम चंगा है ते उह कंम माड़ा है। इिह सभ समाजिक कानूंन हन, जो कानूंन इथे चंगा है उह दूसरे शहिर विच माड़ा हो सकदा है। जिहड़ा उत्थे माड़ा सी, ओथे चंगा हो सकदा है। गुरबाणी समझा रही है कि इस चकर विच नहीं पैणा कि किहड़ा कंम चंगा है ते किहड़ा माड़ा है। इिह उस परम शकती दी मरज़ी है कि उहने किहड़ा करम कबूल करना है अते किहड़ा करम रदणा है। घटो घट इक गल ताँ गुरबाणी ने साफ कर दिती है:

"अवर करतूति सगली जमु डानै ॥
गोविंद भजन बिनु तिलु नहीं मानै ॥" (पन्ना २६६)

उसनूं साडा इक करम ताँ प्रवान है ही, अते उह है उसदे नामु दा सिमरन, उसदे शबद दी कमाई, उसदा जाप। बाकी हर करम दा फैसला काल, समें (जमु) दी दुनीआँ दे मुताबिक हुंदा है, होर कोई वी इस चीज़ दा फैसला नहीं कर सकदा। भगत जनु आपणी भगती दे कारन ही इस दुनीआँ विच सज़ावाँ भुगतके गओ, कउण कहि सकदा है कि उह माड़े करम कर रहे सन। माड़े चंगे दे होश माइिआ विच फसे होओ इनसान नूं हो ही नहीं सकदी, उह आपणी मन दी मत मुताबिक जीवन गुज़ारदा है, गुरमति उते चलण वाला अकसर कुराहीआ कहिलाँदा है। इस करके आपणे अंदर छुपे बैठे हुकम नूं सुणके फैसला कर लैणा चाहीदा है, बाकी जो वी होणा है उह प्रभू दी मरज़ी मुताबिक होणा है।

"करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥"

करम दा मतलब है इथे करम (action) जाँ किसमत, तकदीर आदि नहीं है, करम दा इथे मतलब है उसदी मिहर, उसदी करामत। जे उसदी मिहर हो जाओ ताँ उह नेड़े वी लगदा है, ते जे उसदी मिहर न होवे ते दूर वी बड़ा लगदा है, भावे उह हर ज़र्रे विच, हर रेशे विच वसिआ होइिआ है। सो उसदी किरपा दी निशानी की है?

"किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥"

जद किसे जीव उते उसदी किरपा होई हुंदी है ताँ उह जीव उसदे शबद दी कमाई करन लग पैंदा है। इथे धिआन जोग गल है कि असीं शबद नूं गाइिआ है, शबद नूं सुणाइिआ है, शबद दी विआखिआ कीती है, पर शबद नूं कमाइिआ नहीं। जिन्हाँ ने शबद कमाइिआ है उहनाँ बारे अगली तुक इशारा करदी है:

"जिनी नामु धिआइिआ गओ मसकति घालि ॥"

धिआइिआ दा भाव इथे इिह नहीं जिन्नाँ ने उहदा धिआन कीता; 'धिआइिआ' दा मतलब है जिहड़ा जीव कमाई करके धिआन दी अवसथा तक पहुंचिआ, इिह तीसरी मंजल है। जपणा पहिली मंजल है, उसदा सिमरना बण जाणा दूसरी मंजल है, अते धिआन लग जाणा तीसरी मंजल है, समाधी लग जाणी चौथी मंजल है।

जो शबद दी कमाई करदिआँ-करदिआँ धिआन दी आवसथा तक पहुंचे हन, उहनाँ ने बड़ी वडी घालणा घाली है। इिह बहुत सौखा कंम वी नहीं है। इिस लई कुझ कुरबानी करनी पैंदी है। जेकर पाणी नूं उबालणा है ताँ ज़रा अग उते दो कु मिंट रखके उतार लैण नाल गल नहीं बणेगी। उहनूं १०० डिगरी तक गरम करोगे ताँ ही गल बणेगी। जे इिह घालणा तूं नहीं कर सकदा ताँ फेर तूं माइिआ दा सवाद ही लै सकदा है, परम रस दी प्रापती बहुत दूर है।

विआकरन मुताबिक मसकति दे भाव करड़ी मिहनत जाँ मुशकत कीते गओ हन, पर इिह सही नहीं जापदे किउंकि घालणा घालणी वी उही गल है। इिथे इिसदा भाव लगदा है मस कति, भाव कालख कटणी। अगली तुक विच ताँ साफ ही कहि दिता गइिआ है "मुख उजले"। जो ओसी घालणा घालदे हन उह आपणे जनमाँ जनमाँत्ाँ दी कालख नूं कट सुटदे हन।

"नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥"

जनमाँ जनमाँतराँ दी कालख कट जाण करके उहनाँ दे मुख सचे दरबार विच उजल हो जाँदे हन अते होर कईआँ दा उहनाँ करके छुटकारा हो जाँदा है। 'केती छुटी नालि' दा
मतलब समझिआ गइिआ है होर कईआँ दा वी उधार हो गइिआ है। इिहदा भाव ताँ इिह बण गइिआ कि जिन्नाँ दा उधार हो गइिआ है उहनाँ नूं ते किसे घालणा दी लोड़ ही नहीं पई। ओसा कदी नहीं हो सकदा, इिह बड़ी भेद वाली गल
है। मिसाल दे तौर ते "मैं" तुहाडा बहुत वडा गुनाहगार
हाँ। अगले जनम विच तुहानूं वी आउणा पओगा अते मैनूं वी आउणा पओगा। "मैं" सज़ा भुगतण लई आवाँगा, तुसीं उस दा इिनाम लैण लई आउगे। पर तुसाँ इिसे जनम विच भगती करके पार उतारा कर लइिआ अते तुसाँ हुण आउणा ही
नहीं। जदों तुसाँ वापस आउणा ही नहीं है ताँ तुहाडे करके हुण मैनूं वापस आउण दी लोड़ नहीं। किसे होर करके वापिस आवाँ ताँ अलग गल है। जिहड़ा "मैं" तुहाडे नाल बधा होइिआ सी, तुहाडे भगती करन नाल उस बंधन दा छुटकारा हो गइिआ। कईआँ दे संबंध जिहड़े तुहाडे नाल बणे होओ सन, उह टुट गओ किउंकि तुसीं उहनाँ बंधनाँ तों उपर उ ठ गओ हो। हुण दोवें बधे नहीं रहि सकदे, करमाँ दा धागा भावे किसे पासिउं वी किउं ना कटिआ जावे, उह कटणा दोवाँ नूं ही आज़ाद कर दिंदा है। तो गुरू किरपा करे कि असीं आपणा छुटकारा पाउण दा इिंतज़ाम करीओ। आपणा छुटकारा पाउण दा इिरादा बणाईओ। इिह इिकली दंद कथा बण के ही न रहि जाओ। जपु बाणी नूं समझके अगर इिस मुताबिक कमाई कर लओ ताँ किसे होर चीज़ दी ज़रूरत ही नहीं। प्रभू नाल इिक मिक हो जाणा ही इिनसानी सरीर दा मूल निशाना है।

तुहाडीआँ असीसाँ दा सदका अते गुरू दी बखशीश दा सदका, असीं सारे रलके इिह यातरा करदे आ रहे हाँ। अज इिह यातरा समापत होई है। तुहाडीआँ असीसाँ दा बहुत-बहुत धन्नवाद अते गुरू दा धन्नवाद ते कीता ही नहीं जा सकदा। उहदा ख़ज़ाना ताँ इितना वडा है अते उह इितना मिहरबान है जिसनूं दास तुहानूं दस ही नहीं सकदा। भुलाँ-चुकाँ दी, गुसताखीआँ दी खिमाँ करनी। इिह आगाध-बोध बाणी है, जिहड़ा वी इिह दाअवा करे कि जो मैं कहि दिता है उह आखरी फैसला है, उहदे कोलों दूर भजिओ। गुरदेव आप ही जाणदे हन कि असली गल की है। दास नूं जो उहने प्रसादि भेजिआ है उह ही वंडिआ है, दास दा इिस विच कुझ हिसा नहीं, इिह सारा ही उहदा है। जेकर चंगा लगे ताँ घर लै जाइिओ, जिस बोल ने दिल दुखाइिआ है, मन विच मैल पैदा कीती है, उह दास दी अगिआनता अते ग़लत अखराँ दी चोण दी निशानी है। आस रखदा हाँ कि तुसीं सभ दास नूं उहनाँ गुसताखीआँ दी मुआफी दे काबल समझदे होओ खिमाँ बख़शोगे।